मगही

लोक-साहित्य

[पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी॰ लिट्॰ उपाधि के लिए स्वीकृत "मगही भाषा और साहित्य का अध्ययन" शीर्षक शोध-प्रबन्ध का एक अंश]

डॉ॰ सम्पत्ति अर्याणी, एम॰ ए॰ (हिन्दी-पालि), डी॰ लिट॰
हिन्दी विभाग, सायंस कालेज
पटना विश्वविद्यालय, पटना

हिन्दी साहित्य संसार
दिल्ली-७ :: पटना-४

मगही भाषा-समृद्धि एवं उसकी गौरवमयी संस्कृति

की

मूर्त्तिमयी देवी, वरदात्री, प्रेरणादात्री

मंगलमयी माँ

(श्रीमती शान्ति देवी)

के

चरण-कमलों में

यह श्रद्धा-सुमन

समर्पित !

श्रीमती शान्ति देवी

प्राक्कथन

डॉ० सम्पत्ति अर्याणी लोक साहित्य की मर्मज्ञा हैं। अभी हाल ही में आपने मगही भाषा और साहित्य पर अनुसंधान करके डी० लिट्० की उपाधि पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। मगही लोक साहित्य आपकी ही देन है। अपने डी० लिट्० के अनुसंधान के निमित्त मगही क्षेत्र में घूम फिर कर जो सामग्री आपने प्राप्त की थी प्रतीत होता है उसका कुछ अंश इस ग्रंथ में उन्होंने दिया है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारत का हिंदी भाषी क्षेत्र विविध महत्त्वपूर्ण बोलियों का जीता जागता जनालय है। इस क्षेत्र की अनेक बोलियों में वह जीवन शक्ति मिलती है जो उसमें स्वतंत्र भाषा की भावना पैदा करती है। ऐसी कितनी ही बोलियों का वर्णन हम ग्रियर्सन की लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में मिलता है। किंतु उनके उन विवरणों से हम भाषा की भाषा वैज्ञानिक प्रकृति और प्रवृत्ति का पता चलता है। किसी भाषा या बोली की यथार्थ सामर्थ्य का ज्ञान हमें उसके साहित्य से अथवा उसकी अभिव्यंजना के प्रकृत स्वरूप से होता है।

डॉ० अर्याणी को यह श्रेय दिया जायगा कि उन्होंने मगही के संबंध में इस अनुसंधान द्वारा यही महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न किया है। मगही भाषा में प्राप्त लोक साहित्य का संग्रह एक कमी की पूर्ति करता है। हमें मगही की अभिव्यंजना सामर्थ्य का भी इससे ज्ञान हो जाता है।

हिन्दी में इधर लोक-साहित्य के विषय में एक चमत्कारक जागरण दिखाई पड़ता है। विदित होता है कि विद्वानों की मनीषा लोक-साहित्य में प्रवृत्त हो चली है। इस प्रवृत्ति के दो रूप स्पष्ट दिखायी पड़ते हैं—एक स्वतंत्र दूसरा विश्वविद्यालय की उपाधि के निमित्त। दोनों ही रूपों में हिन्दी में अच्छा कार्य हुआ है। यह वास्तव में श्लाघनीय है।

इन श्लाघनीय प्रयत्नों को कई पहलुओं में देखा जा सकता है। एक पहलू वह है जिसके लिए विदेशियों ने भारतीय लोक-साहित्य में रुचि दिखायी। इस पहलू के भी दो पक्ष थे—एक शासित को अधिकाधिक जानना—राजनीतिक पक्ष। दूसरा वैज्ञानिक अनुसंधान के विश्व मन प्रवर्तन में योग देना—ज्ञान यज्ञ का पक्ष। उन्नीसवीं-बीसवीं शती में विदेशियों के प्रयत्नों के ये दोनों पक्ष कहीं परस्पर गुँथे कहीं पृथक होकर लोक-साहित्य के संकलन और वृद्धुन्य-चर्चा को प्रोत्साहित करते रहे। विदेशी शासन में यह स्थिति प्रायः ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों की थी।

दूसरा पहलू—रेनेसाँ या पुनराहरण का था। भारत ने श्रुतियों या कंठस्थ ज्ञान की परम्परा को आदि काल से महत्त्व दिया था। भारतीय इतिहास में हमें ऐसे कई प्रयत्न मिलते हैं जहाँ यहाँ की मौखिक परम्परा को सकलित करने के महत् प्रयत्न हुए हैं।

सबसे पहला प्रयत्न तो वेदों का ही है। वेदों की श्रुति संज्ञा महत्त्वपूर्ण संकेत से युक्त है। भगवान वेदव्यास ने अपने युग में सर्वत्र व्याप्त परंपराओं को संकलित व्यवस्थित और संपादित किया। चारों वेदों के वर्तमान रूप पर वेदव्यास की छाप है। वेदव्यास से पूर्व वेदों का क्या स्वरूप है इसका आज हमें ठीक ठीक पता नहीं। वेदव्यास ही महाभारत के संकलन कर्त्ता हैं—महाभारत क्या है? वह भी तो कंठस्थ ऐतिहासिक परम्पराओं का संग्रह है जिसे व्यास जी ने वह रूप दिया जो आज प्राप्य है।

व्यास जी ने यह सब कुछ संस्कृत भाषा में किया। किन्तु संस्कृत से भिन्न प्रकृति की भाषा 'पैशाची' में ऐसा ही कार्य 'गुणाढ्य' ने किया—बड्ड कहा (बृहत् कथा) के द्वारा, जिसका संस्कृत रूपान्तर कथासरित्सागर में मिलता है। ऐतिहासिक विकास से भारतीयों की यह प्रवृति खो गयी थी। सभी जातियों में ऐसे युग आते हैं जो अतीत के महान् ग्रन्थों से अभिभूत रहते हैं और उनसे अलग जाकर विचार ही नहीं कर सकते। मौलिकता का मूल्य ही नहीं रहता। वेद, पुराण, महाभारत, रामायण और कथासरित्सागर के बाद ऐसा ही युग भारतीय इतिहास में आया। इन्हीं ग्रन्थों की चर्चा करना उन्हीं से सामग्री लेकर रचना-कृतियाँ रचना—युगधर्म—हो गया।

इसी प्रवृति का नामकरण हुआ—आस्तिक प्रवृत्ति, वैदिक प्रवृत्ति या आर्य प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति ने अद्भुत रूप से 'रेजीमेंटेशन आव थाट' अथवा "वैचारिक सीमा नियन्त्रण" सिद्ध किया। अतः लोकसाहित्य की ओर लौटने की प्रवृत्ति को पुनराहरण कहा जा सकता है।

बौद्ध धर्म की क्रान्ति ने जन विज्ञान की प्रवृत्ति को एक बार लोकाभिमुख करने का प्रयत्न किया पर उसकी प्रवृत्ति का मूल था—वही धार्मिक धरातल। यह धार्मिक लोकाभिमुख प्रवृत्ति हमें बंगाली भाषा के क्षेत्र में विशेष रूप से दिखलाई पड़ती है, जहाँ विविध जनजातिक सम्प्रदायों ने लोक समाज अथवा लोकसाहित्य से सामग्री लेकर उसे अपने सम्प्रदाय प्रचार का माध्यम बनाया। "मनसा मंगल" आदि की कथा एक ऐसा ही विशेष उदाहरण है।

जो भी हो, उन्नीसवीं बीसवीं शती में भारतीय लोकसाहित्यिक प्रयत्न पुनराहरण के प्रयत्न थे। 'Back to Vedas", "Back to Nature" की भाँति "Back to folk" भी एक नारा कहा जा सकता है।

इसी पुनराहरण को अन्तर-राष्ट्रीय लोकसाहित्यिक आन्दोलनों से विशेष प्रेरणाएँ मिलीं। ये आन्दोलन ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र के ही थे। अतः पुनराहरण का संबंध भाषाविज्ञान, इतिहास, दर्शन, धर्म विज्ञान आदि से होता रहा।

हिन्दी के क्षेत्र में लोकसाहित्य के इस नव जागरण के अच्छे फल मिले हैं। अनेकों बोलियों के क्षेत्र में लोक-साहित्य का संकलन और उसका अध्ययन हो चुका है। पर मगही की सम्पत्ति पर यदा-कदा ही कुछ लिखा गया है। डॉ० अर्याणी ने इस क्षेत्र में कुछ जम कर कार्य किया है। उसीका प्रसाद है—यह संग्रह।

इस संग्रह में तीन अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में "मगही की लोक-कथाएँ" दी गई हैं। इन लोक-कथाओं को लेखिका ने मगही के विविध क्षेत्रों तथा खंडों के नाम से दिया है अर्थात् गाँवों और नगरों के नाम से। इस प्रकार मगही के अन्तर्गत नालंदा, राजगृह, बेगमपुर, दानापुर, मनेर, खुसरूपुर, गया, जहानाबाद, कुर्था, मिसिरबिगहा, बड़हिया, जमुई, पलामू, लतेहार, धनबाद, कुमारधोली, राजाडेरा, राँची, सिंहभूम से कथाएँ ली गयी हैं। मैथिली मिश्रित मगही में दक्षिण मुंगेर और बाढ़ के नमूने लिये गये हैं।

पूर्वी मगही में मानभूम जिला, बामरा, हजारीबाग जिला, राँची जिला, मयूरभंज स्टेट और मालदा जिला से उदाहरण लिए गये हैं।

स्पष्ट है, इस अध्याय में लेखिका ने बोलियों के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण-स्वरूप कहानियाँ दी हैं। इनका जितना भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्त्व है, उतना लोककथाओं की दृष्टि से नहीं। किन्तु भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करना भी आवश्यक माना जा सकता है।

द्वितीय अध्याय के सकलन सपादन में प्रथम अध्याय से भिन्न क्रम और भिन्न दृष्टि अपनायी गयी है। इसमें लोकगीत अवसरानुकूल विषयों के आधार पर दिए गये हैं। अतएव मगही लोकगीतों के स्वरूप, प्रकृति और सांस्कृतिक तत्त्व का पूरा प्रतिनिधित्व इस सकलन में हमें मिलता है। प्रत्येक गीत के अन्त में टिप्पणी देकर और पाद-टिप्पणी में विशिष्ट शब्दों के अर्थ देकर इस संग्रह को लेखिका ने पूर्णत उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। इसमें भी लोककथा गीत विशेष ध्यान आकर्षित करते हैं।

तृतीय अध्याय में "मगही का प्रकीर्ण साहित्य" दिया गया है, जिसमें कहावतें मुहावरे और बुझौवल हैं।

इस प्रकार समूचे मगही लोकसाहित्य का इस ग्रंथ में एक अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। इसके सकलन में लेखिका को निश्चय ही बहुत श्रम करना पड़ा होगा। पर इस ज्ञान के यज्ञ में उनकी यह आहुति श्लाघ्य ही मानी जायगी। आशा की जाती है कि आगे वे और भी पूर्ण और बड़ा संग्रह वैज्ञानिक प्रणाली से संग्रह करके प्रस्तुत करेंगी। इस संग्रह से अपने लोक साहित्य विषयक कार्य का उन्हें आरंभ मानना चाहिए, इति नहीं।

आगरा
२७-७-६४

डॉ० सत्येन्द्र,
के० एम० इन्स्टीट्यूट
आगरा विश्वविद्यालय
आगरा
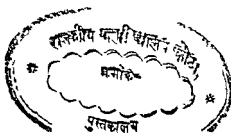
निवेदन

किसी भी देश की समग्र सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व एवं प्रकाशन वहाँ का साहित्य ही करता रहा है। अब तक इस श्रेय का सेहरा केवल शिष्ट साहित्य के ही माथे बाँधा जाता रहा, पर पिछले दो तीन दशकों से विद्वानों ने अनुभव करना आरम्भ किया कि उपर्युक्त दृष्टिकोण एकांगी एवं अपूर्ण है। कारण शिष्ट साहित्य समाज के एक छोर पर विशिष्ट वर्ग की ही गाथा प्रस्तुत करता रहा है, महनीय राष्ट्र एवं उसकी मौलिक संस्कृति का निर्माता तो जन सामान्य रहा है। इस लोकसामान्य की जीवन झाँकी शिष्ट साहित्य में नहीं के बराबर मिलता है। वस्तुतः इसकी बाँकी झाँकी अपनी समग्रता में समन्वित ढंग से लोकसाहित्य में ही मिलता है। इस दृष्टि से भारतीय लोकसाहित्य का महत्त्व अनुपेक्षणीय एवं अपरिसीम है, कारण महनीय संस्कृति का दावा जिन देशों के अतीत को प्राप्त है उनमें सम्भवतः यह सर्वोपरि है। यह प्रसन्नता का विषय है कि जब से भारतीय विद्वानों ने उक्त तथ्य का अनुभवगम्य साक्षात्कार किया है भारतीय लोकसाहित्य के अनुशीलन परिशीलन की प्रवृत्ति प्रखर हो चल पड़ी है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय लोकसाहित्य पर अच्छा एवं सराहनीय कार्य किया गया है। इस क्रम में हिन्दी की विविध बोलियों—ब्रजभाषा, भोजपुरी, मैथिली, मालवी, राजस्थानी, अवधी आदि के भाषागत पक्ष एवं लोकसाहित्य पर विस्तृत एवं अभिनन्दनीय अध्ययन प्रस्तुत किए गये हैं। यह आश्चर्य का विषय रहा कि मगध क्षेत्र, मगही भाषा एवं उसका लोकसाहित्य चिरकाल तक उपेक्षणीय बना रहा। आश्चर्य का विषय इसलिए कि मगध क्षेत्र किंवा मगध का भारतीय संस्कृति के निर्माण में जो योगदान है उसे कौन भुला सकता है? पर उसे भुला दिया गया और जब क्षेत्र विशेष की ही सर्वांशतः उपेक्षा कर दी गई तब उसकी भाषा एवं लोकसाहित्य का उपेक्षणीय बना रहना तो सहज अन्वय क्रम में ही द्रष्टव्य है। पर यह उपेक्षा भी आकस्मिक नहीं थी। इसका ऐतिहासिक पृष्ठाधार था। उसके औचित्य की मीमांसा का यहाँ अवकाश नहीं है, पर वस्तुस्थिति का सत्य यही है। यही कारण है कि डा० ग्रियर्सन की अनतिस्पष्ट चर्चा के अतिरिक्त अन्यत्र इस गौरवमयी समृद्ध भाषा के स्वरूप एवं साहित्य के संस्थापन विश्लेषण का प्रयास नहीं मिलता।

पर यह उपेक्षा मगही भाषा के लिए आगे चल कर विघातिनी प्रमाणित हुई। कारण इस उपेक्षा के फलस्वरूप उत्पन्न अराजकतामयी स्थिति को इसके अस्तित्व शून्य होने का प्रमाणपत्र मान लिया गया और बड़े असुन्दर दावे सामने रखे जाने लगे। अपनी भाषा से सहज स्नेह स्वाभाविक है, पर इसकी अभिव्यक्ति किसी अन्य भाषा के अस्तित्व की अस्वीकृति के मूल्य पर शुभ नीति नहीं। दुर्भाग्यवश मगही भाषा और साहित्य को यह दुर्भाग्य झेलना पड़ा।

मगध पुत्री होने के नाते उपर्युक्त स्थिति से मैं पर्याप्त कष्ट पाती रही। और इसी कष्टमयी स्थिति से उस निश्चय का जन्म हुआ, जो मगही भाषा एवं साहित्य के अध्ययन संकलन, सम्पादन प्रकाशन के मेरे संकल्प में बदल गया। जहाँ तक इस संकल्प को कार्यान्वित करने के प्रयास का प्रश्न है, वह सन् १९५२ से प्रारम्भ हुआ और सन् १९५७ से पूर्ण व्यवस्थित ढंग से चलने लगा।

वस्तुत जो संकल्प मैंने किया था, उसे 'व्यक्ति' का नहीं, किसी 'संस्था' का होना चाहिए था। पर जब 'व्यक्ति द्वारा 'संस्था' का कार्यभार उठा लिया गया हो, तो लक्ष्य-पूर्ति के मार्ग में अनेकानेक कठिनाइयों एवं बाधाओं का आ खड़ा होना स्वभाविक ही था। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि विद्वज्जनों की दृष्टि में अपनी लक्ष्य पूर्ति में मैं कृतकार्य रही।

प्रस्तुत ग्रंथ मेरे डी० लिट्० की उपाधि के निमित्त स्वीकृत शोध प्रबन्ध "मगही भाषा और साहित्य का अध्ययन" के साहित्य खंड का परिशिष्ट भाग है। इसमें मगध क्षेत्र के बारम्बार पर्यटन के फलस्वरूप लोककंठ से संचित मगही लोकगीतों, लोककथागीतों, लोककथाओं, लोकनाट्यगीतों, लोकगाथाओं, मुहावरों, कहावतों एवं पहेलियों के कुछ चुने नमूने अपने प्रकृत स्वरूप सौंदर्य के साथ प्रस्तुत हैं। 'उपोद्घात' में इनकी विवेचनात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर दी गई है। उसके साथ इनके अवलोकन से मगही लोकसाहित्य के स्वरूप-वैशिष्ट्य एवं समृद्धि का सहज ही अनुमान हो जाता है।

मगही लोक-साहित्य पर शोध कार्य करने की प्रेरणा प्रातः स्मरणीय आचार्यवर डॉ० विश्वनाथ प्रसाद (निदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय दिल्ली) से मिली थी। उनके बहुमूल्य निदेशन के अभाव में मैं अपनी लक्ष्य पूर्ति में कभी कृतकार्य नहीं हो पाती। उनके चरण-कमलों में मैं अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूँ। परम आदरणीय आचार्य डॉ० सत्येन्द्र ने प्रस्तुत ग्रंथ का प्राक्कथन लिख कर जो प्रोत्साहन मुझे दिया है, उसके लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस क्रम में श्रद्धेय आचार्य डॉ० शिवनन्दन प्रसाद (उपनिदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली), डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, स्व० आचार्य नलिन विलोचन शर्मा स्व० ब्रजदेव नारायण (ऐडवोकेट, पटना हाईकोर्ट), स्व० डॉ० बद्री नारायण प्रसाद (भूतपूर्व कार्य वाहक पटना विश्वविद्यालय), पूज्य पिता स्व० बाबू दरोगाह जी, श्री भगवतलाल जी, श्री रामनारायण शास्त्री (राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना), श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिन्हा (राजगीर) से जो बहुमूल्य सहयोग एवं निदेशन मुझे मिले हैं, उनके लिए, उनके प्रति एवं अन्यान्य सभी महानुभावों के प्रति जिनसे किसी भी प्रकार की सहायता मुझे मिली है, मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

स्नेहमयी जननी श्रीमती शान्तिदेवी परमादरणीय श्री हरिदास ग्वाल, प्रिय बहन श्रीमती पुष्पा अर्याणी श्रीमती कौशल्या अर्याणी, श्रीमती कृष्णा अर्याणी, प्रिय अनुज श्री देवेन्द्र कुमार, श्री रामनाथ गुप्त एवं प्रिय पुत्रियां श्रीमती प्रतिभा अर्याणी, कुमारी उषा अर्याणी एवं कुमारी किरण अर्याणी को धन्यवाद देना अपने को धन्यवाद देने जैसा लगता है। मगही लोक साहित्य के संग्रह, संकलन, पाण्डुलिपि-निर्माण एवं विविध संदर्भों से सम्बन्धित ज्ञातव्य तथ्यों के विवरण संचयन में इनसे अपार सहायता मिली है।

अंततः मगही क्षेत्र के वे अगणित शिक्षित—अशिक्षित ग्रामीण एवं नागर नर-नारी जन मेरे कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं, जिनकी कृपा से ही मगही लोक साहित्य की बहुमूल्य मणियाँ प्राप्त हो सकीं।

सम्पत्ति अर्याणी

नवम्बर १९६४
राजेन्द्र नगर, पटना—४

ध्वनि-संकेत

⊥ (अ)—हृस्व विलम्बित अथवा उदासीन स्वर का संकेत-चिह्न। यथा—हलइ। सगलेइ।

ऽ (अऽ)—यह दीर्घ विलम्बित स्वर का लिपि चिह्न है। व्यजनान्त अथवा स्वरान्त शब्दों के अन्त में आकर उसका यह विलम्बित उच्चारण प्रकट करता है। यथा—नऽ। यहऽ। आवऽ।

ॅ (ऑ)—यह स्वर 'ऑ' का हृस्व रूप है। उच्चारण में प्राय यह 'अ' की तरह सुनाई पड़ता है। यथा—बॉटलक। मॉडलक।

ॅ (ऍ)—हृस्वोच्चरित 'ए' स्वर। यथा—ऍस्हरा। ऍक्को।

ॅ (ऐॅ)—हृस्वोच्चरित 'ऐ' स्वर। यथा—ऐॅसनो। कैॅमनो।

ॅ (ओॅ)—हृस्वोच्चरित 'ओ' स्वर। यथा—ओॅहि। मरोॅरलक।

ॅ (औॅ)—हृस्वोच्चरित 'औ' स्वर। यथा—वोलोॅलकइ। गिरोॅलक्इ।

विषय-सूची

उपोद्घात

प्रथम-अध्याय

मगही की लोक-कथाएँ

द्वितीय अध्याय

मगही के लोकगान

लोकगीत

लोककथा गीत

लोकनाट्य गीत

लोकगाथा

तृतीय अध्याय

मगही का प्रकीर्ण साहित्य

परिशिष्ट

मगही भाषाक्षेत्र
सूची
मिश्रित मगही
नदी
रेल पथ
मापक
दिनाजपुर
पश्चिमी
बंगाल
उ
डी
सा

उपोद्घात

उपोद्घात

लोक-साहित्य का स्वरूप

'लोक' पद का अर्थ विराट् समाज की ओर सकेत करता है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के १० ६० मन्त्र में कहा गया है —

"सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात्।

अर्थात् "वह (लोक) विराट् पुरुष है, जिसे हजारों सिर, हजारों आंखे एव हजारों चरण हैं। अत 'लोक' पद का अभिप्रेत अर्थ साधारण जनसमाज ही है। इसी में यह विराट् कल्पना समाहित हो जाती है। भूत-भविष्य-वर्तमान मे प्राप्य मानव-समाज की नैसर्गिक प्रवृत्तियॉ जिनमे उनके आचार व्यवहार, मान्यताएँ, धार्मिक आस्थाएँ तथा भौतिक इन्द्रों के आधार पर उत्पन्न प्रतिक्रियाएँ आदि सभी सम्मिलित हैं, इस शब्द में अन्तर्भावित हैं। चूंकि इन नैसर्गिक प्रवृतियों का सम्बन्ध अभिव्यक्ति से है और अभिव्यक्ति का साहित्य से, अत लोकाभिव्यक्ति जब अपने काव्यात्मक गुणों के कारण आलोचित होती है, तब उसे 'लोक-साहित्य' की सज्ञा दी जाती है।

लोक-साहित्य की अर्थगत व्याप्ति बड़ी ही विशाल है। यह किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित नहीं होता। उसके पीछे परम्परा वर्तमान रहती है, जिसका सम्बन्ध समाज से रहता है। उसकी अभिव्यक्ति सामूहिक होती है। वे सारी मौखिक अभिव्यक्तियाँ, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के कठघरे के बाहर की हैं तथा जो समान रूप से समाज की आत्मा को व्यक्त करने की क्षमता रखती हैं, लोक-साहित्य की श्रेणी में आती हैं।

लोक-साहित्य और परिनिष्ठित साहित्य का अन्तर

लोक-साहित्य 'परिनिष्ठित साहित्य' से स्वभावत कहीं अधिक व्यापक है। यही कारण है कि यह परिनिष्ठित साहित्य के लिए उपजीव्य साहित्य का कार्य करता है। इसे ही दृष्टिपथ में रख कर विद्वानों ने 'लोकसाहित्य' की तुलना बहती हुई नदी से की है और परिनिष्ठित साहित्य की किनारों में बँधे हुए जलाशय से। । जब जलाशय का पानी सूखने लगता है, तब नदी के पानी से उसकी पूर्ति की जाती है, और परिनिष्ठित साहित्य जब विकास की गति में पीछे पड़ने लगता है, तब लोक साहित्य के अध्ययन से उसे सहायता मिलती है।

परिनिष्ठित साहित्य नियमों के कठघरे में बंद होता है। उसकी एक बँधी सुनिश्चित अभिव्यजना प्रणाली होती है। उसमें रमणीयता लाने के लिए सप्रयास रस, अलंकार, गुण आदि साहित्यिक तत्त्वों की योजना की जाती है। पर कहा जा चुका है कि लोक साहित्य इन बंधनों से मुक्त और स्वच्छद होता है। उसके सुनिश्चित रचयिता होते हैं और वह लिखित रूप में जीवित रहता है। पर लोक-साहित्य सामाजिक उद्गारों का प्रतिनिधित्व करता है। उसके रचयिता अज्ञातप्राय होते हैं और वह मौखिक परम्परा में जीवित रहता है। यही कारण है कि कुछ विद्वानों

ने इसे "अपौरुषेय" भी कहा है। वेद का भी 'अपौरुषेय' कहने का बहुत सम्भव है, यही रहस्य हो। इस दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेने पर भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा लोकसाहित्य में अन्तर्भुक्त किया जा सकता है।

लोक साहित्य एवं लोकवार्त्ता

मगही लोक साहित्य की विवेचना करने के पहले लोकवार्त्ता पर प्रकाश डालना आवश्यक है, क्योंकि मगही लोकसाहित्य उसी का अंग है।

"लोकवार्त्ता" शब्द अंग्रेजी के "फोकलोर (Folklore) पर्यायवाची पद के रूप में प्रचलित है। हिन्दी में इसके मुख्य रूप से प्रचार करने का श्रेय श्री कृष्णानन्द गुप्त एवं डा० वासुदेव शरण अग्रवाल को है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने हिन्दी में वैष्णवों के वार्त्ता-सम्बन्धी ग्रन्थों के अनुरूप (८४ वैष्णवों की वार्त्ता, षट्वार्त्ता आदि) फोकलोर का "लोकवार्त्ता" पर्याय स्वीकृत किया है।[1] डा० सत्येन्द्र[2] भी "लोकवार्त्ता" को ही 'फोकलोर' का पर्यायवाची पद मानते हैं। फोकलोर का प्रचलित अर्थ है—जनता का साहित्य, ग्रामीण कहानी आदि। पर उसका विशिष्ट अर्थ है—जनता की वार्ता। जनता जो कुछ कहती सुनती है या उसके सम्बन्ध में जो कुछ कहा सुना जाता है, वह सब लोकवार्त्ता है। जिस प्रकार प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है उसी प्रकार इसकी अपनी लोकवार्त्ता होती है। लोकवार्त्ता का उद्गम् स्थल जनता का मानस होता है। इस प्रकार यदि प्रत्येक देश की लोकवार्त्ता का विधिवत् संग्रह किया जाये तो प्राचीन से अर्वाचीन काल तक की वहाँ की बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक और सामाजिक अवस्था का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित हो सकता है।

"फोकलोर" के सम्बन्ध में बॉटकिन के विचार द्रष्टव्य हैं —'लोकवार्त्ता बहुत दूर की या कोई बहुत प्राचीन वस्तु नहीं है बल्कि वह हमलोगों के बीच का ही एक गतिशील एवं जीवित सत्य है। कारण, यहाँ अतीत वर्त्तमान से और अशिक्षित समाज उस समाज से कुछ कहना चाहता है, जो अपने मौलिक मौखिक एवं लोकतान्त्रिक संस्कृति के मूल और प्रारम्भिक रूपों के मनन से अपनी कलाओं की जड़ तक पहुँचना चाहता है और जिससे उसकी कलाओं के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश पड़ता है।'[3]

लोकवार्त्ता के विषय विस्तार पर शार्लट सोफिया बर्न ने अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला है। उन्हीं के ही आधार पर डा० सत्येन्द्र[4] ने भी इस पर विचार प्रस्तुत किया है। उन्हें

---

१ भारतीय लो० सा०—पृ० १४

२ व्र० लो० सा० अ०—पृ० २

३ Folklore is not something far away and long ago, but real and living among us —Here the past has something to say to the present and bookless world to a world that likes to read about itself, concerning our basic, oral and democratic culture as the root of arts and as a sidelight on history

—अमेरिकन फोकलोर (पाकेटबुक) की भूमिका— पृ० १५

४ हैंडबुक आव फोकलोर शार्लट सोफिया बर्न तथा व्र० लो० सा० अ०—पृ० ४-५

अनुसार "लोकवार्त्ता" शब्द जातिबोधक शब्द के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है । इसमें पिछड़ी जातियों में प्रचलित या अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों में अवशिष्ट विश्वास, रीति-रिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावतें आती हैं । प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत् के भूतप्रेतों की दुनियाँ, मानव के सामाजिक आचार-व्यवहार, जादू-टोना, सम्मोहन-वशीकरण, ताबीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु आदि के सम्बन्ध में आदिम एवं असभ्य विश्वास लोकवार्त्ता के क्षेत्र में आते हैं । इनके अतिरिक्त विवाह, उत्तराधिकार, बाल्यकाल और प्रौढ़ जीवन की सामाजिक प्रवृत्तियाँ, त्योहार, युद्ध, आखेट, मत्स्य व्यवसाय तथा पशुपालन आदि विषयों से सम्बन्धित विभिन्न व्यवहार एवं अनुष्ठान आदि सभी इसी के अन्तर्गत आते हैं । इतना ही नहीं, धर्मगाथाएँ, अवदान (लीजेंड), बैलेड, किंवदन्तियाँ, पहेलियाँ तथा लोरियाँ भी इसी के विषय हैं । संक्षेप में लोक की सहज मानसिक परिधि के अन्तर्गत जो भी वस्तु आ सकती है, वह सभी इसके क्षेत्र में परिगणनीय है ।

सोफिया बर्न ने "फोकलोर" के विषय को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है जिन्हें डा० सत्येन्द्र ने निम्नांकित रूप से प्रस्तुत किया है[1]—

१. लोक विश्वास एवं अंध परंपराएँ, जो निम्नांकित से सम्बन्धित हैं :—

(क) पृथ्वी एवं आकाश से;
(ख) वनस्पति जगत् से;
(ग) पशु-जगत से;
(घ) मानव से;
(ङ) मनुष्य-निर्मित वस्तुओं से;
(च) आत्मा तथा दूसरे जीवन से;
(छ) परा-मानवी व्यक्तियों से;
(ज) शकुनों-अपशकुनों, भविष्यवाणियों, आकाशवाणियों से;
(झ) जादू-टोनों से;
(ञ) रोगों तथा स्थानों की कला से ।

२. रीति-रिवाज तथा प्रथाएं :—

(क) सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ;
(ख) व्यक्तिगत जीवन के अधिकार, व्यवसाय, धन्धे तथा उद्योग;
(ग) तिथियाँ, व्रत तथा त्योहार;
(घ) खेल-कूद तथा मनोरंजन ।

३. लोक-साहित्य :—

(क) कहानियाँ—(अ) जो सच्ची मान कर कही जाती हैं ।
(आ) जो मनोरंजन के लिए होती हैं ।

(ख) गीत सभी प्रकार के

---

१ ए हैंडबुक अव फोकलोर : पृ० ४ तथा ब्र०लो० सा०अ० . पृ० ६—७ ।
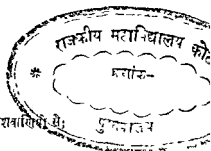
(ग) कहावतें तथा पहेलियाँ

(घ) पद्यबद्ध कहावतें तथा स्थानीय कहावतें ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकवार्ता का क्षेत्र बहुत व्यापक है । लोक साहित्य लोकवार्ता का ही एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें अनायास भाव से प्राप्त साहित्यिक सौंदर्य से मंडित जनमानस की गद्य पद्यात्मक अभिव्यक्तियाँ अन्तर्भावित हैं ।

मगही लोक-साहित्य का सामान्य परिचय

मगही लोक-साहित्य विशाल एवं अगाध भारतीय लोक साहित्य का ही एक महत्वपूर्ण भाग है और उसकी समस्त सांस्कृतिक परम्पराएँ इसमें सुरक्षित हैं । इसका विस्तार-क्षेत्र 'मगध जनपद' है । अतः यहाँ भी ऐतिहासिक सांस्कृतिक पीठिका की हल्की झाँकी अपेक्षित है ।

वैदिक साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में बिहार तीन भागों में विभाजित था—मगध, अंग और विदेह । 'मगध' के सम्बन्ध में विशेष संकेत वहां नहीं मिलते । वैदिक साहित्य के प्राचीन अंग ऋग्वेद, संहिता में 'कीकट' नाम से जिस प्रदेश की निन्दित चर्चा मिलती है, उसका बहुत कुछ संकेत मगध से ही माना जाता है । बहुत संभव है, उस समय तक यह प्रदेश आयेतर जातियों का निवास स्थान रहा हो और मध्य एशिया से आगत आर्य जाति की सभ्यता का आलोक वहां न पहुँचा हो । मगध में व्यवस्थित रूप से आर्य राज्य की स्थापना का उल्लेख "वाल्मीकिरामायणम्" के अध्याय ३२ में मिलता है । इस राज्य के प्रथम संस्थापक आर्य-वसु थे, जिनके बाद चन्द्रगुप्त और महान् अशोक जैसे सम्राटों की समृद्ध परम्परा में यह शासित होता रहा । सभ्यता और सांस्कृतिक गरिमा की दृष्टि से भारतीय इतिहास में मगध प्रदेश का अत्यधिक महत्त्व रहा है ।

जहाँ तक 'मगही' के उदय का प्रश्न है, यह 'मागधी प्राकृत' एवं 'मागधी अपभ्रंश' से उद्भूत हुई है । डॉ॰ ग्रियर्सन ने भाषा-तत्त्व के आधार पर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को तीन उपशाखाओं (बाहरी, मध्य एवं भीतरी) में विभक्त किया है । इनके अन्तर्गत छः भाषा-समुदाय हैं । मगही भाषा बाहरी उपशाखा के पूर्वी समुदाय के बिहारी वर्ग के अन्तर्गत आती है । यद्यपि बिहारी, उड़िया, बंगला, असमी आदि कई भाषाएं 'मागधी' से प्रसूत हैं, तथापि केवल 'मगही' का ही नामकरण 'मागधी' के आधार पर हुआ है । वर्तमान मगही भाषा प्राचीन मगध क्षेत्र में ही सीमित नहीं है । यह समस्त गया, पटना तथा हजारीबाग जिलों में बोली जाती है । इनके अतिरिक्त पलामू, मुंगेर, भागलपुर के बड़े भागों में भी 'मगही' बोली जाती है ।

अन्य भाषाओं के लोक-साहित्य की तरह मगही भाषा का लोक-साहित्य भी विषय-वैविध्य की दृष्टि से पर्याप्त विस्तृत एवं अनायास भाव से प्राप्त उच्च काव्यात्मक मूल्यों के कारण स्पृहणीय रूप से समृद्ध है । साथ ही विशाल मगध-क्षेत्र के विस्तृत जन-जीवन के सूक्ष्म पर्यालोचन के लिए यह एक ऐसे संवेदनशील दर्पण के रूप में वर्तमान है, जिसमें उनके समस्त आचार-व्यवहार, हर्ष-विषाद, रूढ़ियाँ-आकांक्षाएँ, प्रवृत्तियां एवं संस्कार प्रतिबिम्बित हो उठे हैं ।

जैसा कि पहले कहा गया, विषय-वैविध्य एवं प्रकार वैविध्य दोनों ही दृष्टियों से मगही लोक साहित्य स्पृहणीय रूप से समृद्ध है। विषय-वैविध्य की दृष्टि से इसकी विवेचना के पूर्व "प्रकार वैविध्य" का संक्षिप्त अध्ययन कर लेना उपयुक्त होगा। 'प्रकार' शिल्प-विधान को कहते हैं। शिल्प-विधान का सम्बन्ध रूपाकृति-निर्माण से होता है। परिनिष्ठित साहित्य के विभिन्न रूपों की तरह लोक साहित्य के भी विभिन्न रूप होते हैं। दूसरे शब्दों में साहित्य में, जिन्हें हम विधाएँ कहते हैं, उनकी स्थिति लोक-साहित्य में भी वर्त्तमान है। लोक कवि इसके लिए यद्यपि कृत्रिम रूप से सचेष्ट नहीं होता, तथापि लोक-साहित्य में प्राप्य विभिन्न 'विधाओं' के पार्थक्य का कुछ आधार अवश्य है और अन्तत उद्देश्य भी। मगही लोक-साहित्य में जो विभिन्न विधाएँ मिलती हैं, उनमें प्रमुख हैं—

(क) लोककथा

(ख) लोकगीत

(ग) लोककथा गीत

(घ) *लोक नाट्यगीत*

(ङ) लोकगाथा

(च) कहावतें

(छ) मुहावरें

(ज) पहेलियाँ।

लोककथा—मगही लोककथाओं का प्रारम्भ प्राय उस व्यक्ति की भूतकालीन स्थिति के सूचन से होता है, जिसके विषय में कथा चलती है। यथा—

(क) एगो राजा हला आ एगो डोम के बेटा हला। (अफला)

(ख) गंगा के किनारे गाँव में एगो पंडित जी रहते हलथिन। (बिसबास के महिमा)

(ग) एगो कानू हलन। (लडाकिन मेहराड़ बस में)

(घ) एगो हलन चूल्हो अउर एगो हलन सियारो। (जितिया के महातम)

कभी-कभी इन लोककथाओं का आरम्भ सहसा होता दीखता है और कभी कभी किसी विशेष या रूढ दृष्टिकोण के प्रकाशन से। यथा—

(क) कोई आदमी एगो देओता के तपस्या करके एगो अइसन संख पैलकई कि ओकरा से जो माँगऽ हलइ, उ मिलऽ हलइ। (ढपोरसंख)

(ख) बनिया सब सुभाव के कमजोर होवा हइ। जरी-जगी-सा बात में डेरा जा हइ। (डरपोक बनिया)

'मध्य' में मूल कथा होती है। इन कथाओं का विकास कभी तो स्वाभाविक घटना-क्रम से होता है और कभी दैवी घटना-क्रम से। प्रथम की प्रधानता सामाजिक तत्वों पर पल्लवित लोक-

कथाओं में मिलती है एव द्वितीय की उन लोककथाओ मे, जिनम किसी अद्भुत मार्ग का होना या दैवी शक्ति की महिमा का प्रतिपादन होता है।

इन लोककथाओं का 'अन्त' कभी तो कथा के अवसान के सूचन से होता है, कभी उसके अवसान एव उस पर चिन्तन करने की अपेक्षा के विज्ञापन से, कभी मगल कामना से और कभी प्रतिपाद्य के उपदेश से। यथा—

(क) सौदागर घर चल आयल। छोटकी पुतोहिया के बडी असीस देलक, जे अप्पन धरमो बचौलक आ ससुर के जान भी। (धरम के जय)

(ख) खिस्सा गेलन वन में, सोंचऽ अप्पन मन में। (धोखा के वदला)

(ग) जैसन ओकर दिन फिरल ओयसन सबके फिरे। (राजा भोलन)

(घ) सौ के सवाई भल, वकि कुजडा के दूना न भल। (सेठ आउ कुजड़ा)

लोकगीत—मगही लोकगीत प्राय छोटे होते हैं, पर आकार की सक्षिप्तता के साथ ही उनमें भाव की एकताननता होती है। मगही लोकगीतो मे मुक्तक काव्य के कई गुण वर्तमान मिलते हैं। यथा—मुक्तक काव्य 'तारतम्य' के बन्धन से मुक्त रहता है और उसका प्रत्येक पद अपने मे पूर्ण होता है, ऐसा ही मगही लोकगीतों में भी होता है। गेयपदो (मुक्तको) की तरह मगही गीतों में सगीत तत्त्व प्रधान रहता है।

मगही लोकगीतों का आरम्भ प्राय 'वर्ण्य' प्रसग के स्पष्ट या साकेतिक निदेश से होता है। यथा—

(क) आज सुहाग के रात, चदा तुहू उगिहऽ।

(ख) पारहिं ऊपर कसैलिया एक बोयली।

'मध्य' मे इन लोकगीतो का विकास या तो वर्ण्य भाव के पुनरावृत्तिमूलक विस्तार से होता है या कथात्मक वर्णना का आश्रय लेकर। देवगीतों का कथात्मक वर्णना से ही विकास होता दीखता है। इन गीतो का 'अन्त' प्राय प्रतिपाद्य आकाक्षा, धर्म, घटना या परिणाम के सूचन से होता है।

लोककथा गीत—जैसा कि इनके नाम से स्पष्ट है, ये गीत तो होते हैं, पर इनमें कथा की प्रधानता होती है। इनका 'प्रारम्भ प्राय उस घटना के किंचित् विस्तृत विवेचन से होता है, जो सम्पूर्ण कथा-भाग का बीज रूप होता है। 'मध्य' में इन कथाओं का विकास चलता रहता है। 'अन्त' प्राय किसी कारुणिक अभिव्यक्ति से होता है, जो उसकी होती है, जो कथा के परिणाम का भोक्ता होता है।

लोकनाट्य गीत—वस्तुत ये 'लोकगीत हैं। 'नाट्य' विशेषण पद के प्रयोग का मुख्य कारण इनका इतिवृत्तात्मक एव कथोपकथन मे निबद्ध होना ही है। दूसरे ये विभिन्न अवसरो पर अभिनीत किए जाते हैं, अत इस दृष्टि से भी इनका नाट्यगीत कहलाना अर्थ-सगति रखता है। लोकनाट्य गीत दो रूपो मे होते हैं। प्राय ये कथोपकथनो मे होते हैं। विभिन्न पात्रों का, जो

प्राय दो से अधिक नहीं होते, इनमें अभिनय किया जाता है। यथा—'बगुली', 'जाट जाटिन' आदि लोकनाट्यगीत देखे जा सकते हैं। कुछ नाट्यगीतों में कथोपकथनों का अभाव होता है। सम्बद्ध पात्रों की मूर्तियाँ बीच में रख ली जाती हैं। उनसे सम्बन्धित इतिवृत्त महिलाओं का दो पक्ष दोनों ओर से गाता है। उदाहरणार्थ 'सामा-चकवा' नामक लोकनाट्यगीत को देखा जा सकता है।

ये नाट्यगीत वस्तुतः बहुत छोटे होते हैं—प्रायः छः पंक्तियों से लेकर बत्तीस पंक्तियों के। संवादों की संख्या प्रायः पाँच से लेकर तेईस तक होती है। ये संख्याएँ घट-बढ़ भी सकती हैं। इन लोकनाट्य गीतों का आरम्भ प्रायः किसी ऐसी घटना के वर्णन या उपदेश दान से होता है, जो उनके इतिवृत्त पक्ष को विस्तार देता है। उदाहरणार्थ—बगुली लोकनाट्य गीत में बगुली के रूठ कर जाने का कारण पूछा जाता है, जिसके फलस्वरूप कथा का विकास होता है। "जाट जाटिन' लोकनाट्य गीत का प्रारम्भ उपदेश दान से होता है। मध्य में कथा का विकास मात्र होता है। अन्त प्रायः पुनरावृत्तिमूलक होता है और कथा-समाप्ति का संकेत देता है।

लोकगाथा—लोकगाथा को लोकसाहित्य के अन्तर्गत 'महाकाव्य' का सा गौरव प्राप्त है। शास्त्रीय महाकाव्य के सभी लक्षणों का अन्वेषण इन लोकगाथाओं में नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ये 'लोककाव्य' के अन्तर्गत हैं। पर वे चारित्रिक विशेषताएँ, जो 'मुक्तक' (गीत) एवं प्रबन्ध को एक दूसरे से पृथक् करती हैं, यहाँ भी वर्तमान होती हैं। उदाहरणार्थ 'लोकगीतों में जीवन के आंशिक रूप की ही अभिव्यक्ति हुई दीखती है, जबकि 'लोकगाथाओं' में जीवन का व्यापक रूप चित्रित होता दीखता है। इनके कथानक में विस्तार वैविध्य, प्रवाह एवं गाम्भीर्य, ये चारों तत्व वर्तमान होते हैं, जो शिष्ट साहित्य में भी 'महाकाव्य' की प्रधान शर्तें हैं।

महाकाव्य के लक्षणों को दृष्टिपथ में रखते हुए विचार करने पर स्पष्ट होता है कि लोकगाथाएँ सर्गबद्ध नहीं होतीं। वे प्रवाह शैली में प्रस्तुत की गई होती हैं, अर्थात् एक विशिष्ट शैली में प्रारम्भ होकर उनकी कथा का प्रवाह अन्त तक चलता रहता है। इनका प्रधान 'नायक' होता है, जो धीरोदात्त, गुणान्वित एवं पराक्रमी होता है। इनका कथानक प्रायः प्रख्यात सज्जनाश्रित होता है। इनका प्रारम्भ प्रायः नमस्क्रिया से होता है। बीच बीच में यत्र तत्र खलों की निन्दा एवं सज्जनों की प्रशंसा भी मिल जाती है। इनमें 'वीर', 'शृंगार' अथवा 'शान्त' रस प्रधान भाव से स्थित होता है एवं हास्य रसादि गौणभाव से। संध्या, सूर्योदय आदि के वर्णन आकस्मिक रूप से आते दीखते हैं।

उदाहरणार्थ **"लोरकाइन"** नामक मगही लोकगाथा को देखा जा सकता है। यह प्रवाह-शैली में प्रस्तुत लोक-महाकाव्य है। इसका नायक लोरिक है। यद्यपि वह क्षत्रिय नायक नहीं है, तथापि महाकाव्य के नायक के अधिकांश गुण उसमें वर्तमान हैं। नायकत्व की दृष्टि से उसे **"धीरललित"** माना जा सकता है। वह बलिष्ठ शरीर, सौंदर्य, पराक्रम प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि विभिन्न गुणों से मण्डित है। 'लोरिक' की कथा लोक जीवन में प्रख्यात है। उसका प्रारम्भ देव वन्दना से होता है। (यद्यपि प्रस्तुत संकलन में यह अंश हटा दिया गया है।) बीच में यत्र-तत्र भले-बुरे की प्रशंसा-निन्दा भी मिल जाती है। रसदृष्टि से यह 'वीर रस प्रधान है एवं 'शृंगार' 'हास्य' तथा 'शान्त' रस इसमें गौण भाव से स्थित हैं। संध्या, सूर्योदय आदि के सचेष्ट भाव से

किये गये वर्णनों का इसमें अभाव है। वे आकस्मिक रूप में कहीं आ जाएँ तो आ जाएँ। इनका नामकरण नायक के चरित्र को प्रधान मान कर हुआ है।

मगही कहावतों, मुहावरों एवं पहेलियों की विवेचना आगे मगही के 'प्रकीर्ण साहित्य' के अन्तर्गत प्रस्तुत की जायगी।

ऊपर संकलित शिल्प विधियों में प्राप्त मगही लोक-साहित्य की भाव राशि का अनुमान लगाना कठिन ही नहीं असंभव है। क्योंकि लोक साहित्य की भाव दिशाएँ शिष्ट साहित्य की तरह सीमित और उचित अनुचित के भेदाभेद में आबद्ध नहीं होतीं, सामान्यतया जीवन का प्रत्येक साधारण एवं महत्वपूर्ण क्षण उसमें मूर्त हो गया दीखता है। जीवन में सुख दुःख, राग विराग आदि के क्षण हमेशा परिलक्षित होते रहते हैं। इन क्षणों में सामान्यतः मानव की भावनाएँ पूर्णतः संवेदनशील हो जाती हैं और हर्ष या शोक से पूर्ण नमागत उद्‌गारों के रूप में फूट पड़ती हैं। सुख दुःख के इन क्षणों की न तो सीमा हो सकती है और न उनका वर्गीकरण ही किया जा सकता है। वे अनन्त हैं और उनके रूप भी अनन्त हैं। प्रकृति सुषमा को देखकर मानव-मन जहाँ विमुग्ध होता है वहाँ उसकी भयंकरता से संत्रस्त भी होता है। दैनंदिन जीवन की बहुत सारी घटनाएँ आनन्द, शोक, विस्मय और क्रोधादि का उद्रेक करने वाली होती हैं। फिर सामाजिक परिवेश में भी कई घटनाएँ ऐसी आती हैं जो मानव मन को तरंगित और उसकी वृत्तियों को गतिशील करती हैं। ऐतिहासिक घटनाओं एवं राजनीतिक परिवर्तनों के विषय में भी यही बात कही जा सकती है। लोक-साहित्य की ये विशेषताएँ मगही लोक साहित्य में भी पूर्णतः वर्तमान हैं और उसमें अभिव्यंजित व्यापक जीवनानुभव के रूप में परिलक्षित होती हैं। सामान्यतया मानव जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जो मगही लोक साहित्य में चित्रित होने से शेष रहा हो। यह अवश्य है कि इस चित्रण में हृदय की संवेदनाओं का ही एकछत्र साम्राज्य है और निर्गुण पदों को छोड़ प्रायः मस्तिष्क के चिन्तन से उद्‌भूत होने वाले चमत्कारिक तत्वों का वहाँ अभाव है।

मगही लोककथाओं में जो जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं उनका सम्बन्ध मुख्यतः तीन से है—

१ उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन में किसी वस्तु या घटना के धार्मिक महत्त्व का प्रतिपादन करते हैं,

२ उन स्थितियों के चित्रण में जो जीवन के नैतिक प्रश्न के उत्कर्ष पर प्रकाश डालते हैं एवं

३ उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन के मनोरंजन पक्ष से सम्बन्धित हैं। इन तीनों के उदाहरण स्वरूप 'तिनिया के मनतम', 'राजा के जग' एवं 'डपोर शंख' शीर्षक लोककथाओं का अवलोकन किया जा सकता है।

मगही लोकगीतों में अभिव्यक्त जीवन का पाट बहुत चौड़ा है। इनमें जहाँ लोक-जीवन का सामान्य सामाजिक धरातल वर्तमान है वहाँ उनके विशिष्ट सम्बन्धों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण भी उपलब्ध हैं, जहाँ मगही जन जीवन के अंध विश्वासों एवं रूढ़ियों की अभिव्यक्ति मिली है, वहीं उसकी धार्मिक अवस्थाओं का भी चित्रण हुआ है।

मगही लोककथागीतों एवं लोकगाथाओं में मगह के सामन्ती जीवन के कटु-मधुर अनुभव सुरक्षित हैं। जीवन का व्यापक अनुभव इसकी कहावतों एवं मुहावरों में भी सुरक्षित है। लोकनाट्यगीतों एवं बुझौवलों का मुख्य सम्बन्ध मगह जीवन के मनोरंजन प्रसंग से ही है, वैसे लोकनाट्यगीतों में पारिवारिक जीवनानुभव की समृद्ध थाती सुरक्षित है।

मगही लोक-साहित्य का वर्गीकरण

श्रुति परम्परा से प्राप्त सम्पूर्ण मगही लोक साहित्य सामग्री के वैविध्य को दृष्टिपथ में रखते हुए इसका निम्नांकित प्रकारेण वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है—
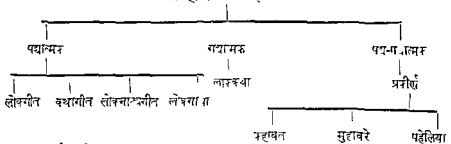
लोकगीत—लोकगीत लोककण्ठ से किस दिन किस क्षण फूटा यह बतलाना कठिन ही नहीं, आज असम्भवप्राय है। कहा जा सकता है कि जब से पृथ्वी पर मानव बसने लगा, तभी से उसके मुख से गीतों के बोल भी फूटने लगे। ये गीत उसके हर्ष विषाद जीवन-मरण आदि के साथ अभिन्न रूप से सुरक्षित होते रहे हैं। यह अवश्य है कि युग परिवर्तन के साथ आदिमानव के गीतों की बाह्य काया में भी परिवर्तन होती रही है पर उसके मूल भावों की व्यंजना में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। नैसर्गिक भावावेश के क्षणों में फूटनेवाले इन लोकगीतों की धारा विविध भाषाओं में प्राप्त परम्पराओं के रूप में अद्यावधि प्रवाहित होती चली आ रही है। इसकी गति अविच्छिन्न है। यह अनन्त काल तक प्रवाहित होती रहेगी।

लोक गीतों की भारतीय परम्परा

हमारा प्राचीनतम लिखित साहित्य वेद है। उनके पारायण से ज्ञात होता है कि विविध संस्कारों के अवसर पर लोकगान होता था। ये लोकगान 'गाथाओं' के नाम से प्रसिद्ध थे।[2] **पालि जातकों** में कहानियों के बीच बीच में गाथाओं के व्यवहार मिलते हैं, जैसे कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की अनेक लोककथाओं में आज भी देखा जा सकता है। जातक-गाथाओं के अध्ययन से प्रतीत होता है कि ये लोकगीतों के पूर्वरूप हैं। परवर्ती **महाकाव्य** तथा **पौराणिक** युग में भी हमें लोकगानों की विद्यमानता के प्रमाण मिलते हैं। आदिकवि वाल्मीकि ने अपनी "रामायण"

---

१ प्रस्तुत ग्रन्थ में इन्हीं वर्गों के अन्तर्गत मगही लोक साहित्य के कतिपय आदर्श नमूने प्रस्तुत किये गये हैं।

२. 'ब्राह्मण' और 'आरण्यक' ग्रन्थों में 'गाथाओं' का उल्लेख अनेक बार हुआ है।

में भगवान् राम के जन्म के अवसर पर गन्धर्वों के मधुर गान एवं नाचने-गानेवाले तथा बजाने वाले सूत, मागध एवं वन्दीजनों का उल्लेख किया है।[1] भागवतकार व्यासदेव ने भी श्री मद्भागवत में श्रीकृष्ण जन्म के अवसर पर रमणियों द्वारा सम्मिलित गान गाये जाने का वर्णन किया है।[2] बड़े होने पर भी श्रीकृष्ण व्रज की रमणियों के बीच स्वयं लोकगान गाते सुनते पाये जाते हैं।[3] इससे अनुमान होता है कि उस समय भी शुभ संस्कार एवं आनन्द विलास के अवसर पर लोकगीतों के गायन की प्रथा वर्तमान थी।

महाकवि कालिदास ने अपने 'रघुवंश' महाकाव्य में ग्रामीण स्त्रियों द्वारा महाराज रघु के यश गाये जाने का वर्णन किया है —

इक्षुच्छायानिषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम्।
आकुमारकथोद्‌घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः ॥[4]

अर्थात् "ईख की छाया में बैठी हुई धान की रखवाली करनेवाली किसानों की पत्नियों ने सबकी रक्षा करने वाले उन रघु महाराज की शूरता, उदारता आदि गुणों से प्रकट हुए यश का जिसकी चर्चा किशोर और बालक तक करते थे, गान किया।

परवर्ती महाकवियों में 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रणेता भारवि (६०० ई०)[5] एवं शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रणेता माघ (५५०-७०० ई०)[6] ने अपने महाकाव्यों में ऐसे वर्णन प्रस्तुत किये हैं—'धान के खेतों की रखवाली करती ग्रामीण वधुएँ इतनी मनोहर स्वर में गीत गाती थीं कि उन्हें (धान के पौधों को) खाने के लिए आये मृग-दल स्वर संगीत से विभोर होकर खाने की सुध बुध भूल जाते थे और यों ही खड़े रह जाते थे।"

प्राकृत युग में लोकगीतों की बड़ी उन्नति हुई। इसके प्रमाण राजा हाल या शालिवाहन के संग्रह "गाथासप्तशती" में मिलते हैं। इस संग्रह की अनेक गाथाएँ गीतिकाव्य के उत्कृष्ट नमूना के रूप में देखी जा सकती हैं[7]। अनेक स्थलों पर ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिसमें स्त्रियाँ

---

१ वाल्मीकिरामायण बालकाण्ड, श्लोक सं० १६-१७-१८।

२ भागवत दशम स्कन्ध।

३ भागवत दशम स्कन्ध।

४ रघुवंश सर्ग ४ श्लोक २०।

५ संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृ० ६२।

६ संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृ० ७२।

७ गेहिन्या महानसकर्ममसीमलिनितेन हस्तेन।
स्पृष्टं मुखमुपहसति चन्द्रावस्था गतं दयितः ॥

अर्थात् रसोई बनाते समय कालिख लगे हाथ से छूने के कारण कालिमा लगे गृहिणी के मुख को देख कर उसका स्वामी उसकी हँसी उड़ा रहा है—अहा ! अब तो चाँद में और तुममें कोई अन्तर ही न रहा !

अपनी थकान को हल्का करने के लिए श्रमगीत गाती हुई दीख पड़ती हैं। बारहवीं शताब्दी में प्रसिद्ध कवयित्री विज्जका ने धान कूटनेवाली महिलाओं का बड़ा ही मनहारी वर्णन प्रस्तुत किया है।[१] महाकवि श्री हर्ष ने स्त्रियों द्वारा जाता के साथ गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया है।[२] अपभ्रंश काल भी लोकगीतों की परम्परा से समृद्ध है। उस समय के अनेक काव्य-ग्रन्थों में नाना प्रकार की गाथाओं का उद्धरण उपलब्ध होता है।

"भविसयत्तकहा" में ऐसी अनेक गाथाएँ उपलब्ध होती हैं। स्त्रियों द्वारा अनेक मंगलमय अवसरों पर गीत गाये जाने का उल्लेख कई मध्ययुगीन काव्य-ग्रन्थों में भी मिलता है। यथा—महाकवि तुलसीदास ने स्त्रियों द्वारा मनोहर स्वर में गीत गाये जाने का उल्लेख किया है।[३] श्री रामचन्द्र जी के विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाली गाये जाने का भी उन्होंने उल्लेख किया है।[४]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकगीतों की भारतीय परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और वह कभी विच्छिन्न नहीं हुई है। उसका नमार्गल प्रवाह आज भी उसी सरलता के साथ जारी

---

१ विलासमसृणोल्लसन्मुसललोलदोः कन्दली ।
परस्परपरिस्खलद्वलयनिः स्वनोद्‌बन्धुरा ॥
लसन्ति कलहुङ्कृति प्रसभकम्पितोरः स्थल-
त्रुटद्गमकसङ्कुलाः कलमकण्डनीगीतयः ।

अर्थात् धान कूटने वालियों का गाना बड़ा ही मनोहारी प्रतीत होता है। वे बड़ी सुन्दरता के साथ हाथ में मूसल लिए हुई हैं। मूसल के उठाने तथा गिराने के कारण चूड़ियाँ खनक रहीं हैं। उन चूड़ियों की खनक के साथ मिलकर वह गान और सुन्दर हो गया है। जब वे मूसल गिराती हैं, तब उस समय उनके मुख से हुंकारी निकल पड़ती है और वक्षस्थल कम्पित हो जाते हैं। वही गान की सुरभि बन कर छा रहा है।

२ श्री हर्ष नैषधीयचरित सर्ग २, श्लो० ८५।

३ चलीं संग लइ सखी सयानी।
गावत गीत मनोहर बानी॥

४. नारिवृन्द सुर जेंवत जानी।
लगीं देन गारी मृदु बानी॥

है।[1] "मगही लोकगीत" भी इसी समृद्ध परम्परा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रवहमान हैं।

मगही लोकगीतों का वर्गीकरण

अन्य भाषाओं की भाँति मगही लोकगीतों में भी विषय दृष्टि से एक वैविध्य व्यापक स्तर पर दीख पड़ता है। इसे दृष्टिपथ में रखते हुए डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने मगही लोकगीतों का निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया है[2]

१. संस्कार गीत—सोहर, मुंडन, जनेऊ, विवाह आदि।
२. गाथा गीत—राजा भरथरी, टोलन आदि।
३. ऋतु गीत—फगुआ या होली, चैता आदि।
४. व्यवसाय गीत—रोपनी-सोहनी के गीत, जँतसार, धोबियों के गीत आदि।
५. त्योहार या पर्वगीत—तीज, जितिया आदि।
६. भजन या स्तुतिगीत—प्रभाती, शीतला माता, निर्गुण आदि के गीत।
७. लीला गीत—झूमर, टोमरच आदि।
८. वर्गीय गीत—बिरहा, पँवड़िया के गीत आदि।
९. जोग टोना और मान के गीत—जैसे : सपविषआ के विष झाड़ने के गीत, भूत-प्रेत झाड़ने के गीत।
१०. विशिष्ट गीत—पिड़िया के गीत, पानी माँगने के गीत आदि।
११. लोरियाँ—बच्चों को सुलाने मनाने के गीत।
१२. बालक्रीड़ा गीत—बालमनोरंजन सम्बन्धी गीत।
१३. तीर्थ गीत—जगन्नाथपुरी, गंगा जी आदि के गीत।
१४. सामयिक गीत—रेलगाड़ी, नए आभूषण-फैशन सम्बन्धी, खादी, गांधी जी, स्वराज आदि सम्बन्धी गीत

---

१. लोकगीतों की इस प्रवहमान भारतीय परम्परा पर टिप्पणी करते हुए लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान प० रामनरेश त्रिपाठी ने कहा है—"वाल्मीकि, भागवतकार, वाजिक और तुलसीदास, इनमें से किसी ने यह नहीं बतलाया कि वे गीत कौन-से थे। अवश्य ही वे वही ग्रामीण गीत रहे होंगे, जो आज भी हैं। समय के अनुसार उन्होंने भाषा का जामा बदल लिया है। जैसे—हिन्दू लोग पहले पीताम्बर ओढ़ते थे, मुसलमानी राज में कुरता पहनने लगे और अब अंग्रेजी राज्य में कोट पहनते हैं। पर कपड़ों के अन्दर शरीर है हिन्दू का ही। इसी प्रकार गीतों का सिलसिला प्राचीनकाल से एक सा चला आ रहा है। भाव पुराने हैं, भाषा नयी है।—कविता कौमुदी — भाग-५।

२. "मगही संस्कार गीत"—निवेदन (पृ० ख)

मगही लोकगीतों का उपर्युक्त वर्गीकरण अपनी जगह सही और उपयोगी है। पर उसमें फैलाव अधिक आ गया है। उसके आलोक में ही इनका वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक रूप में या प्रस्तुत किया जा सकता है। वर्गीकरण का आधार उनके उद्देश्य विशेष का दृष्टिगोचर होने वाला प्रामुख्य है।

मगही लोकगीत

संस्कारगीत	क्रियागीत	ऋतुगीत	देवगीत	बालगीत	विविधगीत
सोहर, मुंडन, जनेऊ विवाह आदि	जँतसार रोपनी आदि	होली चैती आदि	पौराणिक देवता सम्बंधी, ग्राम देवता सम्बन्धी	लोरी, खेलगीत, चमचढ़ा आदि	झूमर, बिरहा, अलचारी, गोदना, निर्गुण, सामयिक आदि

मगही लोकगीतों के वर्ण्य

संस्कार गीत—मगही लोकगीतों के वर्ण्य विषय का हल्का संकेत उनके उपर्युक्त वर्गीकरण से ही मिल जाता है। मगही संस्कार गीतों की पृष्ठभूमि जहाँ पारम्परिक शास्त्रीय रूढ़ि विधानों से सम्पृक्त है, वहाँ लोक मंगल की भावना ने भी उनको व्यापकता प्रदान की है। 'संस्कारों' का भारतीय चिन्ताधारा में महत्वपूर्ण स्थान है। वे जीवन के विभिन्न अवसरों को महत्व एवं पवित्रता प्रदान करते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि जीवन के विकास का प्रत्येक चरण केवल शारीरिक क्रिया नहीं है। उसका सम्बन्ध मनुष्य की बुद्धि, भावना और उसकी आत्मिक अभिव्यक्ति से है। वे अनुपेक्षणीय हैं। यदि व्यक्ति इनके प्रति उदासीनता या अवज्ञा प्रदर्शित करने लगता है, तो फिर ये संस्कार उसकी तन्द्रा और अवज्ञा का निराकरण करते हैं एवं जीवन के विकास के क्रमों के महत्त्व का स्पष्टीकरण सामूहिक तथा सामाजिक स्तर पर करते हैं। संस्कारों के अभाव में जीवन की घटनाएं शरीर की दैनिक आवश्यकताओं और आर्थिक व्यापारों के समान अनाकर्षक, चमत्कारहीन और जीवन के भावुक संगीत से रहित हो जाती हैं। संस्कारों की एक विशेषता यह है कि उनके साथ मूल्य गर्भित विश्वास और विचार लगे रहते हैं। इन्हीं के लिए मनुष्य जीना चाहता है। इन संस्कारों से सम्बद्ध लोकगीतों में समाज और व्यक्ति की आशाओं आकांक्षाओं, जीवन की समस्त विचारधाराओं एवं गतिविधियों की अभिव्यक्ति को पूर्ण अवकाश प्राप्त होता है।

'सोहर'[1] में शिशु-जन्म से सम्बद्ध गीत गाये जाते हैं। ये गीत आनन्द-उछाह की भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं। इसका एक कारण यह है कि सृष्टि में मानव के अमर होने और व्यापकता प्राप्त करने की बलवती कामना सन्तान की परम्परा द्वारा ही फलवती होती है। मगही सोहरों के वर्ण्य विषयों का क्षेत्र अति व्यापक है। पति-पत्नी के प्रेम-मिलन, गर्भ की स्थापना, गर्भिणी की विविध स्थितियों, शिशु जन्म एवं तत्सम्बन्धी उत्सव, प्रसूति के नैहर एवं ससुराल के आनन्द व्यवहार के सुन्दर विश्लेषण आदि इन सोहर गीतों में उपलब्ध होते हैं।

संस्कारगीतों में कुछ तो ऐसे होते हैं, जिनका आनुष्ठानिक महत्व होता है, और अनुष्ठान विशेष के साथ उनका गाया जाना अनिवार्य होता है। पर अनेक ऐसे होते हैं, जो अवसर विशेष पर सामान्य रूप से गाये जाते हैं। जहाँ तक मगही सोहर गीतों का प्रश्न है, इनका विशेष आनुष्ठानिक महत्व नहीं है। अधिकांश सोहर जन्म के प्रसंग में किसी भी अवसर पर गाये जाते हैं। कुछ ही सोहर ऐसे निकलेंगे, जिनका संबंध किसी विशेष

१ 'सोहर' शब्द की व्युत्पत्ति के मूल में संस्कृत का "शुभ" धातु माना जाता है, जिससे शोभन, शोभा आदि तत्सम शब्द बने हैं। हिन्दी में "सोहना", "सुहावना", भोजपुरी में "सोहल", मगही में "सुहाना", व्रज में "सोभर" आदि इसके तद्भव रूप हैं। इनका व्यवहार "अच्छा लगने एवं 'सुहावना लगने" के अर्थ में किया जाता है। "सोहर" जन्मोत्सव के अवसर पर गाये जाने वाले गीत हैं। अतः "सोहर" को बहुत शुभ एवं सुहावना मानना उचित ही है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भागों में "सोहर" के अन्य पर्याय भी प्रचलित हैं। यथा सोभर, सोहला, सोहिलो, सोभिलो, सोहिले आदि। संस्कृत के "शोकहर" शब्द से भी 'सोहर" की व्युत्पत्ति मानी जा सकती है। यथा—शोकहर सोअहर-सोहर। सन्तानाभाव के शोक को हरण करने वाले उक्त समय प्रसंग से ही इसका सम्बन्ध है। इसीलिए "सोहर" का एक पर्याय "मंगल" गीत भी है। यथा—मगही गीत की निम्नांकित पंक्ति में 'मंगल" का व्यवहार "सोहर" के लिए हुआ है—

आजु ललना के बधइया,
गावहूँ सखि मंगल हे।

'रामचरित मानस' में रामचन्द्र के जन्म के अवसर पर 'मंगल गीत' गाये जाने का उल्लेख महाकवि तुलसीदास ने किया है।—

गावहि मंगल मंजुल बानी,
सुनि कलरव कलकंठ लजानी।

यहाँ "मंगल" शब्द का व्यवहार "सोहर" के अर्थ में ही हुआ है"

मगध में पुत्र-जन्म के अवसर पर "नृत्य" के साथ "सोहर' गाये जाने की भी प्रथा है। "नृत्य-संयुक्त सोहर-गान" में भाग लेने वाले व्यवसायी कलाकार होते हैं। यथा—

(१) पँवरिया (२) बक्खो बखाइन और (३) खेलनी।

इनके "सोहर गीतों" में प्रायः भगवान रामचन्द्र के जन्म का उल्लेख रहता है यथा—

"सिरी रामचन्दर जलम लेलन चैत रमनवमी।"

यह पंक्ति 'टेक' के रूप में उनके गीत में प्रयुक्त होती है।

'अवसर' 'विधि' या 'अनुष्ठान' से है। यथा—प्रसववेदना, नारछटाई, सूती के स्नान, छठी, ओख अँजाई आदि विधियों से सम्बद्ध गीत। पर इन्हें भी अनिवार्य रूप से उसी अवसर विधिया अनुष्ठान के समय नहीं गाया जाता। सोहर गीत तो मंगलगान के रूप में जन्मोत्सव संबंधी सभी अवसरों, विधियों एवं अनुष्ठानों के समय सामान्य रूप से गाये जाते हैं।

"चूडाकरण संस्कार" हिन्दू समाज के सोलह संस्कारों में एक है। लोक जीवन में यही संस्कार 'मुण्डन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस अवसर पर बालक के सिर के बाल प्रथम बार छीले जाते हैं। मुण्डन के समय मुण्डन सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। एक ओर पुरोहित निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान मन्त्रोच्चार के साथ चलाते हैं, दूसरी ओर मुण्डन गीत चलते हैं। इन गीतों के वर्ण्य विषय मुंडन-सम्बन्धी विधि विधानों से भरे होते हैं। कहीं बालक मुंडन की कामना व्यक्त करते पाये जाते हैं, कहीं माता-पिता की ओर से यह कामना व्यक्त की जाती है। कहीं मुंडन के विधान को सम्पन्न करने के लिए माता-पिता विविध "पॅवनियों,' (ब्राह्मण, नाऊ, माली, कुम्हार बढ़ई, धोबी आदि) का आह्वान करते पाये जाते हैं, कहीं बदले में ये सभी नेग लेने के लिए आतुर दिखाई पड़ते हैं; कहीं परिजन "मुंडन' की निर्विघ्न समाप्ति के लिए देव-स्तुति करते दिखाई पड़ते हैं, कहीं ननदभावज के बीच "नेग" के प्रसंग पर मीठी चुटकियाँ चलती पायी जाती हैं और कहीं मुण्डन के मंगलमय होने के लिए टोने-टोटके के भावों की भली व्यंजनाएँ की जाती हैं।

शिशुजन्म के बाद तीसरा महत्त्वपूर्ण संस्कार "यज्ञोपवीत" (जनेऊ) का है। हिन्दू समाज में उपनयन संस्कार के अवसर पर शास्त्रीय विधि के अनुसार बालक को 'यज्ञोपवीत' धारण कराया जाता था। इस संस्कार के साथ एक आस्था जुड़ी होती थी कि जन्म से मनुष्य शूद्र होता है और यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही वह 'द्विज' बनता है[१]। फिर इस संस्कार के बाद ही बालक गुरु के पास विद्याध्ययन के लिए भेजा जाता था।[२] यह आस्था और परम्परा अद्यावधि चल रही है।

'वाल्मीकि रामायणम्' में भी राम के जन्म के अवसर पर गंधर्वों के गाने एवं अप्सराओं के नाचने का उल्लेख हुआ है। यथा—

जगु कलच गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरसो गणा।
देवदुन्दुभयो नेदु पुष्पवृष्टिश्च खात्पतत्॥
(वा० रा० बालकाण्ड—१८ १८)

मगध में पुत्र-जन्म के अवसर पर नृत्य संयुक्त-सोहर गान के आयोजन की प्रथा प्राचीन काल का ही अवशेष है। यह प्रथा अब क्रमश उठ रही है। इससे हमारा समाज इस प्रसंग में उपर्युक्त व्यवसायी जातियों द्वारा प्रदान किये जाने वाले लोक साहित्य के महत्त्वपूर्ण दाय से क्रमश वंचित हो रहा है।

१ जन्मना जायते शूद्र संस्कारात् द्विज उच्यते।

२ उपनीयते गुरुसमीपं प्राप्यते अनेनेति उपनयनम्।

मगध क्षेत्र में यज्ञोपवीत सस्कार या जनेऊ म शास्त्रीय विधि को बहुत प्रधानता दी जाती है। जनेऊ गीतों में इन विविध विधि विधानो का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है। इनमें कहीं बालक जनेऊ धारण करने की इच्छा व्यक्त करता हुआ पाया जाता है और कहा माता पिता आदि उचित समय पर जनेऊ देने का आश्वासन देते देखे जाते हैं, कहा जनेऊ के लिए मण्डपाच्छादन के दृश्य और कार्यक्रमो का वर्णन होता है, कहा विविध "पँवनिएँ" जनेऊ के विधान मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित होते देखे जाते हैं, कहा बालक ब्रह्मचारी वेश म सुसज्जित होता हुआ दिखाया जाता है कही भिक्षाटन करता हुआ विद्यार्जन के लिए काशी काश्मीर के यात्रा-पथ पर अग्रसर होता हुआ दिखाया जाता है। प्राय इन गीतों म विविध विधि विधाना के प्रति परिजनों की क्रियाओ एव प्रतिक्रियाओ का यथार्थ चित्र उपलब्ध होता है। इनम अधिकाश स्थलो पर बालक विशेष के स्थान पर *श्रीराम श्रीकृष्ण आदि पौराणिक व्यक्तियों के जनेऊ सस्कार का उल्लेख* किया जाता है। वस्तुत इनके नाम भर लिए जाते हैं अभिप्राय बालक विशेष से ही होता है। दूसरे शब्दों में 'विशेष का नाम लेकर सामान्य का ही बोध कराया जाता है। बहुत सभव है कि इन सास्कृतिक नामो को सबद्ध करने के मूल म यज्ञोपवीत कराये जा रहे बालक के प्रति मगल-कामना अन्तर्निहित हो।

जन्मोपरान्त परिलक्षित होने वाले इन सस्कारो के पश्चात् **"विवाह सस्कार"** सर्वाधिक प्रधान एव महत्त्वपूर्ण है। यह सस्कार ससार की सभ्य एव असभ्य सभी जातियों में बडे उत्साह के साथ सम्पन्न किया जाता है। जन्म मुडन जनेऊ आदि की ही भाति 'विवाह-सस्कार" मे भी दोनो *प्रणालियाँ चलती हैं*—(१) **वैदिक एव शास्त्रोक्त प्रणाली**। इसका सम्पादन पुरोहित कराते हैं। एव (२) **लौकिक प्रणाली**। इसके सम्पादन में प्रधान हिस्सा महिलाओ का रहता है। इसमे पुरुष लोग भी भाग लेते हैं यद्यपि स्त्रियो से उनका लौकिक आचार कम होता है। सख्या की दृष्टि मे लौकिक आचार वैदिक आचारो से बहुत अधिक हैं। वस्तुत वैदिक आचारो को धुरी माना जा सकता है, उस धुरी के चारो ओर लोकाचारो का सश्लिष्ट ताना बाना निर्मित होता है। प्रत्येक लोकाचार के साथ उससे सम्बद्ध गीत गाये जाते हैं। इन गीतो का आनुष्ठानिक महत्त्व होता है। पर इनके अतिरिक्त ऐसे गीतो की सख्या भी अनन्त है जिनमें किसी देवता के जीवन वर्णन द्वारा लोक जीवन का प्रतिनिधित्व हुआ है अथवा वर वधू के प्रणय सम्बन्धो एव अन्य *प्रसगो का सामान्य रूप में उल्लेख हुआ है। आनुष्ठानिक महत्व वाले गीत तो अनुष्ठान विशेष* के साथ अवश्य गाये जाते हैं पर सामान्य विवाह गीत विवाह म सभी अवसरो पर सामान्य रूप से गाये जाते हैं।

विवाह-गीतों को निम्नाकित वर्गो मे रखा जा सकता है—

(१) अनुष्ठान सबधी गीत,

(२) सामान्य गीत,

(३) सामान्य जीवन की झाकी देनवाले देवगीत

(४) देवगीत,

(५) विसर्जन।

(१) अनुष्ठान सम्बन्धी गीत—कहा जा चुका है कि अनुष्ठान सम्बन्धी गीतों का उतना ही महत्त्व होता है, जितना किसी शास्त्रीय विधि के साथ उच्चरित होने वाले मन्त्रों का। कारण, विविध अनुष्ठानों के अवसर पर उनसे सम्बद्ध गीतों का गाया जाना अनिवार्य होता है। इन अनुष्ठान गीतों में कहीं तो अनुष्ठान विशेष में किए जाने वाले कृत्यों एवं विधियों के साथ सामान्य पारिवारिक जीवन की झाँकियाँ मिलती हैं और कहीं अनुष्ठान विशेष का उल्लेख मात्र होता है। अनेक अनुष्ठान गीत टोने-टोटके के रूप में गाये जाते हैं और उनमें तत्सम्बन्धी वर्णन मिलते हैं। यथा—स्नान गीत, जोग के गीत आदि। बहुत से ऐसे अनुष्ठान गीत भी मिलते हैं, जिनमें कहीं अनुष्ठान विशेष की क्रियाओं का उल्लेख नहीं मिलता पर उनमें उत्कृष्ट मानवीय भावनाओं का निरूपण मिलता है। कुछ अनुष्ठान गीत ऐसे होते हैं, जो वर और कन्या के घर समान रूप से गाये जाते हैं, पर कुछ ऐसे होते हैं जो केवल वर के घर में अथवा कन्या के घर में गाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि अनेक विधि विधान वर और कन्या के घर में सामान्य रूप होते हैं। परन्तु कई विधान ऐसे हैं, जो केवल वर के घर सम्पन्न होते हैं और कई केवल कन्या के घर सम्पन्न होते हैं। तदनुकूल ही दोनों के घर में गाये जाने वाले गीतों में अन्तर होता है।

२ सामान्य गीत—अनेक विवाह गीत ऐसे हैं, जो सामान्य रूप से विवाह के सभी अवसरों पर गाये जाते हैं। इनमें गार्हस्थ्य जीवन के बहुरंगे मनोरंजक चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। इनमें भावों के वैविध्य के साथ ही विभिन्न शैलियों की कोमल संयोजना भी दिखाई पड़ती है। सामान्य गीतों की भी तीन श्रेणियाँ मिलती हैं—(१) वे, जो वर और कन्या के घर में सामान्य रूप से गाये जाते हैं। इनमें दम्पति के मिलन की पृष्ठभूमि, नवमिलन, हास-परिहास, आनन्द-विनोद आदि से सम्बंधित भावनाओं के वर्णन को प्रमुख स्थान दिया जाता है। (२) वे, जो केवल वर के घर में गाये जाते हैं। इनमें करुण भावों की छाया नहीं दिखाई पड़ती। सर्वत्र संयोग-शृंगार, हास-परिहास, आनन्द उत्साह आदि के प्रसंगों की सुन्दरतम अभिव्यक्ति मिलती है। (३) वे, जो केवल कन्या के घर में गाये जाते हैं। इनमें मूल रूप से करुण भावधारा प्रवाहित रहती है। माता-पिता के लिए वर के चुनाव की समस्या, चुनाव होने पर दहेज की समस्या और फिर अन्ततः कन्या के विछोह की वेदना आदि के वर्णन से सारे गीत तरलित रहते हैं।

३. सामान्य जीवन की झाँकी देने वाले देवगीत—इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले गीतों में दैविक एवं लौकिक दोनों भावनाओं की व्यंजना मिलती है। इनमें एक ओर जहाँ किसी पौराणिक आख्यान एवं देवी-देवता के नामों का उल्लेख रहता है, वहाँ दूसरी ओर सामान्य मानवीय भावनाओं, विधि-विधानों, प्रथाओं-अनुष्ठानों आदि का उल्लेख रहता है। देवताओं के जीवन वर्णन द्वारा सामान्य लोक-जीवन की अभिव्यक्ति ही इन गीतों का प्रमुख उद्देश्य होता है।

(४) देवगीत—विवाह के अवसर पर अनेक ऐसे गीत गाये जाते हैं, जिनका उद्देश्य विविध देवताओं की स्तुति होता है। इन गीतों की भी दो श्रेणियाँ हैं—(१) प्रतिबन्धक अनुष्ठान गीत। इनमें उन प्राकृतिक शक्तियों एवं मानवी दुष्टताओं को प्रसन्न करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है, जिनसे किसी न किसी रूप में अनुष्ठान में बाधा पहुँचने का भय रहता है। यथा-आँधी, पानी, बतास, चोटी, मक्खी, लड़ाई, झगड़ा आदि। (२) स्तुति गीत—इनमें विवाह आदि शुभ

संस्कारों की सफलता के लिए विविध देवताओं को आमन्त्रित किया जाता है । इस आह्वान का उद्देश्य यही है कि वे रक्षक बन कर मंगलित कार्यों का निर्विघ्न समाप्त होने दें । यथा—शिव, हनुमान, जगन्नाथ, सन्ध्या आदि ।

(५) विसर्जन गीत—वैवाहिक अनुष्ठानों के अन्त में विसर्जन गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में वर वधू के लिए आशीर्वाद एवं मंगलकामनाएँ व्यंजित होती हैं । साथ ही इनमें देवताओं के प्रति धन्यवाद तथा गुरुजनों के प्रति बधाई की भावना अभिव्यक्त होती है ।

संस्कार गीतों में विवाह गीत के पश्चात् 'मृत्यु गीत' भी उल्लेख्य हैं । हिन्दुओं के षोडश संस्कारों में यह भी एक है । मृत्यु संस्कार में शास्त्रीय एवं लौकिक दोनों अनुष्ठान होते हैं, पर गीतों में इनका वर्णन नहीं होता । कारण, संभवतः यह है कि इनमें 'शोक' का भाव इतना गहरा होता है कि गीत प्रस्फुटित ही नहीं हो पाता । पर मृत्यु के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ निर्गुण गीत अछूत वर्ण के लोगों में प्रचलित हैं । इन गीतों में आत्मा-परमात्मा का मिलन, प्रिया प्रियतम के संबंध के लौकिक दृष्टान्तों द्वारा कराया गया है । इनमें संसार से विदाई का दृश्य अत्यन्त कारुणिक रूप में प्रस्तुत हुआ है । कहीं जाने वाली आत्मा का विषाद नहीं दर्शाया गया है । प्रायः प्रियतम-मिलन के लिए ससुराल रूपी बैकुंठ जाती आत्मा उत्कंठित और प्रसन्न दीख पड़ती है । सद्‌गुरु सच्ची राह दिखाते हुए पाये जाते हैं । प्रायः सभी गीतों में कबीरदास या अन्य सन्त कवि का उल्लेख सद्‌गुरु के रूप में होता है ।

क्रियागीत—मगही लोकगीतों का दूसरा प्रमुख वर्ग "क्रिया गीत" (Action song) का है । क्रिया गीत वे हैं जिन्हें किसी 'क्रिया' के साथ गाया जाता है । इन गीतों के उद्देश्य दो हैं—

(१) क्रिया करते समय शरीर में थकान का अनुभव न होने देना तथा

(२) क्रिया के साथ मनोरंजन करते चलना । इस वर्ग में मुख्यतः तीन श्रेणियों के गीत उपलब्ध होते हैं—

क. जँतसार

ख. रोपनी और

ग. सोहनी

इन तीनों गीत श्रेणियों में करुण रस की प्रधानता होती है । मगही में जँतसार गीतों की संख्या बहुत है, पर रोपनी-सोहनी के गीतों की संख्या कम । इसका कारण यह है कि रोपनी-सोहनी के अवसर पर भी 'जँतसार' गीत बहुलता से गाये जाते हैं । वर्ण्य विषय की दृष्टि से भी तीनों में बहुत अधिक सादृश्य है ।

'जँतसार'—का अर्थ होता है "जाँते का गीत" । चक्की या जाँता चलाते समय जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'जँतसार' कहते हैं । इनमें पीसनेवालियों के मन को प्रेम, करुणा और उदारता में भिगो कर कुटुम्बियों के अपव्यवहार के कारण पैदा हुए विक्षोभ को निकालने की चेष्टा भरी रहती है । इन गीतों में शृंगार-वर्णन का अभाव नहीं होता, फिर भी नारी-हृदय की वेदना, कसक, टीस आदि की व्यंजना प्रधानतया वर्तमान रहती है । करुण रस के प्रायः सभी प्रसंग इनमें वर्णित होते हैं । पुत्रहीना वंध्या, विरहा, विरहिणी, उपेक्षिता आदि सभी नारी-वर्गों

की मनःस्थिति का चित्रण इन गीतों में बड़ी सहजता से होता है। 'जँतसार' के इन गीतों में छोटी-छोटी कथाएँ धागे में फूलों के समान गुँथी होती हैं। ये गीत उत्तेजक नहीं होते, बल्कि बहुत कोमल, मधुर, और चिरस्थायी प्रभाव छोड़ने वाले होते हैं। रात्रि के पिछले प्रहर में जाँते की घर्-घर् स्वर के साथ मिलता हुआ नारी-कण्ठ-स्वर बड़ा ही मधुर प्रतीत होता है।

'रोपनी' के गीत धान रोपते समय गाये जाते हैं। इन गीतों के गाने में भी जँतसार गीतों की भाँति थकान को विस्मृत करने एवं मनोरंजन करते हुए लगन के साथ काम करने की भावना सन्निहित रहती है। धान रोपने का कार्य प्रायः मुसहर, चमार आदि जातियों की स्त्रियाँ करती हैं। ऊपर से प्रायः वर्षा होती रहती है, धान के खेतों में पानी भरा रहता है, चारों ओर हरियाली और कीचड़ का दृश्य छाया रहता है। ऐसे समय में ये महिलाएँ 'धनरोपनी' करती हुई गीत गाती हैं। 'रोपनी' का कार्य घर से बाहर खेत में होता है। अतः स्त्रियाँ इन गीतों में प्रायः ऐसे ही प्रसंगों को प्रस्तुत करती हैं, जिनमें पुरुष स्त्री से छेड़-छाड़ करता है और स्त्री उसे फटकारती है। इसके अतिरिक्त वे इन गीतों में नारी हृदय के अनेक सुकुमार भावों को भी उनकी वेदना और गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों के साथ व्यक्त करती हैं।

'सोहनी' के गीत खेतों में उत्पन्न व्यर्थ की घासों और पौधों को काट कर अलग करने के समय गाये जाते हैं। खेतों से व्यर्थ की घासों और पौधों को काट कर अलग निकालने को ही 'सोहनी' कहते हैं। इस वर्ग के गीतों की एक विशेषता यह होती है कि ये प्रायः सक्षिप्त कथानकों के साथ होते हैं। इनका आकार अन्य गीतों से बड़ा होता है। इसी कारण से इनको 'कथागीतों' के वर्ग में भी रखा जा सकता है। मगही 'कथागीत' में 'चनिया या 'भागवत' आदि नायिकाओं से जो सम्बद्ध गीत हैं, वे सोहनी के अवसर पर भी गाये जाते हैं। 'सोहनी' के गीतों में सास-बहू का परस्पर दुर्भाव वर्णित है, तो कहीं पति का पत्नी के प्रति अविश्वास; कहीं स्वेच्छाचारी शासकों की बर्बरता का चित्रण है, तो कहीं विदेशी शासक मुगलों के द्वारा भारतीय नारी के सतीत्वहरण का और इन भ्रष्टाचार लिप्त शासकों से अपने सतीत्व की रक्षा के प्रयास वर्णित हैं। रसात्मक दृष्टि से जँतसार के गीतों की ही नाईं ये बड़े कारुणिक होते हैं।

ऋतुगीत— मगही लोकगीतों का तीसरा प्रमुख वर्ग ऋतुगीतों का है। विविध ऋतुओं में भिन्न भिन्न शैली के गीत गाये जाते हैं। इनमें तदनुरूप भाव-परिवर्तन भी पाया जाता है। यथा— वसन्त ऋतु में **'होली'** और **'चैती'** गाये जाते हैं और वर्षाऋतु में **'बरसाती'** और **'कजली'**। **'होली'** गीत होली पर्व के अवसर पर गाये जाते हैं, जो फागुन महीने में पूर्णिमा परिवा को मनाया जाता है। इस महीने के नाम पर ही इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों की दूसरी संज्ञा **'फाग'** या **'फगुआ'** भी है। 'होली' के इन गीतों में पारस्परिक सम्मिलन, मैत्री, हर्ष उल्लास और मस्ती को अभिव्यंजित करने वाले भावों की ही प्रधानता होती है। राग-रंग का चित्रण तो पूरे गीत में छाया होता है। इस क्रम में लौकिक अथवा देव-चरित्रों के माध्यम से एक ही प्रकार की भाव व्यंजना एवं कार्य-व्यापार प्रदर्शित किए जाते हैं। कहीं लौकिक पात्राएँ एवं पात्र अबीर-गुलाल के साथ रास रंग में रत दिखाई पड़ते हैं, तो कहीं राधा-कृष्ण सोल्लास फाग खेलते दृष्टिगोचर होते हैं, कहीं शिव और गौरी के बीच 'होरी' मची दीखती है, तो कहीं राम

और सीता होली के रंग में रंगे दिखाई पड़ते हैं। इन सभी में शृंगार भाव को ही प्रमुखता दी जाती है। रंग गुलाल के साथ शृंगार का इन गीतों में अपूर्व सामंजस्य दिखलाया गया है। इनमें कहीं स्वकीया का प्रेम दर्शाया गया है, तो कहीं परकीया का। पर सर्वत्र उल्लास एवं हर्ष से संवलित भावों को ही प्रश्रय दिया गया दीखता है। 'होली' के इन गीतों को गाने की दो विधियाँ प्रचलित हैं—

१ पहली विधि, जिसमें गायक एक दल बना कर ढोल कभी या खरताल के साथ मस्ती में झूम झूम कर गाता है।

२ दूसरी विधि जिसमें अगुआ के गवैये दो दलों में विभक्त होकर बैठ जाते हैं। एक व्यक्ति के हाथ में ढोलक रहता है और कुछ अन्य लोगों के हाथ में 'झाँझ' या 'झाल'। कुछ लोग जोड़ी लेकर भी बजाते हैं। दोनों दलों में एक एक अगुआ होता है और गेय संवाद शैली में 'होली' का गायन चलता रहता है।

'चैती' गीत मगही में चैत मास में गाये जाते हैं। इन गीतों में वसन्त की मस्ती तथा उमंग से भरी रंगीली भावनाओं का अनोखा सौंदर्य अंकित होता है। इनमें माधुर्य एवं रसमयता का अद्भुत सम्मिश्रण द्रष्टव्य है। यह चैत मास भी विचित्र है। प्रारंभ से अन्त तक इसमें चतुर्दिक पर्वों, उत्सवों एवं मेलों का आयोजन होता रहता है।

'चैती' गीत दो प्रकार के होते हैं—

क घाटो चैती एवं

ख साधारण चैती।

'घाटो' चैती के गायक दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। गीत के साथ ढोल और झाल बजाये जाते हैं। पहला एक दल एक पंक्ति गाता है, तो दूसरा दल उसके 'टेक' पद को उच्च स्वर में बल देता जाता है। इस प्रकार 'घाटो' चैती के गायन में प्रत्येक दल को किंचित् विराम मिल जाता है। पहला दल जिस स्वर से गाता है, दूसरा दल उससे उच्च स्वर में 'टेक' पद गाता है। जब गाने का अन्त होने लगता है, तब गाने वाले उच्चतम स्वर का प्रयोग करने लगते हैं। गवैये और श्रोता, दोनों का जोश पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। फिर एकाएक गाने की समाप्ति होती है। 'साधारण चैती' को या तो केवल एक गायक ढोल और झाल के साथ गाता है या एक समूह बना कर कई एक गायक एक साथ गाते हैं।

'चैती' के इन गीतों में प्रेम के विविध स्वरूपों की भाव-भरी व्यंजनाएँ सम्पन्न हुई हैं। इनमें संयोग शृंगार को विशेष स्थान मिला है। कहीं चैत मास में अनुभूत आलस्य का वर्णन हुआ है, तो कहीं राधा कृष्ण एवं गोपियों के प्रेम-सम्बंधों का विश्लेषण किया गया है, कहीं राम-सीता का आदर्श दाम्पत्य प्रेम दर्शाया गया है, तो कहीं पति-पत्नी का प्रेम-कलह और मिलन विद्रोह वर्णित हुआ है, कहीं राम और उनके भाइयों के बीच का नैसर्गिक स्नेह दिखलाया गया है, कहीं स्वकीया और परकीया प्रेम के विविध रूप दर्शाए गये हैं। चैती गीतों में प्रायः लघु कथानकों के माध्यम से ही उपर्युक्त भाव-व्यंजनाएँ सम्पन्न हुई हैं?

'चेती' गाने की एक विशेष शैली होती है। इस वर्ग के गीत की प्रत्येक पक्ति के प्रारंभ मे 'हो रामा' का प्रयोग होता भी है और कभी नहीं भी होता है। 'घाटो' और 'साधारण' दोनों चैती मे ऐसा सामान्य रूप से होता है। दूसरी पक्ति के प्रथम दो पदो की पुनरावृत्ति उस पक्ति के गायन की समाप्ति पर ि रि की जाती है। ये दो पद 'टेक' पद का काम देते हैं।

'बरसाती' मे पावस ऋतु मे गाये जाने वाले गीत सम्मिलित हैं। ये **'बरसाती'** **'बारहमासा' 'छौमासा' 'चौमासा'** और 'कजरी' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन गीतो में विविध मासों के प्राकृतिक सौन्दर्य-वर्णन के साथ मानवीय भावनाओं का प्रकृत चित्रण भी किया जाता है। सामान्यत मगही 'बरसाती' गीतो म गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतिया के चित्र एव नारी के दिव्य सतीत्व को प्रस्तुत करने वाले वर्णन उपलब्ध होते हैं। मगही 'बारहमासा' गीतो में प्राय विप्रलभ शृगार के वर्णन से ही प्रधानता मिली है। इस कारण इनमें बुद्धितत्त्व की अपेक्षा रागात्मक तत्त्व की ही प्रमुखता रहती है। बारहमासो मे से प्रत्येक मास का वर्णन क्रम मे किया जाता है। साथ ही प्रत्येक मास की रूप रेखा सक्षेप मे दी जाती है। इनमे जिन उपकरणो से ऋतु वर्णन की योजना की जाती है, वे प्रचलित एव सर्वानुभूत होते हैं। विरहिणी उन्ही को लेकर अपने प्रवासी प्रियतम का स्मरण करती है। प्राय लोक प्रचलित बारहमासों का प्रारभ आषाढ मास से होता है, यद्यपि इसके लिए कोई निर्धारित नियम नही है। ऐसे 'बारहमासो' का भी अभाव नही है, जिनका प्रारभ चैत से या अवसर के अनुसार होता है। वर्षा ऋतु मे छौमासा या चौमासा गीत भी गाये जाते हैं। छौमासा मे प्राय छ महीनो की अनुभूतिया का उल्लेख होता है और चौमासा मे प्राय चार महीनो की अनुभूतियो का। इनमे कही नायिका की विरहानुभूतियो का वर्णन होता है, कही गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतिया पर प्रकाश डाला जाता है। पारिवारिक जीवन के विविध सबधी पति-पत्नी सास बहू, ननद भावज, पिता पुत्री भाई-बहन आदि का सुन्दर विश्लेषण इन गीतों में मिलता है।

सावन-भादो मास म मगही-क्षेत्र में **'कजरी'** या कजली' गाई जाती है। 'कजली' गीतो के साथ झूला का अनिवार्य सबध प्रतीत होता है। कारण झूला झूल कर इसके गाने की प्रथा प्राय समस्त मगह क्षेत्र म प्रचलित है। सावन भादो मे मन्दिरो में भगवान को भी झूला झुलाया जाता है। इसे 'झूलन' कहते हैं। 'झूलन' देखने के लिए इन महीनों में मन्दिरों मे भक्तो की भीड लगी रहती है। झूला के साथ गाये जाने के कारण 'कजली' गीत बडे ही कर्ण-मधुर हो जाते हैं। प्राय किसी बडे बाग मे या खुले मैदान मे या नदी तट पर किसी सघन वृक्ष की डाली म डोरी लगा उस पर पीढा डाल कर झूला बना लिया जाता है। कुछ लोग झूले पर बैठ होते ह और कुछ खडे होकर पेग मारते होते हैं। सभी झूला झूलते हुए सम्मिलित स्वर में 'कजली' गाते हैं। किसी स्थान पर दल बना कर ढोल के साथ भी कजली गाने की प्रथा है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से 'कजरी या 'कजली' मे सयोग एव वियोग शृगार के चित्ताकर्षक वर्णन मिलते हैं। ऋतु-शोभा मे वर्षा वर्णन को प्रधानता दी जाती है। वर्षा के साथ विरहिणी के आँसू मिल कर वातावरण को पूर्ण करुणा सिक्त बना देते हैं। डा० ग्रियर्सन ने कहा है—

"इन गीतों का वातावरण करुण रस से पूर्ण है, यद्यपि इनमें विभिन्न भावनाएँ और भाव पाये जाते हैं। "कजरी में गार्हस्थ्य जीवन के विविध पदों की झाँकियों के साथ सामयिक विषयों का भी उल्लेख रहता है।

देवगीत—मगही लोकगीतों का चौथा महत्त्वपूर्ण वर्ग 'देवगीतों' का है। 'देवगीत' दो अवसरों पर गाये जाते हैं—(क) किसी संस्कार के अवसर पर एवं (ख) किसी पूजा, व्रत-त्योहार के अवसर पर। संस्कार गीतों का सांकेतिक अध्ययन हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं। पूजा, व्रत-त्योहार आदि के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को दो उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—(क) सामान्य देवगीत, जो किसी भी पूजा, उत्सव, व्रत आदि के समय मांगलिक दृष्टि से गाये जाते हैं। इनका अनुष्ठानिक महत्त्व नहीं है। (ख) विशेष देवगीत, जो किसी पूजा, व्रत, त्योहार आदि के अवसर पर अनिवार्य रूप से गाये जाते हैं। इनका आनुष्ठानिक महत्त्व होता है।

मगध में जिन देवताओं की पूजा होती है, वे दो श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं—१. पौराणिक देवता, जो परम्परा से पूजित होते चले आ रहे हैं और जिनके नाम के साथ अनेक पौराणिक इतिवृत्त जुड़े हुए हैं। यथा—शिव, पार्वती, गणेश, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, कृष्ण, रुक्मिणी, राधा, सूर्य, विधाता, गंगा, नाग, सन्ध्या, दुर्गा देवी आदि। इन देवताओं के साथ अन्य पात्रों के नाम भी जुड़े हुए हैं जिनकी गणना देवपात्रों में ही होती है—यथा-राजा दशरथ, जनक, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, भरत, शत्रुघ्न, लवकुश शबरी, वासुदेव, नन्दा, देवकी, यशोदा प्रद्युम्न, गोपी, राधा, आदि। इन देवी-देवताओं से सम्बद्ध गीत समस्त भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में कतिपय रूपान्तरों के साथ प्रचलित हैं। इनके इतिवृत्त भी सर्व ज्ञात हैं।

२. ग्राम देवता, जिनके सम्बन्ध में कोई पौराणिक आख्यान, अभी तक ज्ञात न हो सका है, पर जो विविध मांगलिक अवसरों पर श्रद्धा से पूजित होते हैं। ग्राम देवताओं की संख्या काफी बड़ी है। इनमें कतिपय प्रमुख हैं—रामठाकुर, बन्दी मनुख, परमेसरी और सोखा-सोखाइन आदि। ये गृहदेवता हैं, कारण ये कुलदेवता' के रूप में गृहस्थों के घर में विराजमान रहते हैं। मगध के प्रत्येक गृहस्थ के घर में एक अलग कोठरी रहती है, जिसे 'देओता घर' या 'सिराघर, कहा जाता है। इसी में 'देवता' रहते हैं। प्रत्येक जाति या परिवार में अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार किसी विशेष कुलदेवता को मान लिया जाता है। तथा—किसी के देवता रामठाकुर होते हैं, किसी के बन्दी, किसी के मनुस आदि। प्रत्येक गृहस्थ के 'सिराघर' में उपर्युक्त देवताओं में से किसी एक की 'पिंडी' रहती है, इसे 'सिरापिंडी कहते हैं। कुलदेवताओं से अलग ग्रामदेवताओं में अन्य प्रमुख हैं—गोरैया बाबा, डिहवाल गोरैया, चूहरमल, बख्तार बाबा, बाबा-साहब, बरहम बाबा, दरगाही पीर, डाक बाबा, अगिनमाई, दखिनाहा-बाबा, कोयला वीर, फूल डोक, पंचदेवता भैरो बाबा, ढेलवागोसाईं, पटन देवी, राम बाबा, महारानी मइया, महारानी-बिधिन आदि।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से विचार किया जायगा तो मालूम होगा कि सामान्य देवगीतों' में प्रायः देव देवी के माहात्म्य का ही वर्णन किया जाता है। यह देवस्तुति विविध रूपों में की जाती है। कहीं देवता के दिव्य रूप एवं गुणों की प्रशंसा की जाती है, कहीं देव मन्दिर के सौन्दर्य का बखान होता है। कहीं देवता की अवज्ञा करने से जीव दण्डित होते हुए देखे जाते हैं, कहीं उनकी

भक्ति, पूजा, अर्चना आदि से वे सुख समृद्धि पाते हुए दीख पड़ते हैं और वहीं देव पीठ की रक्षा एवं स्वच्छता में संलग्न दीख पड़ते हैं। पूजार्चन के मूल में भगवान से सुख सम्पत्ति तथा पारिवारिक वृद्धि पाने की आकांक्षा रहती है। इन आकांक्षाओं की सुन्दर व्यंजना इन देवगीतों में होती है।

"विशेष देवगीतों' का आनुष्ठानिक महत्त्व होता है, ऐसा कहा जा चुका है। मगध क्षेत्र में अनेक व्रत त्योहार मनाये जाते हैं। यथा-असाढ का बासऔरा, तीज, कर्मा धर्मा, जितिया, गोधन छठ आदि। इन अवसरों पर गाये जाने वाले इन गीतों में सबद्ध व्रत त्योहारों के माहात्म्य आदि का वर्णन होता है।

बालगीत—मगही लोकगीतों का पाँचवाँ महत्त्वपूर्ण वर्ग 'बालगीतों' का है। इस वर्ग में वे गीत आते हैं, जिससे किसी न किसी रूप में बाल मनोरंजन होता है। मनोरंजन भी दो प्रकार का होता है—(क) शुद्ध मनोरंजन, जिसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन होना है एवं दूसरा सोद्देश्य मनोरंजन, जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ कुछ सीख देना भी होता है। इस तथ्य को दृष्टिपथ में रख कर मगही बाल-गीतों का निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है—

क. लोरियाँ
ख. पालने के गीत
ग. शिशु-गीत
घ. खेल के गीत
ङ. शिक्षाप्रद गीत
च पहेलियाँ और ढकोसले।

'लोरियों' के अन्तर्गत उन गीतों को लिया जा सकता है, जिन्हें बच्चों को गोद में लेकर सुलाने के समय गाया जाता है। ऐसे गीतों में 'चाँद मामा' का बार-बार उल्लेख होता है। माता सब के साथ इन गीतों को गाती है। 'पालने के गीत' लोरियों के ही दूसरे रूप होते हैं। बच्चे रोयें नहीं तथा उन्हें नींद आ जाये, इसलिए उनकी माता उन्हें पालने में सुला कर झूला झुलाती हैं। इस समय वह गीतों को भी गाती जाती है। इन गीतों में से एक का कुछ अंश इस प्रकार है—

बबुआ रे, तूँ कत्थी के ?
ककड़ी के दुसा के ?
चोआ चनन के पुरिया के।
मइया हउ लवँगिया के।
बाबू जी जफरवा के।

शिशु-गीतों में हम उन लोकगीतों को ले सकते हैं, जो लोरियों एवं पालने के गीतों के अन्तर्गत नहीं आते। इन गीतों में मनोरंजन की प्रधानता होती है। यथा—

चान मामू, चान मामू हँसुआ द !
से हँसुआ काहे ला ? घसवा गढ़ावेला ?
से घसवा काहे ला ? गोरुआ खिलावेला ?
से गोरुआ काहे ला ? गोबरा पुरावेला ?
से गोबरा काहे ला ? गेहुँमा सुखावेला ?

और इसी प्रकार यह गीत आगे बढ़ता जाता है। मगही लोक साहित्य में खेल के गीतों का भंडार अत्यन्त समृद्ध है और वह जन जीवन की व्यावहारिक चेतना की विभिन्न दिशाओं की ओर संकेत करता है। साधारणतया एक वर्ष से लेकर बारह चौदह वर्ष तक के बच्चों की गतिविधि की इनमें बड़ी ही मनोहर झाँकी मिलती है। छोटे बच्चों के मनोरंजन गीतों में "घुघुआ मनेरिया" से शुरू होने वाले गीत का बड़ा महत्व है। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को पैरों की सुपलियाँ जोड़ कर उन्हीं पर बिठा लेते हैं। और पैंगे मारते नीचे से ऊपर एवं ऊपर से नीचे ले जाते हैं। इसके साथ ही वे "घुघुआ मनेरिया" वाला गीत भी गाते रहते हैं। गीत गायन की इस प्रक्रिया में जहाँ उनका मनोरंजन होता है, वहाँ शारीरिक व्यायाम भी होता रहता है। 'तार काटो तरकुल काटो' वाला गीत भी कुछ इसी प्रकार का है जो मगध क्षेत्र में सर्वत्र प्रचलित है। पहेली बुझाते हुए गाये जाने वाले खेल-गीतों का भी बड़ा महत्व है। इससे जहाँ बच्चों में जिज्ञासा का आविर्भाव होता है, वहाँ उनकी परिष्कृत बुद्धि का भी परिचय मिलता है। जैसे—एक गीत में एक लड़का जाता हुआ पूछता है—किसकी टाँग लम्बी होती है? किस पक्षी के पर उजले होते हैं? कौन पेट के बल चलता है? हृदय में किसकी आँख छिपी होती है? दूसरा लड़का गाता हुआ जवाब देता है कि गरुड़ की टाँगें लम्बी होती हैं। बगुले के पर उजले होते हैं। साँप पेट के बल चलता है और बछुआ की आँखें हृदय में छिपी रहती हैं। गिनती सीखने के लिए जो गीत प्रचलित हैं, वे भी बड़े सार्थक और उल्लास का संचार करने वाले हैं। यथा—

गन फकीरा राम, दो राम जी के नाम।
गन फकीरा दू त दूजे के चाँद॥

ये गीत जहाँ बालकों का मनोरंजन करते हैं वहाँ उनके लिए बहुमूल्य सीखें भी प्रस्तुत करते हैं। खेल-खेल में ही बच्चों का ज्ञान राशि समृद्ध हो जाता है।

बच्चे अपना मनोरंजन अनेक बार पहेलियों से करते हैं और कभी-कभी मुहावरेदार उक्तियों से भी करते हैं। इनमें प्रायः जन जीवन के मनोरंजक पहलुओं की समीक्षा रहती है। इसमें गप्पें मारना, रोब गाँठना, ख्याली पुलाव पकाना, कंजूसी और अनाहूत मेहमानी निभाना आदि सभी शामिल हैं। जैसे, निम्नांकित पंक्तियों में "कंजूसी" और माम न माम में तेरा मेहमान पर छींटाकशी की गई है—

सुक्ख धान सँझ ले आवऽ तीन बिहान ले,
मोर चटिया[1] पेनवे धाव, छौ महीना मे उतरे ताव,
हम पहुँना[2] दुर्जोधन नाँव,[3] बरस रोज ले घर ना जाऊँ॥

पहेलियों के विभिन्न रूप होते हैं। बड़े बच्चों के लिए जो पहेलियाँ होती हैं, वे जरा कठिन होती हैं। कई एक तो गणित का सुन्दर चमत्कार छिपाए होती हैं। उनमें जहाँ उनका मनोरंजन होता है वहाँ उनकी बुद्धि की भी परख होती है। एक पहेली का सारांश है—

'चार मन्दिर हैं। चारों के आगे चार पोखर हैं। उनके जल में धोने पर फूल दूने हो जाते हैं। एक पुजारी कुछ फूल लेकर गया और चौथे मन्दिर में चढ़ाने पर एक फूल भी नहीं बचा। तो वह कितने फूल लेकर चला था।

---

१. खड़ाऊँ, जूता। २. मेहमान। ३. नाम।

मध्यम अवस्था के बच्चे छोटी एवं सरल पहेलियाँ बुझाते हैं, जिनमें कुछ संकेत लिए हुए होते हैं और कुछ बूझना होता है। कुछ में संगीतात्मक ध्वनियाँ बहुत अधिक होती हैं, जो बड़ी ही कर्णप्रिय होती हैं। जैसे—

एक चिरैया पट ओकर पंख दूनो पट।

ओकर खलरी उजार, ओकर माँस मजेदार॥ (केला)

विविधगीत—

मगही लोकगीतों का छठा महत्त्वपूर्ण वर्ग "विविधगीतों" का है। विविध गीतों में झूमर बिरहा, अलचारी, गोदना निर्गुण एवं सामयिक गीत को सम्मिलित किया गया है।

"झूमर" का अर्थ है 'झूमना' या 'झूम कर नाचना'। महिलाएँ झुण्ड में खड़ी होकर झूम-झूम कर "झूमर गाती हैं। ये गीत किसी भी शुभ संस्कार या आनन्दमय अवसर पर गाये जाते हैं। ये गीत मानो रस के कलश होते हैं। रस का संबंध भावों से है और झूमर गीतों की सर्वप्रमुख विशेषता है—उनकी भावात्मकता। इन गीतों में शृंगार रस के संयोग पक्ष में यह भावात्मकता उल्लास, आनन्द आदि के रूप में अभिव्यक्त होती है तो वियोग पक्ष में प्रिय-मिलन की कामना, विरहजनित वेदना, व्याकुलता आदि की विवृत्ति के रूप में।

"बिरहा गीत" कारुणिक शैली में गाये जाते हैं, इससे इनका हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यों नाम से बोधित होता है कि 'बिरहा' विरह के गीत हैं, पर इनमें संयोग पक्ष की भी झाँकियाँ मिलती हैं। सच पूछा जाये, तो इनमें प्रेम के सभी रूपों की झाँकियाँ मिलती हैं। इनके अतिरिक्त धार्मिक आस्थाएँ, नारी की सन्तान कामना गार्हस्थ्य जीवन के विविध चित्र आदि भी इन बिरहा गीतों में मिलते हैं। बिरहा' गीत विवाहादि शुभ संस्कारों के अवसर पर प्रायः प्रतिद्वन्द्विता के साथ गाये जाते हैं। दो दलों के लोग आमने सामने बैठ कर एक के बाद एक बिरहा गाते हैं। जो दल अंत में आगे गाने में असमर्थता प्रकट कर देता है वह पराजित मान लिया जाता है। उपर्युक्त अवसरों के अतिरिक्त कृषक गण खेतों में काम करते हुए, मजदूर लोग घास छीलते हुए, चरवाहे पशुओं को चराते हुए, बलगाड़ी वाले आधी रात में सड़क पर बैलगाड़ी हाँकते हुए 'बिरहा गीत गाते जाते हैं। कारुणिक शैली में गाये जाने के कारण ये हृदय पर गहरा असर डालते हैं। 'बिरहा' में प्रायः गीत की चार कड़ियाँ होती हैं। अत्यन्त छोटे होने के कारण ये रस के छींटे भर दे पाते हैं। इनके गायक सामान्यतया 'पुरुष' होते हैं और गायन की एक भिन्न शैली ही होती है।

'अलचारी' गीत की एक शैली है, जिसमें या तो लाचारी की स्थिति का उल्लेख होता है या व्यंग्यात्मक, विनोदात्मक एवं हास्यरसात्मक शैली में पत्नी की श्रेष्ठता एवं पति की हीनता दिखलायी जाती है। कहीं कहीं विशुद्ध प्रेम प्रसंग भी वर्णित मिलते हैं। ये भाव व्यंजनाएँ कभी शिव पार्वती के माध्यम से की जाती हैं और कहीं अन्य पात्रों के माध्यम से। 'गोदना' के गीत गोदहारिने सूई चुभा कर गोदना गोदते समय गाती हैं। गोदते समय गोदाने वाली को बड़ा कष्ट होता है। ये गीत उसका ध्यान दूसरी ओर विकेन्द्रित कर सूई के दंश को धीमा कर देते हैं। अब तो नहीं, पर हाल हाल तक गोदना को मगह-क्षेत्र में सौंदर्य का एक साधन माना जाता था। गोरे अंगों पर काले काले गोदने उन्हें बहुत प्रिय लगते थे। फिर कुछ दिनों पूर्व हिन्दू

स्त्रियों के लिए 'गोदना अनिवार्य माना जाता था। यह धर्म का एक अंग ही बन गया था। गोदना गीता के मूल म उपर्युक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त शृंगार भावना भी निहित थी।

'निर्गुण' गीतों में अलौकिक तत्त्व चिन्तन को प्रधानता दी जाती है। विश्व क्या है? इसका निमाता कौन है? जीवात्मा को प्रेरित करने वाली शक्ति कौन सी है? आदि जिज्ञासाओं की विशद चर्चा इन गीतों में मिलती है। इन गीतों के गायक प्राय साधु-फकीर होते हैं। ग्रामीण जनता नहीं। अत विश्व के प्रति अनासक्ति भाव ईश्वर के प्रति अनुराग तथा ससार के साथ मोह के परित्याग के उपदेश इन गीतों म भरे मिलते हैं।

'सामयिक गीत से तात्पर्य उन अत्याधुनिक मगही लोक गीतों से है, जिनपर नवयुग की छाप मिलती है। इनमे नवीन आभूषण नूतन फैसन नये शासक एव उनकी नीति आदि का उल्लेख हुआ है। इनके अतिरिक्त इनमे देश मे जगी राष्ट्रीय चेतना की लहर, स्वराज्य के महत्त्व विदेशी शासन सत्ता एव उसके अत्याचार पराधीनता के कारण विश्वयुद्ध आदि की भी अच्छी अभिव्यक्ति हुई है।

मगही लोकगीतों की भावधारा

यदि मगही लोकगीतों का भावात्मक विभाजन किया जाये तो संक्षेप में निम्नांकित वर्ग प्रस्तुत किए ज सकते हैं—

१ लोक जीवन का सामाजिक धरातल
२ प्रेम सम्बन्धों के विश्लेषण
३ मार्मिक प्रसग
४ धार्मिक आस्थाए
५ जड चेतन का समन्वय।

१ लोक जीवन का सामाजिक धरातल

मगही लोकगीतों में लोक जीवन का सामाजिक धरातल बड़े ही पुष्ट रूप मे व्यक्त हुआ है। कारण कि लोकगीत लोक-जीवन का ही स्वर है। सामान्य जन जीवन की झाँकी जैसी लोकगीतों में मिलती है वैसी महाकाव्यों में नहीं क्योंकि महाकाव्य निश्चित परिपाटी पर चलते हैं। उनके नायक को तो धीरोदात्त ही रहना है। भला वे महलों को छोड़ टूटी मड़ैया में कैसे रह सकेंगे। शिष्ट कवियों की एक निश्चित लकीर होती है जिसके वे फकीर बने रहते हैं। पर लोक कवि जन जीवन की एक इकाई होता है, जिसमे अभिव्यक्ति की स्वाभाविक क्षमता होती है। उस अभिव्यक्ति म वही कुछ आ पाता है जो उनके जीवन में होता है—और वह अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी। लोक कवि पुरुष एव नारी दोनों के मनोजगत् से अपनी जानकारी प्रकट करता है। उसकी अनुभूति की पैनी पकड़ अद्भुत है। वह अपनी अनुभूति को सजाने एव सबल बनाने के लिए वायवीय कल्पनाओं एव निराधार उड़ानों को प्रश्रय नहीं देता। वह उन्हीं वस्तुओं

को ग्रहण करता है, जो उनके दैनान्दन जीवन के परिवेश में आती है। उदाहरणार्थ—मगही का एक छोटा गीत चित्र प्रस्तुत है—

जलवा में चमकऽ हई चिल्हवा मछलिया,
रैनिया चमऽकई तरवार।
सभवा में चमकई सामी के पगड़िया,
हुलसऽ हई जियरा हमार॥

अर्थात् 'जल में जिस प्रकार चल्हुवा मछली चमकती है रात्रि में जिस प्रकार पैनी तलवार चमकती है, वैसे ही सभा में मेरे स्वामी की पगड़ी चमक रही है, जिसे देख देख मेरा जी हुलस रहा है।"

यह एक नारी का कथन है। अपने स्वामी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खूब बढ़ चढ़ कर देखने सुनने की अभिलाषा प्रत्येक नारी का बड़ा स्वाभाविक रूप से होती है। पारस्परिक स्नेह बंधन में यह भावना व्याप्त रहती है। उपर्युक्त पंक्तियों से यह कितनी सम्पूर्णता के साथ ध्वनित होती है। इस गीत में उपमाएँ कितनी सार्थक है। 'चिल्हवा' अपनी प्रतीकात्मक योजना के अनुसार उसके स्वामी के स्वस्थ स्फूर्तिमय शरीर की ओर संकेत करती है एवं 'तरवार' वीरत्व की ओर। 'हुलसऽ हई' शब्द सात्विक प्रसन्नता का बोध कराता है, जो परमानन्द सहोदर होती है।

मगध की नारी की आकांक्षा अभिलाषाओं को जानने का सबसे अच्छा माध्यम यहाँ के लोकगीत ही है। कारण कि लोकगीतों के सृजन में अधिकांश देवियों का ही हाथ होता है। ये आकांक्षाएँ अभिलाषाएं विवाह, पुत्र प्राप्ति सतीत्व रक्षा, वैभव प्राप्ति आदि सभी से सम्बद्ध होती है। इस क्रम में जिन लोकगीतों में अतिशयोक्ति की व्यंजना होती है, उसमें बड़ा ही चमत्कार आ जाता है। जैसे—

पिया पिया रटि के पियर भेलइ देहिया,
लोगवा कहइ कि पाडु रोग।
गाँमा के लोगवा मरमियो न जानइ,
भेलइ न गवनवा मोर॥

अर्थात् 'पिया पिया रटते रटते मेरी देह पीली पड़ गई, परन्तु लोग इसका कारण पाडु रोग बतलाते है। मर्म की बात क्या जाने कि इसका मूल कारण अब तक "गवनवाँ मोर' न होना ही है।

इन मगही लोकगीतों में घरेलू जीवन की बड़ी ही विशद् अभिव्यक्ति मिलती है। कहीं सास बहू के कर्कश सम्बन्ध आते होते हैं, तो कहीं भाई-बहन का उत्कट पारस्परिक प्रेम। कहीं माँ का वात्सल्य प्रेम छल छला आया है, तो कहीं भावज-ननद का परिहास। इनमें कहीं-कहीं ऐसे चित्र भी मिलते हैं, जो करुणा से आप्लावित होते हैं। जैसे—बाल विधवा का विलाप

उदाहरणार्थ एक गीत में लड़की पूछती है—"माँ तुमने सबकी शादी कर दी पर मेरी कब करोगी ?" इस पर माँ का उत्तर है—

"तोहरो बियहली गे मैना बाले जब पनमाँ
तोहरो बियहुआ मरिये गेलउ रे कि ॥

बचपन मे शादी और उस अबोधावस्था में ही पति की मृत्यु का संवाद पाकर बेचारी की क्या दशा हुई होगी उसकी अभिव्यक्ति शक्ति के बाहर है। अन्त में रुआँसी होकर वह कहती है—

"हमरा बियहुआ मइया मरिए जे गेलन,
उनकर चैलियो दे बतलऽइए रे कि ॥

—"ऐ माँ ! मेरे स्वामी तो मर ही गये। अब क्या सोचना ? पर उनकी चिता कहाँ सजी थी, उसे ही जरा बतला दे।" माँ दुख के साथ उत्तर देती है—

सावन भदउआ के अलउ बूढ़ी धधिया।
ओकरे में गेलउ चैलिया दहिये रे कि ॥

—"प्यारी बेटी पिछले सावन-भादो मे जो बाढ़ आयी थी, उसी में उनकी चिता बह गई। यह सुन कर बेटी को ऐसा लगा, जैसे उसकी छाती फट जायेगी। उसने स्वामी के दर्शन तक न किए, मिलन की कथा तो दूर रही। रोते रोते बोली—

रोइए रोइए मैना मइया से बोललइ।
अगे चैलिया दहि गेलन धरतिया न कि ॥

—"प्यारी माँ चिता तो बह ही गई, पर वह धरती तो नहीं बही, जिस पर चिता सजी थी ?"

अन्तिम पंक्ति मे कितनी पीर और पातिव्रत्य की भावना सजोयी है, कहने की आवश्यकता नहीं।

लोककवि ने उन चित्रों को भी अंकित करने में संकोच नहीं दिखलाया है, जो सुन्दर नहीं कहे जा सकते। मगही गीतों मे सौतियाडाह, सास बधू के कटु सम्बन्ध, ननद भावज की प्रतिद्वन्द्विता तथा छलना आदि के अनेक चित्र उपलब्ध हैं। इन गीतों में मागधी जनता के आर्थिक पक्ष का भी विश्लेषण बड़े ही सुन्दर रूप मे हुआ है। इस परिच्छेद में आने वाले मगही गीतों में और भी कई छवियाँ नजर आएँगी। यथा—

"कहाँ गेले सोमर ? चोरी करे बाबू !
मारो खैलें सोमर ? बड़ी मार बाबू !
दबकले न हल सोमर ? दीया बरलक बाबू !
भगलें न हल सोमर ? सब छेंक लेलक बाबू !
फिन जयमें सोमर ? लत छुटलइ बाबू !"

उपर्युक्त गीत में सबसे पहले तो उनका नाटकीय संवाद हमारा मन मोह लेता है। फिर एक घटना विशेष के प्रत्येक अंग का जितना विश्लेषण हुआ है, उसका क्या कहना। साथ ही जन साधारण की दैन्य स्थिति का भी बड़ा ही करुणापूर्ण संकेत मिलता है।

जन-जीवन में फैलती राष्ट्रीय चेतना का द्योतन भी मगही लोकगीतों में हुआ है। भारत के इतिहास-निर्माण में मगध का महत्त्व सर्वविदित है। स्वातंत्र्य भावना की जो नयी लहर चली, उसने मागधी जनता को खूब प्रभावित किया। "जाँत के गीतों" में इनकी बड़ी ही मर्म-स्पर्शी झाँकी मिलती है। एक गीतांश प्रस्तुत है—

हम तो टिकुवा गढ़ायब, ओ पर जयहिन लिखायब
हम तो नेकलेस गढ़ायब ओ पर जयहिन लिखायब ॥

रीति-रिवाजों एवं प्रथाओं के विश्लेषण के लिए तो ये गीत अद्भुत हैं। जन-मन अपने मूल रूप में प्रशिक्षित नहीं होता। वह नाना लोक परम्पराओं और अन्ध विश्वासों से आक्रान्त होता है। मागधी समाज में विवाह के अवसर पर वर के द्वारा दहेज माँगने की प्रथा प्रचलित है। लोकगीतों में इसके अनेक चित्र उपलब्ध होते हैं यथा—

दूलहा मलीन हैं काहे मन मैल है।
दुलहा मलीन है, घड़िया के वास्ते,
घड़िया भी देवइ, चैनमा भी देवइ ॥

परिस्थिति विशेष की जैसी सूक्ष्म व्याख्या मगही लोकगीतों में मिलती है, वैसी महाकवियों के लिए भी दुर्लभ है।

प्रेम सम्बन्धों के विश्लेषण

यौन सम्बन्धों का विश्लेषण अन्यान्य लोकगीतों की तरह मगही लोकगीतों में भी खूब हुआ है। इनमें शृंगार के सहज-स्वाभाविक चित्र मिलते हैं। यथा—

"फूल लोढ़े गेली ससुर फुलवरिया,
बगिया में पियवा अइलन हमार।
एक खोईंछा लोढ़ली, दूसर खोईंछा लोढ़ली,
बगिया में फुलवा देलन छितराय।"

—मैं फूल तोड़ने के लिए ससुर जी की फुलवारी में गयी थी कि वहीं मेरे 'पिया' आ गये। एक 'खोईंछा' फूल मैंने तोड़ा, फिर दूसरा 'खोईंछा' तोड़ा कि प्रियतम ने 'खोईंछा' खोल कर उपवन में सारे फूल बिखेर दिए। शृंगार रस का कितना सरस स्वाभाविक चित्रण है। यों तो इस प्रकार प्रेम-सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाले चित्रों का सब प्रकार के गीतों में प्राधान्य है, पर विवाह के गीत, विशेष कर कोहबर के गीत, बधागीत एवं ऋतु गीतों में विशेष रूप से पाये

जाते हैं। कोहबर के गीतों में प्राय नव विवाहित दम्पति के हास परिहास चित्रित होते हैं। नवेली वधू के भावों का वर्णन लोक कवि बड़े मनोयोग से प्रस्तुत करता है। उदाहरणार्थ एक मगही गीत का भावार्थ प्रस्तुत है। वधू अपने पति से कह रही है—मै तो इलायची के फूल लूँगी, मैं तो लवंग के फूल लूँगी। 'पति पूछता है—' मैं उसे पाऊँगा कहाँ ?' "वधू कहती है—"प्यारे। पंछी का रूप धर कर बाबा जी की फुलवारी मे चले जाना और फूल ले आना। भौंरे का रूप धर कर चले जाना और रस चूम कर ले आना।' वर चला गया। उसने एक फूल तोड़ा, फिर दूसरा फूल भी। इतने में वेष बदल कर उसका साला पहुँच गया। उसने लवंग की "गाछ" में उसे बांध दिया और सोने की छड़ी से अपने 'जीजा' को मारने लगा। पति ने रोते हुए अपनी प्रिया को पत्र लिखा—"प्राणप्यारी प्राणों के लाले पड़ गये है। लवग के 'गाछ' मे बाँध दिया गया हूँ, जरा अपने भाई को पत्र भेज कर छुड़ा दो न" हसते हुए वधू ने पत्र लिखा—"ऐ माली ' अपने चोर को छोड़ दो। उसे सोने की छड़ी से मत मारो।"

वर-वधू के शृंगार चित्रों के अलावा, अन्य लोकगीतों के समान ही मगही मे भी प्रेमी-प्रेयसी के प्रणय सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाले बहुत मे गीत मिलते हैं। काव्य में इसके दो पक्ष मिलते हैं—संयोग एव वियोग। मगही मे ऐसे बहुत गीत मिलते हैं, जिनमे सयोग एवं विप्रलंभ शृंगार की स्वाभाविक एव मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियां हैं। सयोग का एक चित्र ऊपर प्रस्तुत किया गया है। विप्रलभ शृंगार के चित्रों में विरह सम्बन्धी भावनाएँ मुखरित हो उठी हैं। उनमें वह कृत्रिमता नहीं है, जो प्राय महाकाव्यों में दीख पड़ती है। विरहिणी के उच्छ्वास, उसकी तड़प, उसकी सम्पूर्ण वेदना इनमे साकार हो उठी है यथा—एक विरहणी कहती है—

"जहिया से पिया मोरा गेलऽ तू विदेसवा,
बलमुआ हो ! तोरा बिन अँखियो न नींद।
जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू विदेसवा
बलमुआ हो, कइलों न सोरहों सिंगार।
कहियो न सजौलीं हम फुलवा सेजरिया।
बलमुआ हो सपना भे गेल मोरा नींद।"

कितना सात्विक प्रेम है। उसे इसका अफसोस होता है कि काश ! वह जान पाती कि उसका प्रियतम परदेश चला जायेगा, तब तो किसी भी हालत में उसे जाने नहीं देती—

"एही हम जनिती पियवा, जयथिन परदेसवा हो,
बाँधती हम रेसम के डोर।
रेसम वधनमा पिया टुटिए फाटिए जयतइ
बाँधती हम अँचरा के कोर।

अब तो प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा है। उसकी घड़ियाँ भी विरहिणी के लिए असह्य हो रही हैं। प्रिय से अब तक कुछ संदेशा तक नहीं आया है। इससे रह-रह कर उसका हृदय अंदेशों के होले में डोलने लगता है। वह स्वयं संदेशा भेजने को व्याकुल है, पर क्या करे? कैसे भेजे—

कथिए फारि-फारि कोरा कगदवा पिया,
कथिए केरा मसिहान हे।
कथिए चीरि-चीरि कलमा बनाई पिया,
कथिए लिखी हुई बात हे।।"
आँचर फारि-फारि कोरा कगदवा प्यारी,
नयने कजरवा मसिहान हे।
अंगुरी चीरि-चीरि कलमा बनाई प्यारी
लखी न देहु दुई बात हे।"

नायिका कहती है—क्या फाड़ कर कागज बनाऊँ? स्याही कहा से लाऊं? क्या चीर कर कलम बनाऊँ? बताओं न कैसे दो टूक बातें लिखूँ? सखी उत्तर देती है— आंचल फाड़ कर कागज बना ले। नयनों में लगे काजल की स्याही घोल ले और अंगुलिया चीर कर कलम तैयार कर ले, और फिर दिल की सारी बातें लिख।

३. मार्मिक प्रसंग

जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब हमारे मनोविकार पूर्णतः गतिशील होते हैं। काव्य में इन्हीं मनोविकारों को 'स्थायी' भाव एवं 'व्यभिचारी' भाव की संज्ञाएँ दी गई हैं। इन भावों की गतिशीलता के परिवेश में सब तरह के अवसर आते हैं। लोकगीत इन्हीं भावों की शाब्दिक काया है। अतः उनमें हमारी चेतना को स्पर्श करने की पर्याप्त शक्ति है। उदाहरणार्थ 'बाँझपन' को लीजिए। हिन्दू-समाज में 'सन्तान' का बड़ा महत्त्व है। मगही लोककवि कहता है कि कोई बाँझ स्त्री पुत्र-प्राप्ति के लिए एक जगह खड़ी होकर, सूर्यदेव की प्रार्थना करने लगी। पास ही बिल में बैठी नागिन ने कहा—जरा दूर जाकर 'सूरुज बाबा' को प्रणाम करो। कहीं तुम्हारी छाया पड़ने से मैं भी बाँझ न हो जाऊँ। इसे सुन कर बेचारी करुणार्द्र हो उठी।

बेटी की विदाई भी ऐसे ही मार्मिक प्रसंगों में है। बेटे की तरह उसका भी जन्म होता है। माँ-बाप बड़े प्यार से उसका लालन-पालन करते हैं। पर, एक दिन वह पराई हो जाती है। बिछुड़ते समय उनके हृदय की जो दशा होती है, सो तो वही जानते हैं। इसी प्रसंग का वर्णन राजस्थानी लोकगीत 'कोयलड़ी' में होता है, जिसमें बेटी की विदा के समय परिवार की स्त्रियाँ आँसुओं में डूबी हुई जाती हैं—

"ओ मेरी हरे-भरे वन की कोयल! तू सबको उदास कर कहाँ चली? 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में कालिदास ने इस दृश्य का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है। पढ़ते वक्त कौन सहृदय नहीं रो उठेगा? महर्षि कण्व कहते हैं—

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्
वैकल्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ।"

सीता की शादी हो रही है। कन्यादान का प्रसंग है। व्यामोह, विकलता और चिन्ता के कारण राजा जनक की बड़ी ही करुण दशा हो चली है। लोककवि कहता है—

धर-धर कँपथिन भूप जनक जी, जुगल नयन ढरे नीर हे।
केहि विधि दान करब हम सिय के चित न रहत मोर धीर हे।

बेटी की विदा के समय गृहस्था को जो मार्मिक व्यथा सहनी पड़ती है, उसे मागधी लोककवि ने निम्नांकित पंक्तियों में मानो और भी मूर्त कर दिया है। शब्दों के गागर में उसने वेदना का सागर भर दिया है—

गउनमा के दिनमा धरायल, गउना नगिचायल हे।
सखी करथिन चतुरइया, बाबू के फटलई करेजवा,
रे जैसे भादों काँकर, मइया के ढरे नयना लोर,
रे जैसे भादों ओरी चुए।।

गौने का दिन निश्चित हो गया है। सखियाँ मिल कर प्यारी सहेली की विदाई की तैयारी कर रही हैं। पर बाबू की छाती बिदा के समय फटी जा रही है, जैसे भादों में ककड़ी फट जाती है। मैया के नयनों से झर झर आँसू झरते हैं जैसे भादों में ओरी (ओलती) से पानी गिरता है।

४- धार्मिक आस्थाएँ

हम भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन धार्मिक आस्थाओं से ओतप्रोत है। लोकगीतों में इनका व्यापक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। संस्कार, पुनर्जन्म, देवी देवता आदि के गीत इन्हीं में अन्तर्हित हैं। जन्म से मरण तक षोडश संस्कारों का विधान है। इन संस्कारों के पीछे मंगल एवं कल्याण की भावनाएँ ही काम करती हैं। लोकगीतों में इन संस्कारों का यही स्वरूप प्रकाशित होता है। प्रत्येक संस्कार अवसरविशेष से सम्बन्धित है और उक्त अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों में इन संस्कारों की बड़ी मार्मिक झाँकियाँ मिलती हैं।

'हाल' की 'गाथा सप्तशती' में इस परम्परा के कई एक स्थलों पर सुन्दर संकेत मिलते हैं। भागवतकार ने भी इसका उल्लेख किया है। वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के १२ वें अध्याय का नौवाँ श्लोक एवं रघुवंश के तीसरे सर्ग का १८ वाँ श्लोक भी इसी ओर संकेत करता है। संस्कार गीतों में मुख्यतया प्रसंगानुकूल रीति रिवाज, उल्लास, हर्ष आदि का विश्लेषण होता है। शृंगार का संयोग पक्ष इनका मुख्य वर्ण्य विषय है। बच्चे का जन्म हो जाने के बाद मागधी नारियाँ प्रसूतिगृह में बैठ जाती हैं और गाती हैं —

"अजी दादा लुटावे अनधन सोनमा,
अरे दादी लगावे रेसम के फुदना,
पुरइन पातो से निकले गोपाल ललना ।"

उक्त अवसर पर परिवार के सदस्यों की मनवैज्ञानिक स्थिति का बड़ा ही सूक्ष्म विश्लेषण इन गीतों में मिलता है। यहां एक बात ध्यान में रखने लायक है—वह है पुत्र जन्म के प्रति माता पिता का आकर्षण। शायद इसका मूल कारण यह है कि पुत्र द्वारा वंश परम्परा की रक्षा होती है। वह माता पिता की वृद्धावस्था में अवलंब एवं मरण पश्चात् श्राद्धादि धर्मविहित कर्म सम्पादन करने वाला होता है।

जन्म के साथ ही विवाह संस्कार के प्रति मागधी लोकगीतों का अत्यधिक झुकाव दीख पड़ता है। विवाह के क्रम में उपस्थित होने वाले प्रत्येक विधि-विधान का ये उल्लेख करते हैं। इनके गीतों में एक मनोहर प्रसंग तब आता है जब वह दरवाजे पर पहुँचता है। मुख्य द्वार पर कुछ नारियाँ हाथों में अक्षत पान एवं दीप धूप सुवासित थाल लिए खड़ी रहती हैं। अगल बगल के छज्जे स्त्रियों से खचाखच भरे रहते हैं। अजीब समां होता है। प्रसन्न चेहरों पर उल्लास चमकता है। पटाखों की आवाज वातावरण में जोश पैदा करती है और उठती रहती है थरथरानी, सिहरन भरी एक लय एक ताल पवन तरंगों में थिरकती गीतों की सुमधुर झंकार—

नदिया किनारे नैया लायो रे, झँपकि बूँदा बरसे।
बाबू मोरा है अलबेला रे नजरियो ना लागे ॥

देवी देवताओं के गीत भी भावना परिवेश में आते हैं। इन गीतों में प्रायः राम कृष्ण, महादेव तुलसी, शीतला गंगा आदि के रूप गुणों का उल्लेख होता है। इस प्रसंग में कुछ बातें विशेष द्रष्टव्य हैं। राम एवं कृष्ण जो परमेश्वर के अवतार माने जाते हैं लोकगीतों में सामान्य जन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके रूप उनके प्रेम आदि में जन जीवन ही मुखर होता है। यथा—

जनक दुलारी, गेलन फुलवारी
ले ले सखियन दस संग।
चम्पा चटक चमेली तोडलन,
चीर गुलाबी रंग।
भले रघुनाथ के दीठ पडल ॥

कितना सुन्दर गीत चित्र है। एक अन्य गीत में कृष्ण के माध्यम से सामान्य जीवन का हास-परिहास अति सुन्दरता से व्यक्त किया गया है—

"छोटे मोटे ग्वालिन देखन बड सुन्दर,
चली अयलन दहिया बेचन हो रामा।
इ पारे मथुरा उ पारे गोकुला,

बीचे ठइयाँ कान्हा धयलन बहियाँ हो रामा ।
छोड़ू छोड़ू कान्हा रइया, हमरो अँचरवा,
पड़ो जयतो, दही के छिटकवा हो रामा ।
तोरा लेखे अगे ग्वालिन दही के छिटकवा,
मोरा लेखे अतर गुलबवा हो रामा ।

महादेव से सम्बद्ध गीतों में अद्‌भुत रस का पूर्ण परिपाक हुआ है । यथा—

मथवा जे अइले महादेव, बड़े-बड़े जट हे ।
कंधवा जे अइले महादेव, बघिनी के छाल हे ॥
परछे बाहर भेलन सासु हे मदारन ।
गोहुमन सप्पा छोड़ले फुफकार ॥
भला सासु भला गेलऽ हे डेराई ॥
तोरा लेखे अहे सासु गोहुमन साँप ।
मोरा लेखे अहे सासु गज माता हार ॥

जड चेतन का समन्वय—

मगधी लोकगीतों में जड़त्व में चेतनता के आरोप के अनेक उदाहरण मिलते हैं । मगध की जनता के लिए गंगा एक सामान्य नदी नहीं, एक देवी[1] है, जिसमें दुखों को दूर कर सुखों से भरपूर करने की पूरी शक्ति है । उसका रूपायन एक नारी के रूप में होना है, जो माँगों में टिकुली 'साटनी' है, ओढनी ओढती है एवं नाक में नथ पहनती है । चारों घाटों के बीच खेलती रहती है । कितना सुन्दर रूप खड़ा किया गया है । इसी प्रकार 'शीतला'[2] भी एक देवी के रूप में वर्णित एवं चित्रित हुई हैं । गीतों में 'शीतला देवी' का उल्लेख प्राय उनकी सात बहनों के साथ होता है । सब के रूप, प्रकृति, रुचि एवं महिमा का गीतों में विस्तृत वर्णन होता है ।

अलौकिक तत्त्वचिंतन प्राय उन लोकगीतों में मिलता है, जिसे फकीर गाते चलते हैं । ब्रह्म क्या है ? विश्व को किसने बनाया ? जीवात्मा को कौन प्रेरित करता है ? आदि जिज्ञासाओं की विशद् चर्चा उनमें मिलती है । उन लोकगीतों के अध्ययन से पता चलता है कि उनमें जो भावनाएँ संजोयी गई हैं, वे प्राचीन परम्परा से प्रभावित हैं । यह प्रभाव उनमें किस प्रकार आया, कहना मुश्किल है । उदाहरण के लिए एक मगही गीत प्रस्तुत है—

साधो लोक से पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न आवइ एना ।
ककरे बले विषया में, लगाई पेसल मनमा,
कउन जे ढुलकावे, उत्तम जोड़ी में परनमा ।

---

१ देखिए इसी संग्रह में गंगा-सम्बन्धी गीत ।
२. देखिए इसी संग्रह में शीतला-देवी-सम्बन्धी गीत ।

ककरे बले अँकुरइ, कठ मे वचनमा,
कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनहाँ ।
कनमों के कान साधो, मनमो के मनमा,
वचनों के वाक से, उ परनमों के परनमा ।
अँखियो के आँख, भिन्न भिन्न रूप धारी,
ओकर प्रतापे आहो में रहे सनचारी ।

स्पष्ट है कि उपर्युक्त पंक्तियों पर कठोपनिषद् के निम्नांकित मंत्रों का प्रभाव है —

केनेषितं पतति प्रेषित मन, केन प्राण प्रथम प्रैति युक्त।
केनेषिता वाचमिमा वदन्ति चक्षु श्रोत्र क उ देवो युनक्ति ॥
श्रोत्रस्य श्रोत्र मनसो मनो यद् वाचो ह वाच स उ प्राणस्यप्राण
चक्षुषश्चक्षु रतिमुच्य धीरा, प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

लोकगीतों के माध्यम से जन जीवन का एक और पहलू सामने आता है—वह है प्रकृति से उसका तादात्म्य सबंध। लोकगीतों म प्रकृति से मानवीय सम्पर्क की जितनी सरल एव सरस व्याख्या मिलती है उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। यह स्वाभाविक ही है। कारण लोकगीत मानवसमाज की उन श्रेणियों मे ज्यादा गूंजते हैं जिन पर आधुनिक सभ्यता का प्रकाश बहुत कम पड़ा है।

मगही लोककथा गीत

वस्तुत ये लोकगीत ही हैं पर इसमें कथातत्त्व की प्रधानता होती है। इन लोककथा गीतों का प्रारभ प्राय उस घटना के किंचित विस्तृत वर्णन से होता है जो सम्पूर्ण कथा भाग का बीजरूप होता है। मध्य म इन कथाओ का वर्णनात्मक विस्तार चलता रहता है। अत प्राय कारुणिक अभिव्यक्ति से होता है। यह कारुणिकता उस पात्र के आश्रित होती है, जो कथा के परिणाम का भोक्ता होता है।

उदाहरणार्थ एक-दो मगही लोककथागीतों को देखा जा सकता है। एक की नायिका है—**'दौलत'**[1] जिसके जीवन का कारुणिक अवसान पिता के धार्मिक अधविश्वास के आवर्त में होता है। कथा का सारांश यों है—एक राजा ने पोखरा खुदवाया, जिसमें पानी नहीं आया। ज्योतिषियों ने कहा—"पोखरे म पानी तभी आ सकता है, जब आप अपनी कन्या दौलत का बलिदान दगे।" राजा ने हजाम भेज कर छल से अपनी विवाहिता कन्या दौलत को बुलवाया। जैसे ही वह पिता की ड्योढ़ी पर पहुँची, माँ ने कहा—'बेटी! हाथ में सिंदूर का सिनोरा लो और पोखरा पूज कर घर में आओ।' दौलत जैसे ही पोखरा पूजने को प्रविष्ट हुई कि उसमें पानी आने लगा। क्रमश पानी उसके पैर, ठेहुना, कमर, गर्दन को छूता लिलार की टिकली तक पहुँच गया। वह आर्त्तनाद करती रही, पर किसी ने उसे नहीं बचाया। अन्त में वह डूब गई। पुत्री के इस निष्करुण बलिदान के बाद सचमुच पोखरा पानी से लबालब भर गया।

---

1 देखिए इसी सग्रह में पृ० ९१ ९२ तक।

दोलन के इस कथागीत के अनेक प्रतिरूप भारत के विविध क्षेत्रों में मिलते हैं ।[1] कथा-प्रधान इस गीत में 'नरबलि प्रथा' में सामान्य जन की आस्था का तत्त्व हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि "नरबलि-प्रथा" का उल्लेख प्राचीनतम भारतीय साहित्य वेदों तक में सुरक्षित है। परवर्ती वैदिक साहित्य में शुनःशेप की बलि की पूरी कहानी है । वरुण आर्य देवता है, फिर भी नर-बलि लेने के लिए आग्रहशील है। आर्य ऋषियों के समक्ष पूरे अनुष्ठान के साथ बलि होने जा रही है। शुनःशेप आर्य अजीगर्त का पुत्र है। अजीगर्त स्वयं अपने पुत्र की बलि देने को प्रस्तुत है ।[2]

एक दूसरा मगही कथागीत है जिसकी नायिका 'चंपिया' है। यह सामन्तशाही के प्रतीक राजा की लावण्य लिप्सा में अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करती है कथा का सारांश यों है— अद्वितीय सुन्दरी चंपिया पोखरा से स्नान करके वहीं अपने लम्बे केश झाड़ने लगती है। राजा नारायण सिंह की दृष्टि उस पर पड़ जाती है और वह मुग्ध हो जाता है । वह चंपिया के भाई गंगाराम के बुलाकर चंपिया की माँग करता है। गंगाराम के इनकार करने पर राजा उसे बंदी बना लेता है। चंपिया की भाभी चंपिया के रूप की भर्त्सना करती है और कहती है— 'तेरे रूप के कारण ही मेरे स्वामी बाँधे गये।' चंपिया मर्माहत होकर भाई को छुड़ाने का निश्चय कर लेती है। वह गोद के बालक को भाभी को देकर सोलहों शृंगार के साथ राज-दरबार पहुँच कर भाई को छुड़वा देती है। स्वयं राजा के साथ महल की ओर चलती है। राह में चंपिया के पिता का बनवाया पोखर है। जब डोली पोखर के पास पहुँचती है, तो वह प्यास का बहाना करके, राजा से अनुमति लेकर पोखर पर पहुँचती है। वहीं पानी पीने के क्रम में

---

१ (क) श्री रामनरेश त्रिपाठी ने "सीतापुर" में निम्नांकित आशय का कथागीत पाया था— राजा अजीत सिंह के एक कन्या हुई, जिसका नाम दौलत देवी रखा गया। राजा ने बारह वर्ष तक तालाब खुदवाया, पर पानी न निकला। ज्योतिषियों ने कहा— "पोखरे को दौलत बेटी का बलिदान चाहिए।" दुःखी राजा ने अपनी सतवन्ती रानी से सारी बातें कहीं। पति की प्रतिष्ठा रक्षा के लिए अपनी प्राण-प्यारी पुत्री की बलि के लिए रानी तैयार हो गई। सारी सभा के सामने दौलत के बलिदान के साथ ही, पोखरा पानी से भर गया। पुत्री बलिदान में विह्वल राजा को रानी ने ही आश्वासन दिया— 'तुम्हारी बेटी ने तुम्हारा नाम रख लिया।"

(हमारा ग्राम साहित्य - पृ० १६४-६६)

(ख) श्री श्याम परमार ने इसी प्रसंग को 'बालाबऊ' के गीत में प्रस्तुत किया है। यह गीत मालवा में, विशेष रूप से मध्यभारत के शाजापुर, देवास और उज्जैन जिले के गाँवों में गाया जाता है। इससे मिलता-जुलता एक दूसरा कथा-गीत निमाड़ी में प्रचलित है।

(भारतीय लो० सा० पृ० १४८-६४)

(ग) ब्रजभाषा की "ओघ द्वादशी" की कहानी से भी उपर्युक्त कहानियों की समानता है। (डा० सत्येन्द्र "भारतीय साहित्य" : वर्ष ३, अंक ३ - जुलाई १९५८)

२. वाजसनेयी संहिता में नर-बलि का उल्लेख है। श्री राजेन्द्र लाल मित्र ने सन् १८७५ के "जर्नल आव एशियाटिक सोसायटी" में "भारत में नर-बलि" शीर्षक निबंध लिखा था। इसमें उन्होंने स्थापनाएँ की थीं कि प्राचीनकाल में हिन्दू अपने देवताओं को नर-बलि देने में सक्षम थे। ऋग्वेद का शुनःशेप का मंत्र नर-बलि अथवा पुरुषमेध यज्ञ से ही संबद्ध है।

आत्म-बलि-दान कर लेती है।[१]

उपर्युक्त मगही लोककथा गीत के विभिन्न रूपान्तर अन्य भारतीय लोकभाषाओं में मिलते हैं।[२] इन कथागीतों से मध्ययुगीन सामाजिक स्थिति एवं 'सतीत्व' आदि हिन्दू नारी आदर्शों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

उपर्युक्त कथागीतों के सम्बन्ध में कुछ तथ्य द्रष्टव्य हैं। प्रायः इनका गायन वर्षा ऋतु में होता है। जब वर्षा होने में विलम्ब होता है, तब स्त्रियां अर्धरात्रि के पूर्व एकत्र होकर करुण स्वर से इन्हें "ठोने" के रूप में गाती हैं। उनका इस सम्बन्ध में विश्वास होता है कि उनके करुण स्वर से बलिदान के गीत गाने पर इन्द्र भगवान प्रसन्न होकर जल की वर्षा अवश्य करेंगे। ऐसी अनेक कथाएं भारतीय एवं विदेशी साहित्य में उपलब्ध होती हैं, जिनमें किसी आकांक्षा की पूर्ति या देवी देवता के क्रोध को शान्त करने के लिए 'नर बलि' का उल्लेख मिलता है। कुछ दिनों से 'नर बलि' की प्रथा उठ गई है। पर, अभी भी परम्परा के रूप में यह जन-विश्वास चल रहा है कि यदि बलिदान की कहानी दुहरा दी जायेगी, तो मानसिक रूपेण वास्तविक बलिदान हो जायेगा और देवता प्रसन्न होकर कामना पूर्ण अवश्य करेंगे।

मगही लोकनाट्य गीत

'गीत' और 'नाट्य' का सम्बन्ध प्राचीन काल से चला आ रहा है। मगही में ऐसे अनेक गीत हैं, जो गेय होने के साथ ही अभिनेय भी हैं। मूलतः ये लोक के गीत हैं, इसलिए इनमें लोकजीवन विशेषतः नारी के जीवन के विविध व्यापारों का वर्णन मिलता है। फिर उन्हीं का विभिन्न हर्ष उल्लास के अवसरों पर अभिनय किया जाता है। इन विशिष्ट प्रकार के (लोकनाट्य) गीतों का क्रम प्रश्नोत्तर शैली में निम्नांकित ढंग से चलता है—

स्त्रियों का एक दल मिल कर गाता है—

---

१ इस कथागीत का एक अन्य मगही प्रतिरूप भी मिलता है। इसमें चनिया के स्थान पर 'भागवन' का वर्णन मिलता है। इसमें वह ओसारे पर नहीं, झरोखे पर बैठी सोने की कंघी से केश झाड़ती दीख पड़ती है। रूप लोभी राजा नारायणसिंह के स्थान पर एक मुगल शासक "मिर्जा रसिया" है। भाई गंगाराम के स्थान पर होरिलसिंह है। अन्य कथा प्रसंग पूर्ववत् हैं।

२. श्री रामनरेश त्रिपाठी ने इस गीत के कई प्रतिरूप प्रस्तुत किए हैं। यथा बिहार में पाये जाने वाले गीत की नायिका है—'भागवन'। भाई है—'होरिलसिंह।' दुर्जन है 'मिरजा रसिया'। फैजाबाद से प्राप्त गीत में नायिका है—'कुसुमा' पिता 'जिउधन' है, लुटेरा—'मिर्जा' है। बलिया से प्राप्त गीत में बहन 'कुसुमा' है, भाई 'गंगाराम' है एवं लुटेरा 'मिरजा' है। इसी वर्ग के एक अन्य गीत में नायिका 'कुसुमा' है और लुटेरा 'भोजमन' है, शेष घटनाएँ मिलती-जुलती हैं।

[कविता कौमुदी—भाग—५ पृ० ३६८—३८१]

"कहवाँ से रूसले कहाँ जा हऽ हे बगुलो ?

नाट्यगीत की नायिका 'बगुली' अपने दल के साथ उत्तर देती है—

"ससुरा के रूसल नहिरा जा ही हे दीदिया।"

—इसी प्रकार आगे की पंक्तियों का साभिनय उच्चारण किया जाता है।

सामान्यतया इन लोकनाट्य गीतों की भाषा सरल, स्वाभाविक और अकृत्रिम होती है और भावों का प्रेषण सहज भाव से सम्पन्न होता है। इनके रंगमंच खुले मैदान, घर के आँगन, खलिहान, परती खेत, बाग-बगीचा, पथ, मन्दिर या ग्राम के चौपाल होते हैं। स्वभावतः इन पर पर्दे का व्यवहार नहीं होता, न रंगमंचीय सजावट होती है। अभिनय भी वैयक्तिक भावनाओं का प्रकाशक नहीं होता है। प्रायः समूह, जाति अथवा समाजविशेष की भावनाएँ ही सामूहिक अभिनय के रूप में व्यक्त होती हैं। जहाँ तक पात्रों का प्रश्न है, पुरुषों के नाटक में केवल पुरुष पात्र ही भाग लेते हैं और स्त्रियों के नाटक में केवल स्त्रियाँ ही भाग लेती हैं। आवश्यकतानुसार अपने नाटक में पुरुष स्त्रियों की भूमिका में स्त्रियोचित वेश-भूषा के साथ उतर आते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों की भूमिका में पुरुषोचित वेश-भूषा के साथ उतर आती हैं। स्त्रियों के नाटकों के विषय सीमित होते हैं। वे प्रधानतः पारिवारिक जीवन के विविध पक्षों, सम्बन्धों एवं गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों को व्यक्त करने योग्य कथानक चुनती हैं, जब कि पुरुषों के नाटकों में सामाजिक कथानकों के अतिरिक्त पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक कथानकों को भी स्थान दिया जाता है। जहाँ तक इन नाटकों के दर्शकों का प्रश्न है, स्त्रियाँ अपने नाटकों में पुरुषों के लिए प्रतिबन्ध रखती हैं। स्त्रियों के नाटकों की दर्शिका स्वयं स्त्रियाँ ही होती हैं, जब कि पुरुषों के नाटकों में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं होता। उनके नाटक स्त्री-पुरुष समान रूप से देख सकते हैं।

मगही-क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा अभिनीत होने वाले 'लोक नाट्यगीत' अनेक हैं, जो अद्यावधि *लोककंठ में ही बसे हैं। इन पंक्तियों की लेखिका ने इस वर्ग के चार नाट्यगीतों का संकलन-संपादन किया है।* वे ये हैं—

(क) बगुली

(ख) जाट-जाटिन

(ग) सामा-चकवा

(घ) डोमकच

'बगुली' में गार्हस्थ्य धर्म की मर्यादाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस नाट्यगीत के आरंभ में 'बगुली' एक लालची वधू के रूप में प्रस्तुत होती है। उसकी इस प्रकृति की सभी महिलाएँ आलोचना करती हैं। बगुली रुष्ट होकर नैहर भागना चाहती है। दूसरे दृश्य में बगुली नदी-तट पर मल्लाह से उस पार नैहर पहुँचाने की प्रार्थना करती होती है। मल्लाह उस पार पहुँचाने के मूल्य में उससे कोई न कोई आभूषण ठगना चाहता है। पर, वह इस पर

राजी नहीं होती। अन्त में वह दस्वा 'यौवन' मगता है, जो एक कुलीन वंश की महिला के लिए अदेय है। यही वजुली की चेतना को गहरी ठोकर लगती है। उसे घर की सीमाओं को लाँघने के कुफल का ज्ञान हो जाता है और वह घर लौट आती है। शेष नाट्य गीतों में भी गार्हस्थ्य जीवन के सम्बन्ध में कोई न कोई सीख मिलती है। ये सीख सरल कथानक पर आधारित है। यथा—"जाट-जाटिन" में "जाटिन" नहर के दम्भ पर व्यंग्य करना दिखाता है, पर जाट उस गार्हस्थ्य जीवन की सफलता की कुंजी "विनय" की सीख देता है। "सामा-चकवा" में भाई-बहन के पवित्र स्नेह सम्बन्ध की मर्मस्पर्शी व्यंजना हुई है। डोमकच का अभिनय घर के घर पर बारात के चले जाने के बाद रात्रि में होता है। सस्ता उद्देश्य मनोरंजन है पर मूलतः इसमें पुरुषों से प्रायः सूने घर के सरक्षा (चौकसी) का भाव निहित होता है।

मगध क्षेत्र में पुरुषों द्वारा अभिनीत होने वाले नाट्य विभिन्न पर्व त्योहारों के अवसर पर सम्पन्न होते हैं। कतिपय उल्लेख्य नाट्य हैं—स्वांग, नौटंकी रामलीला, रासलीला बिदेसिया आदि। स्वांग को लोकधर्मी नाट्य परम्पराओं में विशेष महत्त्व प्राप्त है। इसमें शृंगार-प्रवृत्तियों को बहुत छूट मिली होती है। हास्य की भी प्रधानता रहती है। स्वांग करने-वाले की वेशभूषा ऐसी होती है कि हँसी आये बिना नहीं रह सकती। विषय का चुनाव भी हास्य प्रधान होता है। स्वांग बना कर लोग विविध स्थानों में घूमते हैं। इनके पात्रों के साथ बहुत लोगों की टोली चलती है। स्वांग का अभिनय विशेष कर होली, सतुआनी आदि के अवसर पर होता है। 'नौटंकी' स्वांग का ही एक भेद है। इसमें भी शृंगार तथा हास्य की प्रधानता होती है। 'रामलीला' में रामचरित मानस की कथा के आधार पर राम की विभिन्न लीलाओं का अभिनय किया जाता है। कौशल्या सुमित्रा, कैकेयी सीता आदि नारी पात्रों का अभिनय भी पुरुष ही करते हैं। दशहरे के अवसर पर रामलीलाएँ अधिक प्रदर्शित की जाती हैं। रासलीला में गोपियों के साथ ब्रज में कृष्ण लीलाएँ दिखलायी जाती हैं। ये लीलाएँ प्रायः नृत्य गान संयुक्त होती हैं। 'बिदेसिया' बिहार का विख्यात लोकनाट्य है। इसका कथानक प्रेम प्रसंग एवं सामाजिक समस्याओं के संदर्भ को लेकर चलता है। विशेषकर सामाजिक कुरीतियों पर इसमें करारी चोट की जाती है।

मगही लोकगाथा[1]

सामान्य स्वरूप

मगही लोकगाथाओं का भंडार विशाल एवं अपार समृद्धियों से परिपूर्ण है। पर ये रत्न यों ही मार्ग में बिखरे नहीं मिलते। उनकी खोज करनी होती है, समुद्रों का अतल छानना होता है

१ विविध भाषाओं में 'लोकगाथा' की भिन्न भिन्न संज्ञाएँ हैं—

	भाषा या बोली	नाम
(क)	गुजराती	कथा गीत / पवाड़ा।
(ख)	राजस्थानी	गीतकथा / पवाड़ा।
(ग)	ब्रज	प्रबन्ध गीत / पमारा।
(घ)	महाराष्ट्री / छत्तीसगढ़ी	पँवाड़ा।
(ङ)	मालवा	पवाड़ो

और रानी की अंधेरी गहराइयां मापनी होती हैं। मगही लोकगाथाओं का विपुल भंडार भी सर्व समक्ष आ सके इसके लिए सोत्साह लगन एवं परिश्रम की जरूरत है। अपने सीमित सामर्थ्य एवं प्राप्त सुविधाओं के बल पर इन पंक्तियों के लेखक ने जो कतिपय मगही लोकगाथाओं का संकलन किया है उसकी कुछ सामान्य विशेषताएं यों प्रस्तुत की जा सकती हैं।

मगही लोकगाथाओं के रचयिता प्राय अज्ञात हैं। उनके जन्म मरणादि का विवरण तो दूर नामोल्लेख आदि का ज्ञान भी असंभव है। ये लोकगाथाएं लोक में परम्परा से पलती रही हैं अतः इनके प्रामाणिक मूलपाठ का अभाव है और वह स्वाभाविक भी है। कारण, अपने रचयिताओं के हाथों से निकल कर जब ये लोकगाथाएं समाज की थाती बन गई होंगी, तो कालान्तर में उनके रूपाकृति एवं भाषा में अनेकानेक परिवर्तन अपरिहार्य हो गये होंगे। यही कारण है कि इन लोकगाथाओं के पाठान्तर सहज भाव से दृष्टिगोचर हो जाता है। लोरिकाइन, 'गोपीचंद' कुंअर विजयी आदि भी गाथाएं उत्तर भारत के प्राय सभी क्षेत्रों में अति लोकप्रिय हैं। अतः यह कह सकना कठिन है कि किस क्षेत्र में प्रचलित लोकगाथा का पाठ प्रामाणिक है।

सभी मगही लोकगाथाएं गेय हैं। उनकी अपनी संगीत पद्धति है। जो भी लोकगाथा होती है, उसके साथ वैसा ही वाद्ययंत्र बजाया जाता है। यथा—वीररसात्मक लोकगाथाओं के साथ ढोल बजाया जाता है। गायक का स्वर ऊंचा होता है। योगियों द्वारा गायी जाने वाली लोकगाथाओं की संगत सारंगी से बैठती है। उनके स्वर करुण एवं शान्त होता है। यह संगीत गाथाओं के श्रवण से उत्पन्न वाले प्रभाव को गंभीर बनाने में अपना महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य योगदान रखता है। यही कारण है कि बिना संगीत के गाथा सुनने का कुछ मूल्य नहीं रह जाता। संगीत के साहचर्य से ही गाथाओं का अपेक्षित प्रभाव पड़ता है।

विस्तार की दृष्टि से मगही लोकगाथाएं प्राय बड़ी हैं। कुछ अनेक ऐसी हैं जिनका विस्तार महाकाव्य से कम नहीं है। उदाहरणार्थ 'लोरिकायन' को देखा जा सकता है। कथानक की इस विशालता के कई कारण हैं। एक तो यह कि इनमें विविध पात्रों के जीवन का सांगोपांग वर्णन होता है। दूसरा यह कि लोकगाथा के निर्माण में संपूर्ण समाज का सामूहिक योगदान रहता है। प्रत्येक व्यक्ति उसमें कुछ न कुछ जोड़ता जाता है। इस प्रकार नवीन कथानकों के जुड़ाव से कालान्तर में गाथाओं की आकृति विशाल हो जाती है। अपनी विशालता के बाद भी मगही

(च)	अंगरेजी	पापुलर सांग / बैलेड।
(छ)	भोजपुरी / मगही	लोकगाथा / पंवारा।

मगही में 'पँवाड़ा' शब्द 'पँवरिया' नामक विशेष जाति से संबंध रखता है। 'पवरिया' लोग भाड़ या नर्तक जाति के अन्तर्गत आते हैं। ये लोग पुत्र जन्म, विवाह आदि शुभ संस्कारों के अवसर पर अपने यजमान के यहां पहुंचकर पवारा गाते हैं। इनके गीतों में 'सोहर' 'भ्रमर तथा राजा पुरुषोत्तम की प्रशस्ति की प्रधानता रहती है। इनका गान नृत्य से सम्बन्ध रखता है। गान और नृत्य के साथ तुरही, घंटी और ढोलक भी बजाये जाते हैं।

लोकगाथाएं अपने रचयिताओं के व्यक्तित्व से अप्रभावित हैं। ऐसा लगता है कि सभी वर्गों के पात्रों एवं सभी प्रकार की घटनाओं तथा परिस्थितियों के चित्रण के बाद भी उनकी दृष्टि हमेशा स्वयं में तन्मय रही है और उनका मन मुख्यतः लोकानरीक्षण एवं लोक संवेदना में ही रहा है। स्थानीयता का पुट इनमें भरपूर है। प्रायः मगह समाज में प्रचलित सभी संस्कार, पूजा पाठ व अन्य धार्मिक विश्वास का इनमें सम्पूर्ण भाव में प्रवेश दीखता है। इसके बावजूद इनमें नयी दृष्टि में उपदेशात्मक अथवा प्रचारात्मक प्रयास का अभाव पाया जाता है। यह अन्य बात है कि अप्रत्यक्ष रूप से इनमें शुभाशुभ, मानापमान के प्रति प्रेम तथा भक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, साहस, शौर्य, प्रेम, मित्रता आदि के सन्देश भरे हैं। पर रचयिता का लक्ष्य उपदेशात्मक नहीं है। यत्र-तत्र शिक्षाएं अगर मिलती भी हैं तो वह तटस्थ है। शिल्प तत्त्व की दृष्टि से इन लोकगाथाओं में अलंकरण का अभाव दृष्टिगोचर होता है। ये सही अर्थ में लोक-काव्य (Poetry of Folk) हैं। आदिम मानव हृदय की अनुभूति एवं स्वाभाविक उद्गार की अत्यन्त सरलता एवं आत्मीयता में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति ही यहाँ प्रधान है। लोकगाथाओं का अज्ञात कवि शब्दबद्ध साहित्य रचने का अपना आधार बना कर नहीं चलता है। यह अन्य बात है कि स्वाभाविक रूप में कुछ अलंकार रस-तत्त्वादि का समावेश उनमें दीखता है। वस्तुतः उनका प्राण तत्त्व उनकी सहज अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता, सादगी, सरलता, सात्त्विक अनुभूति एवं नैसर्गिक प्रवाह में सन्निहित होता है।

मगही लोकगाथाओं का वर्गीकरण

लोकगाथाओं का वस्तुविषयक वर्गीकरण का विषय[1] को ही आधार बनाना समुचित है। इससे यह सरलता से ज्ञात हो जाता है कि किस गाथा में कौन भावना प्रमुख है। अतः विषय की दृष्टि से मगही लोकगाथाओं को निम्नांकित वर्गों में प्रस्तुत किया जा सकता है—

१. वीरकथात्मक लोकगाथाएँ
२. प्रेमकथात्मक लोकगाथाएँ
३. रोमांचकथात्मक लोकगाथाएँ
४. योगकथात्मक लोकगाथाएँ, और
५. अलौकिक शक्ति प्रधान लोकगाथाएँ।

मगही की वीरकथात्मक लोकगाथाओं के रूप में आल्हा, लोरिकायन, कुँअरविजयी छतरी घुघुलिया आदि को देखा जा सकता है। 'आल्हा' लोकगाथा के नायक आल्हा

---

१. मगही लोकगाथाओं के वर्गीकरण के लिए दो आधार अपनाए जा सकते हैं — (१) आकार एवं (२) विषय। 'आकार' की दृष्टि से मगही में दो प्रकार की गाथाएँ मिलती हैं लघु एवं वृहत्। 'लघु' गाथाओं को लोकगाथागीत की संज्ञा दी गई है और उन पर पहले विचार भी हो चुका है। वृहत् गाथाएँ महाकाव्य के समान विराट हैं। एक-एक गाथा का सम्पूर्ण वर्णन में महीनों का समय लग सकता है। यथा—लोरिकायन, कुँअरविजयी आदि।

उदाहरण है। इसमें दोनों वीरों के बावन युद्धों का वर्णन है। दोनों ने युद्धों में अद्वितीय वीरता दिखलाई है। प्रत्येक लड़ाई का कारण विवाह है। इस गाथा में अनेक राजाओं एवं स्थानों के वर्णन आये हैं, पर उनमें पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द, परमाल, महना आदि मुख्य हैं। प्राय: बरसात के दिनों में टोलकों पर आल्हा गाया जाता है। जनविश्वास है कि इसके गाने से पानी बरसता है। यद्यपि 'आल्हा खण्ड' बुन्देली लोकगाथा है, तथापि मगही क्षेत्रीय प्रभावों के साथ यह मगध क्षेत्र में पर्याप्त लोकप्रिय है। 'लोरिकायन'[1] में अहीर जाति के अद्वितीय वीर एवं लोरिक के अद्भुत वीरचरित एवं उत्साहवर्द्धक जीवन गाथा का वर्णन है। 'लोरिकायन' अहीरों का जातीय काव्य है जिसे वे अपने यहाँ के सभी मांगलिक एवं शुभ कार्यों के अवसर पर बड़े प्रेम, उत्साह और श्रद्धा से गाते हैं। राम गाथा 'रामायण' के अनुकरण पर इस काव्य का नामकरण 'लोरिकायन' हुआ है। मगही में इसकी सत्ता 'लोरकी' या 'लोरकायन' है। "कुँअरविजयी"[2] में अलौकिक वीरता सम्पन्न कुँअरविजयी के रासलिक गाथा एवं उत्साहपूर्ण जीवन गाथा का वर्णन है। इसी भाँति "छतरी दुसाधवा"[3] में जन्म से ही दैवी कृपापात्र क्षत्रिय राजा घुघुलिया के अद्भुत पराक्रम एवं उदात्त जीवन-गाथा का वर्णन है।

प्रेमकथात्मक वर्ग में मगही की वे लोकगाथाएँ रखी जा सकती हैं, जिनमें केन्द्र भाव के रूप में 'प्रेम' प्रतिष्ठित है। मगही में निम्नांकित प्रेम प्रधान लोकगाथाएँ वर्तमान हैं— रेसमा, शोभानायक, सारंगा सदाबिरिछ, राजा ढोलन आदि। "रेसमा"[4] लोकगाथा की नायिका रेसमा ही है। इसमें उसके निर्व्याज एवं सच्चे प्रेम का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किया गया है। "शोभानायक" लोकगाथा का नायक शोभान नायक स्वयं ही है। यह व्यापारी वर्ग का है। इसमें युद्ध या रोमांच का दृश्य कहीं नहीं आता। सम्पूर्ण गाथा में शोभानायक और उसकी पत्नी के विरह और प्रेम का ही सुन्दर निरूपण हुआ है। 'सारंगा-सदाबिरिछ' का नायक सदाबिरिछ है और नायिका सारंगा। ये दोनों सहपाठी थे। इसी बीच उनके हृदय में परस्पर प्रेम अंकुरित हो गया। पर बाधा यह थी की सारंगा एक राजा की बेटी थी और सदाबिरिछ एक साधारण नागरिक का बेटा था। फिर सारंगा विवाहिता थी और सदाबिरिछ अविवाहित था। प्रेम मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, पर अन्त में दोनों प्रेमियों का मिलन हो जाता है। इस गाथा में दोनों के प्रेम, प्रेम पथ की बाधाओं एवं अन्तिम मिलन का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। 'राजा ढोलन' में राजा ढोलन की प्रेमकथा वर्णित है। इनका विवाह बाल्यकाल में ही "मंगा" नामक कन्या से हो गया था, पर अनेक बाधाओं के कारण चिर काल तक दोनों

---

१ "लोरिकायन" के कई प्रतिरूप मगध क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। पर इनमें एक प्रतिरूप को ही लिपिबद्ध करने का अवसर मुझे मिल सका है। इस पर इसके गायक का कहना था कि वह अति संक्षेप में लिख रहा है। इस सम्बन्ध में उक्ति प्रचलित है— 'सात काड रमायन, अनगिनत काट लोरकायन'। देखिए—इसी संग्रह में पृ० १००—१३-।

२ देखिए—पृ० १६२—१७०।

३. देखिए—पृ० १४४—१५३।

४. देखिए पृ० १५४—१६१।

का मिलन न हो सका। बचपन में ही विवाह हो जाने के कारण दोनों को अपने परिणय-बंधन की जानकारी तक न थी। बड़े होने पर जब दोनों को पता चला तब मिलन के लिए प्रयत्न करने लगे। अन्त में टोनन ने मार्ग की सारी बाधाएं नष्ट कर डाली और अपनी पत्नी का द्विरागमन कराया। सारी गाथा प्रेम और विरह से परिप्लावित है।

रोमांच कथात्मक लोकगाथाओं के उदाहरण स्वरूप सती बिहुला, सोरठी आदि मगही लोकगाथाएं रखी जा सकती हैं। 'सती बिहुला' लोकगाथा की नायिका बिहुला है, जिसके सतीत्व की महत्ता सम्पूर्ण गाथा में प्रतिपादित की गई है। इसका सतीत्व उसी श्रेणी का है जिस श्रेणी का सती सावित्री का था। अपने सतीत्व के बल से वह अनेक अलौकिक कृत्य सम्पादित करती है। यथा— पत्थर के चावलों से भात सिझाना, पत्थर की मछलियों को तल कर सिझा लेना आदि। वह अपने अखंड सतीत्व के बल से अलौकिक शक्ति सम्पन्न देवी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है, जो अपने पति बाला लखन्दर को सर्प दंश से मृत्यु के बाद, सदेह स्वर्ग जाकर जीवित लौटा लाती है। बिहुला की सारी गाथा रोमांचकारी घटनाओं से परिपूर्ण है। इस गाथा का सम्बन्ध बंगाल के 'मनसा सम्प्रदाय से माना जाता है। बंगाल में बिहुला देवी की पूजा का व्यापक प्रचार भी है। मगध क्षेत्र में प्रायः नागपंचमी के दिन बिहुला की गाथा गायी जाती है। जनविश्वास है कि इस दिन इस गाथा को सर्प भी बड़े अनुराग से सुनते हैं। इसे गाते समय यदि सर्प दिखाई पड़ जाये तो उसे देवता समझ कर मारा नहीं जाता है। "सोरठी" लोकगाथा की नायिका सोरठी ही है, नायक बिरिजभार है। सोरठी का जन्म एक राजा के घर में होता है, पर एक द्वेषी ब्राह्मण की सलाह से उसका पिता उसे एक काठ की पेटी में बंद कर गंगा में बहा देता है। एक कुम्हार सोरठी को नदी से छानता और उसे पालता है। इसी अलौकिक कृपा से गरीब कुम्हार राजा हो जाता है। बाद में घटना चक्र में पड़ कर वह अपने असली पिता के पास पहुँचती है, जहाँ गोरखनाथ के शिष्य बिरिजभार से उसका प्रेम हो जाता है। बिरिजभार अनेक साधनाओं एवं तपों के बाद गुरु गोरखनाथ की कृपा से उसे पाता है। अन्त में दोनों में विवाह हो जाता है। इस गाथा में दोनों नायक नायिका दिव्य एवं अलौकिक शक्ति-सम्पन्न हैं। सारी कथा रोमांचकारी घटनाओं से पूर्ण है। यथा—सोरठी के स्पर्श से काठ के सन्दूक का स्वर्ण मञ्जूषा में परिणत हो जाना, बिरिजभार का कई बार मृत्यु की गोद में सोने पर भी जीवित हो जाना, अनेक पात्र पात्रियों का सदेह स्वर्ग जाना आना इन्द्र से मिलन एवं अप्सराओं का धरती पर आगमन आदि।

योगात्मक वर्ग में वे गाथाएँ आती हैं, जिनमें योग एवं वैराग्य की कथाएँ वर्णित होती हैं। मगही में ऐसी दो गाथाओं की जानकारी मुझे मिली है— १) **राजा भरथरी** और (२) **राजा गोपीचन्द**। **"राजा भरथरी"** की गाथा के नायक स्वयं राजा भरथरी (भर्तृहरि) ही हैं। इनकी गणना नवनाथों में होती है। इनका सम्बन्ध उज्जैन के राजवंश से था। इनकी पत्नी का नाम **सामदेई** था और बहन का नाम **मैनावती**। 'मैनावती' गोपीचन्द की माता मानी जाती हैं। इस प्रकार गोपीचन्द राजा भरथरी के भांजे ठहरते हैं। भरथरी ने गुरु गोरखनाथ का शिष्यत्व ग्रहण कर राज्य का परित्याग किया था। इनकी गाथा में प्रधानतः भरथरी और रानी सामदेई की कथा वर्णित है। गुरु के आदेश पर भरथरी अपनी पत्नी सामदेई

को "मा" कह कर भिक्षा मांगते हैं। इस समय का दोनों का संवाद बड़ा मर्मस्पर्शी है। इस गाथा में नाथधर्म के व्यावहारिक पक्ष की बड़ी सुन्दर व्यंजना हुई है।" राजा—गोपीचन्द[1] की गाथा में गोपीचन्द के वैराग्य का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है। ये भी नवनाथों में एक हैं, जिनका नाथ सम्प्रदाय में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनकी माता जलन्धरनाथ की शिष्य थीं और कहा जाता है कि माता के ही आग्रह पर गोपीचंद ने युवावस्था में वैराग्य धारण किया था। पर गोपीचन्द की गाथा के मगही प्रान्तर में माता मैनावती सामान्य माताओं की भाँति मातृसुलभ कोमलता एवं करुणता से ओत प्रोत दिखाई देती है। वे पुत्र को वैराग्य ग्रहण करने से रोकती हैं, और न रुकने पर रोती है। गोपीचन्द के वैराग्य के समस्त प्रसंग बड़े कारुणिक हैं। माता मैनावती और बहन बिरना से गोपीचन्द का संवाद बड़ा मर्मस्पर्शी उतरा है। योगात्मक वर्ग के अन्तर्गत आने वाली गाथाओं के गायक "जोगी जाति" के लोग होते हैं, जो "सारंगी" पर इन्हें गाते हैं। गोपीचन्द के नाम पर इस सारंगी का नामकरण 'गोपीचन्द' हो गया है। ये जोगी इन योगात्मक लोकगाथाओं को ऐसी करुण शैली में गाते हैं कि श्रोता पर उनका मार्मिक प्रभाव पड़ता है और वे अश्रुसिक्त हो उठते हैं।

अलौकिक कथातत्त्व प्रधान लोकगाथाओं में अब तक एक ही लोकगाथा का पता इन पंक्तियों की लेखिका को चल सका है। यह लोकगाथा है "नेटुआ दयाल सिंह"। नेटुआ दयाल सिंह ही इस लोकगाथा के नायक और नटुआ जाति की विभूति हैं। ये देवी के बड़े भक्त थे, जिसके फलस्वरूप उनमें अलौकिक शक्ति आ गई थी। इनका अपना मकान "भंडोरा" था पर विवाह बचपन में ही "बंगरी शहर" में हो गया था। युवक होने पर ये अपनी पत्नी धनिया की बिदाई कराने गये। मार्ग में अनेक बाधाएँ आईं। बंगरी शहर में तो इन्हें जादू के युद्ध' का सामना करना पड़ा। पर इन पर देवी का इष्ट होने से सर्वत्र इन्हें विजय प्राप्त हुई। अन्त में ये अपनी पत्नी को विदा करा घर ले आये। इस सम्पूर्ण गाथा में अनेक अलौकिक तत्त्वों का समावेश है।

मगही लोककथा

सामान्य-परिचय

मगध की जनता का जीवन ग्राम्य गल्पों से ओत प्रोत है। बालक होश संभालते ही नानी दादी से शिक्षाप्रद और मनोरंजक कथाएँ सुनना आरंभ करते हैं। इनके माध्यम से उनका चरित्र निर्माण होने लगता है। कुछ बड़े होने पर वे नाना दादा के चौपालों में कथा कहानियों का वही सिलसिला देखते सुनते हैं। इसके बाद वयस्क होने पर तो वे स्वयं कथाओं के भण्डार हो जाते हैं। गृहदेवियां भी मांगलिक अवसरों पर कथा-कहानियाँ सुनती सुनाती हैं। इस प्रकार मौखिक परंपरा में ये कथाएँ सुरक्षित होती चली आ रही हैं।

मगध के लोक-जीवन में इन कथाओं का बड़ा महत्त्व है। किसी घटना या परिस्थिति के समर्थन या विरोध के अवसर पर ये बहुत काम आती हैं। इनमें मात्र कल्पना की उड़ान नहीं हृदय की वास्तविक अनुभूतियां संचित हैं। सुख के क्षणों में ये हार्दिक अनुरंजन करती हैं, पर

१. देखिये पृ० १३६-१४४।

हैं वे जनों में इनसे नीति, और धैर्य आदि के सन्देश भी मिलते हैं। मगही जनता को अपने पूर्वजों से मौखिक परम्परा के रूप में प्राप्त ये कथा वैभव सर्वदा माहात्म्य से उसे सम्बद्ध बनाये रखने में समर्थ हैं।

मगही कथाओं के स्रोत—

मगध क्षेत्र ही क्यों, सम्पूर्ण भारतवर्ष का कहानियों का देश कहा गया है। यहां लोक कहानियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति की एक अविच्छिन्न परम्परा दिखाई पड़ती है। विश्व साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। उसके कितने ही अंश कहानी के रूप में हैं।[1] संस्कृत के अनेक आख्यानक और आख्यायिकाएँ ऋग्वेद संहिता में बीजरूप में आरंभ होकर उपनिषदों, निरुक्त, बृहद्देवता, कात्यायन सर्वानुक्रमणी और पुराणों में हा । इड पाए जाते हैं। पौराणिक युग में पौराणिक कथाओं के प्रसार और विस्तार का परिणाम यह हुआ ये कथाएं मायिक हो गई। इनके सादृश्य पर अनेक दन्त कथाएं गढ़ी जाने लगीं, जिनने परवर्ती कथा साहित्य को बहुत प्रभावित किया। इसका प्रमाण यह है कि समस्त परवर्ती संस्कृत कथा ग्रन्थों में पशु पक्षी, देव दानव, नदी-पहाड़, पेड़ पौधे आदि समस्त चराचर सजीव चरित्र के रूप में आये हैं। देवकथाओं की इस शैली का व्यापक प्रभाव बाद जातक कथाओं में देखने में आता है। संस्कृत के प्राप्य कथा ग्रन्थों में वृहत्कथा, कथा सरित्सागर, बैताल पंचविंशतिका, शुकसप्तति, सिंहासन द्वात्रिंशिका पंचतंत्र और हितोपदेश में नायक रूप से यही शैली अपनाई गई है। ये कथा-संग्रह भारतीय कथा साहित्य के स्तंभ हैं। इनके आधार पर अनेक कथाएँ गढ़ी गईं। विद्वानों का अनुमान है कि हिन्दी-भाषी प्रदेशों में जितनी भी दंतकथाएँ और लोककथाएँ प्रचलित हैं; उनके मूल स्रोत उपर्युक्त कथा संग्रह ही हैं। मगही भी हिन्दी की एक विभाषा है, अतः स्वभावतः इन्हीं स्रोतों से उसे भी दंतकथाओं और लोककथाओं का विपुल वैभव मिला है।

मगही लोककथाओं का वर्गीकरण

जहांतक मगही लोककथाओं के वर्गीकरण का प्रश्न है, इसमें कई कठिनाइयां सामने आती हैं। कारण ये अभी तक मौखिक परम्परा में ही वर्तमान रही हैं। इनका कोई प्रामाणिक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में इन पंक्तियों की लेखिका के अध्ययन का मुख्य आधार मगही लोककथाओं का निजी संग्रह है। इनकी मूल प्रवृत्तियों एवं वर्ण्य विषय को दृष्टिपथ में रखते हुए इन्हें निम्नांकित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

---

१. वैदिक कहानियाँ हिन्दी में प्रकाशित।

मगही लोक-कथाएँ
१ उपदेशात्मक
२ व्रत त्योहार संबंधी
३ सामाजिक
४ मनोरंजन संयुक्त
५ प्रेमात्मक
६ काल्पनिक
७ साहस पराक्रम सं०
८ पौराणिक
धर्म विषयक
नीति
भाग्य
दुर्जन
बुद्धि
जाति संबंधी
मित्र—प्रेम—विग्रह सं०
परिवार सं०
पुरुष सं
स्त्री सं०
अभिप्राय प्रधान
शुद्ध मनोरंजन प्र०
हास्य प्रधान
इतिहास पुरुषाश्रित (अवदान)
अनैतिहासिक पुरुषाश्रित
पारिवारिक
प्रेमी प्रेमिका सं०
अलौकिक
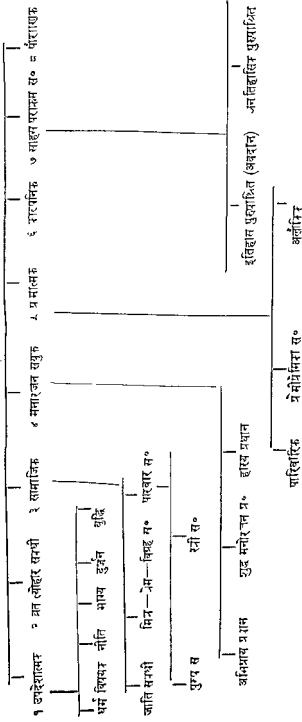
वर्ग से भी हीन होते हैं। 'बुद्धि विषयक'—कथाओं में बुद्धिबल के सामने शारीरिक बल को सर्वदा पराजित दिखाया जाता है। इस वर्ग की कथाओं में अनेक बार केन्द्रीय भाव से बुद्धिबल प्रतिष्ठित दिखाई देते हैं और उन्हीं के आसपास कथा का ताना बाना बुना होता है। उदाहरणार्थ "राजा भोलन"[1] 'नारी की चतुराई'[2] आदि लोककथाएँ देखी जा सकती हैं।

व्रत त्योहार संबंधी कथाएँ

धर्म और व्रत का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी कारण भारत के अन्य भागों की भाँति मगध-क्षेत्र में भी व्रत का चरम महत्व प्राप्त है। व्रत तीन प्रकार के होते हैं— नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य। 'नित्य व्रत' का अनुष्ठान आवश्यक माना जाता है। यथा—एकादशी व्रत। 'नैमित्तिक व्रत' किसी निमित्त (कारण या अवसर) को लेकर किया जाता है। यथा—चान्द्रायण व्रत। काम्य व्रत किसी विशेष कामना की सिद्धि के लिए किया जाता है यथा—सोमवार व्रत, जितिया व्रत, गोधन व्रत आदि। मगध में ये तीनों प्रकार के व्रत प्रचलित हैं।

व्रतोत्सवों के पीछे अनेक दृष्टियाँ काम करती हैं। यथा—आत्मशुद्धि, परमात्मा चिन्तन, ऋतु उत्सव आदि। पर सामान्य लोक-जन 'व्रतों' के धार्मिक, सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, पौराणिक महत्वों का विवेचन विश्लेषण किए बिना ही परम्परा के कारण उन्हें धारण करते चलते हैं। युग युगान्तर से अमुक व्रत किये जाते रहे हैं, अमुक पर्वोत्सव मनाया जाता रहा है, अमुक अनुष्ठान किए जाते रहे हैं, ये ही भावनाएँ प्रेरणा शक्ति बन कर व्रत त्योहारों की ओर उन्हें प्रवृत्त करती रही हैं।

व्रत-त्योहारों के अवसर पर केवल गीत ही नहीं गाये जाते, कथाएँ भी कही जाती हैं। इन कथाओं का आनुष्ठानिक महत्त्व होता है। इनकी वाचिका प्रायः महिलाएँ होती हैं। कथाओं से सम्बद्ध कुछ व्रत निम्नांकित हैं—

जितिया, भैया दूज, अनन्त चौदस, छठ, शीतला, अष्टमी आदि। इन व्रतों से सम्बद्ध कथाओं में उनका माहात्म्य दर्शाया जाता है। यथा—जितिया[3] व्रत के माहात्म्य से किसी स्त्री का पुत्र विपत्ति में पड़ कर भी निकल आता है, भैया दूज[4] के व्रत के माहात्म्य से कोई स्त्री अपने प्राणप्रिय भाई को मृत्यु के कराल गाल से निकाल लेती है। इसी प्रकार अन्य व्रत कथाओं में व्रतों को नियम पूर्वक करने के कारण महिलाएँ अपने प्रिय जनों की रक्षा में समर्थ होती देखी जाती हैं।

प्रायः सभी व्रत कथाओं का अन्त इस मंगल वाक्य से होता है- "जैसन उनकर दिन फिरल, ओयसहीं सबके दिन फिरे।"

सामाजिक कथाएँ

समाज व्यक्ति-समुदाय का ही नाम है। पर व्यक्ति को समुदाय के रूप में संगठित हो कर 'समाज' का रूप लेते-लेते हजारों वर्ष लग गये। इस बीच न जाने कितने परिवर्तनों ने समाज की

1 पृ० १६-२१। 2. पृ० ४-६।
3. पृ० ८-६। 4. पृ० १०-११।

रूप रेखा संवारी। पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन निरन्तर बढ़ते उत्तरदायित्वों एवं जटिल होते कार्य व्यापारों का था। उन्हीं के सम्भालने की चिन्तन प्रक्रिया में वर्ण-व्यवस्था का जन्म हुआ। *इस वर्ण-व्यवस्था ने कालान्तर में अनेक उपजातियों एवं वर्गों का जन्म दिया,* जिनके स्वभाव-संस्कार व्यापार आदि एक दूसरे से निरन्तर भिन्न होते चले गये।

इन सारी विभिन्नताओं में भी व्यक्ति-सत्य वर्तमान था। वह यह कि समाज के प्रधान अंग रूप दो ही थे—पुरुष और नारी। प्रकृति से ही नारी ने गृह भार संभाला, पुरुष ने बाहर का भार। प्रारम्भ में दोनों ही मुक्त थे, दोनों ही मुक्ति-कामी। पर बाद में गृहस्थी की जटिलताएँ बढ़ती गई और वे नारी को निरंतर जकड़ती चली गई। दूसरी ओर पुरुष उत्तरदायित्वों का यथा-साध्य निर्वाह करता हुआ भी गृह के बाहर स्वच्छन्द होने से सस्वारत निरन्तर स्वतन्त्र प्रकृति का होता चला गया। एक ऐसी भी स्थिति आयी कि दोनों के अधिकारों एवं जीवन निर्वाह स्वरूपों में पर्याप्त भिन्नता आ गई और उससे अनेक समस्याएँ उठ खड़ी हुई। बहु विवाह समस्या, विमाता की समस्या, विधवा की समस्या आदि सभी ही अनन्य समस्याओं में से कुछ हैं। फिर मानव प्रकृति में भी एक प्रवृत्ति वैभिन्य दृष्टि गोचर नहीं होता। उसके कारण भी समाज को नई नई अनुभूतियों के संदर्भ हमेशा प्राप्त होते रहे।

'सामाजिक वर्ग' में आनेवाली मगही लोक कथाओं में उपर्युक्त सभी समस्याओं पर प्रकाश पड़ता है। दूसरे शब्दों में इन लोककथाओं के माध्यम से मगध जनपद की लोक-चेतना के सामाजिक विकास का इतिहास पढ़ा जा सकता है। अतः इन पर किंचित विस्तार से विचार आवश्यक है। *अध्ययन की सुविधा के लिए इस वर्ग की लोककथाओं को निम्नांकित उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—*

(क) जाति संबंधी
(ख) मित्रों के प्रेम और विग्रह संबंधी
(ग) परिवार संबंधी
(घ) स्त्री संबंधी
(च) पुरुष संबंधी

जाति सम्बन्धी लोक कथाओं में विभिन्न जातियों के स्वभाव संस्कार व्यापार आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। यथा—ब्राह्मण[1]। ये दो प्रकार के मिलते हैं—(१) पंडित, जो अपने प्रकृत गुणों के कारण राज दरबार में उचित सम्मान पाते हैं। और मूर्ख, जो वास्तव में उत्तम गुण सम्पन्न नहीं होने पर विद्वत्ता का भ्रम उत्पन्न करके जीविका चलाते हैं। कभी-कभी उनकी कलई खुल जाती है, वे धोखा भी खाते हैं। क्षत्रिय[2]—ये प्रायः राजा होते हैं। इनके भी दो वर्ग दिखाई पड़ते हैं—(१) न्याय परायण, कार्यप्रिय, दानी राजा एवं (२) रसिक, शिकार-प्रेमी, बहु विवाह प्रेमी राजा। कथा-चक्र में दोनों प्रकार के राजाओं के स्वभाव-चरित्र का पूर्ण विश्लेषण होता है। कायस्थ[3] ये अपनी चतुराई के कारण प्रसिद्धि-प्राप्त करते देखे जाते हैं।

१, पृ० २२-२३, पृ० ६-७। २ पृ० २४, पृ० १६-२१। ३. पृ० १२-१३।

बनिया[1] ये अपने व्यापार प्रेम एवं प्रकृति की भीरुता का परिचय देते देखे जाते हैं। इसी प्रकार कहा कुम्हार-कुम्हारिन की गरीबी और प्रकृति की उदारता पर प्रकाश पड़ता है तो कहीं कुंजड़े[2] के दीन व्यवसाय पर, कहीं नाऊ जाति की धूर्तता, एवं यजमानवृत्ति के दर्शन होते हैं, कहीं सोनार की लोभी प्रवृत्ति के इन लोककथाओं में। कोई जाति छूटी नहीं है, जिनका आलोचनात्मक विवरण इनमें प्राप्त न होता हो। मित्रों के प्रेम और विग्रह-संबंधी कथाओं में उनके प्रेम और विग्रह के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं इनमें केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी एवं अन्य अचेतन पदार्थ भी पात्र रूप में आये हैं। जो प्रेम निस्वार्थ भाव, परस्पर सहयोग की प्रवृत्ति एवं सेवावृत्ति पर आधारित होता है, वह स्थायी होता है। इसके विपरीत होने पर संघर्ष की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। और कभी कभी तो मित्रता[3] टूट जाती है। परिवार-संबंधी—कथाओं में सास पतोहू ननिनी-ननद सातों के द्वेष[4] विमाता के अत्याचार,[5] नारी की कुटिलता[6] आदि से संबद्ध समस्याओं का बड़ा ही सश्लिष्ट चित्रण मिलता है। परिवार की अपनी समस्याएँ हैं। कारण 'परिवार' केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, वहाँ अनेक इकाइयाँ मिल कर एक होती हैं और अनेक व्यक्तिगत कामनाएं तथा मान्यताएं परिवार के आदर्शों के सामने हटानी पड़ती हैं। परिवार में स्त्री पुरुष ही रहते हैं, पर वे विविध संबंधों में बँधे होते हैं, यथा एक पुरुष किसी का पुत्र किसी का पिता, किसी का पति आदि रहता है। एक ही स्त्री किसी की पुत्री किसी की पत्नी, किसी की माता आदि होती है। सभी सम्बन्धों के बीच परस्पर साहाय्य भाव से परिवार में सुख शान्ति और समृद्धि रहती है। उसके विपरीत परिवार में विग्रह आने लगता है। मगही की लोककथाओं में उपर्युक्त प्रत्येक वर्ग एवं परिस्थितियों के यथार्थ चित्र उपलब्ध होते हैं।

मनोरंजन प्रधान लोक कथाएँ

इस वर्ग की कथाओं का प्रमुख उद्देश्य है— मनोरंजन करना। इन्हें भी तीन उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) अभिप्राय-प्रधान

(ख) शुद्ध मनोरंजन-प्रधान

(ग) हास्य-प्रधान

अभिप्राय-प्रधान—लोककथाओं में मनोरंजन के साथ कुछ उपदेश के भाव निहित रहते हैं।[7] प्रायः ऐसी कहानियाँ पशु पक्षी या अचेतन पदार्थों से सम्बद्ध होती हैं। संस्कृत साहित्य में 'पंचतंत्र' एक ऐसी ही कहानी पुस्तक है, जिसकी रचना राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा देने के लिए हुई थी। इन कहानियों के पात्र पशु पक्षी थे और इनमें कुछ न कुछ अभिप्राय सन्निहित थे। डॉ॰ सत्येन्द्र ने पशु-पक्षी संबंधी साभिप्राय सभी कहानियों को "पंचतंत्रीय कहानी"

---

१ पृ० ६ १० । २ पृ० १२ । ३. पृ० १-२ । ४. पृ० २०-६ । ५. पृ० १५-१७ ।
६. पृ० २७-२८ । ७ पृ० १७-१९ ।

कहा है।[1] पशु-पक्षी संबंधी पंचतंत्रीय कहानियाँ इतनी लोकप्रिय हुईं कि पाश्चात्य देशों के अनेक विद्वानों ने उन पर कार्य किया है।[2]

शुद्ध मनोरंजन-प्रधान—कथाओं में प्रायः पात्र पशु-पक्षी होते हैं। पंचतंत्र में शुद्ध मनोरंजन युक्त कहानियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कुछ कथाओं के पात्र तो पेड़ पौधे नदी आदि अचेतन पदार्थ भी हैं। हास्य प्रधान—कथाओं में भी जड़-चेतन दोनों ही प्रकार के पात्र दीखते हैं, जो विशुद्ध हास्य की सृष्टि का प्रयास करते नजर आते हैं।

प्रेमात्मक कथाएँ

इस वर्ग की कथाओं को निम्नांकित तीन उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) पारिवारिक प्रेमकथाएँ

(ख) सामान्य प्रेमकथाएँ

(ग) अलौकिक प्रेमकथाएँ

पारिवारिक प्रेमकथाओं[3]—में माता-पुत्र, पति पत्नी, भाई-बहन, मित्र मित्र एवं अन्य परिजनों आदि के पारस्परिक प्रेम आदि का वर्णन होता है। सामान्य प्रेमकथाओं—में किसी प्रेमी द्वारा नाना बाधाओं को पार कर अपनी प्रेमिका को पा लेने का साहसिक आख्यान होता है। अलौकिक प्रेमकथाओं—में अलौकिक तत्वों की प्रधानता होती है। इनमें प्रायः असामाजिक प्रेम-कामनाएं प्रश्रय पाती दीखती हैं। दोनों के प्रणय बंधन में सर्वदा के लिए बँध जाने की संभावनाएँ उपलब्ध होती हैं। पर दोनों विह्वलता में मार्ग की कठिनाइयाँ झेलते रहते हैं। मगही में "सारंगा सदाबिरछ" की प्रेम कथा इसी वर्ग की है। इसमें सदाबिरिछ कितनी बार मरता और पुनः मंत्रबल से जीवित हो जाता है।

काल्पनिक लोककथाएँ

इस वर्ग की लोककथाओं में कल्पनाशीलता की प्रधानता स्पष्टतया परिलक्षित होती है। इन लोककथाओं की घटनाओं में कार्य कारण संबंध का प्रायः अभाव होता है। प्रायः इनमें असम्भव घटनाएँ ही घटती पायी जाती हैं। यथा—कोई मर कर फूल का पौधा बन जाता है किसी राक्षस प्राण के विशेष पिंजड़े में बंद मिलते हैं, कोई परी अपने दिव्य सौन्दर्य से मानव को पराभूत करती पायी जाती है, कोई भूत-प्रेत अपने कुकृत्यों से मानव को आतंकित करता पाया जाता है कोई देवदूत आशा के संदेश लेकर आकाश से उतरता दिखाई देता है और कभी पशु पक्षी, जीव जन्तु, पेड़ पौधे मानव के सहायक बनते पाये जाते हैं। इस वर्ग की कथाओं की संख्या बहुत बड़ी है।

---

१. ब्र० लो० सा० अ०—पृ० ४८६।

२. मैक्डानल लिखित "इंडियाज पास्ट एंड प्रेजेन्ट" श्री गौरांग बनर्जी लिखित "हेलेनिज्म इन एन्शियेन्ट इंडिया" के अध्याय १४ में "फैबिल्स एण्ड फोकलोर" तथा श्री एच० एच० विल्सन कृत "ऐसेज आन सब्जेक्ट्स कनेक्टेड विद् संस्कृत लिटरेचर" प्रथम तथा द्वितीय भाग।

३. पृ० २६—३०।

साहस-पराक्रम की लोककथाएँ

इस वर्ग की लोककथाओं में प्रायः किसी वीर नायक के चरित्र का उल्लेख रहता है। इन्हें भी दो उपवर्गों में रखा जा सकता है—(१) इतिहास-पुरुषाश्रित एवं (२) अनैतिहासिक पुरुषाश्रित। प्रथम उपवर्ग में राजा विक्रमादित्य, राजा भोज, राजा भरथरी और राजा गोपीचन्द आदि की कहानियाँ आती हैं। इन राजाओं में वीरता के अतिरिक्त अन्य गुण भी हैं जिनके कारण इन्हें प्रसिद्धि मिली है। यथा—महाराज विक्रमादित्य और राजा भोज वीर होने के अतिरिक्त दानशील, दयालु एवं विद्वान सम्राट थे। राजा भरथरी एवं गोपीचन्द में अन्य गुणों के अतिरिक्त वैराग्य भाव को प्रधानता मिलती है जिसके कारण ये विख्यात हुए। **द्वितीय उपवर्ग** में किसी भी काल्पनिक राजा या उसके पुत्र या वीर पुरुष की वीरता एवं उसके अलौकिक कृत्यों का उल्लेख होता है। इस वीर पुरुष प्रायः बड़े बड़े भयंकर राक्षसों, दुर्जनों एवं भूत प्रेतों को अपनी शक्ति और बुद्धि से पराजित करते देखे जाते हैं। ये अपने अपूर्व शौर्य के सहारे इच्छित फल प्राप्त करते पाये जाते हैं।

पौराणिक लोककथाएँ

प्रायः देवी देवताओं से सम्बद्ध लोककथाएँ इसी वर्ग में आती हैं। इनमें उनके अलौकिक कृत्यों के वर्णन के साथ पौराणिक घटनाओं का उल्लेख भी होता है। यथा—"समुद्र मंथन की कथा की"[1] "भगवान के विविध अवतारों की कथा आदि।[2] कुछ देवपात्र मानव के कार्य कलापों में विशेष सहायक होते पाये जाते हैं। इनके संबंध में अनेक काल्पनिक धारणाएँ इन कथाओं में व्यक्त होती हैं। देव पात्रों में विशेष उल्लेख्य शिव पार्वती और बिध विधाता हैं। **शिव-पार्वती**—प्रायः रात्रि में साहेश्य विचरण करते देखे जाते हैं। यात्रा के क्रम में पार्वती के हठ करने के कारण शिव को अनेक बार दीन दुखिया की सहायता करनी पड़ती है, सौभाग्यवती, पुत्रहीना को पुत्रवती तथा दरिद्र को धनी करना पड़ता है। **बिध-विधाता**—ये प्रायः शिशु की छठी के दिन भाग्य लिखने के लिए रात में विचरण करते दृष्टिगोचर होते हैं। राह में बिध की जिद पर विधाता को अनेक अलौकिक कृत्य सम्पादित करने पड़ते हैं। यथा—दीन दुखिया का भीषण संकट से उद्धार, मृतकों एवं निर्जीव में प्राण प्रतिष्ठा आदि। इन कथाओं में देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा, पूज्यभाव एवं विश्वास की व्यंजना की जाती है।

उपर्युक्त वर्गों की लोककथाओं के अतिरिक्त, शैली की दृष्टि से कतिपय मगही लोककथाओं को एक भिन्न वर्ग में रखा जा सकता है। वह है—

---

१. अनन्त चतुर्दशी के पर्व में थाली में दूध लेकर स्त्री हीलते हैं। पुरोहित और स्त्री में वार्ता चलती है। पुरोहित पूछता है—'का मथइ हऽ ?' स्त्री जवाब देती है—छीर समुन्दर (क्षीर समुद्र)। पुरोहित पुनः पूछता है— केकरा खोजइ हऽ ?' उत्तर—"अनन्त देवता के" । पुरोहित—"पयलऽ' ? स्त्री—'हाँ, पयलीं।'

२ रामावतार, कृष्णावतार, नृसिंह अवतार की कथाएँ।

क्रम सम्बद्ध लोककथाएँ

इस वर्ग की कथाएँ दो उपवर्गों में विभाजित हो सकती हैं—(क) साधारण लघु छंद कथाएँ एवं (ख) क्रम-सम्बद्धित लघु छंद कथाएँ —इनमें इनकी विशेषताएँ यों प्रस्तुत की जा सकती हैं—

इनमें विशेष गतिक्रम दृष्टिगोचर होता है। प्रायः लघुवृत्त का उपयोग होता है। कथा की पुनरावृत्ति होती चलती है। कथा का प्रभावशाली अंश छंदोबद्ध होता है। इनमें जिज्ञासात्मक विलक्षणता सन्निहित होती है। पूर्व कथित अंशों की पुनरावृत्ति, कहानियों की रहस्यता आदि बालसुलभ मनोवृत्ति के अनुकूल होती है। संक्षेप के भाव से आधार एक बात को छोटे प्रभावपूर्ण शब्दों में कहने का भाव प्रबल होता है।

साधारण लघुछंद लोककथाओं—के उदाहरण रूप में 'अभला'[1] शीर्षक लोककथा रखी जा सकती है। इसमें बहुत दूर तक कुछ ही छंदोबद्ध पंक्तियों की पुनरावृत्ति होती रहती है। क्रम-सम्बद्धित लघुछंद कथाओं के उदाहरण रूप में खूँटे में खूँट का दाना पान वाले सुग्गे की लोककथा देखी जा सकती है, जो क्रमशः बढ़ई, राजा, रानी, सांप, लाठी, आग, समुद्र, हाथी और चींटी के पास पहुँच कर अपनी फरियाद सुनाता है और अपना काम न कर देने वाले को दंडित करने की प्रार्थना करता है। अन्त में चींटी को उस पर दया आ जाती है। वह मदद करने को तैयार हो जाती है फिर तो सारा छंद क्रम उलट जाता है। चींटी के भय से हाथी, हाथी के भय से समुद्र और इसी क्रम से सभी भय से सुग्गे का काम करने को तत्पर हो जाते हैं। सुग्गे का लक्ष्य पूरा हो जाता है और वह दाल लेकर फुर्र हो जाता है। यह लोककथा मगध क्षेत्र के समान ही अन्य क्षेत्रों में भी प्रचलित है।

मगही का प्रकीर्ण लोकसाहित्य

प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत मगही कहावतें, मुहावरों और पहेलियों को स्थान दिया गया है। सामान्यतया मगही लोकसाहित्य में अन्तर्भुक्त समस्त सामग्री के इस संक्षिप्त विवेचन क्रम में यह नीति अपनायी गई है कि जिनका स्वतंत्र वर्ग सम्भव था, उनका अध्ययन स्वतंत्र वर्ग के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। पर कुछ ऐसे साहित्यरूप हैं, जो एक दूसरे से अत्यन्त सम्बद्ध हैं। यथा—कहावत या लोकोक्ति, मुहावरे और पहेलियाँ। ये तीनों एक दूसरे से बहुत निकटता रखने वाले लोकसाहित्य भेद हैं, यद्यपि इनमें प्रत्येक का अपना महत्त्व है। इनकी निकटता को दृष्टिपथ में रखते हुए इन्हें एक ही वर्ग 'प्रकीर्ण' में रखा गया है।

मगही कहावतें

मगही कहावतों का जन्म कब हुआ—सहसा इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा कठिन है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन कहावतों का जन्म लेखनकला के उद्भव और विकास के बहुत पूर्व ही हो चुका था। कहावत के प्रयोग वैदिक-साहित्य, जातक कथा एवं अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। सच पूछा जाए, तो कहावतें जगती

---

[1] पृ० ०२

पौधों की भाँति उस धरती की उपज होती हैं, जहाँ की बोली में उनका निर्माण होता है। इन कहावतों की अपनी महिमा होती है। इनमें ओजस्वी प्राणधारा सचित होती है, जो सहज ही किसी को भी प्रभावित कर लेती है।

अन्य भाषाओं की कहावतों की भाँति मगही कहावतों में भी कम से कम और चुने शब्दों का प्रयोग होता है। सक्षिप्तता सारगर्भिता एव सप्राणता—ये तीन बड़े गुण इन कहावतों के सहज धर्म के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनका सांस्कृतिक-सामाजिक अध्ययन की दृष्टि से असीम महत्त्व है। कारण कहावतें लोक की सम्पत्ति होती हैं और इसीलिए किसी क्षेत्र-विशेष की अथवा किसी वर्ग-विशेष की आदिम प्रवृत्तियों एव सामाजिक परम्पराओं को जानने में पथ—प्रदर्शक का काम करती हैं। इनसे जनता की आन्तरिक एव व्यावहारिक विचार धाराओं को जानने में भी बहुत दूर तक सहायता मिलती है। यह भी अविवादास्पद है कि बड़े बड़े साम्राज्य नष्ट हो जाते हैं, पर कहावतें रह जाती हैं। वास्तव में कहावतें 'सिद्ध" हो चुकी होती हैं, अर्थात् उनमें सत्य का अश प्रमाणित या प्रकट हो चुका होता है और सत्य मरता नहीं है अमर होता है।

साकेतिक रूप मे 'वस्तु' बन कर आये 'विषय' की दृष्टि से मगही कहावतें विभिन्न प्रकार की हैं। यथा—सामाजिक, कृषि और प्रकृति सबधी, व्यग्यात्मक, ऐतिहासिक, स्थान-सबधी, कथात्मक आदि। सामाजिक कहावतों—का दायरा बहुत बड़ा है। इसके अन्तर्गत जाति सबधी, नारी-पुरुष, विवाह और लोकाचार-सबधी अनन्त कहावतें उपलब्ध होती हैं। ये कहावतें भी दो प्रकार की होती हैं सामान्य तथा विशेष। सामान्य वर्ग में आने वाली वे कहावतें हैं, जिनसे किसी सार्वकालिक या सार्वदेशिक सत्य की अभिव्यक्ति होती है। ये कहावतें काल परिवर्तन की गति से पूर्णत अप्रभावित रहती हैं।[1] विशेष वर्ग में वे कहावतें आती हैं, जिनके विषय का क्षेत्र सीमित होता है। उनका आधार भी लोकानुभव होता है, पर वह सीमित निरीक्षण पर आधारित होता है। मगही की जाति-सम्बन्धी कहावतें इस विशेष वर्ग के अन्तर्गत ही आती हैं। इनसे विविध जातियों की दुर्बलताओं, उनके विषय में अन्यों के खरे अनुभव, उनके स्वभाव संस्कार पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।[2] नारी सबधी कहावतों मे

---

१ (क) काम भेल, दुश्मन गेल, वैरी भेल बैद।

(ख) नींद के आगु खरहर का ?
भूख के आगु बासी का ?

२ (क) गाय आउ बराहमन (ब्राह्मण) के घुमले पेट भरे हे।

(ख) जहँ रजपूत, हुआ बात मजगूत (मजबूत)।

(ग) घर घर नाच तीन जन
कायथ, बैद, दलाल।

(घ) केतनो अहीर पढ़े पुरान
लोरिक छोड़ न गावे गान।

(ङ) बनिया रीझे तो हस दे।

(च) सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के। आदि।

नारी-जीवन के विविध पहलुओं एवं उनकी विशिष्ट रुचि एवं प्रकृति का परिचय मिलता है।[1] इसी तरह पुरुष संबंधी कहावतों में उनके पद की पारम्परिक सम्मान भरी धारणा एवं उनकी प्रकृति की अच्छी व्यंजना मिलती है।[2] विवाह संबंधी कहावतों में वर कन्या की विवाह की उम्र आदि की चर्चा मिलती है।[3] सामान्य लोकाचार से संबद्ध कहावतों में समाज विशेष के विश्वास, परम्पराओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।[4]

मगही की कृषि एवं प्रकृति संबंधी कहावतों में कृषि एवं कृषकजीवन की अनुभूतियाँ सरक्षित मिलती हैं।[5] इनके अतिरिक्त इस वर्ग की कहावतों में प्रकृति के विषय रूप, विभिन्न पशु-पक्षियों के गुण स्वभाव आदि की अच्छी झाँकी मिलती है। शिक्षा एवं नीति सम्बन्धी कहावतों में मगह लोक-जीवन में प्रचलित सूक्तियाँ सम्मिलित हैं, जो उन्हें सीख देने के लिए प्रचलित हुई सी प्रतीत होती हैं। इनमें जीवन का खरा अनुभव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।[6] व्यंग्यात्मक कहावतों में उपहास की भावना भरी होती है, पर यह उपहास दृष्टि विध्वंसात्मक न होकर आलोच्य व्यक्ति में वर्तमान दोषों को दूर करने के लक्ष्य से सन्नद्ध होती है।[7] ऐतिहासिक

---

१ (क) बेटी पराया, घर के सोभा हे।
(ख) लड़की गाय हे, जौन खूँटा पर बाँध दऽ।
(ग) हे घरनी घर सोभे हे ना घरनी घर रोवे हे।
(घ) मइया के जीउ गइया ऐसन, पूता के जीउ कसइया ऐसन।
(ङ) बिना बोलाये मत जाहु भवानी, न मिलती तोरा पीढ़ा पानी। आदि।

२ (क) घीउके लड्डू टेढ़ो भल।
(ख) पुरुष आउ पहाड़ दूरे से लउके हे।

३. कन्या बारह, वर अट्ठारह।

४ (क) अहारे बेहवारे लाज न करे।
(ख) कमाय लंगोटी वाला, खाय टोपी वाला।
(ग) काठ गढ़ले चिक्कन, बात गढ़ले खस्खड़।

५ (क) उत्तिम खेती, मद्धम बान।
निखिद चाकरी, भीख निदान।
(ख) धान, पान नित असनान।

६ (क) उदन्त घोड़ी, दुदन्त गाय।
माथे भस गोसइयाँ खाय।

७. (क) आप रुप भोजन, पर रुप सिंगार।
(ख) चाल चले सादा कि निबहे बाप दादा।
(ग) जादे नीबू मल्ले से तित्ता हो जा हे।

८. (क) आगे बनिया, पाछे सेठ।
(ख) ऊँच बड़ेरी, खोखर बास।
(ग) अधरा आगे रोवे, अपन दीदा खोवे।
(घ) जयसन खाय अन्न, ओयसन हो जाय मन।

कहावतें सपूर्ण भाव मे एतिहासिक नही है। उनके ऐतिहासिक होने का आधार मात्र इतना ही है कि वे भारतीय ऐतिहासिक घटनाओ एव व्यक्तियो अथवा तथ्यों से सबद्ध है।[1] यह सम्बद्धता अप्रामाणिक एव सदिग्ध भी हो सकती है। स्थान सबधी मगही कहावतों मे स्थान विशेष की किसी खास विशेषता अथवा विशेषताओ की ओर सकेत मिलता है।[2]

मगही मे कुछ कहावते ऐसी भी है जिन्हें हम 'कथात्मक' कह सकते हैं। यों तो प्राय सभी कहावते ऐसी होती हैं कि उनके उद्भव के पीछे किसी 'घटना' का हाथ अवश्य होता है, पर इस वर्ग की कहावतो को देखते ही उनके मूल मे निहित कथा झलकने लगती है। कथा प्राय किसी विशेष घटना से जुड़ी होती है। यह घटना जीवन के किसी भी पक्ष से सबधित हो सकती है।[3] उपर्युक्त वर्ग के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी कहावते बच ही जाती हैं, जो सामान्य जन विश्वास धार्मिक आस्था विशिष्ट सामाजिक विचारधारा आदि की अभिव्यक्ति से सम्पन्न होती है।[4] सामान्यतया एक ही प्रसग पर बहुत सी कहावतें उपलब्ध नहीं हैं पर जो हैं, वे किसी सत्य तथ्य या मान्यता का उद्घाटन करती हैं।

मगही-मुहावरे

'मुहावरे' कहावतो से ज्यादा दूर नही है। अन्तर इतना ही है कि 'कहावतें' जहाँ वाणी के अलकार बन कर सर्व समक्ष आती हैं, वहा मुहावरे उसकी प्राण शक्ति बन कर। सामान्य वाक्यव्यवहार और मुहावरे मे कुछ स्पष्ट अन्तर है। सामान्य वाक्यव्यवहार का उद्देश्य कथा का सम्प्रेषण मात्र होता है, जब कि मुहावरो का उद्देश्य कथा को अत्यन्त सशक्त ढग से अनुभूत कराना होता है। यही कारण है कि मुहावरो मे एक विशिष्ट प्रकार की सांवेगिक तीव्रता एव सामाजिकता मिलती है। सांवेगिक तीव्रता से तात्पर्य कथन की उस प्रभाव क्षमता से है, जो राग द्वेष-उत्साह मात्सर्य-वात्सल्य अवसाद आदि की भावानुभूतियों से व्युत्पन्न होती है। इस सांवेगिक तीव्रता के अभाव मे मुहावरा की प्राणवन्तता जाती रहती है। इसी तरह सामाजिकता से तात्पर्य मुहावरा मे दीख पड़ने वाली शब्दो की मितव्ययिता से है। इसके अभाव मे मुहावरा की जातीयता ही समाप्त हो जा सकती है। यानी उक्त स्थिति मे 'सामान्य वाक्य रचना' एव 'मुहावरे' में कोई

---

१ (क) अनकर धन पर विक्रम (विक्रम) राजा।
(ख) कहाँ राजा भोज कहा गगुआ तेली।

२. पूरब के बरधा, उत्तर के नीर।
पच्छिम के घोडा, दक्खिन के चीर॥

३ (क) कोयरिन के बेटी राजा घर गेल, तो बैगन के टेंगन कहे है।
(ख) असकताहा गिरलन कुइयाँ म, कहलन हिएँ भल है।

४ (क) ओकर माय खरजितिया कयलकइ हल।
(ख) खिचडी के चार इयार।
घी, पापड, दही, अचार॥
(ग) माने त देओता, न तो पत्थर।
(घ) दूधे-पूते इसल भरल रहऽ।

अन्तर ही नहीं रह जाता है। मुहावरों के उद्भव के मूल में उपर्युक्त दो ही तत्त्व सक्रिय रहते हैं। इन दोनों ही तत्त्वों की दृष्टि से मगही मुहावरे बेजोड़ हैं।

सशक्त अभिव्यंजना शक्ति और गम्भीर अर्थ वैभव की दृष्टि से स्पृहणीय एवं अत्यन्त समृद्ध मुहावरों का विपुल भाण्डार मगही भाषा में सुरक्षित है। शक्ति के विग्रह रूपों की भांति ये मुहावरे समस्त मगह लोक-जीवन में प्राप्त हैं और उनसे स्फुरित होकर इसका वाङ्मय शरीर अहर्निश स्फार परिलाभ करता रहता है। उपर्युक्त उद्देश्य सिद्धि के अतिरिक्त ये मुहावरे मगह लोक-जीवन के सांस्कृतिक पर्यालोचन की भी सामर्थ्य प्रदान करते हैं। सामान्यतया सांस्कृतिक धार्मिक पौराणिक ऐतिहासिक राजनीतिक या सामाजिक कोई भी पहलू ऐसा नहीं है, जिस पर ये मुहावरे प्रकाश न डालते हों।

जैसा कि कहा जा चुका है मगही मुहावरों का कोष अत्यन्त समृद्ध है। मानव के अंग उपांग, भाव विचार, गति विधि, क्रिया अनुभूति, घर गृहस्थी प्रकृति कृषि इतिहास पुराण व्रत त्योहार आदि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिनसे सम्बद्ध मगही मुहावरे उपलब्ध नहीं होते हों। ऐसी स्थिति में उन्हें वर्गों की सीमा में विभाजित करना एक दुस्तर कार्य है। या अध्ययन की सुविधा के लिए इन्हें निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

क मानव शरीर सम्बधी	ञ ऐतिहासिक तथ्य सम्बधी
ख मानव मनोभाव सम्बधी	त प्राचीन कथा सम्बधी
ग घर-गृहस्थी सम्बधी	थ खेलकूद सम्बधी
घ सामाजिकपरम्पराओं सम्बधी	द हास्य व्यंग्य सम्बधी
ङ प्रकृति कृषि सम्बधी	ध शकुन विचार-सम्बन्धी
च पशु पक्षी सम्बधी	न भूत प्रेत सम्बधी
छ कला शिक्षा व्यापार सम्बधी	प रोग-उपचार सम्बधी
ज राजनीति-कचहरी कानून सम्बधी	फ कला कहानी सम्बधी
झ आर्थिक परिस्थिति सम्बधी	ब आशीर्वाद सम्बधी

मानव शरीर सम्बधी मगही मुहावरे सिर आँख, कान नाक, आदि सभी अंगों से सम्बधित मिलते हैं। इस वर्ग के मुहावरों में अभिव्यक्ति का प्रवेग स्पृहणीय मात्रा में होता है।[1] मानव मनोभाव सम्बधी मुहावरों में मानव की आकृति प्रकृति स्वभाव संस्कार आदि का अच्छा संकेत मिलता है। ये मुहावरे विभिन्न मन स्थितियों की श्रेष्ठतम सटीक अभिव्यक्ति करते हैं।[2] घर गृहस्थी सम्बधी मुहावरों में पारिवारिक अनुभवों की थाती सुरक्षित दीखती है।[3] अपने सम्भाव्य जीवन निर्वाह के नित्य आवश्यक उपकरणों एवं साधनों को हम व्यवहार में लाते हैं, उनका भी उन पर स्पष्ट प्रभाव दीखता है।[4]

---

१ सिर नवा के चलना। दीदा के पानी टरकना। मोछ पर ताव देना। कान के पातर होना।

२ लाल पियर होना। करेजा मसकना। हहास करना। लहालोट होना।

३ आग लगा के तमासा देखना। खा पका डालना। हाँडी में छेद करना।

४ सिक्हर टूटना। चिराग-गुल करना। कुर्सी देना। डेरा डालना। सान चढ़ना।

सामाजिक परम्पराओं से संबद्ध मुहावरों में व्यक्ति-समाज अपने मनोभावों को स्पष्ट और ओजपूर्ण शैली में व्यक्त करने के लिए अपने रीति रिवाजों, धार्मिक आस्थाओं, प्रथाओं एवं आचार-व्यवहारों से शक्ति संचय के प्रयास करता दीखता है।[1] प्रकृति कृषि संबंधी मुहावरे मुख्यतया कृषक जीवन के अनुभवों पर आश्रित दीखते हैं ।[2] भारत कृषि प्रधान देश है। मगह क्षेत्र तो अपनी समृद्ध कृषि-परम्परा के लिए और नामी है । ऐसी स्थिति में मगही में भी प्रकृति-कृषि संबंधी मुहावरों का बाहुल्य स्वाभाविक ही है। पशु-पक्षी भी प्रकृति के अन्तर्गत ही आते हैं। इनसे संबद्ध मुहावरों का होना भी परम स्वाभाविक ही है।[3] कला-शिक्षा-व्यापार आदि से सम्बद्ध मुहावरे व्यक्ति विशेष के प्रशमनीय अथवा प्रशमनीय कलात्मक-अकलात्मक प्रयासों एवं प्रवृत्तियों की सांकेतिक मीमांसा भी उपस्थित करते हैं।[4] राजनीति कचहरी और कानून-संबंधी मुहावरों में तत्संबद्ध अनुभवों की थाती सुरक्षित होती है।[5] आर्थिक- परिस्थिति से संबद्ध मुहावरों में व्यक्ति विशेष की आर्थिक परिस्थिति के ह्रास, आशा, लाभ, पूँजी, अर्थोपार्जन की लालसा एवं दौड़ धूप आर्थिक प्रलोभन से प्राप्त हीनता, क्रय विक्रय आदि की अभिव्यक्ति होती है। ऐतिहासिक तथ्य संबंधी मुहावरों में किसी इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति के प्रभावक चारित्रिक गुणों का संकेत होता है।[7] प्राचीन कथा-संकेतों से सम्बद्ध मुहावरों में कथात्मक अंश का तो अभाव होता है, पर उसको घेरे रहने वाली घटना का सर्वाधिक प्रभावोत्पादक मनोभाव अथवा कार्य व्यापार इनमें अभिव्यंजित होता है।[9]

खेल-कूद-संबंधी मुहावरों में सरलता के साथ-साथ भाव-गंभीरता भी मिलती है। प्राय वे मानव प्रकृति की चतुराई अथवा कुटिल प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हैं।[8] हास्य व्यंग्य संबंधी मुहावरे जहां प्रसंग विशेष पर व्यवहृत होकर लोगों का मनोरंजन करते हैं,[9] वहां कुत्सित एवं विकृत प्रवृत्तियों तथा गुणों पर अधिक चोट भी करते हैं।[10] शकुन विचार में सम्बद्ध मुहावरे व्यक्ति की शकालु एवं धर्म भीरु प्रवृत्ति पर आश्रित हैं।[11] इसी तरह भूत प्रेत संबंधी मुहावरे व्यक्ति के जादू-टोने टोटके में विश्वास एवं उनसे परिचालित जीवन शैली पर प्रकाश डालते हैं।[12] विभिन्न

१ बिरादरी से बाहर होना। बीड़ा उठाना। घंट घड़ियाल बजाना। अरदासिया लगाना।
२ भपसी लगना। कदू बकड़ी होना। गुल्लर के फूल होना। जड़ खोदना।
३. छान पगहा तोड़ाना। बैल होना। रंगल सियार होना। कुइयाँ के मेढक होना।
४ अपन राग अलापना। आवाज बैठना। गोल नाथना। दलाली करना।
५ रामराज होना। मियाद पुराना। कागज के राज होना। जेहल काटना।
६ भाग चरचराना। कंचन बरसना। खोटा पैसा होना। चांदी काटना। हाँथ सकड़ियाना।
७. हमीर के हठ होना। बुध भगमान होना। चन्द्राशोक होना। नादिरसाह होना।
८ नारद मुनि होना। मन के सीता होना। रावन होना। चौरासी के चक्कर खाना।
९. कच्ची गोटी न खेलना। पासा फेंकना। गोटी लाल होना। पैंतरा बदलना।
१०. पोपना फुलाना। बजला भगत होना। बनर घुड़की देखाना।
११ मिरगा माहुर होना। नून-तेल लगाना। बिरो बोकरना।
१२. दही के टीका लगाना। राई नोन निहुछना। जोग करना।
१३. देह पर देओता आना। फूँक मारना। भूत झाड़ना। मसान जगाना।

रोग तथा उपचार संबंधी मुहावरे संबंधित प्रयासों के प्रारंभ या सफलता का द्योतन करते हैं।[1] बहुधा वे मनोभावों के क्षेत्र में भी प्रवेश कर जाते हैं।[2] कथा कहानी से सम्बद्ध मुहावरा के मूल में कोई न कोई हल्की फुल्की कथा का संकेत छिपा होता है।[3] इन मुहावरों के प्रयोग से ही इनके मूल में छिपी कथाएँ श्रोता के सम्मुख नाच उठती हैं। बहुधा ये मुहावरे वर्ग विशेष के संस्कार-स्वभाव का प्रकृति विशेष की ओर संकेत करते हैं।[4] आशीर्वाद सम्बंधी मुहावरे तो मगह क्षेत्र के वृद्ध जनों के मुख से झड़ने वाले फूल हैं जो विभिन्न अवसरों पर शुभ कर्मों के शीश पर अभिवर्षित होते हैं।[5]

मगही पहेलियाँ

'राग' और 'कौतुक' प्रियता मानव मन की प्रधान वृत्तियाँ हैं। रस शास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार करने पर पता चलेगा कि शृंगार एवं हास्य रस के मूल में राग भावना ही रही है। प्रथम में यदि राग भावना का भावना प्रधान उदात्त एवं गंभीर रूप प्रकट होता है तो द्वितीय में उसका सरल, व्यावहारिक एवं अगम्भीर स्वरूप स्पष्ट होता है। इसी तरह अद्भुत रस की धारणा के मूल में कौतुक प्रियता ही सक्रिय मिलती है जिसे शास्त्रीय आचार्यों ने विस्मय के नाम से पुकारा है। पहेलियों का तात्विक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होगा कि उनके उद्भव के मूल में ये दो प्रधान तत्त्व ही सक्रिय रहते हैं, अर्थात् मनोरंजन एवं कौतुक प्रियता।

पहेलियों के उद्भव एवं विकास की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। सम्भवत जिस दिन *मानव ने होश सम्भाला होगा, अपनी उपर्युक्त दोनों वृत्तियों के वशीभूत हो कर पहेलियों का आविष्कार* भी किया होगा। जहाँ तक लिखित साहित्य में प्राप्य परम्परा का प्रश्न है वैदिक साहित्य से ही यह परम्परा प्रवाहमान दीखती है। आत्मा परमात्मा के स्वरूप सम्बन्ध के विश्लेषण के रूपकात्मक ढंग से आये उसके कई मंत्र पहेलियों से कम सौन्दर्यपूर्ण नहीं हैं।

---

१ घाव भर जाना। अग्निमाय निकलना।

२. टीस मारना। समाज में घुन लगना।

३ चौबेजी होना। छपोरसंख होना।

४. कन्टाहा बराहमन होना। सटरिंग होना।

५. दूधे पूते बनल रहना। सगिया होना। माँग भरा रहना कोख जुगाना।

६. द्वा सयुजा सुपर्णा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

(मुण्डकोपनिषद्, तृतीय मु० प्र० ख० १)

अर्थात् 'दो पक्षी हैं जो एक साथ रहने वाले हैं परस्पर सखाभाव रखते हैं और एक ही वृक्ष का आश्रय लेकर रहते हैं। उनमें एक तो पीपल (वृक्ष) के फल को खा रहा है और दूसरा न खाता हुआ केवल देखता है।' उपर्युक्त चित्र में पीपल वृक्ष 'प्रकृति' है भोक्ता पक्षी 'जीवात्मा' है और द्रष्टा पक्षी 'परमात्मा'।

परवर्ती लौकिक संस्कृत साहित्य में भी पहेलियाँ बड़ी लोकप्रिय रही हैं और न केवल संस्कृत लोक साहित्य अपितु शिष्ट साहित्य में भी उनका महत्त्व स्वीकार किया गया है।[1] संस्कृत पहेलियों की परम्परा पालि साहित्य में भी प्रवहमान होती दीखती है।[2] मगही पहेलियाँ उपर्युक्त सुदीर्घ परम्परा में ही विचारणीय हैं। वैसे भी अर्थ गौरव मनोरंजन और बुद्धि परीक्षा के साधन की दृष्टि से पहेलियों का बड़ा महत्त्व है और इस दृष्टि से मगही लोक-साहित्य स्पृहणीय मात्रा में समृद्ध है।

सामान्य रूप से मगही पहेलियों में निम्नलिखित विशेषताएँ दीख पड़ती हैं—

क सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति

ख बुद्धि-चातुर्य का कलात्मक प्रयोग

ग मनोरंजन का पुट

घ. ग्रामीण जीवन की झाँकी, एवं

ङ रसात्मक अनुभूति का संस्पर्श।

दिन भर के परिश्रम के बाद रात्रि में भोजनोपरान्त कृषक अपने बाल गोपाल के साथ ग्राम के चौपाल में बैठता है। यहाँ मनोरंजन के अन्य साधनों के साथ 'बुझौवल' का भी कार्य क्रम चलता है। बुझौवल यह क्रम तब तक जारी रहता है, जब तक कोई उसका उत्तर देता जाता है। बुझौवल बुझाने का खेल हार जीत के खेल के समान ही होता है। जब कोई बुझौवल का उत्तर देने में असमर्थ हो जाता है, तब वह हारा हुआ मान लिया जाता है। अपने को बुद्धिमान एवं कुशाग्र मेधा सम्पन्न समझने वाले लोग भी बहुधा बुझौवल के कौतूहल मिश्रित अर्थ गौरव के सामने सिर झुका देते हैं। मनोरंजन का यह कार्यक्रम तब तक चलता रहता है, जब तक सभी थक कर सो नहीं जाते। आधुनिकता के प्रसार प्रचार के साथ-साथ यह प्रवृत्ति लुप्त होती जा रही है।

---

१ अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

अर्थात् 'उसे पैर नहीं होते, फिर भी वह दूर दूर तक चला जाता है। वह साक्षर है, पर पण्डित नहीं है। उसे मुख नहीं है, फिर भी वह सारी बातें साफ-साफ कह देता है। जो उसे जानता है वह पण्डित है। इस संस्कृत पहेली का उत्तर है, 'पत्र'।

२ हन्ति हत्थेहि पादेहि मुखं च परिसुम्भति।
स वे राजा पियो होति कं तेनमभिपस्ससीति॥१॥
अक्कोसति तथाकाय आगमं चस्स इच्छति।
स वे राजा पियो होति कं तेनमभिपस्ससीति॥२॥

अर्थात् "वह हाथों और पैरों से मारता है, चेहरे पर भी चोट पहुँचाता है, फिर भी वह प्रिय है। हे राजा तुम उसे क्या समझते हो? वह उसे जी भर कर बुरा भला कहती है और फिर भी चाहती है कि उसका आगमन होता रहे, कारण वह प्रिय है। हे राजा तू उसे क्या समझता है? आदि

[म० जातक, छठी जिल्द, पृ० ३७०-३७२]

मगही भाषा में पहेलियों का इतना समृद्ध भांडार है, पर इनका निर्माता कौन है, इसकी जानकारी अभी तक नहीं हो सकी है। श्री रामनरेश त्रिपाठी ने कुछ बुझौवल 'सवासी खेरे' के घासीराम के नाम से दिए हैं।[1] श्री रामाज्ञा द्विवेदी ने अयोध्या के पास के अरोंडा स्थान के राज्यवंश के सबल सिंह के नाम से कुछ अवधी की पहेलियों का प्रचलन बतलाया है।[2] हिन्दी में अमीर खुसरो और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पहेलियाँ और मुकरियाँ मिलती हैं। मगही पहेलियों के रचयिता अभी तक अन्धकाराच्छन्न हैं और इनका परिचय-ज्ञान शोध का विषय बना हुआ है।

सामान्यतया मगही पहेलियों का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उन पर सम्यक् दृष्टिपात् किये बिना उनको वर्गीकृत करना सम्भव नहीं दीखता है। विषय संकलन की दृष्टि से मगही पहेलियाँ निम्नांकित वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं—

क. खेती-सबंधी
ख. भोज्य पदार्थ-संबंधी
ग. घरेलू वस्तु-संबंधी
घ. प्राणी-संबंधी
ङ. प्रकृति-संबंधी
च. शरीर-संबंधी
छ. प्रकीर्ण

खेती-संबंधी पहेलियों में मुख्यतया वे आती हैं, जिनका संबंध कृषि अथवा कृषि की उपज के अन्तर्गत विभिन्न फसलों से होता है।[3] उद्देश्य प्रधानतया मनोरंजन होता है। भोज्य पदार्थ-संबंधी पहेलियाँ प्रधानतया भोजन के विभिन्न पदार्थों और, अंडा, ताड़ी, केला, नारियल, गोलमिर्च, अन्य मसाले, भात रोटी, शकरकंद, मूली, कटहल आदि से संबंधित होती हैं। इनका उद्देश्य मुख्यरूपेण कौतुक-सर्जन होता है।[4] घरेलू वस्तुओं से संबंधित पहेलियों का मुख्यरूपेण नाता गृहस्थी के सामान यथा चाकू, खटिया, चिलम, ढोलक, चलनी, ढकी, बढ़नी, सूआ, चूल्हा, ताला,

---

१. ह० ग्रा० सा०—पृ० २८०।
२. हिन्दु० भाग २, अंक १—पृ० २६८।
३. क. एक छौरा के नहिए टेढ़। (बूँट)
   ख. एक छौरा के पेटवे फटल। (गेहूँ)
   ग. करिया बिलाई के हरियर पुन्छ। (ताड़)
   घ. तनी गो डिबिया में लाल-लाल बिटिया। (मसूर)
४. क. एक घड़ा में दू रंग पानी। (अंडा)
   ख. एक गाँव में ऐसन देखली, बानर दूहे गाय।
   छालो काट के बीग देलक, दही लेलक लटकाय॥ (पासी) (ताड़ी)

दीपक मुड़ पेन्द आदि से दृष्टिगोचर होता है।[१] इनका उद्देश्य हास्य एवं कौतुक की सृष्टि ही होता है। प्राणी सम्बन्धी पहेलियों की विषय-वस्तु—आदमी, जूं, बेंग, बाघ, गिरगिट, मच्छर, चींटा, बिच्छू, जोंक, खटमल आदि पर आधारित होती हैं। इनमें जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। प्रकृति सम्बन्धी पहेलियों का सम्बन्ध प्रकृति के विभिन्न उपादानों से होता है।[३] ये प्रायः किसी प्रिय दृश्य को अपने गर्भ में छुपाये होती हैं। शरीर सम्बन्धी पहेलियाँ शरीरांग नाक, जीभ, आंख, ओंठ, अंगूठा, अंगुलियां आदि पर आधारित रहती हैं।[४]

प्रकीर्ण वर्ग से तात्पर्य उन पहेलियों के वर्ग से है जो उपर्युक्त दो वर्गों में समाविष्ट नहीं हो पाता। इनका सम्बन्ध विविध विषयों से दीख पड़ता है। इन्हें निम्नांकित उपवर्गों में रखा जा सकता है—

क हथियार आकार गाड़ी रेल आदि से सम्बन्धित[५]

ख गणित तथा प्रश्न—पाठन से सम्बन्धित[६]

ग प्रश्न एवं उत्तर से सम्बन्धित[७]

---

१ क आधा धुपा आधा छइयां।
बलवे ने हानि बनवइया ॥ (खटिया)

ख दू खड़ा एक पट अक्कर सबा हाथ के सर।
मारे फटाफट पूछऽ तऽ का ह ? (ढेंकी)

२ क करिया ही हम करिया ही
करिया वन म रहऽ ही,
ललका पानी पीअऽ ही। (ढील या जूं)

ख चादिलपुर म चोरा हाल नुनी ख पकड़ायल।
तरहत्थी पर हाजिर हाल नह पर पिटायल ॥ (जूं)

३ उमन क फूल कोइ चूमऽ न हइ।
भरभर गिरइ कोइ चुनऽ न हइ ॥ (वर्षा की बूंद)

४ एन्न गेला आन्न चली, जौ गेली रूनझुना।
बत्तीस गो पैरवा देखली एक्के गो पर पत्ता। (जीभ)

५ उठ त भनभन बज त बैठ त फहराय।
दिन भर लाठा निउ मारे अपन कुछ न खाय ॥ (जाल)

६ चार आना बकरी आठ आना गाय।
चार रुपया भैंस बिकाय, बीस रुपया बासे जीऊ ॥
(३ भैंस १५ गाय, २ बकरी)

७ प्रश्न—बरसा बरसे रात में, भीगल सब वनराय।
घड़ा न डूबल लोटिया पंछी पियासल जाय ॥

उत्तर—ओस पड़ल हल रात म भीगल सब वनराय।
घड़ा न डूबल लोटिया, पंछी पियासल जाय ॥

घ पौराणिक उपाख्यानों से सबधित[४]
ङ जीवन-दर्शन से सबधित[५]

उपर्युक्त विवेचन में मगही के स्पृहणीय पहलिका साहित्य की हल्की झाँकी मिल जाती है।

मगही लोक-साहित्य में साहित्यिक सौंदर्य

सामान्य विवेचन—लोक साहित्य में साहित्यिक सौंदर्य का अन्वेषण एक दुस्तर कार्य है, कारण सामान्यतया 'लोकसाहित्य' एव 'शिष्ट साहित्य' के पार्थक्य का आधार ही कलात्मक सौंदर्य का अभाव या सद्भाव होता है। पर अनगढ व्यक्तियो द्वारा निर्व्याज भाव से गढे गये लोकसाहित्य मे भी 'कलात्मक सौंदर्य का सर्वथा अभाव नही होता। कारण सौंदर्य भावना' मानव जीवन की एक सात्विक एव शाश्वत वृत्ति है और यह अप्रशिक्षित व्यक्तियो के जीवन म भी परिपुष्ट भाव से प्रतिफलित रहती है। यही कारण है कि उनके अपरिपक्व मस्तिष्क पर सहज ही द्रवित हो जाने वाले हृदय से फूटे उद्गारो मे भी विशिष्ट प्रकार का सौंदर्य होता है। इस सौंदर्य म उस कृत्रिम कलात्मकता का अभाव अवश्य होता है, जो शिष्ट साहित्य म सायास या सचेष्टता के फलस्वरूप उद्भूत होती है, परन्तु जहाँ तक साहित्य के चरम लक्ष्य 'रसपरिपाक' का सबध है, लोकसाहित्य शिष्ट साहित्य से अधिक सक्षम होता है।

हम जिसे साहित्यिक सौंदर्य कहते हैं उसके दो स्थूल विभाग किये जाते हैं—भावपक्ष एवं कलापक्ष। भावपक्ष में वर्ण्य वस्तु के स्वरूप एवं भावगत सौंदर्य पर विचार किया जाता है एव कलापक्ष में उसकी सम्प्रेषणीयता को प्रभावशाली बनाने वाले रूपात्मक तत्वो (Formal element) पर।

लोक साहित्य की भावराशि का अनुमान लगाना कठिन है। शिष्ट साहित्य की तरह उनकी भावदिशाए सीमित एव उचित अनुचित के भेदोपभेद मे आबद्ध नही होती। साधारणतया जीवन का प्रत्येक क्षण उनमें मूर्त हो उठता है। जीवन म सुख दुख राग विराग आदि के क्षण हमेशा आते रहते है। इन क्षणो म मनुष्य की भावनाए पर्याप्त वेगशील हो जाती है और हर्ष एव शोक में परिपूर्ण हो नसगिक उद्गारो के रूप म फूट पड़ती है। सुख दुख के इन क्षणो की न तो सीमा ही कूती जा सकती है और न उनका वर्गीकरण ही किया जा सकता है। वे अनन्त हैं और उनके रूप भी अनन्त है। प्राकृतिक सुषमा को देख कर जहाँ मानव मन विमुग्ध होता है, वहाँ उसकी भयकरता से सत्रस्त भी होता है। दैनिक जीवन की बहुत सारी घटनाए आनन्द शोक विस्मय, अरु कम्पादि का उद्रेक करने वाली होती है। फिर सामाजिक परिवेश म भी कई घटनाए ऐसी आती हैं जो मानव मन को तरलित एव उसकी वृत्तियों को गतिशील कर देती हैं। ऐतिहासिक घटनाओ एव राजनीतिक परिवर्तनो के विषय में भी यही बात कही जा सकती है।

---

४ दू बेकती मिलि बाइस कान।
(रावण और मदोदरी)

५ कोमल नार पिया सग सूतल, अग म अग मिलाय
पिया बिछुड़ते देखि के, सग सती होई जाय॥
(बत्ती और तल)

लोकसाहित्य में सर्व-सामान्य रूप से पायी जाने वाली इस विशेषता की बाँकी झाँकी मगही लोक साहित्य में भी मिलती है। सामान्यतया मानव जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जो मगही लोकसाहित्य में चित्रित होने से शेष रहा हो। यह अवश्य है कि यहाँ हृदय की संवेदनाओं का ही एकच्छत्र साम्राज्य है, निर्गुण पक्ष को छोड़ शेष में प्रौढ मस्तिष्क के फलस्वरूप उद्भूत होनेवाले चामत्कारिक तत्त्वों का नहीं।

मगही लोककथाओं में जो जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं, उनका संबंध मुख्यतः तीन से है—(क) उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन में किसी वस्तु या घटना के धार्मिक महत्त्व का प्रतिपादन करते हैं। (ख) उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन के नैतिक पक्ष के उत्कर्ष पर प्रकाश डालते हैं। (ग) उन स्थितियों के चित्रण से, जो जीवन के मनोरंजनपक्ष से संबंधित हैं। इन तीनों के उदाहरणस्वरूप क्रमशः "धरम के जय" एवं "डपोर सख" शीर्षक लोककथाओं का अवलोकन किया जा सकता है।

मगही लोकगीतों में अभिव्यक्त जीवन का पाट बहुत चौड़ा है। इनमें जहाँ लोकजीवन का सामान्य सामाजिक धरातल वर्तमान है, वहाँ उनके विशिष्ट संबंधों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण भी उपलब्ध हैं। जहाँ मगही जन-जीवन के अंधविश्वास एवं रूढ़ियों की अभिव्यक्ति मिली है, वहाँ उनकी धार्मिक आस्थाओं का भी चित्रण हुआ है, जहाँ उनके शोक एवं विषाद मुखरित हैं, वहाँ उनके जीवन का मनोरंजन पक्ष भी चित्रित हुआ है।

मगही लोकगाथागीतों एवं लोककथाओं में मगह के सामन्ती जीवन के कटु-मधुर अनुभव सुरक्षित हैं। जीवन का व्यापक अनुभव इसकी कहावतों एवं मुहावरों में भी सुरक्षित है। लोक-नाट्यगीतों एवं बुझौवलों का मुख्य संबंध मगह जीवन के मनोरंजन पक्ष से ही है, वैसे लोकनाट्यगानों में पारिवारिक जीवनानुभव की समृद्ध थाती सुरक्षित है।

मगही लोकसाहित्य में मनोवैज्ञानिक तत्त्व

लोकसाहित्य 'सामान्य लोक' का 'साहित्य' है, अतः इसकी कोई भी अभिव्यक्ति तबतक लोकोन्मुख नहीं हो सकती, जब तक उसमें लोक व्यापिनी "सामान्यता" न हो। इस लोकव्यापिनी सामान्यता का आधार मनोवैज्ञानिक होता है, अतः लोकसाहित्य में मनोवैज्ञानिक तत्त्व अनिवार्य रूप से वर्तमान होते हैं। मगही लोकसाहित्य में इस मनोवैज्ञानिकता के दो रूप मिलते हैं—(क) व्यक्तिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता एवं (ख) समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता।

व्यक्तिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता के तीन स्तर मिलते हैं। (क) प्रथम स्तर—यह वह स्तर है जिसे हम आदिम मानव के 'मानस' का 'अवशेष' कह सकते हैं। इस स्तर से अनुप्राणित मगही लोकसाहित्य में हमें एक ऐसी लोकचेतना के दर्शन होते हैं जिसमें कार्य कारण-संबंध से रहित विश्वास परम्परा का प्रभुत्व है। इस विश्वास रखने के परिणामस्वरूप ही वह अपने चतुर्दिक विभिन्न उपादानों में एमी 'शक्तियों' के दर्शन करता है, जो रुष्ट हो जाने पर उसे ('लोक' या 'सामान्य जन' को) अपार हानि पहुचा सकती हैं और प्रसन्न हो जाने पर मनोकामनाएँ भी पूरी कर सकती हैं। लोकमानस इन शक्तियों को हमेशा प्रसन्न रखना चाहता है और इसके लिए विभिन्न लोकगीतों में विभिन्न 'अनुष्ठानों' के

विधानात्मक सकेत उसने प्रस्तुत किए हैं। किसी वस्तु के स्पर्श करने या खाने से अथवा किसी के वरदान से सन्तान का होना या किसी के स्पर्श से अथवा रक्त की बूँदों से पीडित के प्राणों की प्रतिष्ठा आदि से सबंधित विश्वास ऐसे ही हैं।

(ख) द्वितीय स्तर—यह वह स्तर है, जिसमें "प्रथम बौद्धिक उन्मेष' की झाकी मिलती है। कार्य-कारण- सबध के तार्किक ज्ञान का इसमे भी सर्वथा अभाव है, पर कल्पना का आश्रय लेकर उसकी पूर्त्ति का प्रयास स्पष्ट है। यही कारण है कि प्रथम स्तर के लोकसाहित्य मे जहां अधविश्वासों एव भयमूलक रूढियो मे परिपूर्ण नीरस पुनरुक्तियो की प्रधानता होती है वहां इस द्वितीय स्तर के लोकसाहित्य में अद्भुत वार्त्ताओं, असभव सघटनाओ एव विषम परिणामो की।

(ग) तृतीय स्तर--यह स्तर "भावमयी अभिव्यक्ति" का है। इसमे मनोवेगो की प्रधानता होती है, जिनके मूल में हर्ष या विषाद का उद्रेक होता है। सामान्य चित्रण इन्हीं की पृष्ठभूमि के रूप मे आते हैं। इस स्तर के लोकसाहित्य मे रागात्मक चित्रण की प्रधानता स्पष्ट दीख पड़ती है।

समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता—'व्यष्टि' से 'समष्टि' का निर्माण होता है। दोनों में आधाराधेय सबध है। एक के अभाव मे दूसरे की सत्ता शेष नहीं रह जाती। अत लोक-साहित्य में प्रतिफलित "व्यष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता" एव "समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता" मे कोई तात्त्विक अन्विति ही न हो, ऐसी बात नहीं। फिर भी 'सामूहिक मानस व्यक्ति-मानस से किंचित् भिन्न होता है। व्यक्ति एकाकी रूप मे जिन बातो की अभिव्यक्ति मे—वह अभिव्यक्ति 'वाचिक' हो या 'कायिक'—लज्जा या मर्यादाहीनता का अनुभव करता है, उन्हें ही सामूहिक स्तर पर निर्भीकता के साथ व्यक्त करता हुआ आनन्द का अनुभव करता है। यथा—होली या विवाह के अवसर पर की जानेवाली अनेक अश्लील अभिव्यक्तियो को देखा जा सकता है। यह उदाहरण 'व्यक्ति-मानस "एव "सामूहिक मानस' के अन्तर को स्पष्ट करने भर के लिए प्रस्तुत किया गया है, वैसे इसका यह तात्पर्य नहीं कि प्रत्येक सामूहिक अभिव्यक्ति अश्लील ही होती है।

सामान्यतया कोई अभिव्यक्ति निम्नाकित परिस्थितियो में सामूहिक अभिव्यक्ति का स्वरूप ग्रहण करती है—

(क) कोई गीत अपनी लय के कारण सामूहिक अभिव्यक्ति का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

(ख) कोई गीत अपनी उदात्त भावनाओ के कारण सामूहिक अभिव्यक्ति मे परिणत हो जाता है।

(ग) कोई गीत अपनी उद्दीपक शृगार भावना के कारण "सामूहिक अभिव्यक्ति" की श्रेणी में चला आता है। सामूहिक गीतों में 'वस्तु' की दृष्टि से कोई कथा भाग भी स्वीकार कर लिया जाता है।

मगही लोकसाहित्य में आदर्श स्थापन की प्रवृत्ति

आदर्श-स्थापन की प्रवृत्ति यद्यपि शिष्ट साहित्य मे सचेष्ट भाव के साथ मिलती है, तथापि लोकसाहित्य में भी उसका सर्वथा अभाव नहीं होता। लोकसाहित्य का स्रष्टा भी एक

"सामाजिक प्राणी" होना है और अपने सामाजिक परिवेश में जीवन की गरिमा का मूल्यांकन करने वाले प्रतिमानों से अनायास भाव से परिचित होना है। अपने "चरित्रों" को वह जहाँ अधिक से अधिक लोकोन्मुख रूप में प्रस्तुत करता है, वहाँ उनमें लोक सामान्य के धरातल पर मान्य "आदर्शों के स्थापना की नैसर्गिक प्रवृत्ति भी स्पष्ट झलकती रहती है। इस आदर्श-स्थापन के लिये अवसर घटना क्रम या की योजना से प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि से स्त्री चरित्रों में सतीत्व, कुलमर्यादा, प्रेमपर बलि होने का भावना, भाई के लिए त्याग, वात्सल्य आदि के आदर्शों की स्थापना का सहज स्वरूप दीखता है इसी तरह पुरुष चरित्रों में पितृभक्ति, मित्र प्रेम, पर दु:खकातरता, उपकार भावना साहस, आपत्ति में धैर्य, प्रत्युत्पन्नमतित्व, स्वामिभक्ति आदि के आदर्श का शील रूप में स्थापन मिलता है। इससे जहाँ चरित्रों में विविधता के दर्शन होते हैं, वहाँ वे अधिक सूक्ष्म गंभीर एवं प्रभावशाली भी हो जाते हैं।

मगही लोकसाहित्य में 'प्रकृति'

मनुष्य का 'प्रकृति' के साथ अविच्छिन्न और सनातन संबंध है। जन्म लेते ही वह प्रकृति के दर्शन करता है और इसी के दर्शन करते हुए वह आँखें भी मूँदता है। उसकी 'मनन शीलता' का विकास भी इसी प्रकृति के साहचर्य से होता है। साधन रूप से हर्ष और विषाद होते हैं। प्रकृति के प्रतिपल व्यापारों को देख कर वह आनन्दोल्लास से भर-भर उठता है। पर ऐसे दृश्य भी आते हैं, जो उसे 'भय' और 'विषाद' से परिपूर्ण कर देते हैं। 'प्रकृति' के संदर्भ में उसकी यह स्थिति द्रष्टा' और 'भोक्ता' की होती है। इस स्थिति में प्रकृति चेतना विभूषित सजीव प्राणी के रूप में उपस्थित होती है। मनुष्य इस प्रकृति को अपने 'हर्ष' में हर्षित और 'विषाद' में 'खिन्न' होते पाता है। साहित्य में इन दोनों रूपों में प्रकृति के दर्शन होते हैं। पर 'शिष्ट साहित्य' एवं 'लोकसाहित्य' के प्रकृति चित्रण में कुछ अन्तर है।। यह अन्तर वही है, जो दोनों के निर्माताओं में है। शिष्ट साहित्य का साधक जहाँ 'संस्कार' की कृत्रिमता से आच्छन्न होने के कारण 'प्रकृति' का किंचित् तटस्थ भाव से साक्षात्कार कर पाता है वहाँ लोकसाहित्य का सर्जक सहज नैसर्गिक होने के कारण स्वयं 'प्रकृति' के अत्यन्त समीप होता है। लोकसाहित्य में प्रकृति का 'आलम्बन' एवं 'उद्दीपन' विभावों के रूप में चित्रण मिलता है, पर इसमें जो मर्मस्पर्शिता मिलती है, वह शिष्ट साहित्य में अपवादतः ही मिल पाती है। मगही लोक-साहित्य के प्रकृति चित्रण में भी यह मर्मस्पर्शिता पर्याप्त मात्रा में वर्तमान है।

मगही लोकसाहित्य में प्रकृति चित्रण का वह रूप, जिसमें उसके सर्जक की स्थिति तटस्थ 'द्रष्टा' एवं भोक्ता' की है, अत्यन्त विस्तृत एवं वैविध्यपूर्ण है। प्रकृति के विभिन्न उपादानों का विभिन्न प्रसंगों में बड़ी तन्मयता के साथ वर्णन किया गया है। प्रकृति के चेतन स्वरूप का चित्रण भी मगही लोक साहित्य में पर्याप्त मात्रा में हुआ है। मागधी जनता के लिए 'गंगा' एक सामान्य नदी नहीं, एक 'देवी' है जिसमें दुःखों को दूर कर सुख लाने की पूरी क्षमता है। उसका रूपाख्यान भी एक नारी के रूप में होता है, जो माथ में टिकुली साटती है, ओढ़नी ओढ़ती है और नाक में नथिया पहनती है। अन्यत्र 'सूर्य' को भी एक ऐसे देवता के रूप में चित्रित किया गया है, जो सोने की खड़ाऊँ पहनते हैं और हाथ में सोने की छड़ी रखते हैं। भक्तजन उन्हें

उपहार देकर मनोवांछित फल पाते हैं। 'छठ' के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में 'सूर्य' के इस स्वरूप की मर्मस्पर्शी झांकी मिलती है। पशु-पक्षी भी 'प्रकृति' के अन्तर्गत ही आते हैं। मगही लोकसाहित्य में ये दो रूपों में चित्रित मिलते हैं—(क) सामान्य रूप में, जहां इनका उल्लेख प्रसंगवशात् अपेक्षानुसार होता है। (ख) असामान्य रूप में, जहां इनमें मानवीय चेतना के पूर्ण दर्शन होते हैं और ये तदनुकूल सक्रियता दिखलाते हैं।

मगही लोकसाहित्य में रस-परिपाक

'रस' का सम्बन्ध हृदय से है। सहृदय सामाजिक के हृदय में जो रत्यादि स्थायिभाव संस्कारों के रूप में चिरसंचित होते हैं, वे ही विभाव, अनुभाव एवं संचारिभावों के संयोग से रस-रूप में परिणत हो जाते हैं।[1] लोक-साहित्य में हृदयपक्ष एवं भाव संवेगों की प्रधानता होती है, बुद्धि-पक्ष या तो अत्यन्त गौण होता है अथवा पूर्णतः शून्य। बौद्धिक चमत्कार वहाँ भले न मिले, पर हृदय से सम्बद्ध रस परिपाक की जो रुचिरता इसके सर्जन में मिलती है उसका लोक-साहित्य के सर्जक में अभाव सा होता है। फिर भी लोक साहित्य में विभाव अनुभाव एवं संचारीभावों का अन्वेषण संभव है।[2] लोकसाहित्य की यह सामान्य विशेषता मगही लोकसाहित्य में भी वर्तमान है।

मगही लोकसाहित्य में लोककथा, लोकगीत, बालक-खेलगीत, लोकनाट्यगीत एवं लोकगाथा-ये सभी सम्मिलित हैं। मगही लोककथाओं में प्रायः शृंगार करुण शांत एवं हास्य रसों का परिपाक मिलता है। उदाहरणार्थ क्रमशः 'राजा भरथरी', 'अमला', 'विश्वास के महात्मा' एवं 'ढपोर सख' शीर्षक लोककथाओं को देखा जा सकता है। रस परिपाक विशेषतः मगही लोकगीतों में मिलता है।' रौद्र 'एवं वीभत्स' का छोड़ कर प्रायः सभी रसों का परिपाक दीख पड़ता है। इनमें भी शृंगार एवं करुण रसों की प्रधानता स्पष्ट है। यहां विस्तृत विवेचन का अवकाश नहीं है, अतः शृंगारादि रसों के दो तीन प्रतिनिधि उदाहरण भर दिये जा रहे हैं —

क. फूल लोढे गेली ससुर फुलवरिया,
वगिया में पियवा अइलन हमार।
एक खोंइछा लोढली, दूसरे खोंइछा लोढली,
वगिया में फुलवा देलन छितराय॥

—(शृंगार रस)

---

१. विभावानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादि स्थायिभावः सचेतसाम्॥

२. इस विषय में डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय का कथन है—"लोकसाहित्य में रस की प्राप्ति ही नहीं होती, प्रत्युत यह रस से ओतप्रोत होता है। परन्तु 'रस' की सृष्टि के लिए जिन विभाव अनुभाव और संचारियों की आवश्यकता होती है, उनका इसमें अभाव होता है।' (लोकसाहित्य की भूमिका, पृ० १६०) हम इस कथन से सहमत नहीं हैं। कारण लोकसाहित्य में भी शृंगारादि रसों के प्रसंग में नायक

(ख) जहिया से पियवा मोरा गैल छूटूँ बिदेसवा,
बलमुआ हो मोरा निन अखियों न नाद ।
बलमुआ हो कइलीं न सँवरहों सिंगार ॥
कहिया न सनौली हम फुलवा सेजरिया,
बलमुआ हो सपना भे गेल मोर नींद ॥
(विप्रलम्भ शृंगार)

(ग) गवनमा क दिनवा धरायल
गउना नगिचायल हे ।
सब रखी करथिन चतुरइया ।
बाबू के फटलइ करेजवा,
रे नसे भादो झँझर ।
मइया क टरे नयना लोर
रे नसे भादो आरो धुए ॥
(करुण)

(घ) फोड़बइ मैं सखा चुड़िया
फाड़बइ हम चोलिया
धरबइ नागिनिया भेस ॥
(स्मरण विप्रलम्भ)

(ङ) ये ही समधा के मुँहमा कसन लगऽ हइ ?
जैसन बानर के मुँहमा आयसन लगऽ हइ ।
जैसन लंगूर के मुँहमा अयसन लगऽ हई ।
ये ही समधी के दढ़िया कैसन लगऽ हई ?
जैसन फेदवा के झोंटवा ओयसन लगऽ हई ।
(हास्य)

नायिका, रमणीय प्रकृति, हर्ष विषाद, अश्रुपात, चिन्तादि की चर्चा होती है। और इनके सद्भाव में लोकसाहित्य में भी 'विभाव' (आलम्बन —नायक नायिका, उद्दीपन प्रकृति के रमणीय दृश्य), अनुभाव (अश्रुपातादि) एवं संचारि भावों (चिन्तादि) का अभाव बतलाना अनुचित है। यह सहज संभव अवश्य है कि लोकसाहित्य के अन्तर्गत रस परिपाक में ये सभी रसांग सर्वत्र परिपुष्ट रूप में न हों।

(च) साधो लोक में पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न आवइ एना।

ककरे बले विरिया में, लगइ पेमल मनमा,

कउन जे टुलवावे, उत्तिम जोड़ी में परनमा,

ककरे बले अँकुरइ कंठ में बचनमा,

कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनमा।

कनमों के कान साधो मनमों के मनमा।

बचनों के बाक से, उ परनमों के परनमा।

अँखियो के आँख, भिन्न भिन्न रूप धारी।

ओकरे प्रतापे ओही में रहे सनचारी।

साधो, ओकरे दरस ओट टारी जीवन मुकुती पवाइ एना॥

(शान्त)

मगही लोकगीतों में शृंगार रस के प्रसग मुख्य रूप से विवाह, कोहबर एवं ऋतु सबधी गीतों में मिलते हैं। विवाह एवं कोहबर सबधी गीतों में सभोग शृंगार के चित्रण की प्रधानता होती है एवं ऋतु गीतों में विप्रलम्भ शृंगार के चित्रण की। 'कोहबर' के गीतों में प्रायः नवविवाहित दम्पति के हास परिहास का चित्रण मिलता है। नवेली वधू के मनोभावों का वर्णन बड़े मनोयोग से किया गया दृष्टिगोचर होता है।

मगही लोकगीतों में वर वधू के जो शृंगार चित्र मिलते हैं उनमें गार्हस्थ्य जीवन को पृष्ठाधार बनाया गया है। रीतिकालीन कवियों की तरह उत्तरदायित्व विहीन शृंगार चित्रण यहाँ शायद ही कहीं मिले। इसमें आये सभी चित्र लोकोन्मुख एवं उद्देश्य की दृष्टि से गार्हस्थ्य जीवन की पूर्णता के साधक हैं।

शिष्ट साहित्य के काव्य में नायिका भेदों के निरूपण में जैसी गहरी अभिरुचि के दर्शन होते हैं, उसका लोककाव्य में सर्वथा अभाव है, जो स्वाभाविक ही है। नायक-नायिका के मूल अवान्तर भेदों की तो कथा ही वृथा है। पर नायक नायिका-भेद निरूपण का आधार भी 'सामान्य सामाजिक जीवन" ही है, जिससे लोकरुचि भी सम्बद्ध रहता है। मगही का लोकभाव भी 'मगह क्षेत्र' के 'सामान्य जन जीवन' के सहज सम्पर्क से वचित नहीं है अतः मगही लोकगीतों में यत्र तत्र स्थूल रूपेण नायिका-भेदों के दर्शन भी हो जाते हैं। यथा—'स्वकीया एवं परकीया' दोनों ही के चित्र मगही लोकगीतों में उपलब्ध है। 'स्वकीया' में भी 'मुग्धा'[१] 'मध्या' एवं 'प्रगल्भा' इन तीनों

१ "पहिल पहर रानी बीतल, इनती मिननी करथिन हे।
लेहु बहुए सोने के सिन्होरवा, तो उलटि पुलटि सेचइ हे।"
""अप्पन सिन्होरवा परभु जी बहिनी के दीहइ हे।
पच्छिम मुँहे उपले जो चाम, तइयो न उलटि सोयबो हे।"

मुग्धा लज्जा के आधिक्य के कारण प्रथम रात्रि में पति की ओर मुख करके सोने को तत्पर नहीं होती।

के चित्र अस्त व्यस्त रूप में प्राप्त होते हैं। इन्हीं भेदों की दृष्टि से भी विभिन्न नायिका भेदों के दर्शन मगही लोकगीत में होते हैं। यथा—'खण्डिता'[1] प्रोषितभर्तृका[2], 'विरहोत्कंठिता' एवं कलहान्तरिता[3] आदि के सरस चित्र बाहुल्य के साथ वर्तमान हैं।

मगही में श्रृंगार रस के पश्चात् सर्वाधिक व्यापक एवं गंभीर परिपाक करुण रस का ही दृष्टिगोचर होता है। *मगही लोकगीतों में करुण-रस परिपाक के सुपरिचित प्रसंग हैं—*

(क) कन्या की विदाई

(ख) वन्ध्या की पीर

(ग) वैधव्य का शोकोद्गार

(घ) अंध विश्वासों के परिणाम स्वरूप
सम्भव हुए कारुणिक प्रसंग

(ङ) सामन्तशाही से प्राप्त उत्पीडन आदि।

इन सभी में कन्या की विदाई का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक होता है। बेटे की तरह बेटी का भी जन्म होता है, पालन पोषण होता है, पर एक दिन वह पराई हो जाती है। बिछुड़ते समय उसके परिजनों की जो दशा होती है, वह किसी भी सहृदय को रुला दे सकती है। अन्य प्रसंग भी करुण रस से आप्लावित करने वाले ही हैं। 'करुण' के साथ 'करुणविप्रलम्भ' का परिपाक भी मगही लोकगीतों में दृष्टिगोचर होता है। हास्य रस के प्रसंग विभिन्न सामाजिक सबधों के परिवेश में अवकाश पाते हैं। ये सामाजिक सबध हैं— पति पत्नी, देवर भाभी, भाभी-ननद, साला-बहनोइ, सरहज नन्दोइ, समधी समधिन, आदि के। 'वीर रस' का परिपाक मगही लोकगीतों में अपेक्षाकृत कम मिलता है। वस्तुत इसकी प्रधानता मगही लोकगाथाओं में मिलती है। 'शांत रस' का परिपाक मगही के देवविषयक एवं निर्गुण-सबधी लोकगीतों में मिलते हैं।

---

१ गंगा असननिया चललन दुलरइता दुलहा हे।
बास लेलन कदमियाँ तरे हे।
सूत गेलन मलिनिया कारे हे।
पान के पनवट्टा ले ले धनि खड़ा भेलन हे।
लेहु परभु पान के बिरवा हे।
देखि के मलिनिया कोरे नइहरवा चललन हे।

२ जहिया से पिया मोरा गलऽ तूँ विदेसवा।
बलमुआ हो, तोरा बिनु अँखियो न नींद।
बलमुआ हो, कइली न सोरहो सिंगार॥

३. "भोर भेलइ हे पिया भिनसरवा भेलइ हे,
उठु न पलंगिया से काइलिया बोलइ न।।'
"कोइलिया बोलइ गे धनी कोइलिया बोलइ ना।"
देहिं ना पगड़िया हम कलकतवा जैबइ ना॥'
"कलकतवा जैबइ हो पिया, कलकतवा जैबऽ ना,
बाबा के बोला के हम नैहरवा जैबइ ना॥

मगही लोकसाहित्य में अलंकार-योजना

सौंदर्य-भावना एक शाश्वत एवं सार्वजनीन भावना है। प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप उसके स्वरूप दृष्टिकोण में अन्तर दृष्टिगोचर हो सकता है, पर तात्विक दृष्टि से लोकसाहित्य एवं शिष्ट-साहित्य की अभिव्यक्ति में झलकनेवाला सौंदर्य एक ही होता है। इस 'सौंदर्य' के परिणाम स्वरूप ही कोई काव्य ग्राह्य हो पाता है।[1] यह सौंदर्य ही अलंकार है।[2] अलंकार मूलक इस 'सौंदर्य' का अन्वेषण लोकसाहित्य में भी सहज संभव है। मगही लोकसाहित्य में यह 'सौंदर्य' स्पृहणीय मात्रा में वर्त्तमान है।

उदाहरणार्थ मगही लोककथाएं आदि देखी जा सकती हैं। लोककथाएं गद्य-प्रधान होती हैं और गद्य का प्रधान लक्षण वर्णनात्मक एवं विचारात्मक होता है, भावात्मक होना कम। पर लोककथाओं का गद्य हृदय पक्ष प्रधान लोककवियों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण साथ साथ भावात्मक भी होता है। बीच बीच में आने वाले पद्यात्मक संवादों से भी यही सिद्ध होता है। मगही लोककथाओं में 'भावात्मकता प्रचुर मात्रा में है, जिसके परिणाम-स्वरूप उनका गद्य आलंकारिक हो गया है। पर अलंकारों के प्रयोग वैविध्य का वहाँ अभाव है, जो सचेष्टता के अभाव में स्वाभाविक है। जिन अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हुआ है, वे हैं—अनुप्रास, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, एवं तुल्ययोगिता। यथा—

(क) सहल गुने देहवा कटर-मटर बोलऽ हइ,
पटर-पटर बोलऽ हइ।
(वृत्त्यनुप्रास)

(ख) जब तों मरमे करमऽ, तब हम बच के रहम की ?
(काकुवक्रोक्ति)

(ग) नोकरवा देखे है तो सूरज के जोत नियन कननरकी।
(उपमा)

(घ) कथा में पंडित जी कहलथिन कि राम के नाम
लेवे वाला भौसागर से तर जाहे।
(रूपक)

(ङ) हम चाही एगो मच्छी, एगो सूप आउर एगो छूरी।
(तुल्ययोगिता)

मगही लोककाव्य में शास्त्रीय अलंकारों के प्रायोगिक रूप प्रचुर मात्रा में वर्त्तमान हैं। इनमें प्रमुख अलंकार हैं—उपमा, मालोपमा, रूपक, सांगरूपक, उत्प्रेक्षा, दीपक, प्रतिवस्तूपमा,

१. काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्—काव्यालं सू० वृ० १। १। १
२. सौन्दर्यमलंकार—काव्यालं सू० वृ० १। १। २

पर्यायोक्ति एव लोकोक्ति आदि । मगही लोककाव्य में सर्वाधिक पाया जाने वाला अलकार 'उपमा' ही है और विशेषकर मगही लोकगीतों में उसके बडे ही मार्मिक उदाहरण मिलते हैं ।[1] मालोपमा के सुन्दर प्रयोग लोकगीतों के शृगारिक वर्णनो म मिलत हैं विशेषकर सभोग शृगार के प्रसगो में किसी तरुणी के नवयौवन के वर्णन म।[2] रूपक अलकार का प्रयोग प्राय उन्ही प्रसगों में मिलता है, जिन प्रसगो में उपमा का।[3] पारिवारिक प्रसगो म यत्र-तत्र 'सागरूपक' के बडे ही मधुर प्रयोग मिलते हैं—

सास ससुर हथी गगाजलिया

साला सरहज कमलफूल ह ।

अर्थात् सास-ससुर गगा की जल राशि के समान हैं और साला सरहज उसम विकसित कमल-फूलों के समान

कितना सुन्दर और सारगर्भित चित्र है। एक सुभग सारप्रवाह का दृश्य नयनों के सम्मुख साकार हो उठता है। गगा जल उपमान का प्रयोग साभिप्राय है अत यहाँ परिकर' अलकार भी है। उपर्युक्त दोनों अलकारो का क्षीर-नीर न्याय सवलित परस्पर मिश्रित स्थिति के कारण यह 'सकर' अलकार का उदाहरण भी माना जा सकता है ।

'दीपक' अलकार का प्रयोग सामाजिक वर्णनो के क्रम म प्राय दीख पड़ता है। 'दीपक' का सबध 'दीपन' से है और जहा इसका लक्षण घटित होता है वहा स्वभावत उल्लास प्रसग चित्रित होता है। यथा—

जलवा मे चमकइ चिल्हवा मछलिया,

रैनिया चमकइ तरवार ।

सभवा में चमकइ सामी के पगड़िया,

हुलसऽ हइ जियरा हमार ॥

यहाँ प्रस्तुत (स्वामी की पगड़ी) एव अप्रस्तुतों (चिल्हवा मछली तथा विद्युत्) का संबध एक ही धर्म 'चमकना' मे स्थापित किया गया है, अत।'दीपक' अलकार है । 'तरवार' या 'तलवार'

---

१ बाबू के फटलइ करेजवा,
    रे जैसे भादो कॉकर ।
मइया के ढरे नयना-लोर,
    रे जैसे भादो ओरी चुए ॥

२ जैसे चिक्कना पीपर के पतवा,
ओयसने चिक्कना घीऊ ।
ओयसने चिक्कना गोरी के जोबना,
पिया के ललचइ जीऊ ॥

३, अँखिया दुलहिन के आमि के फँकवा ।
नकवा सुगवा के नाक हे ।

विद्युत् का अप्रस्तुत पद है और मात्र अप्रस्तुत के कथन से 'अतिशयोक्ति' अलंकार की भी योजना हो गई है। ये दोनों अलंकार उपर्युक्त छन्द में तिलतण्डुल भाव से स्थित हैं, अतः संसृष्टि अलंकार भी है।

'देहलीदीपक'[1] 'अतिशयोक्ति'[2] 'उत्प्रेक्षा'[3] अप्रस्तुत प्रशंसा[4] (सारूप्यनिबंधना)[5] प्रतिवस्तूपमा[6] लोकोक्ति[7], पर्यायोक्ति[8] आदि के भी बड़े ही सरस प्रयोग मगही लोककाव्य में मिलते हैं। मगही के विशुद्ध लोककाव्य की कौन कहे, इसकी कहावतें[9], मुहावरे[10] और पहेलियों[11] तक आलंकारिक सौन्दर्य से समन्वित हैं।

---

१ बाबा के हइ रे धानी फुलवरिया
जुहिया फुलल कचनार।
घोड़वा चढ़ल आवइ दुलरइता दुलहा,
जुहिया लोढ़इ रुचनार॥

२ बगिया में ऐलन दुलरइता मरवा हे।
इलयची के डरवा भारा बाँधि ढेलन हे॥
सोरगन सटिया सरवा मारी ढेलन हे॥

३ का हथी सीता हे सुरुज के जोतिया,
का हथी चान के जोत हे॥

४ मालिन के अँगना कमइलिया के गछिया
रने बने कमरल डार हे।
घर के बाहर भेलन दुलरइता दुलहा,
तोड़ऽ हइ कमइलिया के डार हे॥

५. 'सारूप्यनिबंधना' अप्रस्तुत प्रशंसा को ही 'अन्योक्ति' अलंकार भी कहते हैं।

६ पीपर के पतवा फुलगिया डोले,
अब जिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु॥

७ टिकवा भेलइ अपना,
से सुगवा भेलई सपना,
पिया भेलई डुमरी के फूल॥

८ चिड़ियाँ बियाए चिरमुनियाँ,
गया मइया तो बियाये रेत
उरहुर के फुलवा चढ़ैवइ देवी मइया,
बाँझ के अँचरवा देव॥

९ (क) मइया के जीऊ गइया ऐसन
पूता के जीऊ कमइया ऐसन। (उपमा)
(ख) जेने सुरुज उगे हे, तेन्हीं आदमी गोड़ लागे हे।
(अप्रस्तुत प्रशंसा)
(ग) ऊ बड़ा गरल गरई हे। (अतिशयोक्ति) आदि

१० (क) औरी बौरी करना। (वृत्त्यनुप्रास)
(ख) मोती झरना। (अतिशयोक्ति) आदि

११. (क) जब मारइ तो जी उठे,
बिन मरले मर जाय। (विरोधाभास)

(ख) करिया ही हम करिया ही,
करिया बन में रहऽ ही।
ललका पानी पीअऽ ही। (मानवीकरण)

अन्य शास्त्रीय तत्त्व

अन्य शास्त्रीय तत्त्व रीति और गुण है। शास्त्रीय दृष्टि से 'रीतियाँ' तीन हैं—वैदर्भी, गौडी एवं पांचाली। वैदर्भी समासहीन, सरल एवं प्रवाहयुक्त होती है; गौडी ठीक उसके विपरीत अत्यन्त जटिल, लम्बे समासों वाली तथा पांचाली दोनों के मध्यस्थित। 'रीति' की दृष्टि से सम्पूर्ण मगही लोकसाहित्य वदर्भी रीति में ही माना जायेगा। कारण सामान्य है। लोकसाहित्य में क्या गद्य और क्या पद्य-दोनों से समास योजना कोसों दूर होती है किन्तु दोनों सहज और सरल प्रवाह-युक्त होती है।

शास्त्रीय दृष्टि से गुण तीन हैं—माधुर्य, ओज और प्रसाद। माधुर्य गुण संभोग शृंगार, करुण रस, विप्रलम्भ शृंगार एवं शान्त रस में क्रमशः अधिक होता है। इसमें कोमल वर्णों की प्रधानता होती है एवं समास का अभाव होता है। ओज गुण वीर रस, वीभत्स रस एवं रौद्र रस में क्रमशः अधिक होता है। इसमें कठोर वर्णों की प्रधानता होती है, लम्बे समासों की योजना होती है एवं रचना औद्धत्यपूर्ण होती है। प्रसाद गुण सभी रचनाओं एवं रसों में वर्तमान हो सकता है। इस गुण के व्यंजक वे शब्द हैं, जो श्रवणानन्तर ही अर्थ का बोध करा दें।

उपर्युक्त दृष्टि से विचार करने पर मगही लोकसाहित्य में तीनों गुणों का सद्भाव दीखता है। 'ओज' गुण की स्थिति गुणात्मक रूप से ही है, रूपात्मक नहीं। 'रूपात्मक स्थिति' से तात्पर्य उसके बाह्य लक्षणों से है। यानी जहाँ 'ओजगुण' वर्तमान भी है वहाँ कठोर वर्णों के प्रयोग, लम्बे समासों की योजना एवं औद्धत्यपूर्ण रचना का पूर्णतः अभाव दृष्टिगोचर होता है। 'माधुर्य' एवं प्रसाद' मगही लोक काव्य में गुणात्मक रूप से तो मिलते ही हैं, उनके बाह्य लक्षण भी घटित होते पाये जाते हैं। नीचे इनके कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं—

(क) जैसे चिक्कन पीपर के पतवा
ओयसने चिक्कना घीऊ।
ओयसने चिक्कना गोरी के जोवना
पिया के ललचइ जीऊ। (माधुर्य)

(ख) ओही घड़ी बैलवा बोलइ अघोरी के सभे जवान हो राम।
सुनऽ हलिअइ कि गउरा में बड़ा-बड़ा वीर हइ पहलवान हो राम।
एतना जे बोलिया सुनऽ हइ लोरिकवा मनियार हो राम।
मरवा में बैठले मारऽ हइ गरजवा लोरिक हो राम।
सुनऽ हिं न सुन अघोरिया के बड़ा बड़ा वीर जमान हो राम।
(ओज)

(ग) नदी किनारे गूलर के गछिया,
छैला तोड़े गोरी खाय,
छैला जे पूछे दिल के बतिया
गोरी के जिउआ लजाय॥
(प्रसाद)

मगही लोक-साहित्य में छन्द-योजना

लोकसाहित्य में छन्द तत्व का अन्वेषण सहसा विरोधाभास-सा प्रतीत होता है, क्योंकि लोक-कवि न तो छन्द शास्त्र का अध्ययन ही सम्पन्न किए होता है और न छन्द निर्वाह की उसे विशेष चिन्ता ही होती है। लोककाव्य तो हर्ष विषाद के क्षणों में उसके कण्ठ का फूटा स्वाभाविक उद्‌गार होता है।

पर छन्द का प्राण 'लय' है और 'लय' एवं 'तुक' मिल कर एक अर्थ में 'छन्द' की सृष्टि करते हैं। पर 'तुक' छन्द का अनिवार्य तत्त्व नहीं है। अतः छन्दों का अन्वेषण लोक साहित्य में भी संभव है। मनुष्य स्वभाव से ही रागात्मक वृत्ति वाला होता है और राग का ही मुखर रूप 'लय' है। चूँकि यह छन्द स्पन्दन समग्र सृष्टि में व्याप्त है,[1] अतः अशिक्षित मानव की अनगढ़ उक्तियों में भी वह स्वाभाविक ढंग से अवतरित हो जाता है।

छन्द की परिभाषा देते हुए डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल ने कहा है—'छन्द वह वैखरी ध्वनि है, जो प्रत्यक्षीकृत निरन्तर तरंग भंगिमा से आह्लाद के साथ भाव और अर्थ की अभिव्यंजना कर सके।'[2] इस कसौटी पर मगही लोकगीतों लोकनाट्य गीतों, लोकगाथाओं को कसने पर हम पाते हैं कि उनमें छन्द-तत्त्व वर्त्तमान हैं।

विशेषतः मगही लोकगीत आकार-प्रकार की दृष्टि से विभिन्न रूपों में मिलते हैं। यथा- सोहर, बिरहा, जंतसारी, ऋतुगीत, देवगीत भूमर, कजरी, गोदना, लहचारी, लोरी, मनोरंजन गीत आदि। अपने अपने आकार-प्रकार के साथ इनकी छन्द-योजना का अपरिहार्य सम्बंध है।

नीचे उपर्युक्त में एक दो छन्दों का किंचित् विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कर विवेच्य प्रसंग को समाप्त किया जाता है। 'सोहर' शब्द संस्कृत पद 'शोकहर' से व्युत्पन्न माना जाता है—शोकहर→सोअहर→सोहर। अतः इसका व्युत्पत्तिगत अर्थ हुआ—वे गीत, जो शोक हर लें। इसकी व्युत्पत्ति के मूल में 'शुभ' धातु है जिससे 'शोभन', 'शोभा' आदि तत्सम एवं 'सोहना', 'सुहावना' आदि तद्‌भव रूप निःसृत हुए हैं।

'सोहर' छन्द एक विशेष राग में गाये जाते हैं। 'सोहर' का साहित्यिक प्रयोग महाकवि तुलसीदास जी के 'रामलल्लानहछू' में मिलता है। इसके प्रत्येक चरण में २२-२२ मात्राएँ होती हैं। पर लोकगीतों में मात्रा-प्रयोग के इस नियम के पालन का अभाव दीखता है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि लोकगीत तो लोककवि के नसर्गिक भावोच्छ्वास ही हैं।[3] 'भावोच्छ्वास' कभी तो दीर्घ होता है और कभी स्वल्प भी। इसी तरह इन 'सोहर' छन्दों में कभी तो मात्राएं २२ से

---

१. दिनकर—हिन्दी कविता और छन्द पारिजात (फरवरी १९४६)

२. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ० २१।

३. 'लोकगीत' जंगल के फूल की तरह वातावरण में उत्पन्न होते हैं और उसी वातावरण में इनका विकास भी होता है। वे छन्दविधान के बंधनों से परे होते हैं। डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय लो० सा० की भूमिका,—पृ० २१३

बहुत अधिक होती हैं और कभी उसी के आसपास रह जाती है। दूसरे 'सोहर' के विभिन्न चरणों में दृष्टिगोचर होने वाली मात्रा मत्री की इस कमी का गायन के समय ह्रस्व दीर्घ-उच्चारण-पद्धति[1] का आश्रय लेकर समान कर लिया जाता है। कारण उनकी लयात्मक एकता सभी चरणों में एकरस एवं अक्षुण्ण होती है। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने इसीलिए 'सोहर' को 'तालवृत्त' माना है।[2] जिसमें लयबद्ध बलाघात पूर्ण इकाइयाँ ही महत्त्वपूर्ण होती हैं। उदाहरणार्थ—

पल/ना/ बड/ठल हथ/महा/देवो/मा/च या ग/उरा/दइ/हि
हम/रा पु/नर ना कैसा/र पु/तर/कइसे/पा/यन/हे।

उपर्युक्त उदाहरण में 'सोहर' की दो पंक्तियों को ११ तालखण्डों में नियोजित किया गया है। मात्रा गणना की दृष्टि से ये तालखंड विभिन्न मात्राओं वाले हैं पर प्रत्येक ताल खंड के गायन में ली जाने वाली काल मात्रा समान है। रुचि भेद के अनुसार उपर्युक्त पंक्तियों को अन्यान्य तालखण्डों में भी नियोजित किया जा सकता है, पर प्रत्येक स्थिति में लयात्मक संगीत विद्यमान रहेगा।

'सोहर' नाम से जो मगही लोकगीत मिलते हैं, उनमें पर्याप्त छन्दोवैचित्र्य दीख पड़ता है। 'तालखण्डों' अथवा मात्राओं के नियोजन की दृष्टि से न केवल उनके चरण वैचित्र्यपूर्ण हैं, बल्कि उनके चरणों का कलात्मक आयोजन भी परस्पर स्वतन्त्र है।

'बिरहा' डॉ ग्रियर्सन के अनुसार वर्णिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में १६-१६ (६ + ४ + ४ + २) एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में क्रमश ११ (४ + ४ + ३) एवं १२(४ + ४ + ४) वर्ण होते हैं। पर डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा इसके विभिन्न चरणों में वर्णों का संख्यात्मक विधान किंचित् भिन्न है। उनके अनुसार इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में १६-१६ वर्ण होते हैं और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में १०-१० वर्ण।[3]

'बिरहा' के विषय में डॉ० ग्रियर्सन का यह वक्तव्य ध्यातव्य है—"पढ़ते समय ये बिरहे शायद ही छन्द के नियमों के अनुसार मिलें, जब तक हम यह याद न रखें कि बहुत से दीर्घ स्वर पढ़ते समय लघु कर दिए जाते हैं। इनमें कभी-कभी कुछ ऐसे भी व्यर्थ के शब्द होते हैं, जो छन्द के अंगभूत नहीं होते।" नीचे एक-दो उदाहरण दिए जाते हैं—

---

१. "ह्रस्व दीर्घ उच्चारण पद्धति" से तात्पर्य लोकगीतों के गायन में सहज भाव से परिलक्षित होनेवाली वह पद्धति है, जिसके सहारे काल-मात्रा की पूर्ति के लिए ह्रस्व मात्रा का दीर्घ या दीर्घ मात्रा का ह्रस्व सा उच्चारण किया जाता है।

२. वस्तुतः 'सोहर' एक तालवृत्त है, जिसका माप-दण्ड पृथक्-पृथक् मात्राएँ और वर्ण नहीं, वरन् लयबद्ध बलाघात पूर्ण इकाइयाँ ही हो सकती हैं। इन्हीं इकाइयों की आवृत्ति से 'राग' की सृष्टि होती है। प्रत्येक आवर्तक बलाघात पर ताल पड़ता जाता है। ये ताल समान रागात्मक मात्राओं द्वारा नियन्त्रित रहते हैं, जिससे प्रत्येक इकाई की उच्चरित अवस्थिति समतोलक बनी रहती है।—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद
मगही संस्कारगीत, पृ० ५१-५२।

३. लोकसाहित्य की भूमिका, पृ० २१५।

(क) नन्हेंपन से भौं/जी लगलइ पिरितिया—१६ वर्ण

टूट के बो/लल तो न/हिं जाये—११ वर्ण

हमरा ता/हरा छुट/तइ पिरि/तिया कवां(भोजी)— १५ वर्ण

(कि) दुइ मे ए/क तो मार/जाये—१०वर्ण

(ख) पिया पिया रटि के पि/यर भेलइ देहिया—१५ वर्ण

लोगवा क/हइ कि पा/डु रोग—११ वर्ण

गॉमा के लोगवा मऽ/ऽरमियो न जानइ—१६ वर्ण

भेलइ न/गओनमा/मोर—१० वर्ण

इसी तरह अन्य छन्दों का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रथम अध्याय

मगही की लोक कथाएँ

प्रथम अध्याय

मगही की लोक-कथाएँ

नालंदा[1]

अभला

एगो राजा हला आ एगो डोम के बेटा हला। दुनो सिकार खेले लगलन। राजा के बेटा कहलका कि जे हारे से, अप्पन बहिन के दे। राजा के बेटा हार गेल। डोम के बेटा जीत गेल। डोम माँगे लगल, राजा के बेटा के बहिन। राजा के बेटा माय से कहलका—'गे माय हम जाही सिकार खेले। अभला बहिन दिया[2] खाये भेजा दीहे।'

राजा गेला। बहिनी खइया लेके गेला। डोम के बेटा पानी में[3] डुबकी मरले बैठल हलइ। ओकर हाँथ में कमल के फूल हलइ। फूल उप्पर मुँह हलइ, अपने छप्पल[4] हलइ। अभला माँगलक—'भइया, हमरा कमल के फूल दऽ।' भाई कहलथिन—'जरी सन[5] पानी है, अपने ले आवऽ।' बहिन पानी में हेललखिन फूल लावे ला।

बहिनी कहलखिन—छुपती पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई कहलन— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला कहलक— ठेहुना पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— कम्मर पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— छाती पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— मुँह कौर पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

---

१ पटना जिला के अन्तर्गत। २ द्वारा। ३ में। ४ छिपा हुआ। ५ थोड़ा-सा।

अफ़ला— सिरा के सेनुरा धोवैलइ जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी आउ जो।

डोमा अफ़ला के लेके पनिये में बैठ रहलइ।

तब ओकर माय बाप खोज करे लगलइ। भाई गेलइ घर धुर[1] के, तो माय बाप खोज करथिन। अफ़्फ़ा एगो सुग्गा पोसलक हल। ऊ सुगवा गेलइ उहके पोखरिया पर। ऊ कहे लगलइ—

अफ़ला गे, तोरा माय कानऽ हउ,
तोरा बाप कानऽ हउ,
तोरा पढ़ल सुगवा सेउ कानऽ हउ,
तोरा गुरु परोहित सब कानऽ हउ,
तोरा टोला पड़ोसिन सब कानऽ हउ।

अफ़ला बोलल—

सुगवा रे, गोड़ा बाँधल हउ,
हथा[2] छानल हउ,
भइया हारल हउ,
डोमा जीतल हउ।

सुगवा जाके कहलकई कि अफ़्फ़ा हइ पोखरिया में।
मइया-बप्पा गेलइ सवारी पर। सुगवा फिनु बोललइ—
अफ़ला गे, तोरा मइया कानऽ हउ……।

अफ़ला कहलक—

गोड़ा बाधल हउ,
हथा छानल हउ,
भइया हारल हउ,
डोमा जीतल हउ,
छतिया पर पाथर परल।

अफ़ला के निकाले ला, जन-जन लगाके पनिया उपछावल गेलइ। सोना के मचिया पर बैठल हलइ अफ़ला। माय-बाप ओकरा लेके चल गेलइ।

राजगृह[3]

राजा के बेटी कुम्हार घर

एक ठो राजा हला। ऊ सात गो बिआह कैलका। सातो माउग के बालबच्चा नइँ होवऽ हलइन। राजा दुखित होके बाहर चल गेला। जाते-जाते पहुँचला एगो आम के बगइचा में।

---

१ लौट (कर)। २. हाथ। ३. पटना जिला के अन्तर्गत।

पेड़वा तर बैठ के तपे लगला। एगो बरहामन ऐलखिन। उ पुछलथिन—काहे एँतना तपस्या कैले हऽ। राजा कहलथिन—'हम सात गो मेहरारू कर चुकलूँ हँऽ। सातो के बालबच्चा नइँ होबऽ हे।' बरहामन कहलथिन—'हिएँ के डेना लीजिए। पेड़वा में मारिए। सात गो आम गिरेगा। सातो औरत के खिला दीजिये।'

सात गो आम गिरलइ। त उ सातो अम्मा[१] सातो मोगी के देलकइ। त उ छगो[२] तो खैलकइ बकि छोटकी के देलकइ तो कहलकइ कि हम ठोंर[३] करऽ ही। कोठिया-कनइवा धर दऽ। धर देलथी राजा। एगो सौतिनिया ओकर हिस्सा अम्मा चोरा के खा गेलइ, आ अँठिया ओकरे पर धर देलकइ। चौकड़ा देके, हाँथ-मुँह धो के छोटकी गेल खाय। देखे तो अँठिया हे। 'के खा गेल हमर अम्मा?' 'हम की जाने गेलियो कि के खैलको।'

बेचारी की करो? अँठिए चाट गेन। ओकर गरभ रह गेलइ। आउर केकरो न रहलइ।

दिनवाँ ओकर आवल जा हलइ। राजा जाय लगलथी अपना काम पर। त छोटकी कहलकइ कि तूँ तऽ चलल जा हऽ। ऐसन-ऐसन हिआँ के हाल हे। के काम देत? राजा कहलथी कि घंटी टंगवा दे हियो। बालक होय के घरी ऐतो, घंटी बजा दीहऽ। सुन के आ जैबो।

सौतिनियाँ फुट्ठो-फुट्ठो घंटिया बजा दइ। राजा आथी, घुर आथी। जब दुखवा होय लगलइ, तब राजा ऐबे न करखिन। सौतिनियाँ के पूछे हे कि हमरा दुख होवे हे, कइसे बैठ के बिआईं? सौतिनियाँ कह देलकइ कि कोठिया में मुरिया[४] समा दे, आ एन्ने देहिया रख। एन्ने बुतरुआ गिरतउ। बेचारी के लड़की भेलइ। सौतिनियाँ ले भागलइ, आउ हुआँ ईंटा-खपटा धर देलकइ। ओकर मुरी अपनी कोठिए में हे।

एक पेटी में माल-जाल देलकइ, एक पेटी में बुतरुआ के बन्द कलकइ, कुम्हरा के ओंवा में फेंक अइलइ। तब रानी के मुरिया निकालकइ। आ कहलकइ—'देखे ने खपटा चिपटा भेलउ हे।'

कुम्हरा गेल आँवाँ तरे काम करे। बुतरुआ पेटिया में कनलइ। त कुम्हरा कहऽ हइ, कुम्हैनियाँ के—देखहिं, उ काँची तो पेटिया में कानऽ हइ। कुम्हरा देखे हे—तो बड़ा सुन्दर लड़की! आ एक पेटी में माल-जाल। कुम्हैनियाँ से कहकइ कि चल एकरा पोसम। मालो-जाल मिल गेलउ।

ओकरा पोसलक। लड़किया हो गेलइ सरेख[५] दस बारह बरिस के। राजा भेजका कुम्हैनियाँ हीं नफरवा के कि बासन[६] मगले आओ। गेनइ माँगे। कुम्हैनियाँ कहकइ—गे बेटी, राजा के आज फेन लेवेला ऐलइ बसना। काढ के दे देहीँ। राजा के बेटी काढ के देवे ऐलखिन। नफरवा बसना नइँ उठैलकइ। लड़किए देख के मिजाज होस[७] आ गेलइ। नफरवा राजा के कहलकइ कि—एक ठो कुम्हरा के कंचन कुँआरी नियन लड़की हइ। हम बसना नइँ लेलियो। खाली कइ ऐलियो।

राजा के पाप आ गेलइन मन में कि लड़किया से सदिये कर लीं। राजा कहलखिन कि जो, ओकरा पकड़ के लाव तो! कुम्हरा गेल। राजा कहलथिन—तोरा हीं लड़की कहाँ से हउ, ऐसन सुधर[८]? कहाँ से लौले है? कुम्हरा कहलकइ—सरकार, लड़की अपने घर में पैदा लेलक हे, कहाँ से लाम! राजा कहलन जरी हमरा ला के देखा दे। कुम्हरा कहलक—सरकार मार दऽ, चाहे

---

१ आम। २ छः। ३. नोपना। ४. सिर। ५ बड़ी। ६ बर्तन। ७ आश्चर्य चकित (हो गया)। ८ सुन्दर।

काट दऽ। हमरा घर चल के देख लऽ। हम नइँ लेवो हियाँ। राजा गेलथी देखे। राजा कहलखिन—ए कुम्हार, हम लड़किया से सादी करबउ।

राजा घर में जाके मरवा छप्पर कर लेलका। बरहामन बिघ बेओहार करे लगला। लड़कियो के ले गेलइ कुम्हरा। जब चुटकी [१] उठवे लगऽ हथ, तो लड़किया बोलऽ हइ,—

विलसिन मिसिर तोहें पंडित जी
बाप बिआह न करिए जी।

बप्पा पूछऽ हइ—लड़किया की बोले हे? फेन चुटकिया उठैलथिन। लड़किया ओह बतवा बोलइ।

तब लड़किया कपड़ा लत्ता सब फेंक देलक। उ कहलक—तूँ बाप, हम बेटी। बिआह कैसे हमरा से करऽ हऽ? सब खिस्सा कह देलक कि छओ माय हमरा ई हाल कैलक हे। राजा कानऽ हथ। लड़की देखऽ हथ आ पछतावऽ हथ। फेन लड़किया के गोदी में बैठा लेलन।

राजा छओ माउग के काट के तरहरा भर [२] देलका। ओही मौगी, राजा आ बेटी राज-पाट करे लगला।

बेगमपुर [३]

धरम के जय

एगो राजा हलन आ एगो सौदागर। ऊ चले लगलन सौदागरी करे लगि। उनका चार गो बेटा हलइन आ चार गो पुतोह। चारो से पुछलन—तूँ सब ला काका लैमोऽ? बड़की कहलकइन—हमरा ला कुछ पढ़ही पुरहा सनस लेल्हे अइहऽ। मझली बोललइन—हमरा ला गलवा के जड़उआ हरवा लेल्हे अइहऽ। सझली कहलन—हमरा लागि लाह के लगनी अउर पित्तर के कगनो लेल्हे अइहऽ। छोटकी मगावे हे कान के कनतरकी।

त ऊ बानिज करे गेलन। तीनों ला सब कुछ ले चुकलन, बकि छोटकी ला न लेलन। जब नाओ पर चढलन, त इयाद पड़लइ। त फिनु घुर के गेलन। लच्छ रुपया में कनतरका खरीदलन। घर घुरलन तो सब के चीज दे देलन। छोटकी के देलन कनतरका।

अब तीनों गोतिनियाँ गोचर करे अपना—हाय, हमनी मुरुख हली जे कनतरका न मगैली। सबसे चतुर है छोटकी। एत्ता रुपेया के एत्ता बढ़ियाँ हीरा के गहना मगा लेलक। सझली बोलल—एकरा हमनी गगा नहाय ले चलम। अपने कनतरका भोरा जैतइ।

चारो मिल के गगा जी में खूबे छौंपा छौंपी खेललक। कनतरकी गगा जी में गिर गेल। घर आयल तो देखे, कनतरकी न हे। ऊ अन्न-पानी तेयाग के कोठरी में पड़ गेल।

एगो राजा के नौकर घोड़ा नहावे गेल गगा में। घोड़वा पानी में चकचम देख के आगु बढ़वे न करे। नौकरवा दखे हे, तो सूरुज के जोत नियर कनतरकी। उठा के कम्मर में खोंस लेलक।

---

१ सिन्दुर। २ काट कर गड्ढे में डाल (दिया)। ३ पटना सिटी (पटना जिला)।

फिनु राजा के दे देलक आ सब हाल कह देलक। राजा सोचलक—जेकर कनतरकी सूरूज के जोत ऐसन हे, ऊ अपने कैसन होइत। कइसे मिलूँ एकरा से। राजा एगो कुटनी बुढ़िया के बोलौलक। एगो चगेरी में अनमोल चूड़ी भरवा देलक आ कहलक—तूँ घरे घर पेन्हाबे जो। आ पता लगा के लाओ। बुढ़िया महल्ले-महल्ले पुकारे—बेटी पतोह! चूड़ी पहिनऽ, चूड़ी!

तीनों पुतोह पहेनलक, छोटकी ऐवे न करलक। बड़की बोललक—छोटकी के कनतरका भुला गेलउ हे, ऊ न पेहेनतउ। तूँ मना के पेहनैमें, तो पेन्हाओ। बुढ़िया बूझ गेल। उ कहलक—बउआ, कनिआँ कहाँ सुतल हथुन? हम मना के पेहना देम। बुढ़िया छोटकी के मनावे हे—उठऽ कनियां! चूड़ी पेन्ह। हम कनतरका तोरा दिला देम, एगो राजा पैलकवऽ हे। उ खुसी खुसी चूड़ी पेहेन लेलक। बुढ़िया सब बात राजा के कहलक। राजा ओकरा बोलावे ला भेजलक। छोटकी बोले हे—हम भितरिया आदमी ही। कइसे जाम कनतरकी लावे। बुढ़िया से राजा सम्बाद भेजलक—हम अपना महल से उनका कोठरी तलक, तल्ले तल्ले सुरंग खोदाम आउर दुन्नों तरफ दीआ जलायम। छोटकी आवे ला राजी हो गेल।

सुरुंग बन गेल। छोटकी हीरा मोती से सिंगार-पटार करके चलल मिले ला। पहुँचलक तो देखे हे राजा के हाथ में अप्पन कनतरका। ऊ झपाक से ले लेलक। झोंका-झोंकी में ओकर मोती-मूँगा टूट के फैल गेलउ। राजा सोचलक—रानी के सिंगार टूट गेल, उ गोस्सा हो जैतन। डरे ऊ बटोरे लगल आ बटोरे में भुला गेल। छोटकी धीरा धीरी करते आउ दीया बुझाते अप्पन कोठरी में पहुँचल। राजा के मुँह ठिसुआ गेलक।

राजा पुलिस भेज के सौदागर के बोलौलक। आउ बुझउअल बुझौलक कि जे न बुझबऽ, तो हम भक्सी झोंका देमोभ। जे बूझ देबऽ, तो तूँ हमरा भक्सी झोंका दीहऽ। राजा बुझावे हे—

तल्ले तल्ले सुरूग खोदैली
राहे राहे दीप जलैनी,
दरख चदन न पैली।

सौदागर कइसे बूझे। भक्सी झोंके के तइयारी हो गेल। सौदागर कहलक—अब तो राजा जी हमरा मरना हइए हे। एक दफे लइकन फइकन के देखे के हुउम मिल जाग। हुकुम मिल गेल।

सौदागर घर आयल, तो अन्न जल न खाये। सब खिस्सा घर में कहलक। छोटकी पुतोहिया पुछलक—कौन बुझउअल है बाबू जी? सौदागर सुनैलक। छोटकी पुतोहिया जबाब सिखैलक—

तल्ले-तल्ले सुरूग खोदैली,
राहे-राहे दीप जलैली,
मोती-चुनते अकिल गँवैली,
दरख-चदन न पैली।

सौदागर जाके राजा के बुझउअल बूझ देलकइ। राजा के आँख खुल गेलइ कि न हम मोती चुनती हल, न उ भागत हल। राजा कहलकइ—हम हार गेली। हमरा भक्सी झोंकवा दऽ।

त ऊ लड़की सोचे है कि ई तो हमरो से वदमास हे। बाप रे। ई तो एतना रा बात पर वर्करिए के मुआ देलक आ सुप्पे[1] के टाँय-टॉय कयला लागि कुटी-कुटी कर देलक। ऐसन न कि हमरो काट देवे।

ओही दिन ऊ लड़की अपना दिल में सब सोंच के सुधर गेल। फिर उनका भाइ बोलावे गेलइन। त कहलन पहुन जी[2] जाय दऽ। त कहलन कि अच्छा लिया जा। जब जरूरत होइ, त हम लिआ आम। तब ऊ नइहर आयल। आ सब हीं घुम-घुम के जाय लगउ। ऊ सब से बोलें-बतियाये लगल। त ऊ गाँव के लोग कहे लगल कि कनुनियों के छउँरी बिहुनी[3] सुधर गेलइ ससुरार जाय से। बापरे कयसन वढ़ियों से बतिआवे हे। देखऽ नऽ, पहिले मुनसारी में जा हली, त सबसे लड़ जा हलइ। अब कैमन सुधर गेलई। डर ऐसने चीज हे। बिगड़लो आदमी बन जा हे।

खुसरूपुर नवादा[4]

जितिया के महातम[5]

एगो हलन चूल्हो अउर एगो हलन सियारो। दुनो हलन बहिन। चुल्हो करऽ हलन जितिया। चुल्हो के सात बेटा हलइन। अउ सियारो के एको गो ना। सियारो कहलन—दीदी, हमहू जीतिया वरत करम, तो हमरो लड़कन फड़कन होई। चूल्हो कहलन कि करऽ। चूल्हो भी सहलन सियारो भी सहलन। सियारो भोर में उर्दा-मुर्दा, अरी-मरी लाके, आ केमारी दन करके कटर मटर खा रहलन हे। तो चूल्हो कहलन—कौची कटर मटर खाहीं सियारो ? सियारो बोललन—सहल गुने देहवा कटर-मटर बोलऽ हइ, पटर पटर बोलऽ हइ। देखऽ हथन चूल्हो केमारी खोल के, तो कटर-मटर मुर्दा खा रहलन हें। अब तो इ होइए गेल।

सियारो कहलन कि हमरा बहिन के सात बेटा है आ हमरा एको न। हम सबके मार देम। तो सात गो लड्डू जहर के बना के लैलन, आउ सातो के दे देलन। जहर के लड्डू खा-उ के कहलन— सलाम मौसी, सलाम मौसी। सियारो सोचलन—जहर के लड्डू देली, तइयो न मरल। फेन सातो बेटा उनकर सुतल हलन। सातो बेटा के एक तरफे से मूरी काट देलन। आ सातो मूरी उठा के ले गेलन। तो कहलन— ले गे वहिन, सातो बउआ लागी, सात गो फेदा देवे ऐली हे।

उधर से विध आ विधाता आ रहलन हल। विध कहलन – जेकर एगो बेटा मरे है, तो कैसन सुफा है, आ जेकर सातो पड़ल है, ओकरा कैसन सुफात। उ विधाता से कहलन कि सातो के उठा दऽ। विधाता कहलन— चलऽ। यही कहे है कि औरत जात के नाक न रहे, तो गंदा चीज खाये। विध कहलन— ना, जब तलक तूँ ना उठा के जैबऽ, तब ले हम न जाम। विधाता कनगुरिया चीर के अमइमरित दे देलन आउ राम-राम कहलन। तो सातो उठ के खड़ा हो गेलन।

---

१. सूप को ही। २ दमाद के लिये प्रयुक्त। ३ एक गाली। ४ पटना जिला के अन्तर्गत। ५ पुत्र की कल्याण कामना के लिए किया जाने वाला एक व्रत।

फेनु सातो अपन माय के कहे गेलन कि माय बड़ी भूख लगल है। माय कहलन— मौसी सतफेदा दे गेलउ है, से सातो भाई लेलऽ। तो ऊ सा-उ के फिन कहलन— सलाम मौसी। तब सियारो कहलन— कि अब का करूँ? जहर के लड्डू देली, तब न मरल। आ मूरी काट देली, तब न मरल। अब का करूँ।

तब सुन के दुनियाँ संसार के आदमी कहलन— हे भगमान, जैसन उनकर दिन फिरल, ओयसने दुनियाँ संसार के दिन फिरे।

सेवदह[1]

डरपोक बनिया

बनिया सब सुभाव के कमजोर होवा हइ[2]। जरी जरी सा बात में डेरा जा हइ। पुराना जमाना में ऐसने एगो बनिया रहऽ हलइ। तहिया न रेल हलइ न तार। ओकरा एगो दोसर सहर में जाय के हलइ। सहरवा के रसतवा जंगल में हो के जा हलइ। उ बेचारा डेराल[3] करऽ हलइ कि राह बाट में कोई चोर-डाकू मिल जात, त धनमों छिन लेत अउ जानों मार देत। बाकि लालच बुरा बलाय होवऽ हे। कोई रोजगार के काम स बेचारा जा रहल हल। रुक्कत हल कइसे! से गुने[4] बेचारा चललक[5]।

रस्तवा में जा रहल हल बाकि चोरवा के डर ओकर जी में घुसल हल। जरीक्को[6] सा पत्ता खड़खड़ा हलइ कि बेचारा बनिमा के जी सूख जा हलइ। ऐसने आदमी के कहल जा हेय कि—डरपोक जे होवऽ हे, से मउअत के पहेलऽ ही मर जाहे। संजोग से सोझे[7] से दु गो घोड़सवार देखाइ पड़लइ। बनिमा समझलक कि अब जान गेल। अब तो डोंकू मिलल। जब घोड़-सवरबन जरी नगीच अलइ, त बनिमा झुक के सलाम कैलकइ, आउ डेराल पुछलकइ—"हे सरकार, तूँ किधीर[8] जैबऽ?" घोड़सवरबन ओहे जगह के नाम बतैलकइ, जहाँ बनिमा के जाए के हलइ। फेन उ पुछलकइ—तोहनी सब काहेला जा रहलऽ हऽ। घोड़सवरबन कहलकइ— हमनी सब राजा के सिपाही ही। अब बनिमा के ढाढस होलइ। कहलकइ—हे हजूर, हमरो अपना साथे लेले चलऽ। रसता खतरनाक हे। चोर डकैत के बड़ी डर हे। हम्मर जाने सुक्खल जा हे। घोड़सवरबन कहलकइ—"हमनहीं सबके साथ की डर हउ। चल।

१ ग्राम-सेवदह; सबडिवीजन-बाढ; थाना बख्तियारपुर; जिला—पटना। २ 'इ' की ध्वनि 'य' के निकट सुनाई पड़ती है। ३ भयभीत होता। ४ इस कारण से। ५ चला। ६ ज़रा भी। ७ सामने। ८. किस ओर।

एँन्ने ओन्ने घोड़सवरवन चलऽ हलइ, अउ क्षितिरा में सहुकरवा। थोड़े दूर पार करे के बाद सोझे से तीन गो असवार[1] ऐते देखाइ पड़लइ। बनिमा थरथरा के कहे लगलइ—अब डकुअन आ गेलइ। अब जान नऽ बचत। एगो घोड़धवरबा कहलकइ—'अरे एँतना काहे ला डेरा हँ। हमनहीं सब के पास हथियार हउ। एगो के खतम कैले बिना न छोड़बइ। दोसर सिपहिया कहलकइ—त एगो के मउअत हमरा हाँथ से समझ। सहुकरवा कहलकइ—तोहँनहीं सब तो दू गो के मार देबऽ, बाकि तेसरका हमरा मार देत।

गाँव—नेहुसा[2]

गोधन* के महातम

एगो भाँट हललइ आउ एगो भाँटिन। भँटवा के इयार हलइ जुलहवा। दुन्हुँ गोहूँ उपजावऽ हलइ। जोलहवा के पुड़िया साफ होवइ आउ भँटवा के मैला। भँटिनियाँ अप्पन मेदवा[3] के पुड़िया अप्पन साँप इयार के खिलावऽ हल। भँटवा आउ जुलहवा बतियाये कि—दुन्हुँ अदमी के पुड़िया दू रकम होवऽ हे, से की बात हकइ। भँटवा सब्भे बतिया भँटिनियों से कहलकइ। भँटिनियाँ कहलक अप्पन सँप्पा इयरवा से कि—हम्मर मरद सफका गेहुँआ खोजऽ हको। से तों ओकरा काटब्हो कि मर जाये? सँप्पा कहलकइ कि—हाँ।

भोर पहर भँटवा काम पर गेलइ। हुँआँ जुनवा उतार के रख देलकइ। सँप्पा जुतवे में समा गेलइ। दुपहरिया के पेन्हे घड़ी जुतवा झड़लकइ, तो सँप्पा गिर गेलइ। ओकरा मार के ऊ कनेलिया के पेंड़वा में टाँग देलकइ। घुर के घर चल एइलइ। अप्पन मउगी से बोललइ कि—देखऽ, आज हम बड़ी भाग से बच गेलियो हऽ। सब्भे खिस्सा कह देलक। मेहरुआ के हदँपट्ठी समा गेलइ। चललइ पानी के बहाने कनेलिया तर। देखलकइ मरल—टँगल। ऊ ओकरा घर लाके, सात खुदडी[4] करके ठौरे-ठौरे छिपा देलकइ। रात खनी मरदवा से बुझौलक बुझोअल। आउ कहलक—जे नइँ बूझे उ तरहरा गदाय। बुझौलकइ—

> पी के पी मारे, कनैल गाछ टाँगे
> सात गुड़िया, कुछ जूड़ा,
> कुछ कोची, कुछ पिड़सीरी,
> कुछ सिघोरा, कुछ पौआ,
> कुछ दीया, जरे सारी राति॥

---

1 घोड़सवार। २ पो० आ०—चेरो, सबडिवीजन—बाढ़, जिला—पटना। ३ मैदा।
४ गुड़िया, टुकड़ा। * भाई दूज का पर्व, जो कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है।

मरदवा बूझ नईं सकलइ। अप्पन मौगी से कहलकइ--आज गोधन के दिन हकउ। हम्मर दइया[1] टीका काढले होतउ। घुर के ऐवउ, तो, तों मार दीहे। बहिनी घर गेलइ, तो ऊ टीका काढलस्इ[2]। फिनु ऊ सब्भे खिस्सा कह देलकइ। बहिनी बोललकइ--जब तों मरमें करमS, तब हम बर्च के रहम की! तोरा साथे चलवउ। मारे के होतइ, तो दुन्हुं के मार देतइ।

चलते-चलते रात भे गेलइ। दुन्हु कुरखेत में डेरा डाल देलक। भयवा सूत गेलइ। बहिनी के फिकिर से नींद नईं अइलइ। कुरखेतवा में सुप्पा, बढनियां, चौकी, बेलना, सिलौटी लोढा सब्भे अप्पन मलकिनियों के खिस्सा बतिया हलइ। एगो कइलकइ--हम्मर मलकिनियों बड़ सुघड़िन हकइ। काम-ऊम करके हमरा अप्पन मना से रख्ख दे हकइ। भँटिनियाँ के सुप्पा-चलनियाँ कहSहइ--हम्मर मलकिनियाँ बड़ सैतान हक्कइ। हमरा से काम ले के बीग दे हइ। ओकर चालो-चलन खराब हक्ो। सॅप्पा से फँसल हलइ। अब धोखा से अप्पन मरदवा के मारे के उपाय कैलके हS। चलिनियाँ बोलSहइ कि--हम्मर मलिकवा दइया हीं गोधन टीका लेवे गेले हS। जब बहिनी हीं से अइतइ, तब मार करके तरहरवा में गड़ देतइ। सब्भे खिस्सा बहिनी सुन लेलस्इ।

बहिनी पूछS हक्कइ भौजइया से कि--की बुझौता हक्उ? हमरो से बुझा ले। बुझवउ तो नहीं एँ। मारना तो तोरा हइए हउ। दुन्हुं भयवा-बहिनी के संघे मार दीहें। भउजइया बुझौलक्इ। नन्दिया ओकर केसिया पकड़ के एगो खुखड़ी निकाल देलकइ। फिनु सब्भे ठइयाँ से निकाल के जमा कर देलक्इ। भँटिनियाँ हार गेलइ। ओकरा तरहरा खना के गाड़ देलक्इ। फिनु ओही भाइ, ओही बहिन। दुन्हूं सुख से रहे लगलइ।

ग्राम-दौलतपुर[3]

करनी के फल

एगो कुइयाँ में एक ठो बाघ गिरल हलइ। एक ठो पंडित जी के पियास लगलइ। तब ऊ ओही कुइयाँ पर गेलथीन। कुइयाँ में बाघ गिरल देख के घबड़ा गेलन। बघवा पंडित जी से कहलकइन कि--हमरा निकाल देवS, तो हम तोरा बहुत धन देम। ऊ ओकरा निकाल देलन। जब बघवा ऊपर आयल, तब पंडित जी से कहलक कि--हमरा बड़ी भूख लगल हे। हम तीन-चार दिन से न खइली हे। से हम तोरा खा जाम। पंडित जी कहलन कि--देख भाइ, हम तोरा निकालली हे, तूँ हमरे उल्टे खायल चाहS हें। चल इंसाफ करावे।

दुन्हों इंसाफ करावे चललन। चलते-चलते एक ठो सियार मिलल। ऊ कहलक--पंडित जी तूँ कहाँ जा रहलS हे। पंडित जी कहलन कि--हे भाइ, इनका हम कुइयाँ में से निकलली हे

---

१ बहिन। २. गोधन के बाद भाई को टीका लगा कर मिठाई, बजरी, फल आदि खिलाने की क्रिया।

३. डाकखाना--मसौढी, जिला-पटना। ग्राम दौलतपुर मसौढी से चार मील पश्चिम है।

आउर इ हमरा खायल चाहऽहन। तूँ इंसाफ कर दे। सियार कहलक कि हम कुछ न समझइत हीओ। कैसे बाघ कुंइयाँ गिरल हलन आउर कइसे तूँ उनका निकल लऽ। इ चल के देखावऽ। तब न इंसाफ करबो।

बघवा सुन के कुइयाँ में कूद गेल। पंडित जी फिनु निकाले लगलन। तब सियरवा कहलक कि—पंडित जी अबऽहियों तो भागऽ। तब पंडित जी जान बचाके भाग गेलन। बघवा के अप्पन करनी के फल मिलल।

गया[1]

सेठ आउ कुँजड़ा

कहीं पर एगो सेठ हल। उनके पड़ोस में एगो कुंजड़ा हल। दुनों अप्पन-अप्पन रोजगार करऽ हलन। रोज दिन कुंजड़िनियाँ सेठाइन से बतियावे कि आज हमरा दू रुपिया के साग-मुरइ में चार रुपेया तरल। तोरा सेठ जी केतना कमलथुन[2] ? सेठाइन कहलन—उ तो पइसा-अधेला के नफा बतलावऽहथ।

ऐसहीं रोज दिन साँझ के साँझ चले लगल। कुंजड़िन रोज दूना नफा बतावे, आउ सेठाइन अधेला पइसा। एक दिन सेठाइन, सेठ से कहलन—तूँ रोज दिन अधेला पइसा नफा बतावऽ हऽ। आउ कुंजड़िनियाँ दुगुना बतावे हे। ई पर सेठ जी कहलन कि तू का जाने गेलऽ। जे अधेला पइसा बचत, तो हजार रुपिया के पूँजी में केतना बच गेल। का उ तोरा से जादा कमा हइ। ठीके कहलक हे—

सौ के सवाइ भल, बाकि गजड़ा के दूना न भल।

जहानाबाद[3]

लाला जी के धुरतइ

एगो लाला जी हलन। उ बड़ा गरीब हलन। उन कर पड़ोसे में एगो राजा हलन। एक दिन ललाइन जी कहलन—इ तरह से कब तलुक काम चलत। कभी भरपेट खाय पीयला भी न होय। इ पर लाला जी कहलन—"सुन हमरा अगर दू रुपैया के भी नौकरी मिल जाये, तो तोरा हम पाँच सौ के साड़ी बिहाने होके पेन्हायर। राजा अपन कोठा से लाला जी के बात सुनइत हलन। उ राजा से कहके बिहाने लाला जी के दू रुपैया के नौकरी दिला देलन। लाला जी के हुकुम मिलल कि तूँ रात के तरेगन गिनिहऽ। देवान जी के चौरस्ता पर पियादा लेके बैठे के हुकुम मिलल्हइन।

---

१. गया जिला। २. कमाया। ३. जिला गया के अन्तर्गत।

लाला जी चौरस्ता पर बैठ गेलन पियादा संगे। जउन मकान से तरेगन न जनाय, ओकर मालिक के पेयादा से बोलावथ। ओकरा ऐला पर कहथ—भाइ, तोरा मकान से तरेगन न जनाये। मकान तोड़ दऽ। इ पर मकान मालिक सब घबडाथ। लाला जी के घुंसखोरी चले लगल। उ माले-माल भे गेलन। बिहाने भेन अपना औरत के पाँच सौ रुपैया के साड़ी पेन्हौलन। रानी इ बात राजा से कहलन। राजा लाला जी के काम बदल देलन। राजा कहलन—देवान जी, तूँ समुन्दर के हल्का[१] गिनिहऽ।

लाला जी पियादा संग समुन्दर के किनार पर गेलन। उहाँ डेरा-तंबा पड गेल। जब कोई जहाज आवे, तो लाला जी पियादा भेजवा के रोकवावथ। सौदागर के बोला के कहथ–राजा के। हुकुम से जुआर गिनाइत हे। जहाज के आवे से हल्का खराब हो जायत। से तूँ जहाज रोक दऽ सौदागर घाटा के डर से घूँस देवे लगलन। लाला जी मालेमाल हो गेलन। लाला जी के झोपड़ी के जगह कोठा सोफा बन गेल। राजा जी के मालूम भेल, तो लाला जी के फिनु काम बदललन। उनका घोड़ा के लीद जाँचे के काम मिलल।

लाला जी रोज बिहने घोड़ा के लीद अस्तबल जाके जोखावत। जे दिन कोई घोड़ा जादे लीद दे, तो लाला कहथ—भाइ, तूँ घोडा के जादा दाना काहे दे हे। जउन घोड़ा कम लीद दे, ओकर बदे कहथ—भाई, घोड़ा के दाना कम काहे दे हे। इ तरह से लाला जी के घूसखोरी चले लगल। लाला जी आउ मालेमाल हो गेलन। राजा के खबर भेल। उ तंग भे गेलन। लाला जी से उ सब बात पुछलन। लाल जी सारा खिस्सा कह देलन।

कउआकोल[२]

बाघ के मउअत

एगो जंगल में एगो बाघ रहऽ हलै। वहैं पर से कुछ दूर हट के एगो गाँव हलै। ऊ बसतिया पर गोवार[३] बहुत रहऽ हलै। गोवरवन सब बकरी बहुत पालऽ हलै। बघवा ओकर बकरिया के बचवा के रोज मार-मार के ले भागऽ हलै। इकरा से गोवरबन बड़ी दुख में रहऽ हलै।

एक दिन सब मिल के बघवा के मारे लेल सोचलकै। सब अप्पन हाथ में एक-एक गो तलवार ले लेलकै। आउ जंगलवा के तरफ चले लगलै। जहाँ पर बघवा रहऽ हलै, हुआँ पर पहुँच गेलै। सब देखऽ है कि बघवा सुतल हे। बघवा के बिजुन केकरो जाए के साहस नै पड़लै। तब ओकरा सब ढेला से मारे लगलै। तइयो नै बघवा उठै। तब सब बूझ गेलै, कि बघवा के कोई मार देलकै हे। तब सब हुआँ पर पहुँच लै, तो देखै है कि बघवा पहिले मे मर गेलै।

---

१. लहर।

२. कउआकोल ग्राम, नवादा सब डिवीजन (जिला—गया) का एक थाना है। यह स्थान नवादा से ७ मील पूर्व है।

३. ग्वाला।

मिसिरबिगहा[1]

धोखा के फल

एक ठो नउआ हले। उ अपना घरे के रोजे[2] रोसकट्टी[3] करा के लावऽ हले, आ उ भाग जा हले। एक दिन जब लावे गेल त औरतिया कहलक कि हम खीर तीन साफ खैबो, तो जैबो, न तो न जैबो। नउआ कहलक—से चल भाइ, तीनों साफ खेइहें। मौगी के माय कहे—से अब न जाय देवो। तहिना से हम्मर लछमी तोरा किहाँ[4] गेल हे। आज तक खीर न खैलक हे। नउआ बोलल—खीर ला रुसल हे। चले घरे, खूब खीर खात।

अप्पन घरे आयल। ओकर बाद में कोई कुम्हार किहाँ से दूगो, तीन गो हँड़िया आन लौलक। कोई जजमान किहाँ वेतारी के कल चलैत हल। हुआँ से तीन बसना रस ले लौलक। केकरो किहाँ से दू तीन सेर चाऊ[5] माग के ले लौलक। कोई जजमान किहाँ से जरामन[6] माग के ले लौलक। औरत के जिम्मा लगा देलक कि खूब खीर बना के खो। तीन हँड़िया में तसमई बन गेल। वो ही गाँव में ओकर साढ़ू के नेओता देवेला हल। साढ़ नेओता पा के आ गेल। नउनिआँ न[7] कहलक अप्पन मरदाना से कि सत्तू-फुटहा खिला देहूँ। उ चल जैतथीन। माउग-मरद राय कैलन कि लाओ दू चार थप्पड़ मरिअउ। मरद मारलके। से नउनियाँ नरहनी काँख तर चाँत के कोई जजमान के नहो[8] टूँगे ला चल गेल। अपना साढ़ू से नउआ बतियाय लगल—देखऽ नऽ भाइ, रसोइ बनावे ला कहली, से नोंक-भोंक करे लगले। से दू-चार थप्पड़ मारली, तो कन्ने तो देखऽ नऽ रुस के चल गेल। जरा ओकरा खोज के आवऽ ही।

साढ़ू जी उजीने[9] बैठल रह गेलन। ओकर मोल्ला में फुटहा-फव्ही हले। से निकाल के उ खाय लगल। ओकरा पियास लग गेल। से ऊ न कहलक कि—कोई घर पर नऽ हथन। अपने से जरा पानी ढार के पी लूँ। घिड़सिढी पर घैला हल। पानी ढारे गेल। उ सोंचलक—ऐलूँ हैं पानी ढारे। घर में देखऽ ही तुलक के कि का हे! देखे तो तीन हँड़िया खीर। साढ़ू न तीनों हँड़िया के खीर तीन थरिया में उझल लेलन। लोटा में पानी ढार के लेलन। दू थरिया के खीर न साढ़ू खा गेलन। तेसर थरिया के खाय लगलन तो साढ़ू-सढ़आइन दुनों पहुँचलन। नउआ पूछे हे नउनियाँ से कि दरोजवा में का साढ़ू जी बैठल हथुन? नउवा आउ नउनियाँ दुनों दरोजा में आयल। ओकर बाद अगनमा में देखलक। नउवा कहे हे नउनियाँ से कि तोर मारलिअउ हे मे बड़ा अफसोस लग रहल हे। मौगी कहलक—मारलऽ हे से जरिको हम कानलियो हे तो न? साढ़ू जी घर में से बोलऽ हथन—से ऐं साढ़ू जी, ई तो कहऽ, हम कहिनो अइलियो हे?

नउआ चोठी तर से डंटा निकाल के नउनिआँ के खूब हँगावे लगल कि आज इज्जत-फ्वीस्ता[10] सब चल गेल।

---

१. गया जिला के अन्तर्गत। २. नित्य। ३ विदाई। ४ के यहाँ। ५. चावल। ६. जलावन। ७ 'न' का प्रयोग निरर्थक है। कथन पर जोर देने केलिये इसका व्यवहार होता है। ८. नाखून। ९. यहीं पर। १० इज्जत प्रतिष्ठा।

बड़हिया[1]

डपोरसंख

कोय अदमी एगो देओता[2] के तपस्या करके, एगो अइसन संख पैंइलकइ कि ओंकरा से जो माँगऽ हलइ, उ मिलऽ हलइ। केकरो एकर पता चल गेलइ। उ ओकर लेवे के फेराक में चौबीसो घंटा लगल रहऽ हलइ। मौका पाके एक दिन उ संखा चोरा लेलकइ। संखावाला के जब मालूम होलइ, त उ फेर संख देओता त्रिजुन[3] पहुँचलइ, अउ उनखा से अप्पन दुःखवा कहलकइ। देओता कहलखिन कि हम फेर तोरा एगो दोसर संख देबउ। बकि इ डपोरसख हउ। मागम्हीं सौ, त कहतउ ले दू सौ। बकि देतउ कुच्छो नइँ।

त उ अदमीआँ कहलकइ कि हम अइसन संख के लेके की करम? एकरा पर संख देओता कहलखिन—कि तोंं एकरा अपना संखा चोर त्रिजुन ले जाके जत्ते मन हो तउ ओत्ते माँगिहें, इ ओकर दोगना देवे के कहतउ। त उ अदमीआँ तोर ई सखा ले लेतउ, अउ ओकर जगहवा पर तोर पहिलका संखवा रख देतउ। तों उ संखा ले के तुरते अपना घरा चल अइहे। आउ आगे एँकरा नीमन से रखिहें। उ चोरवा के आगू ओयरहीं[4] करलकइ। आउ चोरवो एकर नजरिया बचा के डपोरसंखा ले लेलकइ, अउ ओकर जगहवा पहिलका संखवा धर देंलकइ। सखा वाला तो अइसने चाहवे करऽ हल, उ अपन संखा ले के अपन घर चल गेलइ।

दोसर दिन जखनी चोरवा डपोर संखा से कहलकइ कि दे दू सौ, त उ कहलकइ कि ले चार सौ। कहे के तो उ कह देलकइ बकि ओंकरा पास हलइ कि से देते हन। फिर चोरवा कहलकइ कि दे दू सौ, त डपोरसंखा कहलकइ—''अहं डपोर शंखोस्मि, बदामि च ददामि न''। एकर माने कि हम डपोर संख ही। कहऽ ही बहुत, बकि दऽ ही कुच्छो नइँ। अही से कहऽ हइ कि जे सब बढ-बढ के बात करऽ हइ, उ कुच्छो करऽ हइ नेइँ। ऐंसने के लोगवा डपोरसख कहऽ हखिन।

जमुइ[5]

टूअर-टापर

'माय-चाची ढेर देखलूँ हँ, मुदा एकरा जैसन नैं। धिग् एकर जीवन काठ पत्थल के चाची। जाने, कौन भगवान एकरा कैसे गढल के हल? कौन नछत्तर में इ जन्मी जनमल हल।'

---

१ ग्राम—बड़हिया, सबडिवीजन—जमुई, जिला—मुंगेर। २ देवता। ३ पाम। ४ वैसे ही।
५. मुंगेर जिला के अन्तर्गत।

ॲंगनमे में मचिया पर बैठ के, केस खुल्ले, माथा उघारे, भौंदा उघियाल, कसिया चक्का (*काशीचक*) वाली उत्तर मुँह दूधा पिलावऽ हलै। आउ लछमिनियाँ खड़े-खड़े जाने रखने से बोल रहले हल। हम ढेउडिया में ठमक गेलियै, जरी सुनियै तो की बोलऽ है।

नेरिया लुक्-लुक्, आधा खड़ा पर दिन। हक गोइठा ले के आग लावे ले, जैसे कसिया चकावाली घर ढुकलियो कि लछमिनियाँ—(जे ऊ पछियारी टोलवा में गोड़ टुट्टा हो नै, जेकरा सब मुखिया जी, मुखिया जी कहऽ हैं—ओकरे सभिली बहिनी हइ—) दक्खिन मुँह कह रहले हल। कसियाचका वाली कहलकै—'की हले हे ?'

लछमिनियाँ बोल लै—हल्ले नानो ? इ छौंडी 'सिंघनमाँ वाली' हो नै, ओहे इ तीन गो छौंकनि के साथे बैठ के बाबू केसोसिंघ के दुआरी पर अन्दर मी[१] रहले हल। एने से ऊ गोरसा मे तमन-नम हन हनेते पहुंन के, जुआन गो छोकड़िया के पुंडे-मुक्के कँचकमों देल कै। आ कहलकै—ऐं तों हीं एगो अजनास के सीये फारै वाली जनम ले ले हैं ? ले हमर बुतरू। कानते-कानते अधमरू हो गेल। एकरा बुट्टी-क्सीदा सुमलै हऽ। जायँ नै, हुआँ बनारसी मिलनौं। लेइयो तो नै जा हौ। मुँह चमका के, ओकरा धकियेले ले ल चल गेले। छोकड़िया कुछ जो बोलै ! एकदम काठ ! कहलकै—काहे ले मारऽहऽ, चलऽ हियो। सब छोकड़ियन ठकुआ के रह गेले। आउ टुक-टुक ओकर मुँह देखे लग लै। देखो तो, नै इ अहर कैलक, नै पहर। अभी तुरन्त जरल मरल सब कै खिला-पिला के, बरतन-बासन धो माँज के रख के, तब इ दू कौर खैलक। अउर खाके बैठबे कैलके हे, अउर अभी दसो टोप सरिया के नै देल होत, तैसे इ निछनाही मैयो पहुँच के एकरा मारे लग लै। हम्मर मन तो पित-पिता के रह गेलो। सच कहऽ हियो ह, भगमान जानथुन चाची, हम्मर जो ओयसन चाची रहले तो हम बदली नै छोड़तियै हल।

कसियचका वाली कहलकै—ऐं हे, तो छौंड़िया के ससुराल में सास ससुर अउर मरद कैसन है ले नै जाये। इ गन्जन काहे लै करावऽ है। अप्पन घर में जे साग-सत्तू, धुध-रूख जुरतै हल, से खाके दिवस गमैते हल। भला इ किसिम गन्जन बिहत। लछमिनियाँ कहलकै—लेइयो गेलै चाची। तोहरा न मालूम हो ? कसियाचकावाली बोललै—नै हम जानवो नै करियै। कहिया ले गलै ? लछमिनियाँ—रसुने। बहिनै मारल के तहिनै सफा के अपने ससुर नेयार ले के आ गेलथिन। सास पानी पावै वाली हथिन। घर में कोई संभारैवाली नै है। तो देखलथिन कि पुतोहिये के ले आवूँ।

कसया०—ऐं हे, तो अब बुढ़िया के बालबच्चा की होत ? हत्त, कोई झुट्ठे बात बना देलको।

लछ०—नै चाची, ओकरा अप्पन सास नै है। इ सतेली है। अप्पन के तो एक एक्‍रे पहुनमाँ होवे कैलथिन कि बेचारी मरिये गेलइ। पहुँनमा के फूफू पोसलथिन हैं।

कसिया०—ऐं, ऐसन ? तब तो बेचारी के नै नेहरा सुख नै ससुरा सुख।

लछमि०—नै चाची, सतेलो रहला से की होनै। सुनऽ हियै, बड़ी सुघड़, बड़ी सपून जनी है। साज भर भी, जैसन चाहो, अपनो से बढ़ के मेजलके हल।

---

१ सिलाइ (कर रही थी)।

कसिया०—भगवान करथिन ऐसनैं होवै। अप्पन माय तो दुधो नैं पिता सकलै। बेचारी के ऐसन साँप काटलकै कि मरलै विहान भेलै। पहुनो ओयसनैं मिल गेलै। आ भगवान, इश्वर-टापर पर तोंहीं खेयाल करि हो महाराज !

लछमि०—हों चाची, भगवान के खेयाल अच्छे है। दइवो कहलकै कि सोनमन्तिया मगा में हेल के सास मगलक हे। बडी मानऽ हथिन। ओतना अप्पन सास की मानतैं। ऊ अखनैं माय से भी बढ़ कै मान रहले हऽ।

हमरा पहुँचतै लछमिनियाँ चुप हो गेलौ। हम भी आग ले के ठहरे नैं लगलियौ।

मैथिली मिश्रित मगही

दक्षिण मुंगेर[1] और बाढ़[2]

के नमूने

बैरी से धोखा[3]

एँक दिन हुड़ाड सब मेँड़ी सब सऽ कहाय भेजलकै कि, आवेँ, हम्मेँ आरो तोँ आपुस मेँ मेल करि लौं, किथि लाय आपुस में लड़ौं, आरो एँक दोसरा के लहू के पिआसल रहौं। पाजी कुत्ता सब समुच्चे लड़ाय केँ जड़ छिकै। एँहिना सदइ भूँकि भूँकि कऽ हमरा भड़कावै छै आरो हमरा तोरा सऽ लड़ावैछऽ। इनका हमरा पास भेजि दऽ, फनू की झगडा छिकै। हमरा तोरा मेँ सदइ पियार आरो मिलाप रहितऽ, तऽ तोहर बाल ठेढा नै होतौन्ह। गँमार मेँड़ी ई नटखट हुडाड केँ बात मानि लेलकै, आरो कुत्ता कऽ हुडाड केँ पास भेजि देलकै। पहिले तऽ हुड़ाड कुत्ता कऽखा गेलै, फनू मेँड़ी के पाछे गोड़ हाथ तोड़ कऽ पड़लै, थोँड़िये दिन मेँ सब मेँड़ी कऽ खा गेलै। सच्चे छिकै, कि बैरी सदइ धोखा दे छै। ऊ बड़ी गँमार छिकै, जे बैरी कऽ सचा समझे।

सीख[3]

एँक चिड़ँया कोय किसान केँ बगीचा में जाय कऽ कचा पकल फल सब केँ सब काटि जाय करै छेलै। किसान सदइ ओकर खोज मेँ रहै छेलै। एँक दिन अँगूर केँ टट्टी पर जाल लगाय कऽ ओँकरा पकड़ कऽ मारऽ चाहऽलै। चिड़ँया किसान से कहलकै कि, जे तोँ हमरा छोड़ि दे, ठोऽ हम्मेँ ई भलाई केँ बदला मेँ तोरा कैक त बात बताय देबौ, कि जेँकरा मेँ तोरा बड़ फैदा

---

१ मुंगेर जिला। २ पटना जिला।

३ Seven grammars of the dialects and subdialects of the Bihari languages, Part VI—South Maithil Magadhi dialect of south Munger and the Barh subdivision of Patna

हो तौ। किसान कहलकै कि तों पहले बताय दे, तऽ हम्में तोरा छोड़ि देबौ। चिड़ैया ओकरा तीन बात कहलकै। ऍक तऽ ई कि, बैरी जे अपना बसऽ में आबऽ, तऽ छोड़ऽ के नै चाही। दोसर, जे बात मन में नै समाबऽ ओकरा मैं मानऽ के चाही। तेसर, गेल चीज कें खातिर सोचऽ कै नै चाही। आरो चौठा ऍक बात आरो छऽ, कि जब तों हमरा छोड़ि देबऽ, तब कहबौ। किसान ई बात सुनि कऽ जैसन कहलऽ छेलै, तैसने करकै, आरो ऊ चिड़ैया कऽ छोड़ि दें लकै। तऽ चिड़ैया भीत पर बैठि कऽ कहलकै कि, हमरा पेट में मुर्गी कें अण्डा सऽ ओ बड़के ठो ऍक मोती छेलऽ। जे तों हमरा नै छोंड़तिअ आरो मारि डालतिअ, तऽ ऊ मोती तोरा हाथ लगतिऔ। किसान पछताबऽ लगलै, ऊ कहलकै, गमार, तों हम्मर तीनों बात ऍखनियें भूलि गेले। कहिनऽ कि हम्में तोर बैरी छेंलिऔ, जें खनी पकड़ि पैल छेंलें, तऽ छोंड़लऽ कहिने। आरो मुर्गी कें अंडा कें बराबर तऽ हम्में अपनें नै छी। कहिया मन में आय सकै छै, कि मुर्गी कें अंडा सऽ बढ़ि कऽ मोती हमरा पेट में होय। मगर तों ई बात पर भरोसा करले, आरो अब जे हम्में तोरा हाथ सें निकलि गेलियौ, तऽ पछताय कऽ की होतौ। ऍकरा सऽ ई फल निकलल छै, कि पहले सऽ सब काम कऽ सोचि बिचारि कऽ करऽ के चाही। आरो जे कोय काम बिगड़ि जाय, तऽ फनू पछताबऽ के नै चाही।

पलामू[1]

झूट्ठा डर

हे भाई हम का कहियो। झूठ डर कें मारे अइसन डरइत हली कि जेकर हाल हम न कह सकियो। का भेल कि कल्ह जब हम सब पहार कें किनारे-किनारे बजार से अवइत हली तब पहाड़ कें उपरे बाघ बहुत जोर से गरजइत हल। हमनी सब ढेर आदमी हली, कुछ डर न लगल। लेकिन आज ओही रास्ता से हम अपन मामा कें गाँव में ठीक दुपहर कें बेर अकेले गेली हल, जब पहार के जरी तर नदी आरा पहुँचली हेअ, तब एकदम बड़ा खड़बड़ाहट बन में नदी तरफ सुन ली हेअ जेंह से में जाज हमर सुध में न रहल। हम बुझली कि बाघ आऍल और हमरा के धऍलक। हमर हाथ में तरवार हल लेकिन अवसर न मिलल कि मेआन से बाहर निकाली। करेजा थरथराएँ लगल, डर कें मारे हम कठुआ गेली। बाघ के बिना देखले बघचेंढी लग गेल। लेकिन थोरे देर के बाद जब हम ओनें दें खली, तो का दें खली कि एक बूढ़ा सौंताल नदी कें पानी जे पहार कें उपर से गिरइत हल भथरी मारे के बन्दइत हलै। उहाँ से जे पथर

1. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, ग्रियर्सन—जिल्द ५, खंड २, पृष्ठ १२७.

नीचे बिगइत हलै, ऐई बीसो हाथ नीचे खड़बड़ाइते अवइत हलइ। जब ई टे खली, तब जीव में साहस भेल। हम अपने से ई बात खेयाल करके अपन साहस पर हसइत ही।

लतेहार[1]

धोखा के बदला

एक ठो ऊँट हलक, एक ठो सियार हलक। दुनो इयार लगैलन। उँटवा कहइत है कि ए इयार नद्दी किनारे बड़ी खरगूजा[2] फरल हे। ते चलबऽ खाये? दुनो खरगूजा खाये गेलन। अब उँटवा कहइत हे कि ए इयार तूँ पहरा दऽ, हम खाइत हियो। तो उँटवा के पेट भरबो न कैलक हल कि सियरवा कहइत है कि ए इयार, हमरा भुकभुकी[3] लगल हे, से हम भुकबो। सियरवा हलक से भुक्के लगलक। खरगूजा के अगोरिया मारे ला दौड़लक। दौड़ते-दौड़ते उँटवा पकड़ा गेलक। उँटवा बड़ी मार खैलक।

ओकरा बाद फिर आगे चललक। रस्ता मे एगो नद्दी मिललइ। नदिया में बाढ़ आगल हलक, आ नदी के उ पार बड़ी मकई फरल हलक। सियरवा कहइत हे कि ए इयार चलबऽ खाय? ऊँटवा कहलक—चलब। सियरवा कहलक—तूँ तऽ, बड़ा हऽ, हम छोटा ही, से डूब जायब। उँटवा कहलकई—हमर पिठवा पर बैठ जा। सियरवा उँटवा के पीठ पर चढ़के चलल। ठीक बीचे-बीच नद्दी जब पहुँचलक, तो उँटवा कहइत हे कि ए इयार, हमरा तो लोटलोटी[4] लगल हो, से हम लोटबो। ऊँट बैठ गेलई। सियार राम डूब गेलन आ ऊँट राम निकल गेलन। खिस्सा गेलन वन में, सोंचऽ अपन मन में।

लतेहार[1]

राजा भोलन

एक राजा हलक। सेकरा बाल-बच्चा नई होवऽ हलक। रूखतर[5] एगो जोगिया धुई लगा देलक हल। राजा हुआँ गेलक आ कहलक—काहे ला रजवाड़ा के रस्ता टेकले[6] ही। जहाँ जाय ला है, तहाँ चल जाईं। जोगी कहलन—नई बच्चा, हमसे जो मागना है, माँगो। राजा लड़का मागलक। जोगी कहलन कि हम तोरा लड़का देवउ। बकी १२ बरस के लड़का होलउ, त तूँ मर जैबे।

जब ओकर लड़का १२ बरिस के भेलई, तो बप्पाई मर गेलइ। तब उ चललक बपइ के काम किरिया करके सँड़क घुरे[7]। रस्ता मे एगो पनेरी[8] हलक से कहलक कि बाबू अपने के बपइ रहथ, त एक खिल्ली पान खा लेबऽ हलन। रजवा के लड़कवा पान नईं खैलक त पनेरिन छींटे

---

१ जिला पलामू। २ खरबूजा। ३ भूकने की इच्छा। ४ लोटने की इच्छा। ५. वृक्ष के नीचे। ६ रोके हुए। ७ रास्तो देने। ८ पान वाला।

देलक पान । उ ठट्ठा करे चाहइत रहे, बकि करे ना पारलक । फिनु ओकर माय भीरी[1] ऐलक पनेरिन आ कहलक—राउर बेटा पान नईं खैलन, बकि छींट देलन । पनेरिन घर घुर के ऐलक । मइया, पुछलइ बेटवा से—एँ बाबू, तू पनमाँ खैलऽ से खैलऽ, गरीब दुखिया के काहे छींट देलऽ । बेटवा—कहलक—

हाँ गे अम्मा, सुन गे बचन हमार ।
अपन बिरवा अपने छिटैलक, हमरा काहे बदलाम ।

तब फिर लड़का गेलक । हलुआइन बोललक—ए बाबू, राउर बाबू आवऽ हलन त एको गो लडडू खा हलन जरूर । अपने नईं खाई । लड़का लड्डू नईं खैलक त उ लडुइया छींट देलक । ओकरो नीयत खराब रहे । हलुआइन फिर ऐलक ओकर माय भिरी—देखऽ रानी, खा हथ से खा हथ आ सब छींट देवऽ हथ । हम गरीब दुखिया ही । माय पुछलक तो लड़का कहलक—

हाँ गे अम्मा, सुन गे बचन हमार ।
अप्पन लडुआ अपने छिटैलक, हमरा काहे बदलाम ।

फिर लड़कवा कहलक—अब हमर बाप मर गेल, हमरा बसती में नईं रहे दीहन सब । फिनु माय से कहलक—माय गे, एक लोटा पानी दे पिये ला । माय लोटा लेकर के चललक बालटी में से ढारे । लड़का कहलक—माय गे, हम जब पियउ त कुइँयाँ के पानी । माय गेलक पानी ला । लड़का बोलइत हे—सब के बाबू जी हमर कुइयाँ खन देले होइहन, त अपने से अपने चौंटा[2] लग जाये । आ माय हमर पानी भरते रह जाये । जब हम कुछ दूर चल जाईं, तब कुइयाँ भर जाए । आ माय पानी ले के घर आवे ।

माय आके कहलक—कने गेलऽ बेटा, पानी लान[3] देले हियौ । सगरे खोजइत है बेटा के, त कँहऊँ नईं । तब लोटा म पानी लेके चलल बाहर । गोरखिया चरावइत रहे गाय । माय पूछलक—

हाँ रे गोरखिया, तू भूलन जाइत देखलें ?
मोरा बारहे बरिस के भूलन बेटा, पियासल जाये ।
बनमाँ में रहइ कुंडल सोना, हथवा में रहइ बेड़ा ।
आउरो हइ सोबरन के सटिया, अजब पियासल जाये ।

फिर रास्ता में बकरी के गोरखिया, भैंस के गोरखिया मिलल, आ सबसे ओही बतवा पुछलक । हरिन चरइत रहे बिजुवन में । हरिन कहइत है कि गते-गते[4] जो, न तो लड़का जानतउ, तो नईं पकड़े पारबे ।

तब हुआँ से गते-गते माय गेल, तो हाथ लड़का के पकड़लक । लड़का कहलक—हे कदम के गाछ, फाट जा, आ हमर माय के जिम्मा कर लऽ । जे दिन खोजब, से दिन हमर माय के दे दीहऽ । तब हुँआँ से लड़का चललक ।

एक ठो बुढिया भीरी गेलक । बुढिया कहलक—आ बेटा तूँ हिआँ का करे ऐले । हिआँ कतने अदिन[5] के मुरी कन न हो गेलक । लड़का कहलक—ए मौसी, एक मुठा हमरा चिचड़ी

---

१ पास । २. पानी सटकना । ३ ला । ४. धीरे धीरे । ५ आदमी ।

गला दऽ। बुढिया गलावे लगल। लड़का बुढिया से कहलक—ए मौसी, लावऽ फुलवा गाँथ दिऔ। बुढिया कहलक—नईं बेटा, बगड़ जैतउ। रानी साहब के बात है, हम्मर मूड़ी तो कटबे करी, तोरो मुडी कटा जैतउ। लड़का न मानलक आ उम्दा—गाथलक। ओही फूल बुढ़िया ले गेलक।

रानी के बहुत धमकैला पर बुढ़िया उम्दा माला के हाल बता देलक। रानी लड़का के बोल-वैलक। लड़का गेल। रानी लड़का से एगो बुझौनियाँ बुझौलक आ कहलक कि याद नईं बुझबऽ तो कतल हो जैबऽ

बुझौनिया हलक—१ "सफेद मे कौन चीज हे"?

लड़का कहलक—"तीन चीज हे—एक दूध, दूसरे बकुला आ तीसरे रानी के दाँत, जेकरा देख के हम पागल ही।"

२ 'काला मे कौन ची हे?"

"एक कोयल, दोसर कोयला, तेसर रानी के बार[1] जे हमरा करेजा पर लोटइत हे।"

३—"हरा रंग में कौन ची हे?"

"एक रंग, दोसर सुग्गा, तेसर रानी के चोलीबन्द; जे हमरा लोभावइत हे।"

४. "लाल रंग में कौन ची हे?"

"एक रंग हे, दोसर खून हे, तेसर रानी के मुँह के पान हे, जे हमर करेजा मसकावइत हे।"

५. "लोटन मे कौन ची हे।

"एक लोटन नाग हे, दोसर लोटन कबुत्तर हे आ तेसरा लोटन में हम ही, जे लोटइत ही रौरे परेम मे।

लड़का जीत गेलइ। रानी हार गेलइ। दुनो के वियाह हो गेलइ। राजा, रानी आ धन दौलत ले के चलल जहाँ ह रन - हल। हुआँ कदम भीर अपन माय के माग लेलक। माये आ रानी के पालकी पर बैठैलक आ अपने गेल घोड़ा पर। जैसन ओकर दिन फिरल, ओयसन सबके फिरे।

धनबाद

मेल के महिमा

एगो सियार रहऽ हलइ। सियरवा के तीन गो बच्चा हलइ। तो दुन्नो जनी-मरद लड़ाइ कर ले। मरदा कहइ कि दुगो दे, आ तों एगो ले। तो कहे कि चल पंचाहित करवइ। जैसन पाँच लोग कहतइ, तहाँ पंचाहित करवइ। तो जैते-जैते एगो जंगल राहे चल गेल। तो हुंदे से एगो बाघ चलल आवऽ हइ। तो बघवा के कहऽ हइ जनिया, कि ए भैसुर एगो पंचाहित करि दे। हमरा तीन गो हे लड़का। दू गो मरदा माँगऽ हइ। बघवा कहलकइ कि अच्छा हम पंचाहित करि देवो। चल हमरा घर लई के[2]। लेई गेलइ ओकरा, घर। बघवा कहऽ हइ कि निकालें गीदर-गुला[3]।

---

१. बाल। २ लेकर। ३ बच्चों को (गुला—बहुवचन बोधक प्रत्यय)

सियरवा ढुक गेलइ आ सियरनियो ढुक गेलइ। ढुक के कहऽ हइ सियरनियों कि ए भैंसुर हमरा घरे झगड़ मिट गेलइ। तब की करतइ बघवा। उ चलि गेलइ। सियरवा के कहऽ हइ सियरानयां जे पाँचो अदमी क हमर जान बाँच गेलइ आर झगड़ा नई करबो। मेल मेल से रहि गेलियौ।

हजारीबाग—कुमारटोली

चोरवा के खिस्सा

एक गो पाँड़े हलक से पूजा करो हलथ। से पाँड़े जी पूजा खातिल[1] चार गो पेड़ा रखलन हल चढ़ावे ले। चार गो चोर जा हलन चोरी करे। से अधार में हलन। औ पाड़े हल इजोरवा में। पाड़े गेलन एने ओने। बस ओने सो राम लखुमन चाइर भाई अयलन। बस चारो पेड़वा खा गेलन। पाड़े जी पेड़वा खोजे लगलन। बस खोजते-खोजते चोरवन पर नजर पड़लन। चोरवन से पाँड़े पुछलन कि तोहीन कौन काम करोहा। तो उ सब कहला कि हमनी चोरी करोही। पाड़े कलहन कि चल हमहुँ सगे चलबो।

पाड़ साथे जाय लगलन। चलते चलते जाके एगो आदमी क इहाँ गेलन चोरी करे। चोरवन कहला कि हम सिंध फोरो ही, तू माटी टारा। मटिया टारते टारते जब पांड़े के हथवा दुखा गेलन तो झगी महतो क हियाँ गेलन कोड़ी[2] मागे। कहलथी कि अहो महतो हमरा क कोड़िया दे। बढ़वा क हियाँ चोरी करोही। से सिंधवा के माटिया टारबय। झगी महतो उनरा पकर लेलकन और कहलक कि अरे फलना घर चोरी करो हथा, से गोहार काट। गोहार काटे से पाड़े पकरा गेला औ उनका पकर के थाना ले गेलथ। थानेदरवा पुछलक कि तोरा काहे पकलैया[3]। पाड़े कहलन कि हम चोरी करे गेल हली आर सिंध के माटी टारे खातिल कोड़ी मागली बस पकड़ा गेली। थानेदरवा पाड़े जी के कुछ कथा-कौड़ी[4] दे के कहला कि आब जाऊँ आब चोरी मत करिहा।

बिहान होला पर चोरवन पाड़े जी के चललथ खोजले मारे खातिल। काहि के उ सब के चोरी भी नय करे देलन आर पकड़ा देलन। जब चोरवन भेंटलन तब थानेदरवा जे रुपिया-पैसा देलन हल से सब चोरवन के पाड़े दे देलन। तब पाड़े फिनो कहलन कि अब हम गोहार नय काटबो, से साथे ले ले चलऊ। एकर बाद सोमरा घर ढुकला सब चोरी करे। सबो चोर चोरी करो लगला। आब पाँड़े खोजे लगलन कि बाबसा का करब, थरिया का करब, लोटा का करब। एतने में उनका पाड़े जी के मिल गेलन घीव-खोजते-खोजते, आब धूप मिल गेलन। मनमा में कहलथी कि पुजवा कर लेब तब चोरी करब काहे कि घीवा मिल गेल धुपवो मिल गेल। सोमरा घर सब सुतल हयल अधरतिया। बकि पाँड़े जी का कयलन कि पुजवा करकय संखवा बजयवला। बस ओकरा घर के सब लोगन संखवा सुन के उठ गेलन। पाँड़े जी गेलन पकरा और फिनो गेलन थाना पर। थानदरवा बेचारा फिनो पाँड़ जी के रुपिया पैसा दे के बिदा कर देलक।'

---

१ के लिये। २ कुदाल। ३ पकड़ लाया। ४ पैसा।

चोरवन कहलन कि अब बिना पाँडे के मारले छोड़बन नय, काहे कि जहाँ जाही तहाँ पकरा दे हथा। पाँड़े जी के चोरवन ले गेलथी नला दने[1] उनखा मारे ले। चोरवन पाँड़े के कहलथी तू हमनी के बेर-बेर पकड़ावा हय। हमनी तोरा जान से मार देवो। पाँड़े तब कहली कि हमरा ठिना रुपिया ढेर से हो, से तोहीन ले ना, हमरा काहे जान से मारवा। चल अबरी साथे जयबो, पूजा नय करबो। चलल-चलल गेलन बुधना के घर। उहाँ चोर सब लगलन चोरी करे और पाँड़े जी लगलन खोजे। खोजते ढूँढते उनका कुछ नय मिलल। मिलो गेल दूध। तब कहलन कि दूधो मिलल, तनी अरवा चौर मिले। खोजला पर चौरवो मिल गेला बस आग और ढेलन और खीर बनवे लगलन। ओही घरवा में सुतल हलन एक गो बूढ़ी और बूढा। दुनहो मुँय फार के घोंघर पीटो[2] हलन। पाँड़े जी आत और घूर फिर के देखत। उ कहला कि इ सब डौरा लग के मरल जा हथ। से अच्छा रहा हमरा भोग लगावे दा। उ ततले[3] ततले खीर एक कलछुल दुनहों के फरला मुँह में दे देलन। उ सब हहुवा के उठलन औ लगलन पाँड़े के मारे-ढेढावे। जब मारे-फारे लगलन तब बोही झोरी से भगवान निकललन। निकल के बम पाँड़े जी के हथवा छोड़ा के जीते-जीव बैकुंठ ले गेलथो।

हजारीबाग-राजाडेरा

सतनारायन भगवान के पूजा

राघो एक गाँव के रहनिहार है। ओकरा तीन गो लड़की है। से एक दिन राघो अपन तीनों बेटियन से बोलले कि—देखा गे बेटिन सब, कल्ह पुरनमासी के दिन है, से तोहिन के खातिर हम पूजा गछलूँ हल, से तोहिन बड़ी भारी बेमार हलें। सतनारायन भगवान के सहाय से तोहनी तीनों अच्छा भेले हैं। तोहनी तीनों बहिन, कल्ह अन-जल कुछ मत करिहों। उपास रहे परतो, जब तक पुजवा नै हो तौ, तब तक पानी-पहवा, कुछ मत पिहीं आउर घरवा के सब काम-धाम अन्धरे से करिहों। तब बड़की बेटिया बप्पा से कहलकै कि बप्पा हो, घरवा में का का करबै। राघो तीनों के काम करैले बतैलकै। बड़की बेटिया के नाम हलैइ कुन्ती, दुसरकी के नाम हलैइ पुन्ती, तिसरकी के नाम हलैइ गुन्ती। राघो कुन्ती के कहलकै कि तू, अहरा जाके थारी बासन चिक्कन से धो-माँज के ले आँनिहीं। और पुन्ती सब घर-दुआर अँगना निप-बाढ़ के चिक्कन सुथर करिहों। और गुन्ती घर के कपड़ा-लता, बर-बिछौना, सब सोडा में, सिफा के अहरवा से फिच-काँच के ले आनिहों। राघो एतना बेटियन से कह के अपन औरतिया हिंयें गेल, फिर अपन जनियाँ से कहलकै कि हम सब काम करे ले तीनों छौड़ियन के कह देलिऔ। अब तूँ जा के घरे-घर कह दे कि हमरा हींय कल्ह सन्झिया के सतनरायन भगवान के पूजा हो तौ, से तोहिन वाले बचे चल ऐइहा, और उन्ही से नौवा और पड़ैवा के भी कहले ऐइहों। हम पूजा के सरेजाम ल वे ले बजरिया जा हिऔ।

तब कुन्ती थरिया बासन ले के अहरा गेल। अहरा पर ओर लड़की सबसे भेंट होलै, तब उ सब लड़कियन पूछो लगलै के आज तू अहरा पर बरतन माजे ले ऐलेहें, काहे। तब कुन्ती कहलकै

१. तरफ। २. खर्राटा भरते (थे)। ३ गर्म-गर्म। ४ रामगढ़ स्टेट के पास।

कि हमरा घर कल्ह साँझ के पूजा हो तौ, से हे गुने हमर बपा कहलक कि सब बरतन बासन अहरा पर से धो-माँज के ले ऑन। से हे गुन हम अहरवा पर ऐलिऔ। तोहनि भी, हमरा घर पूजा देखे ले ऐइहा। कुन्ती मान धो के, घर चल आल। फिन कुन्ती कपड़ा लत्ता सोआ में सिफा के अहरा से धो फीच के घर चल आल। कुन्ती घर दुआर अँगना निप पोत के फुरसत मे गेल। राधो के जनियाँ भी घरे-घर कह क और नौवा पाडे के कहके घर आल। राधो भी बजार से सब पूजा के सर-समान ले क घर आइन। बिहान होते साँझ क पूजा सुरु हो गेन। गाँव के सब औरत मरद जमा भेना और बड़ी खुशी स पूजा-पाठ सुनलका और देखलका। हँसी खुशी से परसादी लेलका और भगवान के गोड़ लगते अपन अपन घर गेला।

राँची

एक मुरुख सिपाही केर कहनी

एक टो मुरुख सिपाही रहे। उ एक थाना केर सिपाही रहे। उके काम करते करते बीस बरीस होइ जाय रहे अउर उकर उमेर पैंतालीस बरीस कर होइ जाय रहे। उ जउ भी बीस बरीस तक काम कइर रहे, उके एको-तलब नइ बढ़ल रहे। सुरु में उकर बहाली चालीस रुपैया में होइ रहे और बीस बरीस के बाद भी उके चालीसे रुपैया मिलत रहे। उ बराबर अपन से ऊपर केर अफसर के कहत रहे कि हमर तलब बढ़ाय देउ, लेकिन तलब बढ़ाबे कर अधिकार उकर हाथ में नइ रहे, एहे ले उ सिपाही के बराबर कइ देत रहे कि पुलिस साहेब जब आवी, तब तोर तलब बढ़ावे कर सवाल हम उकर ठीन उठावब।

एक महीना बाद पुलिस साहेब थाना देखे खातीर आलक। उ दिन जमादार, उ सिपाही के सिखाय पढ़ाय के तैयार करलक। उ सिपाही के बतालक, 'देख भाई, साहेब तोके तीन ठो सवाल पूछी। आगे पूछी, 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' तो तोंय बोलने कि "४५ बरीस?" फिन दूसर सवाल उ पूछी कि 'तुम कितने दिन से काम कर रहे हो?" तो तोंय बोलने कि "२० बरीस से।" फिन उ पूछी कि "तुम तलब बढ़वाना चाहते हो या भत्ता या दुनों?' तो तोंय बोलबे कि "दुनो।" इ नीयर कई मरतबे सिखाय पढ़ाय के जमादार साहेब, सिपाही के पुलिस साहेब ठीन लेगलक और साहेब से कहलक कि हजुर ए सिपाही केर एक बिनती हैं। इ बहुत दिन से काम करत हे लेकिन एको दफे इकर तलब नइ बढ़लक हे। साहेब सिपाही के देइख के पूछे लगलक, 'तुम कितने दिन से काम करते हो?" पहिले हे से उ सिपाही पहिला सवाल केर जवाब रट्ट के राखले रहे कि ४५ बरीस। से ले उ तुरत बोइल उठलक कि "४५ वर्ष"। जवाब सुइन के साहेब उके ऊपरे नीचे देखे लागलक। फिन साहेब दूसर सवाल पूछलक 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' सिपाही तुरत बोइल उठलक '२० बरीस से'। जवाब केर जवाब सुइन के साहेब बड़ा गोसालक आउर कहे— लागलक, "तुम भारी मूर्ख मालूम होते हो"। सिपाही समझक कि साहेब तीसर सवाल पूछत हे से ले उ तुरन्त बड़बड़ उठलक—कि 'दोनों'। सिपाही केर बात सुइन के साहेब समझक कि हम

इके मुरुख कहत ही और इ सिपाही हमकोहों मुरुख कहत हे। अब तो साहेब बिगैड़ के आइग होइ गेलक अउर सिपाही केर तलब का बढ़ाबी उके ५० रुपैया जइरबाना करलक और जमादार के भी ५० रुपैया जइरबाना ठोकलक। जब साहेब चइल गेलक तो जमादार सिपाही पर बिगड़े लागलक अउर कहे लागलक कि 'तुम महामूर्ख हो'। लेकिन सिपाही केर समझ में एखनोंहों तक नइ आय रहे कि उ साहेब केर सवाल केर जबाब ठीक से नइ दे रहे। पाछे जब एक दूसर सिपाही उके ठीक से समझालक तब उकर समझ में आलक कि उकर जबाब गलत रहे।

सिंहभूम [1]

अकारथ काम

एँगो सूम अपन सब धन-सम्पत् बेच कें सोना किनलइ, अवर ओंकरा ऊ गला कें ईंटा नियर बना के धरती में गाड़ कें रोज ओकर पहरा दे हलइ। ओकर कोई पड़ोसिया ई भेद अटकर से बूझें पइलइ, अवर ओकर घर सुन्ना पा कें गड़ल सोंनवा निकाल लेंलइ। केंतना रोज पीछे ऊ सूम ऊ ठाँव कोंड़लइ। अवर खाली देख कें रोएँ लगलइ। ओकर रोआई सुन-कें ओकर दोस्त मोहीम अइलथीन। अवर ओंकरा बुझा कें कहें लगलथीन, ए भाई, तू काहें खातिर सोचऽ हें। जब लग सोंनवा तोर पास हलउ, तब लग तू ओकर पहरादार छोड़ अवर कुछ तो नइ हले। एइ सें तू ऊ गड़हा-ठो में एँगो पथर रख ले अवर ओंकरे भुलाएँल सोंनवा बुझ लेहीं।

जे अदमी अपन धन के केंकरो दुख विपद में नइ लगावऽ हइ, अवर न अपन जीव में खा हइ, ओकर धन अकारथ हइ, अवर ऊ धन अइसने उड़ जा हइ।

---

१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया-ग्रियर्सन, जिल्द ५, खंड २, पृष्ठ १४३।

पूर्वी मगही+

कुड़माली ठार

मानभूमि जिला

फौजदारी कचहरी में अपराधी का बयान

हजुर, मॅय दरान बॅसी रॅ मिठाइ बेचें हॅलम्रा । चार टा बाबु आइ कें मिठाइ घेर रॅतॅक दर शुधाऑलाक[1] । मॅय कॅहलऑ, 'सब जिनिसेॅक टा ऍक दर नेखेॅख[2] । अहे बाबु गुलाय[3] शुनरॅ रॅहलाक, 'सभें दरिब मिलाय वे, ऍक सेर हामरा के दॅहाक ।' मॅय ऍक सेर गिठाइ देलॅइ आर आठ आना दाम खुजलऑ । तसन बाबु गुलाँइ केह्लाक जे, 'हामरा रर सॅगे पयसा नेखत । अहे लदि[4] ला[5] आदेॅक । उँहा जाइ कॅ दाम दॅबॅइ । मॅय भदरान मानुश देखि वें मॅय कन्हू[6] निहि कॅहलऑ । ढेर खेॅन हेगि पयसा निहि दॅलार देखि कें मॅय लदि तक गेर रहुँ, जाइ कें देखलऑ ला टा[7] से ठिन नेखेइ । ढेर धुर ले थानाँइ थानाँइ दॅखलऑ ला-टा ढेर धुर गेल आहेॅक । नेॅखने मॅय पॅछाँइ पॅछाँइ दौडे लागलऑ । घडि टॅक[8] बादे[9] मॅय ला-टा के आँटाऑ लाहन[10] । आँटाइ कें[11] लाहेॅक[12] माँझिटा-के बाबुगुलाक काथा शुधाओलाहन । ला माँझि[13] कन्ह निहि कॅहलाक । मॅय तखन पानी नाभि कें[14] ला टा रॅ टॅकलऑ[15] । नखन बाबु गुलाँय लाहेॅक भितर-ले बाहराय-कें मकेइ चर[16] कॅरि कॅ गुल कॅरलाक, आर दुइ-टा बाबु, इॅ फॉडि धार ले ऍक टा सिपाहि डाका कराइ कें आनलाक । मॅय सिपाहि के सब काथा कुलि कें कहि दॅलॅइ । सिपाहि मर काथा नॅहि शुनि कें गिरिपटान कॅरि रॅ[17] आन ले आहे । दा हाइ, धरमा अतार, मॅय निहि चरि केड्ले आहॅ । मय बडि गरिब लक[18] । मर केउ नेखत बाबा, सत बिचार करि दे, मर कन्ह दश[19] नेखे ।

पूर्वी मगही+

सद्री कोल

बामरा

लालच के फल

ऍक गाउँ मे बुढा-बुढी दुइ भन[20] रहलॅन । बहुँत आदमी पर देस जाइ के कामाइ खन[21] लानत हॅन[22] । से खने बुढिया के हिंसा[23] लागलाक । तोब-ले बुढीं कहलाक, 'ए

---

१ पूछा । २ नहीं है । ३ बाबू लोग । ४ नदी । ५ नाव । ६ कुछ । ७ नाव । ८ २० मिनट । ९ बाद । १० पहुँचा । ११ पहुँचके । १२ नाव के पास । १३ नाविक । १४ कूदके । १५ रोका । १६ चोर । १७ कैद करके । १८ मनुष्य । १९ दोष । २० आदमी । २१ कमा कर । २२ लाते हैं । २३ द्वेष ।

+ लिं० स०, प्रि०—जि० ५, खंड २, पृ० १५५ ।

+ लिं० स०, प्रि०—जि०५, ख० २, पृ० १६० ।

बुढा, सबे तो कमाइ रान लानत हे`न, हामरे-मन[१] जाब [२]।' कान्बे[३] सब दिन सरग केर`ऍक हाती[४] धान रात रहे, जे बुढा ओ`गारलाक[५]। हाती आलाक। हाती रात रहे। धान खाइ खन[७] जात-रहे सरगपुर[८]। तोब ले बुढा पूँछ मे धरलाक[९]। हाती बुढा के ले गे`लाक सरगपुर। उहाँ बुढा बहुँत कमाइ[१०] खालाक[११]। तोब ले ओ हाती केर पूँछ के धरलाक, आउ निचे आलाक, आउर बुढिया के कहलाक, 'बुढिया, देख ऍतरा कमाइ खन लाइन हन।' तोब-ले बुढिया देखलाक और ओ कर जिउ बहुँत आनन्द होलाक। बुढिया कहलाक, 'मो, हो`[१२] जाबों`।' तोब-ले दोनो झन गेलाइन, हातिर पूँछ धइर रान सरग पुर। ओ माने[१३] उँहाँ खोब कमाइलाइन[१४] खालाइन[१५]। तोब-ले बुढा बिचार करलाक। बुढिया के कहलाक। तोब फेर बुढा हाति केर पूँछ के धर केर गाउँ केर आदमी के लेगेक[१६] लागिन[१७] आलाक। तोब गाउँ केर आदमी के पूँछलाक, 'काहो, ईंहाँ भूके[१८] मरत हान[१९]। चला, सरगपुर मे बहुँत धान चाउल मिलत हे। उँहा केर ताम्बि[२०] बहुँत बड़ा हाइ।' तोब-ले सब गाउँ केर आदमी बिचार करलाइन, आउर बुढा के 'चला, भाइ, जाब,' कहलाइन[२१]। तोब गे[२२] आउर ओ हाति के ओ`गारलाइन,[२३] आउर ओ हाति केर पूँछ मे बुढा धरलाक। फेर बुढा केर पिठ मे आउर एक झन पोटारलाक[२४]। फेर आउर एक झन पोटारलाक। आइसन[२५] गाउँ-केर सब आदमी पो`टरा पोटरी[२६] हलाइन[२७]। तोब-ले हाति उपर-के चललाक। सरगपुर-केर आधा बाट हाइ-खन[२८], एक झन पाछे-केर[२९] आदमी पुछलाक, 'हई-हो, बुढा, एतरा[३०] धूर[३१] ले-जात-ही[३२], जे उँहा केतना बड़ टाम्बि आहे?' तोब-ले बुढा एक हात मे हाति-केर पूँछ के धइर रान एक हात मे टाम्बि के बतालाक, 'एतना बड़ टाम्बि आहे।' तब ले फेर एक आदमी पुछलाक, 'नाइ सुनली हो, केतना बड़ टाम्बि आहे-जे।' तब-ले बुढा दोनो हात-के छोड़-कर, 'एतना बड़ टाम्बि आहे,' बोललाक। तोब ले हाती सरगपुर चलइ गेलक, आदमी सब पइठ कर[३३] मर गेलाइन[३४]।

पूर्वी मगही+

<u>*हजारीबाग की तथाकथित बंगाली*</u>

हजारीबाग जिला

बाप के ममता

एक लोकेर[३५] दु बेटा छिला। तकर मे छोट बेटा आपन बाप से कहलई, 'ए बाप, चिज के` जे बखरा हाम पाऍब, से हामरा देई दे।' तारर मे से चिज भाग कर दे`ले`न। थोरना[३६] दिन मे छोट बेटा समस्त एक सग कर के` दूर देश चालि गेला, आर से जगन मे

---

१ हमलोग। २ जायेंगे। ३ जहाँ। ४ का। ५ हाथी। ६ निगरानी की। ७ खाकर। ८ स्वर्ग। ९ पकड़ा। १० कमा के। ११ खाया। १२ भी। १३ वे लोग। १४ कमाया। १५ खाया। १६ लाने। १७ के लिये। १८ भूखे। १९ मरते हो। २० सेर। २१ कहा। २२ तब। २३ देखा। २४ देह पकड कर लटक गया। २५ इस प्रकार। २६ एक दूसरे की देह पकड़ कर चेन की तरह (लटक गये)। २७ हो गये। २८ होकर। २९ पीछे के। ३० इतना। ३१ दूर। ३२ ले जा रहे हो (हमलोगो को)। ३३ गिर कर। ३४ मर गये। ३५ आदमी के। ३६ थोड़े।

+ लिं० स०, प्रि०-जि०५, खं०२, पृ० १६३

नाहक खरच कर-के सब चिज आपन खोये देलक से सब चिज खरच करने बाद से मुलुक-मे भारी आकाल भेल, ओ से दुख मे पड़े लागला। तब से जाय के से देशेर[1] एक लोकेर आश्रय लेलक। से लोक तकरा आपन खेते[2] सुअर चरने पठाइ देलेन। पारे[3] सुअर जे भुसहा खाइतलऽ थी सेइ देइ से पेट भरते खाएस[4] करलेक, किन्तु केंउ तकरा दिलेक ना। पारे होस[5] भेले, से बाज कालक[6], 'हामार बाप के कते माहिनावाला नकर खा हत ओ बाँचा ओ हत[7] आर हाम इहाँ भुखे मर हि। हाम उठ के आपन बाप इहाँ जाएर। तकरा कहबन, "बाप, हाम भगवान इहाँ पाप कारले हि, ओ तोहार हुजूर-मे[8]। हम ताहार बेटा जोग न हि[9], हामरा एगो नकर बराबर राख।" तब उठ के आपन बाप के ननीक गेल। किन्तु दूर से तकरा बाप देखें पाओंलक, आर माया कर कें दौड़ कें घेचा मे[10] धर कें, चुमा लेलक। बेटा तकरा कहलक, 'ए बाप, हाम भगवान इहाँ पाप करले हि, ओ तोहार हुजुर मे। हाम तो हार बेटा जोग न हि।' मगर बाप आपन नकर लोक के कहलाक, 'जलदी सब से बेश लुगा आन के एत को पिनहन[11], एँ स का हात मे आँगटी[12] ओ गोड मे जुता पिन्हाय-देंहन आर हामरिन[13] खाय ओ आनन्द रहि। कारन हामार ए बेटा मर गेल-रहे, बाँचल हे[14] हेरायल गेल-रहे, मिलल है।" पारे से-सब आनन्द करे लागल।

आर तकर बड़ा बेटा खेत मे होलक। से आय के-धर के नजिक, नाच ओ बाजना शुने पायलक। तखन से एक नकर के बोलाय के पुछलक, 'ए सब कि?' से तकरा कहलक, 'तोहर भाइ आयल हो आर तोहर बाप भोज तैंयार करले है, काहेना[15] से तकरा निरोग देही मे पाओलक।' किन्तु से खिसिआइला[16], भितर जाय खुजला ना[17]। तकर-बाद मे ओकर बाप बाहर आय कें परबोध[18] करे लागलथिन, मगर से जवाब कर के, आपन बाप के कहकइ, देख, एतना बच्छर[19] धर के हाम तोहार सेवा करले ही, तोहार कोना[20] बात कखनी लघन ना करली, तकर मे तोंएँ कखन[21] हामरा एगो छागरी के बाच्छा नेहि देलक जे हामार दोस्त लोक के स गे आनन्द करि। मगर तोहर ए बेटा जे पातुरिया के[22] सग तोहर सम्पत बरबाद करलेक, से जखन ऐलक, तखन तकर लाग के बड़ा भोज तैयार करलेक।' मगर से तकरा कहलक, "बेटा, तुँइ सब दिन हामार सग है, आर हामार जे कुछ है, से सब तोहर। मगर खुसी ओ आनन्द करना उचित, कारन तोहर इ भाइ मर गेल-रहे, बाँचल है, हेरायल गेल-रहे, मिलल है।"

---

१ देश का। २ खेत में। ३ बाद में। ४ इच्छा। ५. होश। ६ बोला। ७ बचता है। ८ निकट। ९ योग्य नहीं हूँ। १० गर्दन में। ११ पहिनाओ। १२ अगूठी। १३ हमलोग। १४ बचा है। १५. क्योंकि। १६ गुस्सा हो गया। १७ (भीतर) गया नहीं। १८ समझाने। १९ वर्ष। २० कोइ। २१ कभी। २२ वेश्या के।

पूर्वी मगही+

पंच परगनिया या तमरिया **राँची जिला**

बाप के ममता

कोनो एक आदमी केर दुइ टा छुआ[1] रोहे। तेकर माँहने[2] छोट छुआ टा आपन बाप के कोहलक, 'बाप, मएँ[3] धन केर जे हिसा पामूँ[4] से मो के देउ।' तेकर माँहने ओकर बाप से धन हिसा कइर देलक। बहुत दिन ना होत, बेइ छोट छुआ टा सउब धन जामा कोइर लेलक, आर धूर[5] गाँव के चइल गेलक। आर से धन के ताँहाँ कुकाम माँहने उड़ाय देलक। आर जखन से सउब खरच कइर चुक्लक, गाँवें[6] खूब आकाल होलक। आर से बहुत कस्ट पाएँ लागलक। तखन से सेइ गाँव केर रहइयत[7] आदमी केर पासे रहलक। आर से आदमी ते के आपन टाँइंडे[8] सुअइर चाराए के पैठाय देलक। तेकर बाद से आदमी सुअइर जे घाँस खात रहे, 'सेई घाँस खाय कहन[9] पेट भरामूँ,' इच्छा करलक। आर केउ ते के देटोँ ए[10] नाही। तेकर बाद जेबी बुझे पारलक,[11] से कहलक, 'मोर बाप केर कोतना तलप-लेवइया[12] चाकर जतना खाय केर दरकार तेकर लेक बेशी पाँए ला आर मोएँ इहाँ भुखे मोरीतो हों। मोएँ उइठ-कोहन इहाँ लेक मोर बाप-केर पास जामूँ, आर ते-के कहमूँ,[13] 'बाप, मएँ भोगवान-केर पासे आर राउर-केर पासे-ऊ पाप कइर-आहों[14] आर मयँ राउर छुआ[15] होको[16] कोई-कोहन[17] कहल[18] बेस ना लागे। मो-के राउर-केर तलप-पवइया चाकर रकम राखू।" तेकर से उइठ-कहन[19] आपन बाप-केर पास गेलक। किन्तु से फाराके[20] रहत[21] वेइ ते-कर बाप ते-के देखे-पाए-कहने[22] कुइद-जाय-कहन[23] टोटाय[24] धइर-कहन[25] चूम-खालक। आर छुआ ते-के कहलक—'बाप मएँ भगवान-केर पासे आर तोर पासे-ऊ पाप कइर आहों, आर मोएँ राउर-केर छुआ हेकों कोई कहन काहल बेस ना लागे।' किन्तु बाप आपन चाकर-गुला-के[26] कहलक जे, 'सउब लेक बेस लुगा[27] लाइन-कहन[28] ए-के पिन्धावा,[29] आर इकर हाथे अँगठी आर गोडे जूता पिन्धाय-देवा, आर खाय-कहन[30] हामरे खुसी होई, कारन मोर एहे छुआ-टा मोइर-जाय-रहे [31] से आउर बाँइच घुइलक[32], हेजाय[33] जाय-रहे[34] पावलक।' आर से सउब कोइ खुसी होय लागलक।

से खन तेकर बड़ बेटा ताँइंडे[35] रहे। से आय-कहन[36] घर-केर पास पहुँचलक, आर नाच आर बाजना सुने-के पालक[37]। की एक झन चाकर-के डाइक कहन[38] पुछलक, 'इ सउब का?' से ते-के कहलक, 'तोर भाई आय-आहे, आर तोर बाप बहुत आदमी-केर

---

१ बेटा। २ मध्य। ३ मैं। ४ पाऊँ। ५ दूर। ६ गाँव में। ७ रहनेवाले। ८ मैदान में। ९ खाकर। १० देता। ११ होश हो सका। १२ तलब लेनेवाले। १३ कहूँगा। १४ किया है। १५ बेटा। १६ हूँ। १७ काई कहने योग्य। १८ कहना। १९ उठ के। २० दूर। २१ था। २२. देख कर। २३ दौड़ कर। २४ गर्दन। २५ पकड़ के। २६ सेवकों के। २७ कपड़े। २८ लाकर। २९ पेन्हाओ। ३० खाकर। ३१ मर गया था। ३२ बच के लौट आया। ३३ खो। ३४ गया था। ३५ मैदान में। ३६ आकर। ३७ पाया। ३८ पुकार के।

+ लिं० स०, प्रि०—जि० ५, स० २, पृ० १६८

खाय-नेर चीज जामा-कइर-आहे[1] कारन ते-के बेसे[2] पालक। किन्तु से खिसालक[3], भीतर जाय-के नाहीं मानलक। से तेहें तेकर बाप बाहिरे आय-कहन ते-के बुझाय के लागलक। से जबाब दे-कहन आपन बाप-नें कहलक, 'देखिन, एतिक बछर-लेक मोएँ तोर सेवा कारोतो हों। तोर हुकुम कोयनो नाइ काइट-रोहों। तहाऊँ राउर छौगिर-नेर[4] छुआ-ऊ नाइ देलीं, जे मोर आपुस-के ले-रहन खुसी करी। किन्तु तोर एहे छुआ-टा आय-आहे, जे छुआ-टा कस बी-केर सगे तोर सउब धन साय गुचाय-आहे, तखन रउरे तेकर लागिन बहुत आदमी-नेर खाए-केर चीज जामा-कइर- आहि।' किन्तु से ते-के कहलक, 'बेटा, तई सउब दिने-इ मोर सगे आहिस, आर मार जे आहे से सउब तोर। किन्तु रीभे करें-के उचित, आर खुसी होई, कारन तोर एहे भाई मोइर-जाय-रहे, फेइर जॉइच-आहे, हेजाय जाय-रहे, पावलक।'

पूर्वी मगही+

कुडमाली-उप बोली

मयूरभज स्टेट

अपराधी के बयान

सओयाल[5] कुराडिआ[6] प्र[7]। पएड्डपाल[8] गाव एक जेनासिंह[9] एँख्यान[10] कादा[11] आहे[12]?

जवाब—उ एख्यान मरि गेला हे।

सवाल—कैसन[13] करि के मरला?

जवाब—कुराडिआ प्रगना आसकन्द गाव एक बुद्ध राम सिंह जेना सिह के मरावले[14] आहेक[15] अकर ठेंगाय[16] करि कें।

सवाल—केनेक[17] ठेंगाय[18] मारलेक, ओ कन ठिने[19] ठेंगाय मारी मारलेक?

जवाब—जेनासिंह एक[20] देहिना[21] धारी क[22] कान जड़िइँ[23] एक ठेंगा मारइते इ। अहे माइरे इ[24] अहे-ठिने[25] झडि-खसला[26]।

सवाल—अ-के[27] मारि-हेल-एक[28] खयने[29] टँय[30] आइखे[31] देखले आहस[32] कि निहिँ?

जवाब—हँ, देखले आहँ।

---

१ जमा किया है। २ अच्छा। ३ नाराज हो गया। ४ बकरी का। ५ सवाल। ६ कुराडिहा। ७ परगना। ८ पएड्डपाल। ९ जेनासिंह। १० अब। ११ कहाँ। १२ है। १३ कैसे। १४ मारा। १५ है। १६ लाठी से। १७ कितनी बार। १८ लाठी से। १९ किस स्थान पर। २० के। २१ दाहिना। २२ भाग का। २३ जड़ में। २४ केवल उस चोट से। २५ उस स्थान पर। २६ वह गिर गया। २७ उसके। २८ मार खाते। २९ उस समय। ३० तुम। ३१ आँखें। ३२ देखा है।

+ लि० स० भि०—जि० ५, ख—२, पृ० १७३

सवाल—ई घटना कवे हेलेक, श्रो कटि-ख्यने[१] ?

जवाब—राइत एक-घड़ी-क समये॑ अति-ख्यने आ-धार। आ ए घटना गेल-एक रवि-बार छाड़ि-के तेकर आगु-क रवि-बार राइत।

सवाल—जेनासिंह के बुद्धु-रामे किना लाय[२] मारलेक ?

जवाब—जेनासिंह-एक[३] बेटी-के मॅय गेल-एक बछरे[४] बिहा करे-लाय सिन्दुर देले-रहएइ। श्रो जेनासिंह-एक बेटा मगला सिंह मर[५] बहिन गुनि-क[६] मुडा[७] सिन्दुर दे-रहेक। किन्तु, जेनासिंह-एक बेटी-के मर सगे[८] बिहा निहि देइते, पर्नेचाइत हेलेक[९]। तेकर पेछाईं, जेना सिंह अकर बेटी विदेइ-के मिरापुर बाटे[१०] बिहा देल-एक-ख्यने मर गुगु-क[११] बेटा-भाइ बुद्धु-राम सिंह, जेनासिंह-के मारलेक।

सवाल—जेनासिंह-के जे मारि-हेलेक, उला[१२] कन-ठिने[१३]

जवाब—जेनासिंह मिरापुर-ले अवेइ हेला, ऐसन समये बुढा-बलग नदी पार-हेइ-के, बुद्धु-रामसिंह एक सरिशा-बाड़ी[१४] हेइ-न[१५] जे बाट रहलेक, अहे बाट हेइ-ने आव-एक[१६] ख्यने सरिशा बाड़ी पार-हेइ के, आर एक बुधिया सिंह-एक खेत-के पहुँचइते मारलेक।

सवाल—तईं अति-ख्यने किना[१७] करेइ-हेलिस[१८] ?

ज्वाब—मॅय अति-ख्यने कुहिईं डाएडाइ रहेँ[१९]।

सवाल—आर उठिने केउ रहला कि निहिँ ?

जवाब—अहे-ठिने ऐहे हाजिरा आसामि (१) नछमन सिंह (२) रुहिया सिंह (३) बानु सिंह (४) पाण्डु सिंह एहे सब रहला। किन्तु खुशालि माझी उठिने निहि रहला। हमर ठिकले, दुइ कुडि, दस हात, धूरी आसामि बुधिया सिंह-एक सरिश[२०] बाड़िईं[२१] रहला।

सवाल—तईं कि आर केउ जेनासिंह-के मारले आकि निहि।

जवाब—मयँ कि आर हाजिरा आसा मिरईं[२२] केहा इ[२३] निहिँ मारले-आहेक।

सवाल—एहे (का) चिह्ने-देल[२४] ठेंगा काकर[२५] ?

जवाब—एहे (का) चिन्हे-देल ठेंगा बुधु-राम सिंह-एक। एहे-ठेंगाइ मारले रहेक।

सवाल—एहे मरल मुण्डा[२६] श्रो मटा[२७] चादर श्रो माला काकर हेकेक ?

जवाब—एहे सब जेनासिंह-एक[२८] हेकेक[२९]।

---

१ किस समय। २ किसलिये। ३ के। ४ वर्ष। ५ मेरी। ६ गुनि के। ७ सिर। ८ मेरे साथ। ६ हुआ। १० मार्ग। ११ चाचा। १२ वह। १३ किस स्थान पर। १४ सरसों का खेत। १५ मध्य से। १६ आ करके। १७ क्या। १८ करता था। १६ खड़ा था। २० सरसों के। २१ बाग में। २२ अपराधी लोग। २३ कोई भी। २४ चिह्न दिया हुआ। २५ किसका। २६ सिर। २७ मोटा। २८ का। २६ हैं।

पूर्वी मगही+

खोण्टाइ-उपबोली

मालदा जिला के पश्चिम

धरमसंकट

एक बदरागी[१] गिरहस्त बड़ा मास[२] पियार करनियई[३] । एक दिन पाँठा के[४] मास किनि[५] आनि के आप्पन बहु के आइ मास राँधने कहि के बाहर गेलई । बहु ओकर बात मानि के, मास राधि के भान्सा घर मे कोइ बासन मे करि के धाँपि के रखकइ । लकिन दइवि से[६] एक कुत्ता भान्सा घर जा कर, ओइ बासन के मास खा गेलइ थोरा सा रहलई । बहु ओइ जानि के हाकाबा कि कुत्ता के तो हाँका देलकई । लकिन पुरुष आ कर कि कहतई, एइ डर-मे कापने लगलई । आर कोइ उपाय ना देख कर निठुर पुरुस के हात-से बाँचने-के वास्ते, ओकरा कुत्ता क जुठा मास हि खावे देलकई । पुरुस मास काहे थोरा होलई जब एक बात पुछकइ, तो बहु जवाब देलकइ, 'बाँकि मास लड़का-वाला खा गेलई ।' लड़का-बाला खा-गेलई सुनि के गिरहस्त आर भाला बुरा कुछ नहि कहलकई ।

लकिन ओइ घर-मे एक चालाक बेटी लड़का हालाइ । उ सुरू से सब बात जानतियाइ । मा-बाप के बोलि चालि सुनि के, उ मने मने इ सोचते लगलाइ, 'आब कि करियाइ ? कुत्ता मास खा-लेलकई । इ बात कहना मुमकिल, ना कहला-भि वे मोनासिब । बोलले से मा मार खातयाइ, न कहले से बाप जुठा खातयई ।'

---

१ कोधी । २ मांस । ३. पसन्द करता था । ४ बकरी के बच्चे का । ५ खरीद के । ६ भाग्य से ।

+ लि० स०, भि०—जि० ५, ख० २, पृ० १८४

द्वितीय अध्याय

मगही के लोकगान

द्वितीय अध्याय
मगही के लोक-गान
लोकगीत
१. सोहर
[१]

सन्दर्भ—दोहदवती की भाव-व्यंजना

कौने दिन बाबा मोरा बिआहलन, कौने दिन गौना कैलन हे।
ललना हे कौने दिन स्वामी चरन छुअली, कि देहिया मोरा भारी[1] भेलइ हे ॥१॥
अगहन मासे बाबा मोरा बिआहलन, माघ मासे बिदा कयलन हे।
ललना हे सावन मासे स्वामी चरन छुअली, देहिया मोरा भारी भेलइ हे ॥२॥
रहरी के दाल नहि निमन लगे, भतवा से हूल मारे[2] हे।
ललना हे अब ना बनायब रसोइयाँ, पिया ननदो बोलाइ देहु हे ॥३॥

टिप्पणी—अगहन का वह कैसा मंगलमय दिन था, जब गौरा प्रियतम के प्रणय-पाश में आबद्ध हुई थी! श्रावण की वह कौन सी शुभ घड़ी थी, जब प्रिय मिलन गर्भ के रूप में फलीभूत हो गया था! गर्भ के भार से गौरा अवनत हो गई है! तन मन में अद्भुत परिवर्तन का अनुभव कर रही है! अब न उसे भोजन भाता है, न घर का काम सुहाता है! ऐसे समय में उसका स्वामी, ननद को बुला दे, तो कितना सुखद हो!

सोहर[3]
[२]

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म होने पर वधू के प्रति सास के हृदय में आशंका

पारहि ऊपर कसैलिया एक बोयली।
हे गोरी के लाल, फुलवा फूले हे कचनार ॥१॥
फूल लोढे गेलन छोरी अलबेलिया।
हे गोरी के लाल, फुलवे गरभ रहि जाय ॥२॥

---

१. मुझे गर्भ स्थापित (हुआ)। २ मिचली आती है।
३. यह नृत्यगीत है। पुत्र-जन्म के अवसर पर इस गीत के साथ नृत्य होता है।

लव लगी ऐलन सासु जी बढ़ैतिन ।
हे गोरी के लाल, तीन मुरवा[1] देख के कुम्हाय[2] ॥३॥
के ही दिन ऐलऽ बेटा, के ही दिन रहलऽ।
हे गोरी के लाल, गोदी में देलिला नन्दलाल ॥४॥
एक दिन गयली मइया, दुइ दिन रहली ।
हे गोरी के लाल, तिसरे में होयलइ नन्दलाल ॥५॥

टिप्पणी—कचनार के फूल से लदे उपवन में अलबेली गोरी फूल लोढने चली गई ! उसे क्या पता था कि प्रियतम भ्रमर बन कर फूलों में छिपा है ! रसलोभी प्रियतम ने उसे गर्भ का भार दे दिया ! आज सास गौरा को विदा कराने आई है । पुत्र को कभी वधू के पास जाते नहीं देखा था । फिर भी वधू की गोद में फूल से कोमल नन्दलाल को देख कर वह कुम्हला जाती है । छिप कर अनुराग करने वाले अपने प्रिय पुत्र की सफाई सुन कर वह हर्षोल्लास से भर जाती है ।

२. जनेऊ

[३]

सन्दर्भ—बालक के यज्ञोपवीत-संस्कार के समय परिजनों की स्नेह-व्यंजना

चदन काठ के रे पिढिया, लो अइपने निपायल,
ताहि चढि बैठलन, दुलरौता बरूआ[3] ॥१॥
देबो बाबू नौ गुन[4] जनेऊ, बाबा बोलल,
दादी झहरायल[5]—देबो, बाबू नौ गुन जनेऊ ॥२॥
देबो बाबू नौ गुन जनेऊ—अम्मा झहरायल,
दुलरैता भइया परबोधे[6]—देबो भइया नौ गुन जनेऊ ॥३॥

इसी प्रकार सभी सम्बन्धियो के नाम जोड़ कर, इस गीत की पुनरावृत्ति की जाती है ।

टिप्पणी—ऐपन से नीपे हुए चदन की पिढिया पर बैठ कर प्यारा बालक जनेऊ करा रहा है । हर्ष पुलकित माता-पिता ही 'नौ गुन' जनेऊ देने का आश्वासन नहीं देते । सभी परिजन इस शुभ कर्म में सम्मिलित होकर बालक को आश्वासित करके आनन्द-वर्द्धन करते हैं ।

---

१. पुत्र, वधू और नवजात शिशु । २. शोक से कुम्हला जाती है ।

३ वह बालक, जिसका यज्ञोपवीत होने जा रहा हो । ४ जनेऊ में तीन प्रधान गुण (सूत्र) होते हैं, जो क्रमश माता-पिता एव गुरु के ऋणभार को प्रकट करने के लिये सन्नद्ध होते हैं । इनमें प्रत्येक गुण का निर्माण तीन सूत्रों से होता है । इसीलिए जनेऊ को 'नौ गुन' (नौ सूत्रों वाला) कहा जाता है । ५ आनन्द-पुलकित स्वर में बोली । ६ प्रेमपूर्वक आश्वासन देता है ।

[४]

सन्दर्भ—पुत्र के जनेऊ के सम्बन्ध में माता की जिज्ञासा

पुछथी कौसिल्या दसरथ से एक बतिया,
कइसे देलऽ श्री राम के जनेउआ ॥१॥
पहिले देलूँ मृगछाला, हाथ सोबरन सँटिया,[१]
अरे सोना के खड़उआँ, राजा राम के जनेउआ ॥२॥

राजा दशरथ की तीनों पत्नियो एव चारो पुत्रों के नाम लेकर, इस गीत को गाया जाता है।

टिप्पणी—मा ने पिता से पूछा कि मेरे लाल के जनेऊ का विधान तो ठीक हुआ ? पिता ने कहा—मैंने विधिवत् जनेऊ कराया है। पहले मृगछाला दी, फिर हाथ मे सोने की छड़ी। तब सोने का खडाऊँ पहनाया तथा अन्य विधान किये। तब कहा मेरे लाल के जनेऊ का उत्सव सम्पन्न हुआ।

३. विवाह

[५]

सन्दर्भ—दुल्हा द्वारा कुँआरी कन्या का पाणिग्रहण

केकर नदिया में झिलमिल पनिया,
केकर नदिया में चेल्हवा[२] मछरिया,
कौन दुल्हा फेंके महाजाल[३] हे ॥१॥
एक जाल नवले दुलरुआ, दुइ जाल नवले
तीसरा में बझ गेलऊ घोंघवा सेवार,
से बझ गेलऊ कनियाँ कुँआर ॥२॥
केकरा भरोसे जलवा जे नवले दुलरुआ,
ओही जधिया भरोसे[४] जलवा जे नवली
से बझ गेलई कनियाँ कुँआर ॥३॥

टिप्पणी—नदी के झिलमिल जल में तैरती हुई चेल्हवा मछली मलाह के महाजाल में पड़ जाती है। इसी प्रकार पितृगृह के स्वच्छंद वातावरण म बिलसती हुई कुँआरी कन्या दुल्हा के स्नेह-महाजाल में आ जाती है। पुरुष, नारी पर शाश्वत अधिकार अपने प्रेम और सामर्थ्य के बल पर करता रहा है।

---

१ छड़ी। २ मत्स्य विशेष। ३ प्रेमबन्धन। ४ सामर्थ्य के बल पर।

[६]

सन्दर्भ—कन्या-प्रदान कर दुल्हा को मनोवांछित हर्ष देना

कहवाँ ही उपजल नरियल गे माई,
कहवाँ ही जनमल अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन[1] सोभे
तिलका लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥१॥

कुरखेत जनमल नरियल गे माई
मइया कोखे जनमल अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन सोभे,
तिलक लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥२॥

कहवें उतारव नरियल गे माई,
माइ हे कहवें उतारव अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन सोभे,
तिलका लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥३॥

मड़वे उतारव नरियल गे माई,
माई हे अँचरे उतारव अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में०…लोटे ॥४॥
किय-किय खायत नरियल गे माई,
किय किय खायत अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥५॥

दाल भात खायत नरियल गे माई,
खडे दूध पीयत अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥६॥
किया दे समोधवई[2] नरियल गे माई,
क्यिा दे समोधवइ अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥७॥

दान दहेज देइ समोधवई नरियल गे माई,
माई हे धिया देइ समोधवई अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥८॥
हँसइत जाई नरियल गे माई,
विहँसइत जाई अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥१०॥

टिप्पणी—हाथ में बहेरी, छाती पर चन्दन, ललाट पर तिलक और सिर पर भू-लोटी मोतियों की लड़ियों वाला सिर मौर धारण किये, अनजान दुल्हा जब प्रथम बार ससुराल की देहरी पर आता है, तब भाव पुलकित सास उसे स्नेहाँचल में उतारती है। विवाह में मगल के प्रतीक नारियल को तो दान दहेज देकर सतुष्ट किया जाता है। पर प्रेम पिपासु वर को दान दहेज से तोष कहाँ ! उसे तो चाहिये प्राण-प्रिया ! सास अपनी कन्या देकर उसे इच्छित हर्ष प्रदान करती है। वधू लेकर, विहँसता हुआ वर अपने घर जाता है।

---

[1] चन्दन।

[2] सम्यक् बोधन करूँगी, मनोवांछित सन्तोष प्रदान करूँगी।

[७]

सन्दर्भ—कन्या की विदाई से माता-पिता में करुणा की लहर

गउनमा के दिनमा धरायल,
गउना नगिचायल[1] हे ॥१॥
सखिया सलेहर करथिन चतुरइया,
गौरा के मनमा हेरायल हे ॥२॥
बाबू के फटलइ करेजबा,
रे जैसे भादो कॉकड़ ॥३॥
मइया के ढरे नयना लोर,
रे जैसे भादो श्रोरी[2] चुए ॥४॥

टिप्पणी—गौने का दिन समीप चला आया है। चतुर सखियाँ विदा की तैयारी में लगा हैं। गौरा का तो मन ही खो गया है। सारा वातावरण शोक सागर में निमज्जित हो रहा है। बाबू की छाती फट चली है, वैसे ही जैसे भादो में काँकड़। माँ की आँखें बरस रही हैं झर झर-झर झर, जैसे बरसात में ओलती।

[८]

सन्दर्भ—वधू के हृदय में चिर सुहागरात की अभिलाषा

आज सुहाग के रात, चदा तुँहूँ उगिहऽ।
चदा तुँहूँ उगिहऽ, सुरुज मति उगिहऽ॥
करिहऽ बड़ी तुहूँ रात, मुरुग जनि बोलिहऽ।
आज सुहाग के रात, पिया मत् जइहऽ॥

टिप्पणी—आज सुहागिन की सुहागरात है! चदा चिरकाल तक सुधा बरसाता रहे! मुर्गे बोल कर प्रभात की सूचना न दे दें! सूर्य उग कर उसके प्राण प्रिय को जाने को विवश न कर दे! सुहागिन की चिर सुहागरात की यह कल्पना उसके प्रेम पिपासु हृदय की कितनी मधुर व्यंजना करती है!

[६]

सन्दर्भ—प्रिय की प्रतिष्ठा से प्रिया को उल्लास

जलवा में चमकई चिल्हवा मछलिया,
रैनिया चमकई तरवार ॥१॥
समवा में चमकइ साभी के पगड़िया,
हुलसऽ[3] हइ जियरा हमार ॥२॥

---

१ निकट आ गया है। २ ओलती। ३. उल्लसित (होता है)।

टिप्पणी—जल में तैरती हुई चिल्हवा मछली चमकती है। रात्रि की कालिमा में तलवार की रुपहली धार कौंधती है। इसी भाँति सभा में बैठे स्वामी की पगड़ी चमकती है। पति के सम्मान से प्रिया का हृदय गद् गद् हो रहा है। उसका उल्लास उसके हार्दिक प्रेम की व्यंजना करता है।

[१०]

सन्दर्भ—ननद भावज का हास परिहास

कौने रंग मुगवा, से कौने रंग मोतिया।
से कौने रंग ननदो तोरा भइया ॥ १ ॥
लाल रंग मुगवा, सबुज रंग मोतिया।
से सामर रंग भउजो मोरा भइया ॥ २ ॥
टूटि गेलइ मुगवा, छितराइ गेलइ मोतिया।
से रूसि गेलइ भउजो, मोरा भइया ॥ ३ ॥
चुनी लेबइ मुगवा, बटोर लेबइ मोतिया।
से मनाइ लेबइ ननदो तोरा भइया ॥ ४ ॥
से केन्ने सोभइ मुगवा, से केन्ने सोभइ मोतिया।
केन्ने सोभइ ननदो तोरा भइया ॥ ५ ॥
गल्ले सोभइ मुगवा, मंगिया रे सोभइ मोतिया।
सेजरिया सोभइ भउजो, मोरा भइया ॥ ६ ॥

टिप्पणी—मोती-मूंगा नारी के रूप-शृंगार के प्रसाधन हैं। पति के संयोग में मोती मूंगे की माला टूट कर बिखर जाती है, तो उल्टे पति को ही रोष होता है। पर रूठे पति को मनाना क्या कामिनी के लिये कोई कठिन बात है। हार की शोभा गले में है, मोती की शोभा मांग में। पति की शोभा सेज पर है, फिर वह रुठेगा तो कितनी देर।

[११]

सन्दर्भ—नायक नायिका का प्रकृति प्रांगण में स्वच्छंद विलास

नदी किनारे गूलर क गछिया,
छैला तोडें, गोरी खाय ॥१॥
छैला ने पूछे दिल क बतिया,
गोरी क जिउआ लजाय ॥२॥
जैसने चिकना पीपर क पतवा,
आयसने चिकना घीऊ ॥३॥
ओयसने चिकना गोरी के जोबना,
पिया के ललचई जीऊ ॥४॥

टिप्पणी—नदी के किनारे गूलर की गाछी है ! साजन तोड़ता है, गोरी खाती है ! उन्माद का वातावरण है ! नायक नेत्र-संकेत से गोरी के हृदय का हाल पूछता है ! गोरी के हृदय में कम्पन के साथ लज्जा होती है ! नायिका का यौवन भी तो अनोखा है ! उसमें वैसी ही चिकनाहट है, जैसी पीपर के पत्ते में और घी में ! फिर नायक लुब्ध क्यों न हो !

४ जँतसार

(१०)

सन्दर्भ—विरहिणी नायिका की प्रेम-परीक्षा

बाबा गेलन परदेसवा, सदा रे सुख दे के गेलन ।
दुअरे चननभा के गाछ हिंडोलवा लगा के गेलन ॥१॥
पिया गेलन परदेसवा सदा रे दुख देके गेलन ।
छतिआरे बजड़ा केवड़िया, जँजीरिया लगा के गेलन ॥२॥
अमवा महुवा घनी बाग, तेही रे बीचे राह लगल ।
तेही रे बीचे सुन्नर ठाड़ा, नैनमा दुनो लोर ढरे ॥३॥
बाट रे पूछे बटोहिया सुन्नर[1] काहे ला रोवे ।
क्यि तोरा नैहर दूर, क्यिा रे घरवा सासू लड़े ॥४॥
नाहीं मोरा नैहर दूर, नाहीं रे घरवा सासू लड़े,
तोहरे ऐसन पिया पातर, सेहो मोरा विदेस बसे ॥४॥
लेहु हे सुन्नर डाल भर[2] सोनमा, मोतियन माँग भरऽ,
छोड़ी देहूँ बिअहुआ के आस, हमहुआ सग साथ चलऽ ॥५॥
आगि लगउ डालभर सोनमा, मोतियन बजड़ा पड़ऊ ।
हमरो सामी लौटत बनिजिया[3], घरवा लूटी लउतऊ ॥६॥

टिप्पणी—परदेश बाबा गये थे, तो द्वार पर चन्दन के गाछ में सुखद हिंडोला लगा कर ! प्रियतम परदेश गया है, तो सदा के लिये दुःख वारिधि में डुबो कर ! वह छाती में वज्र किवाड़ लगा गया है और उस पर भी साँकल चढ़ा गया है ! आम और महुआ के घने बाग में विरहिणी सुन्दरी खड़ी है ! उसके सुकोमल कपोलों पर अश्रु की बूँदें ढुलक रही हैं ! द्रवित-बटोही ने पूछा—सुन्दरी, तुम्हारी अँखियाँ मोती क्यों बरसा रही हैं ! अश्रुसिक्त सुन्दरी ने कहा—तुम्हारे ही जैसा कृशांग मेरा कान्त है । उसने परदेश जाकर मुझे बिसरा दिया है । पथिक की आँखें चमक उठीं । उसने कहा—अपने बिअहुता (पति) की आशा छोड़ दो । लो डाला भर सोना ! मोतियों से शृंगार करो ! सतवन्ती गौरा ने कहा—तुम्हारे सोने में आग लग जाये । मोतियों पर वज्र गिरे । अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में अनन्त काल तक करूँगी । मेरा जी कहता है कि वह व्यापार से लौटेगा और सोने से हमारा और घर का शृंगार करेगा !

---

१. सुन्दर । २. डाला भर कर । ३. व्यापार ।

( )

[१३]

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका नायिका की चिर-प्रतीक्षा

कउने उमरिया सासु निमिया लगौलन।
कउनी उमरिया गेलन बिदेसवा हो राम ॥१॥

खेलते-कूदते बाबू निमिया लगौलक।
रेघिया भिंजइते[1] गेल बिदेसवा हो राम ॥२॥

फरि गेलइ निमिया, लहसि गेलइ डरिया।
तइयो न आयल, मोर बिदेशिया हो राम ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी की झर झर बरसती आँखें प्रियतम का पथ हेरते-हेरते थक गईं, पर वह नहीं आया! बचपन में ही उसने नीम का गाछ लगाया था! उसकी डाल-डाल लहस रही है। पत्ते-पत्ते फल से लद गये हैं! पर इस लम्बी अवधि के बाद भी नहीं आया वह।

[१४]

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका नायिका का प्रिय को संदेश भेजना

"कथिए फारि फारि कोरा कगदवा[2] पिया,
कथिए केरा मसिहान[3] हे ॥१॥
कथिए चीरि चीरि कलमा बनाई पिया,
कथिए लिखिअइ दुइ बात हे" ॥२॥
"आँचर फारि फारि कोरा कगदवा गोरी,
नयने कजरवा मसिहान हे ॥३॥
अँगुरी चीरि चीरि कलमा बनाइ गोरी,
लिखि नऽ देहु दुइ बात हे ॥४॥

टिप्पणी—प्रतीक्षा की घड़ियाँ अब नायिका के लिये असह्य हो रही हैं। प्रिय ने संदेशा तक नहीं भेजा! रह-रह कर उसका जी अदेसे के दोले में झूलने लगता है! वह स्वय सदेशा भेजना चाहती है। पर कैसे भेजे! क्या फाड़ कर कागज बनाये! कहाँ से स्याही लाये। क्या चीर कर कलम बनाये! कैसे दो टुक बात लिखे! सखी ने उपाय बताया। आँचल फाड़ कर कागज बना ले। नयनों में लगे काजल की स्याही घोल ले। अँगुली चीर कर कलम कर ले! फिर जी की सारी बातें लिख ले!

---

१. प्रथम बार मूँछ निकलते। २ कागज। ३ स्याही।

[१५]

सन्दर्भ—विरहिणी नायिका का सात्विक प्रेम

जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू बिदेसवा,
बलमुआ हो ! तोरा बिनु अँखियो न नींद ॥१॥
जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू बिदेसवा,
बलमुआ हो ! कइली न सोरहो सिंगार ॥२॥
कहियो सजौली न फुलवा सेजरिया,
बलमुआ हो ! सपना भयल मोरा नींद ॥३॥
लिखि लिखि पतिआ भेजौली रघुनमा,
बलमुआ हो ! बजर बनौलऽ तूँ करेज ॥४॥

टिप्पणी—प्रियतम परदेश गया, तो आँखों की नींद भी ले गया ! आज युग बीत गये, विरहिणी ने सोरहो शृंगार नहीं किया ! फूलों से सेज को नहीं सजाया ! आँखों की नींद स्वप्न हो गई ! अपनी विरह-दशा लिख-लिख कर भेजी उसने ! पर वह पत्थर दिल नहीं आया ! नहीं आया !

[१६]

सन्दर्भ—विरह विदग्धा नायिका की विषम-वेदना

जे हम जनती पिया,
जैबऽ तूँ बिदेसवा,
बाधती हम रेसम के डोर ॥१॥
रेसम बधनमा पिया,
टूटिए फाटिए जयतइ,
बाधती हम अँचरा के कोर ॥२॥

टिप्पणी—विरहिणी के हृदय में विचित्र आलोडन हो रहा है। उसके प्राणों में रह-रह कर कसक उठ रही है। आह ! वह जानती कि प्रिय परदेश चला जायेगा, तो रेशम की डोर में बाँध रखती। पर रेशम के कोमल तन्तु का बन्धन शिथिल होता है। वह टूट जा सकता है। वह तो उसे स्नेहाचल के कोर में बाँध रखती !

[१७]

सन्दर्भ—विरह कातर पत्नी को भौतिक सुख के साधनों से प्रसन्न करने का पति-द्वारा असफल प्रयास

टिकवा मेलई अपना, से सुखवा मेलई सपना,
पिया मेलई डुमरी के फूल[१] ॥१॥

---

१ गूलर का फूल, डुम्मरि (स० उदुम्बर)

होवे देहु, होवे देहु डुमरी के फूल,
जहरवा घोरि पिवई नैहरवा ॥२॥
काहे लागि अहे धानी जहरवा घोरि पीवऽ,
तलविया हम भेजबो रे नैहरवा ॥३॥
काहे लागि अहो साधु तलविया हुईं भेजबऽ,
सुरतिया कहाँ पयबो रे नैहरवा ॥४॥

टिप्पणी—विरहिणी का प्रियतम गूलर का फूल हो गया है। आभूषण देकर विरहाग्नि शान्त करना चाहता है। वह यह नहीं जानता कि उसके बिना सुख स्वप्न हो गया है। जाने दो, हो प्रियतम गूलर का फूल! यह मायके जाकर माहुर (जहर) पी लेगी। प्राणों की तड़पन सदा के लिये शान्त कर लेगी। स्वामी सन्देशा भेजता है, '*प्रिय क्यों प्राण दोगी? नैहर में रुपये भेज दूँगा।*' भला, कितना भोला प्रियतम है! नैहर में रुपये तो भेज देगा, पर वहाँ सूरत कहाँ पायेगी! प्राणों में शीतलता प्रिय-दर्शन से आयेगी, धन से नहीं!

[१८]

सन्दर्भ—बाल-विधवा कन्या का करुण विलाप

बेटी—बारह बरिस गे मैया, बितलइ उमरिया रामा हो।
हमहुँ जे मैना रहली कुआँरिए रे कि ॥१॥
सबके बिअहले गे मैया लरिका अबोधवा,
हमहुँ जे मैना रहली कुआँरिए रे कि ॥२॥
माँ—तोहरा बिअहली गे मैना बाले जब पनमा[1] रामा हो,
तोहरो बिअहुआ मरियो गेलउ रे कि ॥३॥
बेटी—हमरा बिअहुआ गे मइया मरिए जब गेलन,
उनकर चैतियो[2] देहि बतलाय रे कि ॥४॥
माँ—सामन भदउआ के मैना, अलउ बूढ़ी धधिया रामा हो,
ओहि में उनकर चैतिया दहिए गेलउ रे कि ॥५॥
रोइए-रोइए गे मैना मैया से बोलइ रामा हो,
अगे चैतिया बहि गेलइ धरतिया न कि ॥६॥
ओहि ठइयाँ[3] जैबइ मइया, बनबइ सतवन्तिया,
ईए हमर चितवा दीहें रचइए रे कि ॥७॥

टिप्पणी—मैना ने माँ से पूछा—तुमने सबकी शादी कर दी, पर मेरी कब करोगी? मा ने सकरुण कहा—बेटी, जब तू अबोध थी तभी तेरी शादी कर दी थी। तेरा स्वामी मर गया। मैना की आँखों में सावन की बरसात उमड़ आई। उसने कहा—मां, मेरे स्वामी तो

---

१ बचपन में। २. चिता। ३ स्थान।

मर ही गये। पर, उनकी चिता कहाँ सजी थी, सो तो बता दे। मा ने कहा—सावन भादो में भयंकर बाढ़ आई थी, उसमें उनकी चिता बह गई। मैंना को लगा, उसकी छाती फट जायेगी। हाय! उसने स्वामी के दर्शन तक न किये, सामीप्य तो दूर रहा। अत में जब सती का कर्म निभाना चाहा, तब वहाँ भी निराशा मिली। पर उसने हिम्मत न छोड़ी। रोते-रोते वह बोली—प्यारी मा, चिता तो बह ही गई, पर वह धरती तो नहीं बह गई, जिस पर चिता सजी थी! वहीं मेरी चिता भी सजा देना।

[१६]

सन्दर्भ—पति-पत्नी का प्रेम कलह वर्णन

बहे के तो पुरवा रामा, बहि गेलइ पछिया रामा।
बहि गेलइ ना उजे, अजबी वेयरिया रामा।
ताहि तले ना, प्रभु सेजिया डसौले रामा ॥१॥
निनिया के भरमल प्राभु, बहियाँ ओलखौलन।
टूटि गेलइ ना उजे, अजबी हरउआ रामा।
टूटि गेलइ ना उजे, गजमोती के हरउआ रामा ॥२॥
लट धुनि रोवे रामा, सँमरो तिरियवा रामा।
से टूटि गेलइ ना उजे अजबी हरउआ रामा ॥३॥
चुप होहु, चुप होहु, समरो तिरियवा रामा।
हम लाइ देबो ना उजे, अजबी हरउआ रामा ॥४॥
कहाँ गेलऽ, किय मेलऽ, साँमरो तिरियवा रामा।
से लेइ लेहु ना, सँवरो अजबी हरउआ रामा ॥५॥
छोटी ननदिया रामा, बड़ि ए बिजुलिया रामा।
लोकी लेलन ना उजे, गज मोती के हरउआ रामा ॥६॥

टिप्पणी—पुरबइया पवन बहना चाहिये था, पर बह गया पछिया पवन। इससे वातावरण में विचित्र उन्माद भर गया। पछिया हवा में पलग डाल कर स्वामी सो गये, तो उनकी बाँहें नींद के भ्रम में मेरे हार से उलझ गई। मेरे गले का गजमोती का हार टूट गया। प्रियतम ने फ़िर नया हार लाने का आश्वासन दिया। पर छोटी ननद बिजली सी चचल है। आज गज-मोती का अजीब हार आया भी, तो उसने बीच में ही लोक लिया!

[२०]

सन्दर्भ—नायिका द्वारा ससुराल का कष्ट-वर्णन

सासु देलन गेहुमाँ, ननद देलन चँगेरिया[1]।
गोतनी बैरिनियाँ भेजे जतसरिया।
रगड़ि-रगड़ि गेहुमाँ पिसलूँ रे दइया ॥१॥

---

[1] टोकरी।

सासु माँगे रोटिया, ननद माँगे टिकरी,
एक सेर मडुआ रगड़ि-रगड़ि पिसलूँ,
ओहु बौना देलक उदवसवा रे दइया ॥२॥
सासु माँगे रोटिया, ननद माँगे टिकरी।
ओहु बौना माँगे परसनमा रे दइया ॥३॥
बौना के जलमल टेंगरा[1] से पोठिया,[2] +
ओहु दे हइ बडी उदवसवा रे दइया ॥४॥

टिप्पणी—निष्ठुर सास ने गेहूँ पीसने को दिया, निर्मम ननद ने चंगेरी दी। बैरिन गोतनी का क्या कहना! उसने तो लाकर जाँता ही पकड़ा दिया। महीन कर-कर के गेहूँ पीसने में आधे प्राण तो चले गये। वह काम अभी समाप्त भी नहीं हुआ। सास ने रोटी माँग दी, और ननद ने टिकरी माँग दी। उसपर से फिर एक सेर मडुआ रगड़-रगड़ कर पीसा, तो बौना पति उदवास दे रहा है। उसे परसन पर परसन चाहिए। बौना के बाल-बच्चे कैसे होंगे—टेंगरा और पोठिया जैसे तुच्छ। वे भी अनेक रूपों में कष्ट देते हैं। अब पूरे प्राण जाने पर हैं।

५. ऋतुगीत

होली

[२१]

सन्दर्भ—फागुन का शृङ्गारः रंग-गुलाल

फागुन महिनमाँ, आयल सुदिनमाँ
देवरवा भिंगावइ चुनरिया ॥१॥
पटना सहरवा से आवइ रंगरेजवा,
रगवा डुबावइ जोबनमा ॥२॥
टिकवा गढ़ावे सैंया, झुमरा गढावे,
देवरवा गढ़ावइ बेसरिया[3] ॥३॥
बजुवा गढावे सैंया, झबिया गढ़ावे,
देवरवा गढावइ मिकरिया ॥४॥

---

१. एक प्रकार की मछली, जिसके शरीर में तीन काँटे होते हैं; यहाँ शिशु के अर्थ में प्रयुक्त है। २ छोटे आकार की मछली विशेष; यहाँ शिशु से अभिप्राय है। ३. नथ।

+ हास्यात्मक व्यंग्य की योजना की गई है। खीझ भरे शब्दों में भुक्तभोगिनी, अपनी व्यथा खोल कर रख देती है, पर उसके क्षोभ-प्रकाशन का ढंग कुछ ऐसा है कि बरबस हँसी आ ही जाती है।

कंगना गढ़ावे पिया, पहुँची गढ़ावे
देवरवा गढ़ावइ करधनियाँ ॥५॥
रंग नहीं डार देवरा, अबीर नहीं डार,
भींजी गेलइ सजली[1] जगनियाँ[2] ॥६॥

टिप्पणी—फागुन का मधुर मास! देवर हृदय का उल्लास छिपाये तो कैसे? भावज की चुनरी रंग में बोरकर अपने मन की रंगीनी दिखा रहा है। पटने का अलबेला रंगरेज जो ठहरा! नायिका पर अनुराग की वर्षा हो रही है। एक ओर तो उसका प्राणप्रिय टीका-झुमका आदि गढ़ा रहा है, दूसरी ओर देवर बेसर और सिकरी देकर मन चुरा रहा है। चुलबुल नायिका के मन की रस भरी उलझन को कौन समझे?

होली

[२२]

सन्दर्भ—कन्हैया और गोपी का गुलाल विलास

कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल ॥टेक॥
मत डारऽ रंग कान्हा, अँखिया पिराये[3]।
हो गेल सारी चुनरिया लाल ॥१॥
कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल॥
जाय कहम हमहु जसोदा अगनमा।
देखऽ अप्पन कन्हैया के चाल ॥२॥
कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल॥

टिप्पणी—रसलोभी कन्हैया ने गोरी की आँखों में गुलाल डाल दिया। भला उसे क्या मालूम उसकी आँखों के डोरे लाल हो रहे हैं! प्रेम की पीर सता रही है उसे! उसने तो उसकी चुनरी भी लाल कर दी। यह अवश्य यशोदा के आगन में जाएगी और कन्हैया की रंग-रेली का भेद खोल देगी।

होली

[२३]

सन्दर्भ—रस-लोलुप पंछी

नकबेसर[4] कागा ले भागा।
सइयाँ अभागा ना जागा॥
नकबेसर कागा ले भागा।
उड़ि-उड़ि कागा कदम पर बैठल॥
जोबना के रस ले भागा।

१. रसपूर्ण। २. यौवन। ३. पीड़ा होती। ४. नथ।

टिप्पणी—कौआ उसका नकबेसर ले उड़ा, पर उसके प्रियतम की नींद न टूटी ! अनुराग से दिया गया नकबेसर गया तो गया, वह पक्षी तो उसके यौवन का रस भी ले उड़ा। और प्रियतम को अभी भी खबर न हुई !

होली

[२४]

सन्दर्भ—परकीया की मान रक्षा।

चले के तो रहिया, चलली डुरहिया,
से गड़ि गेलइ ना,
केओड़बा[1] के कँटवा, से गड़ि गेलइ ना ॥१॥
के मोरा कँटवा निकालतइ ननदिया,
से केहि मोरा ना,
से हरतइ दरदिया, से केहि मोरा ना ॥२॥
देवरा मोरा काँटा निकालतइ ननदिया,
से पिया मोरा ना,
से हरतइ दरदिया, से पिया मोरा ना ॥३॥

टिप्पणी—बेराह चलने से गोरी काँटों में जा उलझी। उसके पैर में केतकी का काँटा आ चुभा। अब उस काँटे को निकाले तो कौन ? फिर पीड़ा कौन हरे ? उसका प्यारा देवर उसे कष्ट में देख ही कैसे सकता है ? वह काँटा तो निकालकर ही छोड़ेगा। फिर प्रियतम अपने कोमल परस से उसकी पीर हर लेगा।

चैती

[२५]

सन्दर्भ—कुसुम लोढ़नेवाली मुग्धा की आकांक्षा।

कुसुमी लोढन हम जायब हो रामा !
राजा केर बगिया !
मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया
एकहि रंग रंगायब हो रामा !

टिप्पणी—गौरा राजा के बाग में कुसुम लोढने जाएगी। एक अभिलाषा उसके मन में चिरकाल से पलती आ रही है—वह और उसका प्रियतम एक रूप एक प्राण हो जाएँ ! अत वह इतने फूल लोढकर लाएगी कि उसकी साड़ी और प्रियतम की पगड़ी एक कुसुमी रंग में रंग जाएगी।

१. केतकी।

चैती

[२६]

सन्दर्भ—कैकेयी को खीझ भरा उपालम्भ ।

राम जी के बनमा पेठौलऽ हो रामा !
कठिन तोर जियरा ॥१॥
बसिहैं न अवधा नगरिया हो रामा !
जैहैं जहाँ राम के बसेरवा ॥२॥
मरियो न गेलइ केकइया निरदइया
जारे मुख कठिन वचनमा ॥३॥
राम लखन बिनु सुन्ना हो रामा !
नागिन लोट हइ भवनमा ॥४॥

टिप्पणी—पापाणी कैकेयी का हृदय विदीर्ण क्यों नहीं हो गया ? कैसे उसने उनके प्राणप्रिय राम को वन भेज दिया । भला राम के बिना इस नगरी में कौन रहेगा ! धन्य है वह वन जहाँ राम का बसेरा है ! अयोध्या का विशाल रामभवन आज सूना है । वहाँ नागिन लोट रही है । उस भयप्रद स्थान में कोई रह ही कैसे सकता है ! उनकी कामना तो राम के चरणों की सुखद छाया में रहने की ही है ।

बरसाती

[२७]

सन्दर्भ—कोयरिन का पति-प्रेम ।

मिरबा पर ले ले कोयरिन साग बैंगनमा,
चलि गेलइ राजा के दुआर हे ॥१॥
घर से बाहर भेलऽ राजा के बेटवा,
परि गेल कोयरिन पर डीठ[1] हे ॥२॥
आहि आहि कोयरिन हमरो महलिया,
हम लेबउ सगवा तोहार हे ॥३॥
एक हाथे अहो राजा सगवा जोखौलक,
दूसर हाथे अचरवा बिलमाय[2] हे ॥४॥
छोड़ छोड़ अहो राजा हमरा अँचरवा,
सैयां जोहत होइहैं बाट हे ॥५॥
हम नहीं छोड़बउ तोहरो अँचरवा,
तोहरो सुरतिया अनमोल हे ॥६॥

---

१ नजर । २ पकड़कर ठहरा लिया ।

तोहरो सुरति देखि नींद न आवे,
सूरति देखि मुरझाय हे ॥७॥
छोड़ू छोड़ू अहो राजा हमरो अँचरवा,
गोदी के बालक जोहिहें बाट हे ॥८॥
तोहरो से आला[1] राजा हमरो बिअहुआ,
जोहत होइहें कोयरिन के बाट हे ॥९॥
किय तोरा अगे कोयरिन संचवा के ढारल,
किय तोरा सुरति बहुत हे ॥१०॥
तोहरो सुरनिया मोरा हिरदा समायल,
अपनों सुरति मोहिं देहु हे ॥११॥
नहीं मोरा अहो राजा सँचवा के ढारल
नहीं मोरा सूरति बहुत हे ॥१२॥
माय जे बाबा फेर कोखिया जलमली,
सूरति देलक भगवान हे ॥१३॥

टिप्पणी—कोयरिन राजद्वार पर साग-भाजी बेचने पहुँची। विलासी राजा ने एक हाथ से सब्जी ली और दूसरे से आंचल थाम लिया। कामुक राजा ने कहा—प्यारी कोयरिन ऐसा बेसुध करने वाला रूप तुमने कहाँ पाया? क्या विधाता ने तुम्हें साँचे में ढाल कर बनाया है? तेरे अनमोल रूप ने मेरी नींद हर ली है। तू मेरी हो जा! सती कोयरिन बोली—ओ रस-लोलुप राजा! छोड़ मेरा आँचल! मेरा स्वामी तुमसे आला है। मेरा नन्हा-सा लाल बड़ा प्यारा है। वे मेरी व्याकुल प्रतीक्षा करते होंगे। भला मैं साँचे में ढली क्या हूँ! माँ-बाप ने मुझे जन्म दिया। ब्रह्मा ने मेरा रूप सिरजा है। तेरी प्रशंसा मुझे भरमा नहीं सकती।

छौमासा

[२८]

सन्दर्भ—कन्या की विदा वेला में परिजनों की भाव-व्यंजना

हवा वहे पुरबइया हे सजनी,
चिपरिनी[2] सुलगे आग हे ॥१॥
तिमिया के तेलवा रामा मथवा बँधौली,
केसिया गेलइ लटिआइ[3] हे ॥२॥
मथवा मइसे[4] गेली बाबा के पोखरवा,
सामी लिऔले लेले जाए हे ॥३॥
केइ रोवे गंगा दही[5] उमड़े,
केकर भींजतइ पटोर[6] हे ॥४॥

१. श्रेष्ठ। २. गोयठे पर। ३. केश में जटा पड़ना गया। ४. मल-मल कर साफ करने के लिए। गंगा में बाढ़। ६. वस्त्र।

केकर रोवे चरन धोती भीने,
ककरो नयनमा न लोर हे ॥५॥
बाबा के रोवे से गगा दही उमडे,
अम्मा के भींजलइ पटार हे ॥६॥
भइया के रोवे से चरन धोती भीजे,
भउजी नयनमों न लोर हे ॥७॥
कइ कहइ रामा नित उठ अइहऽ,
केइ कहे छौमास हे ॥८॥
केइ जे कह रामा काज परोजन,
कइ कहे दूर जाओ हे ॥६॥
अम्मा जे कहइ बेगी नित उठ अइहऽ,
बाबा कह छौमास हे ॥१०॥
भइया जे घहइ बहिनी काज पराजन,
भउजी कहइ दूर जाओ हे ॥११॥
किय तोरा भउजी नुनमा चोरौली,
किय तेल देलूँ ढरकाय हे ॥१२॥
किय तोरा भउजी रसोइया पइसी[1] झँस्लूँ,
काहे कहलऽ दूर जाओ हे ॥१३॥
नहीं मोरा ननदो नुनमा चोरौलऽ,
नहीं तेल देलऽ ढुलकाय हे ॥१४॥
नाहीं मोरा ननदो रसोइया पइसी झँस्लऽ,
बतिया करेजवा में साले हे ॥१५॥

टिप्पणी—पुरवैया हवा बह रही थी। चिपरी पर आग सुलग रही थी। उसके लम्बे केश तीसी के तेल से लटिया गए थे। वह बाबा के पोखरे पर नहाने गयी। इसी बीच विदा कराने के लिए उसका स्वामी आ पहुँचा। भला विदा की वला क्या ऐसी सहज है! कन्या की विदाई में माता पिता का हृदय विदीर्ण होने लगता है। उसके पिता के रोने से गगा में बाढ आ गई है। आँसुओ से माँ के वस्त्र भीज गए हैं। भाई के अश्रु से चरण की धोती भींग गई है। समस्त परिजना में एक भाभी ही है, जिसकी आँखों में एक बूँद आँसू नहीं। उलटे वह उसे जाने का सकेत दे रही है। गौरा ने पूछा—भौजी! तुम्हारी गृहस्थी में मैंने क्या बाधा डाली है? तुम मुझे घर से भेजने को आतुर क्यों हो? क्यों तुम्हारा हृदय आर्द्र नहीं होता? भाभी बोली—तुम मेरे घर की बाधा नहीं हो पर तुम्हारे वचन इतने कठोर कर्कश रहे हैं, जो मेरे हृदय म शूल की नाईं चुभ जाते रहे हैं। तुम्हारे जाने से मेरे हृदय को शाति मिलेगी।

---

[1] प्रवेश कर।

बारहमासा

[२६]

सन्दर्भ—वर्षान्त मे पिय-मिलन

प्रथम मास असाढ हे सखी साजी चलल जलधार हे।
एही पीरीति कारन सेत बंधौलन, सिय उदेस सिरी राम हे ॥१॥
सावन हे सखी, सबद सोहामन रिमझिम बरसई बूँद हे।
सब के बलमुआ रामा घर-घर होइहे, हमरो बलमु परदेस हे ॥२॥
भादो हे सखी रैन भयावन, दूजे अँधरिया के रात हे।
ठनका जे ठनकइ रामा, बिजुली जे चमकइ, से ही देखी जियरा डेराय हे ॥३॥
आसिन हे सखी, आस लगौली, आस न पूरल हमार हे।
आस जे पुरइ रामा, कुबरी सौतिनिया के, जे कंत रखलक लोभाय हे ॥४॥
कातिक हे सखी, पुन महीना, सब सखी करइ गंगा असनान हे।
सब कोई पहिनइ रामा, पाट पितम्बर, हम धनी गुदरी पुरान हे ॥५॥
अगहन हे सखी हरित सोहामन, चारो दिसा उपजइ धान हे।
चकवा चकइया रामा केलि करत हैं, सेइ देखि जियरा लोभाय हे ॥६॥
पूस हे सखी, ओस पडिए गेल, भींजी गेलइ लामी लामी केस हे।
जाड़ा जे छेदइ, मुई निअर राम, थर थर काँपइ करेज हे ॥७॥
माघ हे सखी बसन्ती महीना, बीती गेलइ जाड़ा के दिन हे।
पियवा मोरा सखी अबहु न आवे, कइसे कटइ दिन रात हे ॥८॥
फागुन हे सखी रंग सोहामन, सब सखी खेलइ गुलाल हे।
ओहि जे देखि देखि जियरा जे तरसइ, का पर डारूँ रंग हे ॥९॥
चैत हे सखी सब बन फुलइ, फुलइ गुलाब के फूल हे।
सखी सब फूलइ रामा पियवा के संग, हमरो फुलवा मलीन हे ॥१०॥
बैसाख हे सखी, पिया नहीं आयल, बिरहे कुहुकइ मोरा जीउ हे।
दिनमा जे बीतइ रामा रोवत-रोवत, कुहुकत बीतइ सारा रात हे ॥११॥
जेठ हे सखी आयल बलमुआ, पुरल मनमा के आस हे।
सारा दिना रामा मंगल गैली, रैनि गमौली[1] पिया संग हे ॥१२॥

टिप्पणी—आषाढ का प्रथम दिवस ! काले काले बादलों की उमड़ घुमड़ ! विरहिणी विकल है। हाय ! ऐसे समय में उसका प्रियतम दूर है। ऐसे काल में सीता के निकट पहुँचने के लिए राम ने समुद्र में भी बाँध बाँधा था। उसका परदेशी बड़ा निष्ठुर है। दिवस पर दिवस, मास पर मास कटते जाते हैं पर वह नहीं आता। सावन की रिमझिम आकर चली गई। भादो की भयावनी रात डरपा गई। आश्विन का शरत्सौन्दर्य मन को लुभाता चला गया। कातिक का पुनीत मास भी हृदय को पावन करता चला गया पर वह नहीं

[1] बिताया।

आया। अगहन में सारी सृष्टि हरियाली से भर गई। अनाजों से खेत सुनहले हो उठे। पूस के हिमकण दाँत कटकटा गए। माघ की बसन्ती हवा शरीर कण्टकित कर गई। फागुन के रंग-गुलाल ने तन मन को रससिक्त कर दिया। चैत में फूलों की भीनी मुसकान ने मन मे उदासी भर दी पर वह निर्मोही नहीं आया। अन्य रूपसियों का सौभाग्य-भृङ्गार, उल्लास विलास, हास-परिहास देखकर वह तरसती रह गई पर उसका परदेशी नहीं आया। अब तो वैशाख की चिलचिलाती धूप तनमन को झुलसा रही है। बिरहिणी के प्राणों की कुहुक प्रिय नहीं सुनता।

पर धन्य है जेठ मास। गौरी के मन की साध पूरी हुई। आज उसका परदेशी घर आया है। वह मगल गीत गा रही है। दिन और रात का उल्लास उसे आनन्द सागर में निमज्जित कर रहा है।

६. देव-गीत

[३०]

सन्दर्भ—गौरी का स्वप्न-दर्शन !

पुरइन पत्ता[१] पर सुतलन गौर देई, सपना देखलन अजगूत[२] हे।
ढोला परोसिन तोहिं मोरा गोतिन, सपना के करू न बिचार हे॥
मोरग देस बजन एक बाजे, किनकर होवऽ हई बिआह हे।
तोहूँ गौरा देई इन्द्रानी से गियानी[३], तोहूँ पतिवता के धिया[४] हे॥
मोरग देस बजन एक बाजे, सिवजी के होवहई बिआह हे।
किय महादेव चोरनी से चटनी, किय हम मुसली[५] भडार हे॥
- किय हम सेवा में चुकली, काहे कैल दुसरो बिआह हे।
नाही गौर देई चोरनी से चटनी, नाही तू ही मुसलऽ भडार हे॥
नाहीं गौर देई सेवा में चुकलऽ, भावी[६] कैलक दुसरो बिआह हे।
पेन्ह गौर देई इयरी से पियरी, करिलेहु सोरहो सिंगार हे॥
पेन्ह गौर देई इयरी से पियरी, सौतिन परिछि[७] घर लाहू हे।
बेटवा रहैतई पतोहिया परिछिति, सौतिन परिछलो न जाय हे॥
देवरा रहैतइ, गोतिनिया परिछिति, सौतिन परिछलो न जाय हे।
खोलियो मे देहु गौरा फटलि गुदरिया, पेन्हिलेहु लहरा पटोर[८] हे॥
करियो मे लेहु गौरा सोलहो सिंगार, सौतिन परिछि घर लाहू हे।
लेइयो मे लेलन गौरा टूटल कोलसुपवा, औ लेलन नाकट दीया हे॥
डड़िया[९] उघारि देखलन गौर देई, जैसे लगे बहिनि संझा हमार हे।

१. कमल का पत्ता। २ अजीब। ३ बुद्धिमती। ४ बेटी। ५ हटाया। ६ होनी। ७ परिछन (एक वैवाहिक विधि) कर। ८ परिधान। ९. डोली।

चौदह भुवन तुहूँ खोजल है बहिनि, वरो नहि मिललो तोहार हे ॥
देस पैस बहिनि वर नहि मिललो, होवे ऐलऽ सौतिन हमार हे।
चारो परगना बहिनि वर खोज ऐलूँ, कहूँ न मिले सिव-राम हे ॥
ऐसन असीस जब दीह गे बहिनि, जनम जनम अहिवात[1] हे।
तोहरा बलकवा खेलैवो गे बहिनी, होई जैवो दासी तोहार हे ॥
देस पइसी बहिनी गोवर कढवो करवो रसोइयाँ वेहवार है।
मगिया जुड़ै-जुड़ै[2] रहिअ गे बहिनी कोखिया से रहिअ बिहून[3] हे ॥
हमरो बलकवा खेलइह गे बहिनी, होई जैह दासी हमार हे।
देस पइस बहिनी गोवर कढीह, करिह रसोइयाँ वेहवार हे ॥
सिवजी के पास मत जइह गे बहिनी, सिवजी से रहिहऽ बिछोह[4] हे ॥

टिप्पणी—गौरी ने देखा—मोरग देश में बाजा बज रहा है और धूमधाम से किसी की शादी हो रही है। पर किसकी? मन का कौतूहल नाच उठा। जाकर पड़ोसिनों से पूछा—प्यारी बहनो! जरा विचारो तो, मैंने ऐसा सपना क्यों देखा? पड़ोसिनों ने कहा—भला तुम ठहरी पंडित की बेटी! तुम्हें यदि सपने का अर्थ नहीं सूझा तो हमें क्या सूझेगा? गौरी ने कहा—मैंने देखा कि मोरग देश में बाजा बज रहा है और शिवजी ने दूसरी शादी कर ली है। मैंने पूछा उनसे—आखिर मैंने कौन-सी भूल की? मैं चटनी हूँ! चोरनी हूँ! भंडार लुटा दिया है? कभी सेवा में चूकी हूँ? फिर आपने दूसरी शादी क्यों कर ली! शिवजी बोले—प्यारी! न तुम चोरनी हो न चटनी, और न तुम सेवा में ही चूकी। पर भावी को कौन रोक सकता है? जाओ, वस्त्राभूषण पहन लो और सौत को परिछ कर अन्दर ले आओ। गौरी परिछने पहुँची पर मन डूबा-डूबा था। पतोहू को परिछना होता या गोतनी को, तो जी में हुलास होता पर सौत को परिछना! धैर्य की कितनी कठिन परीक्षा थी! पास पहुँची तो उसने साश्चर्य देखा—सौत बनकर अपनी सगी बहन संध्या आयी थी। साश्रुनयन पूछा—बहन! क्या चौदहों भुवन में तुम्हें और कोई वर नहीं मिला जो मेरी ही सौत बनकर आयी? लज्जा कातर सन्ध्या बोली—बहन! मैंने कहाँ न ढूँढ़ा पर शिवराम तो एक ही हैं। उन्हें और कहाँ पाती! विश्वास करो बहन! मैं तुम्हारे बच्चे खेलाउँगी, चेरी होकर रहूँगी, गोबर काढूँगी और रसोई पकाऊँगी पर मेरा सौभाग्य मुझ से न छीनो। यही आशीर्वाद दो कि मेरी माँग जनम जनम तक भरी रहे। गौरी ने विह्वल हो कहा—बहन! मैंने सब सुना, सब स्वीकार किया। आशीर्वाद भी देती हूँ—तुम्हारी माँग जनम-जनम तक भरी रहे पर कोख सूनी रहे।

[३१]

सन्दर्भ—गार्हस्थ्य धर्म-पालन का माहात्म्य

पुरवा से ऐलइ आधी से पानी,
भींजि लगलइ उजे सिव के चदरिया।

---

१. सौभाग्यवती। २. माँग भरी (रहे)। ३. बाँझ (वन्ध्या)। ४. उपेक्षिता।

सिवा के भीजलइ झोली से पोथी,
गौरा सुन्दर पडलइ एको नहि बुन्दवा ॥१॥
कउनी तपस्या तूहूँ कईलऽ हे गौरा,
से तोरो पीठे पडलो एको नहि बुन्दवा।
सास नीपल[1] आगन नहीं धागली[2],
ननदी के कहली नहीं कछु बतिया ॥२॥

टिप्पणी—शिव पार्वती बाहर निकले ही थे कि पूरब से झमानिल का प्रकोप छाने लगा। बड़ी-बड़ी बूँदो की तड़ातड़ बौछार पड़ने लगी। शिवजी की चादर भींग चली, झोली पोथी भी पानी में फूल गई पर आश्चर्य कि गौरा को एक बूँद भी न छू सकी। शिवजी ने साश्चर्य पूछा—उमे! कौन सी तपस्या की थी तू ने कि तुम्हें पानी की एक बूँद भी न छू सकी! विहँसकर गौरी बोली—सास ने जिस आँगन को बड़े यत्न से लीपा-पोता था, मैंने उसे कभी नहीं धागा, न तीखे वचनों से ननद का ही हृदय दुखाया।

[३८]

सन्दर्भ—शिव-पार्वती की अनबन

अहो अहो गौरा देइ, सुनऽ नऽ बचन मोरा हे।
अहो गौरा हम करबो दोसरो बिआह,
तूँ बलैये से नऽ धिरजा बधवऽ हे ॥१॥
अजी अजी महादेव, सुनऽ नऽ बचन मोरा हे।
अहो सिव तूहूँ जब करबऽ दुसरो बिआह,
हम केकरा देखि धिरजा बन्धबइ हे ॥२॥
फेकरो कहलिया[3] सिव नहि मनलन,
ओहु जे चललन दुसरो बिआह करे,
सहानी मौरी[4] लड़ झूले[5] हे ॥३॥
आरे आरे कारा बदरा, तोरो देबउ लाल चदरा,
मोरा सिव चललन दुसरो बिआह करे,
आंधी पानी घेरि आवऽ हे ॥४॥
आंधी के अवकाल ऐलइ, पानी के झफसार[6] ऐलइ
सिव जी जे ठारे[7], मौरी धुरूमी[8] ऐलइन,
ओहारी तरे खड़ा भेलन हे ॥५॥
अहो अहो गौरा देइ, सुनऽ न बचन मोरा हे।
खोलऽ न गौरा सोबरन केमड़िया,
सहानी मौरी भींजी गेलइ हे ॥६॥

---

१ लीपा-पोता। २ पैरों की छाप से असुन्दर किया। ३ कथन। ४ सिर मौर। ५ झूले। ६. झमाझम (वर्षा)। ७ खड़ा। ८ भींग कर विरूप (हो गई)।

नहिं शिव हिम्राँ हइ दियया से बाती,
तूँहूँ खींचि लावऽ ओरी तर के सरइ,[1]
ओही पर सूति रहऽ हे ॥७॥
एक ता गरीब धियवा, दोसर कंगाल धियवा हे।
तिसरे में बाबा तोहर, हम्में हाथे बेची देलथु,
ठनगन[2] बतेक करबऽ हे ॥८॥
एक तो गरीब धियवा, दोसरे कंगाल धियवा हे,
तिसरे में हम हि सतभइया केरा बहिनी,
तो ठनगन बहुत करबो हे ॥९॥

टिप्पणी—शिवजी ने कहा—गौरा ! मैं तो दूसरी शादी करके रहूँगा। बलैये से तुमसे धीरज रखा जाय या नहीं रखा जाए। रुआँसी हो गौरा ने कहा—आप दूसरी शादी कर लेंगे तो मेरा क्या होगा ? कैसे जी सकूँगी मैं ? पर शिव जी ने किसी की बात नहीं मानी। वे ब्याह करने के लिये चल पड़े। सर पर रखी गौरी की लम्बी-लम्बी झालरें काँप रही थीं। गौरी से न रहा गया। उसने आकाश की ओर हेरकर प्रार्थना की—'ओ काले बादल! आओ और झूम झूम कर बरसो ! मैं तुम्हें लाल चादर दूँगी। देखो न, शिव जी दूसरी शादी करने चले हैं।' काले बादलों ने उनकी प्रार्थना सुन ली और झूम झूम कर बरसने लगे। शिवजी जो पूरी तरह भींगे तो भागे भागे अपने घरकी ओलती तल आ खड़े हुए। उन्होंने किवाड़ खटखटायी—प्यारी गौरा, द्वार खोलो। गौरी वगैरह सब भींग गई। क्या दूसरी शादी करूँगा ! भीतर से ही गौरा ने कहा—'प्यारे शिवजी ! कैसे खोलूँ ? न दीया है, न बाती और घना अँधेरा है। ओलती की बगल में ही छूछी खाट पड़ी है, खींचकर सो रहिए।' शिवजी को बड़ा गुस्सा आया—ओह ! इतना मान। एक तो तू गरीब की बेटी है और वह भी गरीब की क्या, कंगाल की। फिर तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें मेरे हाथों बेच दिया और इसपर भी इतना गुमान ! गौरी कुनमुनायी—ठीक है, मैं गरीब ही नहीं, कंगाल की बेटी हूँ पर हूँ तो सात-सात भाइयों की प्यारी इकलौती बहन। फिर गुमान क्यों न करूँ ?

[३३]

सन्दर्भ—नैहर में अपमानित सती की रक्षा

डँड़िया[3] चढ़ल ऐलन गौरादेइ, बसहर[4] महादेव हे।
ए मिनती[5] स बोललन गौरा देइ, सुनऽ नऽ महादेव हे।
मिर केरर नैंहरवा बिआह, बजन एक बाजे हे ॥१॥
मिनती से बोलथा महादेव, सुनहुँ गौर देइ हे।
ताहरो नैहरवा भइया क बिआह, बजन एक बाजे हे ॥२॥
मिनती से बोलथी गौरा देइ, सुनऽ न महादेव हे।
अनी हम्मर भइया के बिआह, नैहर हम जायम हे ॥३॥

१ छूछी खाट (खरहरा)। २ गुमान। ३ पालकी। ४ बसहा बैल (नन्दी) ५. विनती।

मिनती से बोलथी महादेव, सुनऽ नऽ गौरा देइ हे।
गौरा बिन रे अदरवा के नैहर, सेहु नैहर कैसन हे ॥४॥
केकरो कहलिया गौरा नहि मनलन, नैहर चलि गेलन हे।
अरे न रे चीन्हे मइया से बाप, नहीं रे चीन्हे भइया भौजी हे ॥५॥
न रे चीन्हे कुल परिवार, नही रे चीन्हे नर लोग हे।
एक चीन्हलन गंगा बहिनी, गौरिया बहिनी ठरा हइ हे ॥६॥
ए दरप[१] से उठलन माय, गौरिया कुलवा नासल हे।
अरे जहाँ घिउआ के कुड जरे, गौरिया जरि छइया[२] हो जो ॥७॥
धजवा[३] चढ़ल ठारा महादेव, गौरा के जे छानी[४] लेलन हे।
बेरहि बेर तोरा बरजों[५]हे गौरा, बिन रे अदरवा के सेहु, मुह कैसन नैहर ॥८॥

टिप्पणी—पालकी पर चढ़ी सती अपने नैहर के पास से गुजरने लगी, तो बधावों की आवाज सुन चौंक पड़ीं। साथ में ही शिवजी थे। बड़े प्रेम से पूछा—प्यारे शिवजी, यह बाजा कहाँ बज रहा है? शिवजी बोले—तुम्हारे नैहर मे भाई की शादी है। सुनकर सती का मन मचलने लगा। सविनय बोलीं—नैहर में मेरे भाई की शादी है। मैं जाना चाहती हूँ। पर शिव जी ने राय न दी। भला बिना निमंत्रण के नैहर जाना कैसा! सती ने एक न मानी। वे चली ही गई। फिर तो अजीब दृश्य सामने आया। न माँ ने पहचाना न पिता ने, न भाई ने, न भौजाई ने, यहाँ तक कि घर में किसी ने नहीं! सिर्फ गंगा ने पहचाना। वह बोली—माँ! दीदी खड़ी हैं। इसपर तिनक कर माँ बरस पड़ी—छि। इसने तो कुल को मिट्टी में मिला दिया। अरी! खड़ी क्यों हो? जाओ न, घी की कड़ाही खौल रही है, उसी में कूद मरो। सती से अपमान न सहा गया और वे कूद पड़ीं। पर ध्वजा की नोक पर बैठे महादेव यह सब तमाशा देख रहे थे। गिरने के पहले ही उन्होंने सती को लोक लिया। वे बोले—कहा था न? बिन बुलाये नैहर जाना कैसा?

[३४]

सन्दर्भ—श्री राम द्वारा सीता का पाणिग्रहण

झिलीमिली कपड़ा पहिरि राजा जनक।
लिलि घोड़िया होलन असवार हे ॥१॥
हाथ में लेले राजा गोबरना के साट।
चलि भेलन राजा दरबार हे ॥२॥
एक कोस गेलन राजा दुई कोस गेलन।
तेसर कोस राजा दरबार हे ॥३॥
घाड़वा जे बाँधे राजा चनन केर गाछ।
बैठि गेलन चनन जुड़ि छाँह हे ॥४॥

---

१. अभिमान। २. राख। ३ ध्वजा। ४ छान (लिया)। ५ रोका।

अँगना बहरैते तोहूँ सलखो गे चेरिया।
राजा घर देहूँ न हँकार हे ॥५॥
ताही घर अगे चेरिया राम जी कुँआर।
मोरा घर सीता कुँआर हे ॥६॥
एक हाथ लेले चेरिया गगरा तम्हेडिया।
दोसर हाथे सिंहासन पीढा हे ॥७॥
पैर पखार ऽ राजा सिंहासन चढि बैठऽ।
कहऽ राजा कुल बेवहार हे ॥८॥
मोरा घर अगे चेरिया साता कुँआर।
तोहीं घर राम जी कुँआर हे ॥९॥
बोलाबऽ बराहमन दिनमा सोचाबऽ।
राम सीता करहूँ बिआह हे ॥१०॥
अगहन दिन राजा दिनमा, कुदिनमा।
आबे देहो जेठवा बैसाख हे ॥११॥
बराहमन बोलायब, लगन सोचायब।
राम सीता होयतो बिआह हे ॥१२॥
गाय केर गोबर राम जी, अगना नीपायब।
गज मोती चौक पुरायब हे ॥१३॥
चनन केरिय राम जी पिढिया बनायब।
राम सीता होयतइ बिआह हे ॥१४॥
होयलइ बिआह, रामजी कोहबर गेलन।
सीता लैलन अगुरी लगाय हे ॥१५॥
तिरिया जलम जब देलऽ हो नारायण।
कोखिया बढन्तु मोरा दीहऽ हे ॥१६॥
सासुरा में दीह राम जी अनधन लछमी।
नैहर सहोदर भाई हे।
जुग-जुग दीह ऽ अहिवात हे ॥१७॥

टिप्पणी—महाराज जनक ने मलमल कपडे पहने, हाथ में सोने की छड़ी ली। वे ठुमक-ठुमक कर चलनेवाली घोड़ी पर सवार हो महाराज दशरथ की राजसभा में पहुँचे। जनक जी ने सलखो दाई को पुकार कर कहा—जरा जाकर महल में कह दो कि जनक जी आए हैं। तुम्हारे भवन के यदि कुआँरे श्रीराम हैं तो मेरी भी कुआरी बेटी सीता है। दाई गागर में पानी और ऊँचा पीढ़ा लेकर बाहर आ खड़ी हुई। पैर पखारकर उसने जनक जी को बैठने के लिये कहा और कुशल मंगल पूछा। जनकजी ने कहा—चेरी! ब्राह्मण ... दिन रखवा लिया जाए फिर राम-सीता की शादी कर दी जाए। वह बोली— ...ो शादी के दिन नहीं। जेठ-बैशाख आने दीजिए। फिर तो गोबर से आँगन लीपूँगी ... । से सजाऊँगी। चन्दन के पीढ़े पर श्रीराम को बैठाऊँगी और सीता के

के साथ ब्याह रचाऊँगी। बाद ऐसा ही हुआ। शादी के बाद सीता के साथ श्रीराम ने कोहबर में प्रवेश किया। सीता ने नारायण से विनती की—हे देव! ससुराल में अन्न धन की वर्षा हो और नैहर में सहोदर भाई जनम ले। मेरा सौभाग्य हमेशा बना रहे। जब नारी रूप में जनम दिया है, तब सन्तान दे मेरी कोख की लाज भी रखना।

[३४]

सन्दर्भ—रावण द्वारा सीता का हरण

नदिया किनारे र दुइ रे बिरिछिया, एक महुआ एक आम हे।
ओहि तर उतरल दुइ रे मनुसवा, एक लछमन एक राम हे ॥१॥
राम जी ने चलतन बन के अहेरिया, सीता मड़इया[1] धैले द्वार हे।
रवनमा जे आयल जोगी भेस धरके, जोगिया के भिच्छा देले जा हे ॥२॥
अगना बहारइत सलगो गे चेरिया, जोगिया के भिच्छा देह आव हे।
चेरिया के हथवा हे ओरो चेरिआइन, जेहि दियाये सेइ भिच्छा देइ हे ॥३॥
तर ले ले सोनमा ऊपर तिल-चाउर, जोगिया के भिच्छा देवे जाये हे।
एक गोर एहरी, दोसर गोर देहरी, सीता रवनमा हर ले जाय हे ॥४॥
बरहीं बरिस पर राम जी जे अयतन, सीता मड़इया देखी सून हे।
ना देखूँ दियवा हो, ना देखूँ बाती, सीता मड़इया देखी सून हे ॥५॥
मैं तो ने पुछिलउ चकवा चकइया, एहि बाटे सीता देखले जाइत हे।
न देखीं सीता हे न देखी सीता, हमरा जे पेटवा के चिन्ता हे ॥६॥
ऐसन असीसवा तोरा देबउ रे चकवा, दिन भर जोड़ी रात के बिछोह हे।
ऐसन असीसवा तोरा देबउ रे चकवा, तड़पि तड़पि जीउ जाऊ रे ॥७॥
धोबिया जे धोवले गंगा रे जमुनवा, मुगरे चननमा केर गाछ हे।
मैं तो जे पुछिलउ धोबिया हो भइया, एहि घाटे सीता देखले जाइत हे ॥८॥
देखली मैं देखली मैं हाजीपुर हटिया, सीता रवनमाँ ले ले जाये हे।
ऐसन असीस तोरा देबउ रे धोबिया, फटलो गुदरिया नहिं भुलाये हे ॥९॥

टिप्पणी—नदी के किनारे आम और महुआ के दो वृक्ष। उनकी सघन छाया में दो महामानव उतरे—एक राम, दूसरे लक्ष्मण। राम गये अहेर खेलने। सीता घेरे से घिरी कुटिया के अन्दर थीं। प्रपंची रावण भिक्षा माँगने आया। सीता ने कहा—सलगो चेरिन! योगी को दान दे आ। रावण ने कहा—चेरी से भिक्षा नहीं लेना। दिलानेवाली खुद दे! भोली सीता स्वर्णथाल में तिल चावल लेकर भिक्षा देने चलीं। रावण सीता को हर कर ले गया।

---

१. घेरा। कुटिया।

बारह साल बाद ! राम अहेर से लौटे। देखा—कुटिया सूनी थी। व्याकुल हो चकवाक के जोड़े से पूछा—क्या तुमने मेरी प्रिया को इस राह जाते देखा है ? चकवे ने कहा—मुझे पेट की चिन्ता है। भला मैं क्या जानूँ तुम्हारी सीता मीता ! क्षुब्ध-हृदय राम ने अभिशाप दिया—दिनभर युगल जोड़ी साथ रहेगी पर रात में बिछोह हो जायगा। गंगा-यमुना के किनारे चंदन की डाल पर कपड़ा सुखाते धोबियों ने सीता का पता दे दिया। राम ने आशीर्वाद दिया। प्यारे भाई ! तुम्हें वर देता हूँ कि फटी गुदड़ी की बात भी तुम न भूलो !

[३६]

सन्दर्भ—शबरी की श्रीराम में प्रीति

सेवरी करऽ नऽ रे सगुनमा, आज गिरही राम जी अइहें ना ॥ टेक ॥

लमी-लमी केसिया सेवरी सड़क बहारऽ हथी,
एहि बटिये अइहन भगवान सेवरी के अगना ॥१॥

कुस के चटइया सेवरी झाड़ि झूड़ि बिछौलन,
एहि पर बैठिहन भगवान सेवरी के अगना ॥२॥

काठ के कठोलवा सेवरी, गंगा जल पनिया धैलन,
चरन पखरिहन[1] भगवान सेवरि के अगना ॥३॥

सेवरी के अगना में बैरिया के गछिया हे,
चीखी-चीखी खोनवा[2] लगावे सेवरि अगना ॥४॥

कच्चे कच्चे अहे सेवरि चीखी चीखी बीगी[3] देलन,
पकल-पकल खोनमा लगावे सेवरि अगना ॥५॥

सेहि गलिय अइहन भगवान सेवरि के अगना,
भोग लगइह भगवान सेवरि के अगना ॥६॥

टिप्पणी—

भावविभोर शबरी सोच रही है—आज जरूर श्रीराम आएँगे। यह अपने लम्बे केशों से पथ को बुहार साफ कर दे रही है। प्रेम से उसने चटाई बिछा दी है। आने पर श्रीराम उसी पर बैठेंगे। फिर वह काठ की कठोली में गंगा जी का पानी ले आयी है। आने पर श्रीराम उसी से पैर धोएँगे। आगन में बेर का पेड़ लहरा रहा है। वह बेर झाड़ रही है। कच्चे बेरों को वह फेंक दे रही है एवं चख-चख कर मीठे बेर एक ओर रख रही है। भगवान श्रीराम जब आएँगे, तब उन्हीं का भोग लगाएंगे।

---

१ धोयेंगे। २. दोना। ३ फेंक (दिया)।

[३७]

सन्दर्भ—श्री कृष्ण की रसिकता से तंग गोपी का उपालंभ

जब हि गोआरिन मटुका उठावे, बामे परि गेलइ छींक हे ।
अजी मचिया बैठल तुहूँ सासूजी, छींक के करूँ न विचार हे ॥१॥

छींक ओठन बहु छींक पेन्हन, छींक है सवार हे ।
अजी बीचे कदम तरे कान्हा जी मेटिहैं, ओहि रचिहें धमार हे ॥२॥

जब हिं गोआरिन कदम बीचे गेलन, कान्हा बसीया बजावे हे ।
खाइ लेबउ गोआरिन मीठ दहिया, फोड़ि देवउ सिर मटुक हे ॥३॥

जोबन लेइ गेंद खेलब, जैसे तिरिया हमार हे ।
खाइ लेहु किसनऽ मीठ दहिया, जनु तोडऽ सिर मटुक हे ॥४॥

सुन जे पइहें नन्द बाबा, तोहरो मारी दीहें हे ।
मारे के बेरी ग्वारिन बालक होयबो, नन्द लीहें उठाय हे ॥५॥

खाइ लेलन किसना मीठ दहिया, तोड़ि देलन सिर मटुक हे ।
जोबना लेइ किसना गेंद खेलइ, जैसे उनकर तिरिया हे ॥६॥

ओरहन देवे गेलन ग्वालिन बिटिया, सुनहु दसोदा[1] माता हे ।
तोहर किसना जे रचलन धमार, तोड़ि देलन सिर मटुक हे ।
खाइ लेलथुन मीठ दहिया, फोड़ि देलन सिर मटुक हे ॥७॥

हमरो जे किसना गोआरिन लड़का अबोधवा, झूलत हथि पलंग हे ।
अजी घरे जे हथुन माता लड़का अबोधवा, बाहर छैला जुआन हे ॥८॥

टिप्पणी—गोआरिन ने मटुका उठाया था ही कि छींक आ गई । उसने सभीत हो सास से पूछा—सास जी ! क्या आयी छींक ? जरा विचार तो कीजिये । उसने कहा—आज राह में कान्हा छेड़छाड़ करेगा तुमसे । गोपी कदम्ब के वृक्ष के नीचे पहुँची कि कान्हा की वंशी सुनाई पड़ी । कृष्ण ने कहा—अरी ग्वालिन, तेरा मीठा दही खा लूँगा, मटकी फोड़ दूँगा और छेड़ छाड़ भी करूँगा । गोपी ने समझाया—कान्हा दही खा लो ! मटकी मत फोड़ो । नन्दबाबा तुम्हें दण्ड देंगे । श्री कृष्ण के होठों पर मुस्कान खेल गई—अजी ओ ! जब वे मारने आयेंगे तो मैं बालक बन जाऊँगा । फिर तो वे मुझे गोद में उठा कर प्यार करेंगे ! कान्हा ने दही खाया ! मटुकी फोड़ी । गोपियों से छेड़खानी की । गोपी यशोदा को उलाहना देने गई—माँ ! कान्हा ने हमें बहुत तंग किया । भोली माँ यशोदा ने कहा—कहाँ मेरा नन्हा कान्हा ! कहाँ तुम ग्वालिनों की बातें । मेरा बच्चा तो पालने में झूल रहा है अभी ! चिढ़कर गोपी ने कहा—घर में बालक हैं पर बाहर छैला जवान !

---

1 यशोदा ।

[३८]

सन्दर्भ—शीतला देवी का प्रशस्ति-गीत

नीमियाँ के डलिया मइया लगलो हिन्डोरवा,
झुनी-झुनी मइया गावल गीत कि झुली-झुली ॥१॥
झिलुआ झुलइत मइया लगलो पियसवा,
से चली भेलन मइया मलिया केर बगिया ॥२॥

सुतल हे कि जागल हे मालिन केर बेटिया,
मोरा एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥३॥
कैसे में मइया पनिया पिलइयो कि,
मोरा गोदी मइया तोहरो बलकबा ॥४॥

बलका सुताहु मालिन सोनें के खटोलवा,
आ सोनें के मचोलवा, एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥५॥
बलका सुतौलन मालिन सोनें के खटोलवा,
से सोनें के मचोलवा, एक चुलू पनिया पिलउलन ॥६॥

जैसे गे मालिन हमरा जुड़उले, से,
तोरा बलकवा जुड़ाऊ, तोर पतोहिया जुड़ाऊ ॥७॥

टिप्पणी—नीम की हरी-भरी डाल पर झूला टाँगा गया है। माँ शीतला मन्द स्वरों में गीत गाती झूला झूल रही है। झूला झूलते-झूलते माँ को प्यास लग गई और वह मालिन के बगीचे में पानी पीने चली गई। उन्होंने अन्दर आते ही पुकार की–ओ मालिन की बेटी! सोयी हो कि जागी? एक चुल्लू पानी तो पिलाना? मालिन की बेटी बोली–ओ शीतला मैया। कैसे पानी पिलाऊँ? मेरी गोद में तो तुम्हारा ही बालक सो रहा है। शीतला बोलीं–मालिन! बच्चे को सोने के खटोले में सुला दो और मुझे एक चुल्लू पानी पिला दो। मालिन ने बालक को खटोले में सुला दिया और एक चुल्लू पानी पिला दिया। पानी पीकर शीतला माँ तृप्त हो गईं। उन्होंने आशीर्वाद दिया–मालिन! पानी पिलाकर जैसे तुमने मेरी छाती जुड़ायी, वैसे ही यह बालक तुम्हारी छाती जुड़ाए और तुम्हारी पतोहू तुम्हें तृप्त करे।

[३९]

सन्दर्भ—कुपित शीतला देवी से माँ की विनती

काहे के रे कँगिया सीतल मइया, काहे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी झारे लामी केस ॥१॥
सोने केर कँगिया सीतल मइया, रुपे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी झारे लामी केस ॥२॥

टूटी गेलइ कधिया सीतल मइया, टूटि गेलइ काँप।
कउने हाथे गढले रे सोनरा समगिया[1] लगऊ रे घून[2] ॥३॥

हाथ जोडी खडा भेलई सोनरवा के रे माई,
अबरी कसुरवा बकसु हे हमार सीतल मइया,
गढनइ सीतल मइया सोने के रे काँप ॥४॥

टिप्पणी—माँ शीतला अपनी सातो बहनो के साथ मचिया पर बैठी हैं। रुपहली काँप युक्त सुनहरी कगही से लम्बे-लम्बे केश झाड़ रही हैं। कगही इतनी कमजोर बनी है कि बीच में ही टूट जाती है। माँ शीतला क्रोध में सोनार को अभिशाप दे बैठली हैं।

भयकातर स्वर्णकार की माता शीतला देवी से विनती करती है—शीतला मैया! इस बार मेरे पुत्र को क्षमा कर दो। उसके प्राण बकस दो। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि अब सोने की कगही में रुपहली नहीं, सुनहरी काँप गढ़ूँगी।

[४०]

सन्दर्भ—शीतला माँ के मंदिर का छवि-वर्णन

अहे किधिर हइ बाँस बँसवरिया,
किधिर हइ केदली बनमा हे ॥१॥

किधिर हइन मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥२॥

पुरुब हइन बाम बँसवरिया,
पच्छिम हइन केदली बनमा मे ॥३॥

दखिन हइन सीतल के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥४॥

कैसन हइन बाँस बँसवरिया,
कैसन हइन केदली बनमा हे ॥५॥

कैसन हइन मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥६॥

हरियर हइन बाँस बँसवरिया,
सीतल हइन केदली बनमा हे ॥७॥

बड़ा सुन्दर मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥८॥

---

१ शरीर। २ कीड़ा विशेष।

[३८]

सन्दर्भ—शीतला देवी का प्रशस्ति-गीत

नीमियाँ के डलिया मइया लगलो हिन्डोरवा,
झुली-झुली मइया गावल गीत कि झुली-झुली ॥१॥

झिलुआ झुलइत मइया लगलो पियसवा,
से चली मेलन मइया मलिया केर बगिया ॥२॥

सुतल हे कि जागल हे मालिन केर बेटिया,
मोरा एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥३॥

कैसे में मइया पनिया पिलइयो कि,
मोरा गोदी मइया तोहरो बलकवा ॥४॥

बलका सुताहु मालिन सोने के खटोलवा,
आ सोने के मचोलवा, एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥५॥

बलका सुतौलन मालिन सोने के खटोलवा,
से सोने के मचोलवा, एक चुलू पनिया पिलउलन ॥६॥

जैसे गे मालिन हमरा जुड़उले, से,
तोरा बलकवा जुड़ाऊ, तोर पतोहिया जुड़ाऊ ॥७॥

टिप्पणी—नीम की हरी-भरी डाल पर झूला डाला गया है। माँ शीतला मन्द स्वरों में गीत गाती झूला झूल रही है। झूला झूलते-झूलते माँ को प्यास लग गई और वह मालिन के बगीचे में पानी पीने चली गई। उन्होंने अन्दर आते ही पुकार की—ओ मालिन की बेटी! सोयी हो कि जागी? एक चुल्लू पानी तो पिलाना? मालिन की बेटी बोली—ओ शीतला मैया। कैसे पानी पिलाऊँ? मेरी गोद में तो तुम्हारा ही बालक सो रहा है। शीतला बोलीं—मालिन? बच्चे को सोने के खटोले में सुला दो और मुझे एक चुल्लू पानी पिला दो। मालिन ने बालक को खटोले में सुला दिया और एक चुल्लू पानी पिला दिया। पानी पीकर शीतला माँ तृप्त हो गई। उन्होंने आशीर्वाद दिया—मालिन! पानी पिलाकर जैसे तुमने मेरी छाती जुड़ायी, वैसे-ही यह बालक तुम्हारी छाती जुड़ाए और तुम्हारी पतोहू तुम्हें तृप्त करे।

[३९]

सन्दर्भ—कुपित शीतला देवी से माँ की विनती

काहे के रे कंगिया सीतल मइया, काहे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी मारे लामी केस ॥१॥

सोने केर कंगिया सीतल मइया, रुपे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी मारे लामी केस ॥२॥

टूटी गेलइ कघिया सीतल मइया, टूटि गेलइ काँप।
कउने हाथे गढ़ले रे सोनरा समगिया[1] लगऊ रे घून[2] ॥३॥

हाथ जोडी खड़ा भेलई सोनरवा के रे माई,
अबरी कसुरवा बकसु हे हमार सीतल मइया,
गढ़बइ सीतल मइआ सोने के रे काप ॥४॥

टिप्पणी—माँ शीतला अपनी सातों बहनों के साथ मचिया पर बैठी हैं। रुपहली काँप युक्त सुनहरी कगही से लम्बे लम्बे केश झाड़ रही हैं। कगही इतनी कमजोर बनी है कि बीच में ही टूट जाती है। माँ शीतला क्रोध में सोनार को अभिशाप दे बैठती हैं।

भयकातर स्वर्णकार की माता शीतला देवी से विनती करती है—शीतला मैया! इस बार मेरे पुत्र को क्षमा कर दो। उसके प्राण बकस दो। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि अब सोने की कगही में रुपहली नहीं, सुनहरी काप गढ़ूँगी!

[४०]

सन्दर्भ—शीतला माँ के मंदिर का छवि-वर्णन

अहे किधिर हइ बाँस बँसवरिया,
किधिर हइ केदली बनमा हे ॥१॥
किधिर हइन मइया के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥२॥
पुरुब हइन बाँस बँसवरिया,
पच्छिम हइन केदली बनमा म ॥३॥
दखिन हइन सीतल के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥४॥
कैसन हइन बाँस बँसवरिया,
कैसन हइन केदली बनमा हे ॥५॥
कैसन हइन मइया क मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥६॥
हरियर हइन बाँस बँसवरिया,
सीतल हइन केदली बनमा हे ॥७॥
बड़ा सुन्दर मइया के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥८॥

१ शरीर। २ कीड़ा विशेष।

टिप्पणी—पूरब की बाँसवारी और पश्चिम के केदली वन से हटकर दक्षिण में माँ शीतला का सुन्दर भव्य मन्दिर है। बाँसों की हरियाली और केदली वन की शीतलता में मंदिर की शोभा अभिवृद्ध हो रही है। मैं उसे देखकर चिर सुख प्राप्त करूँगी।

[४१]

सन्दर्भ—पुत्र विहीना का गंगा जी से करुण निवेदन

गंगा मइया के ऊँची अररिया[१], तिवैया[२] एक रोवल हे ॥ टेक ॥

चुपु चुपु तिवइ, पटोरबे[३] लोर[४] पोछहु हे।
किए तोरा सासुर दुख, किय तोरा नैहर दुख,
किए तोरा कंत बिदेस हे ॥१॥

नहिं मोरा सासुर दुख, नहिं मोरा नैहर दुख,
नाहि मोरा कंत बिदेस, कोखिए[५] दुख रोबिला हे।
सात बलक गंगा मइया देलन, सातों हरि लेलन।
आठवें गरभ तेकरो भरोसा ना हे ॥२॥

चुपु चुपु तिवइ[६], पटोरबे लोर पोछऽ हे।
अपना के मारब, तोहरो जिलायब हे ॥३॥
नोनमा तेलवा पाई गंगा मइया,
गोदी के बलक्वा कैसे पायब हे ॥४॥

टिप्पणी—माँ गंगा के ऊँचे किनारे पर बैठी एक रमणी सिसक सिसक कर रो रही है और अपने छलकते आँसुओं को आँचल की कोर से पोंछती जा रही है। गंगा ने पूछा—प्यारी बहन! चुप रहो, चुप रहो! आँसुओं को पोछ लो। क्या दुख है तुम्हें? क्या ससुराल में कुछ दुख मिला? क्या नैहर में कुछ दुख मिला? क्या तुम्हारा प्रियतम परदेश गया हुआ है?

रमणी बोली—मुझे ऐसा कोई दुख नहीं। यदि कोई दुख है तो यही कि अब तक कोख सूनी है। गंगा मैया ने सात बच्चे दिये और फिर सातों को अपनी गोद में ले लिया। आठवाँ बच्चा मेरे गर्भ में पल रहा है। पर उसका भी क्या भरोसा?

गंगा बोलीं—प्यारी बहन! चुप रहो। आँसुओं को आंचल की कोर से पोंछ लो। मैं अपने बेटे की बलि देकर भी तुम्हारे बच्चे को जिला रक्खूँगी।

रमणी बोली—क्या यह संभव है? यदि नून-तेल होता तो वह सहज ही प्राप्य था पर गोद के लाल को खोकर पाना—उफ! कितना कठिन है!

---

१ अरार। २ स्त्री। ३ कपड़ा। ४ आँसू। ५. सन्तान। ६ स्त्री।

[४२]

सन्दर्भ—गंगा का गांभीर्य

ताबु भीजे ताबु डोर भींजे, मइया भीजै नौ सै लोग,
गंगा गहरी भरी ॥१॥

जगतारनी लहर मेवार[1],
गंगा गहरी भरी ॥२॥

दइया ठार अनजानु बाबू अरज करे, बहुआरो देई[2] लागे पाँव,
गंगा गहरी भरी ॥३॥

टिप्पणी—ओ माँ गंगे ! तू कितनी गहरी है, कितनी लहरी ! तुममें चंचल तरंगे उठ रही हैं। वे भव-सागर पार करानेवाली हैं। देवि ! स्वामी तुम्हारे तट पर खड़े तुम्हारी वन्दना कर रहे हैं। मेरा भी प्रणाम लो !

[४३]

सन्दर्भ—गंगा मैया की छवि-महिमा

मांगे गंगा जी के टिकवा सोभे,
बचवा अजब बिराजे गंगा मइया,
खेलती चौघटिया[3] ॥१॥

खेलती चौघटिया ओढ़ती ओढनियाँ
पेन्हती पियरिया गंगा मइया,
खेलती चौघटिया ॥२॥

नाको गंगा जी के नथिया सोभे,
झुलनी अजब बिराजे गंगा मइया,
पेन्हती पियरिया ॥३॥

गलों[4] गंगा जी के हँसुली सोभे,
सिकरी अजब बिराजे गंगा मइया,
खेलती चौघटिया ॥४॥

बाँहों गंगा जी के बजुआ सोभे,
कबिया अजब बिराजे गंगा मइया।
खेलती चौघटिया ॥५॥

समेटने वाली। २. बहू। ३. चारों घाट में। ४ गल्ले में।

आँगो[१] गंगा जी के पीरी[२] सोभे,
छपवा अजब बिरंगी गगा मइया,
ओढती ओढनिया ॥६॥

इसी प्रकार सभी आभूषणो और अगों के नाम के साथ पंक्तियों की आवृत्ति की जाती है।

टिप्पणी—गगा मैया की माँग पर मंगटीका कितना सुन्दर लगता है! उसमें जड़ी गोदी भी शोभ रही है। वे घाट घाट कलोल करती फिरती हैं। उन्होंने सुन्दर ओढ़नी ओढ़ी है। उन्होंने पीली साड़ी पहनी है। उनकी नाक में नथ बहुत सुन्दर लगती है। उनकी झुनकी की शोभा निराली है। बाँहों पर उन्होंने बाजूबन्द बाँध रखा है। उनका सुन्दर रूप विश्वमगल का सन्देश दे रहा है।

[४४]

सन्दर्भ—देव मन्दिर का माहात्म्य

देकुली[३] के आगे पाछे, नरियर गाछे,
उजे जाफ़र[४] लागि गेलो, डटहर[५] पान हे।
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥१॥

सेही पनमा खाथी कौन देवा
से ही पनमा खाथी परमेसरी देवा,
भींगी गेलइ बत्तीसो रग दाँत,
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥२॥

से ही सिठिया खाथी कौन बेटी
से ही सिठिया खाथी अनजानु बेटी,
जनमो जनमों अहिवात,
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥३॥

सभी देवताओ के नाम जोड़कर इस गीत की पुनरावृत्ति की जाती है।

टिप्पणी—देव मन्दिर का अद्भुत सौंदर्य है। उसके चतुर्दिक देव-पूजन में व्यवहृत उपादान लगे हैं। कहीं नारियल शोभा पा रहा है, कहीं जाफर! कहीं डंटल युक्त पान-पत्र लहस रहा है। सभी देवगण प्रसन्न चित्त पान खाते हैं। उनकी जूठन भक्त ग्रहण करते हैं। इससे उनके सुप्त सौभाग्य की वृद्धि होती है। धन्य है देव! तुम्हारे मन्दिर की शोभा!

---

१. अंगों में। २. पीत परिधान। ३. देव गृह। ४. एक फल, जो पान के साथ खाया जाता है। ५. डंटल युक्त।

[४५]

सन्दर्भ—भक्तों का देव पूजन

माइ, गगा जमुनमा केर चिकन मटिया,
ओहि मटिए निपलों रामठाकुर देव के पिढिया ॥१॥

ओहि मटिए निपलो बन्दीदेइ के चौरिया ।
माइ, नीप लैलों पोत लैलो, परोर लैलो भितिया ।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥२॥

माइ, ओहे मटिए निपलों हनुमान जी के चौरा ।
माइ, ओहे मटिए निपलों गोरैया देइ क पिढ़िया ।
माइ, ओहे मटिए निपलों मनुख देइ के पिढिया ॥३॥

माइ नीप लैलों, पोत लैलो, परोर लैलों भितिया ।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥४॥

माइ ओहि मटिए निपलो पाँचो देइ के चौरिया ।
माइ ओहि मटिए निपलों सब देव के पिढिया ॥५॥

माइ नीप लैलों, पोत लैलों, परोर लैला भितिया ।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥६॥

टिप्पणी—भक्तों की वृद्धि देव पूजन में है। गगा यमुना की पवित्र चिकनी मिट्टी से देवस्थान को साज सवार कर भक्त आन्तरिक सुख उपलब्ध करते हैं। आखिर हृदय की अगाध भक्ति का देवार्पण हो कैसे ?

[४६]

सन्दर्भ—भक्तों द्वारा सम्पत्ति के लिए देवार्चन

सोने के खड़उआ चढ़ि अयलन बन्दी देव,
हाथ सोबरन केरा साट हे ॥१॥

ओहि साटे मारम भगता, अनजानु भगता,
हमरा पहुरवा[१] देले जाहु हे ॥२॥

अपना पहुरवा देवा हुलसिय लेहु,
हमरा असीसवा देले जाहु हे ॥३॥

सम्पत्ति बाढ हे, साम्पत्ति बाढ हे,
बाढ़ हे कुल परिवार हे ॥४॥

---

१ समर्पण, भेंट ।

गौरैया देव, मानुस देव, शोखा देव और रामठाकुर देव के नाम जोड़ कर इस गीत की पंक्तियाँ दुहराई जाती हैं।

टिप्पणी—भगवान को भक्त से समर्पण चाहिए। प्रेमार्पण चाहिए। भक्त को भगवान से आशीर्वाद चाहिए। सम्पत्ति की वृद्धि हो, कुल परिवार समुन्नत हो—यही भक्त की अशेष कामना है। भगवान् और भक्त दोनों का प्रेम बंधन शाश्वत है।

सझा

[४७]

सन्दर्भ—सध्या पूजन

सझा जे बोलथिन माइ हे, केकरा घरे आयब[1] ॥टेक॥
बोलथिन अनजाने बारू, हमरा घरे आयब[2]।
बहुआरो[3] देई सझा गनौतन ॥१॥
साँझ देतन समौत[4], पराते देतन बाढन[5]।
माइ हे हम अप्पन घरे सझा मनायब ॥२॥

टिप्पणी—सध्या देवी ने पूछा—भला मैं किसके घर जाऊँ? गृहस्वामी ने कहा—मेरे घर! यहाँ बहू आरत्ता आत्रभगत करेगी, उत्सव मनाएगी।

सध्या देवी हमें प्रकाश देंगी। प्रभात की ज्योति हमें वृद्धि प्रदान करेगी। ओ माँ! मेरे घर ही सध्या देवी का उत्सव मनाया जाएगा।

कर्मा-धर्मा[6]

[४८]

सन्दर्भ—बहन द्वारा भाई के कल्याण के लिये व्रत

तोहरा नगर भइया केलवा सहत भेलबऽ।
ले ले अइहऽ हो भइया केलवा सनेसवा ॥१॥
हमरा नगर बहिनो केलवा महग भेलो।
छोड़ि देहु गे बहिनो करमा बरतवा ॥२॥
करमा बरत भइया छोड़लो न जाये।
न छोड़म हो भइया करमा बरतवा ॥३॥

सभी फलों एव वस्त्रों के नाम जोड़ कर इस गीत की आवृत्ति की जाती है।

---

१ आऊँगी। २ आएगा। ३ बहू। ४. प्रकाश। ५. वृद्धि। ६ यह पर्व भादो महीने में मनाया जाता है।

टिप्पणी—बहन—प्यारे भाई ! तुम्हारे शहर में केला खूब सस्ता मिलता है, लेते आना। वही सदेश होगा मेरे लिए !

भाई—बहन ! मेरे शहर में केला बहुत महगा मिलता है। यह कर्मा-धर्मा छोड़ो !

बहन—प्यारे भाई ! कर्मा धर्मा करना कैसे छोड़ दूँ ? तुम सदेशा दो, न दो बहन चिरकाल तक तुम्हारी कल्याण-कामना तो करती रहेगी !

जितिया[1]

[४६]

सन्दर्भ—गगा का भाई पर स्नेहाधिक्य

कँहवें से आवले लउहर कुमहर देओरा[2] हे गगाजल बहिनो।
कँहवें से आवले निरधन भाई हे गगाजल बहिनो ॥१॥
पुरुबे से आवले लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
पछिमें से आवले निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥२॥
कहमें बैठायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
कहमें बैठायब निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥३॥
अगने बैठायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
अँचरे बैठायब निरधन भाई हे गगाजल बहिनो ॥४॥
का ले खिलायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
का ले खिलायब निरधन भाई, हे गगाजल बहिनो ॥५॥
दाल भात खिलैबइ लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
दूधे खाडे पिये निरधन भाई हे गगाजल बहिनो ॥६॥
कँहवाँ सुतैबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
कँहवाँ सुतायब निरधन भाइ हे गगाजल बहिनो ॥७॥
अँगने सुतैबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
अँचरे सुतैबो निरधन भाई हे गगाजल बहिनो ॥८॥
का ले समोधबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनो।
का ले समोधबो निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥९॥
टका ले समोधबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिना।
छोटकी ननदिया ले समोधबो निरधन भाई हे गगाजल बहिनो ॥१०॥

---

१ जितिया-व्रत आश्विन में कृष्ण पक्ष अष्टमी को किया जाता है। इस व्रत को पुत्र के मगल के लिए महिलाएँ करती हैं।

२ देवर।

घुरी-फिरी तान्ल लउहर कुसहर देअोरा हे गगाजल बहिनों।
घुरियो न ताके निरधन भाई हे गगाजल बहिनों ॥११॥
रोबइत जैतो लउहर कुसहर देओरा हे गगाजल बहिनों।
हँसइत जैतो निरधन भाई हे गगाजल बहिनों ॥१२॥

टिप्पणी—गगा बहिन ने देवर और भाई के स्वागत में कितनी भी भिन्नता की। पर विवाहित कन्या के लिये नैहर से अधिक ससुराल ही अपना होता है। आदर-सत्कार पाकर भी भाई पलट कर नही देखता। पर भाभी से निरादर पाकर भी देवर भाभी की रक्षा अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता है।

छठ

[४०]

सन्दर्भ—सूर्यदेव के आगमन की आकुल प्रतीक्षा

आन दिन उटलऽ सुरुज देव भोर भिनुसरवा।
आजु काहे लगौलऽ, सुरुज देव बड़ी देर हे ॥१॥
सगरो बरती ठाढ मेलन, लेहु न अरघिया।
सगरो बरती घाट अगोरलन, लेहु न अरघिया।
उगहु सुरुज देव, लेहु न अरघिया ॥२॥

टिप्पणी—सूर्यदेव! और दिन तो आप बडे सबेरे उठ जाते थे पर आज जागने में इतनी देर क्यों लगा रहे हैं? सारे व्रतधारी एकटक खडे हो निहार रहे हैं। आकर अर्घ्यांजलि स्वीकार कीजिए। हे सूर्यदेव! शीघ्र दर्शन दीजिए।

छठ

[४१]

सन्दर्भ—जगतारण नाव की अर्चना

काहे केर नैया रे मलहा, कथिए करुवार[1]।
कथिए भरल रे मलहा, नैया केर माँग ॥१॥
सोने के नैया रे मलहा, रूपे करुवार।
इगुर[2] भरल रे मलहा नैया केर माँग ॥२॥
कथिए बोमल रे मलहा, नैया गमरत रे जाय।
केलवे बोमल रे मलहा, नैया गमरत रे जाय ॥३॥

---

१ नाव के पाछ का मिकना हिस्सा। २ सिन्दुर।

सुपवे ग्रोभाय रे मलहा, नैया गमकत रे जाय।
काहे केर नैया

सभी फलो का नाम लेकर इस गीत को गाया जाता है।

टिप्पणी—ओ नाविक! तुम्हारी नाव किस चीज की बनी है और उसकी करुवार किस चीज की? फिर नाव में कौन सी चीज भरी है? ओ पूछनेवाले! नाव सोने की है और करुधार रूपा की। नाव में सिन्दूर भरा है। उस पर केला लादा हुआ है। वह सुवास फैला रहा है और नाव मन्द मन्द तिर रही है।

[५२]

सन्दर्भ—ब्रह्म स्वरूप की जिज्ञासा

साधो लोक से पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न ग्रावर एना।

ककरे बले विषया में, लग्गइ पेमल मनमा,
कउन जे डुलकावे, उत्तम जेड़ी में परनामा।

ककरे बले अकुरइ, कठ में बचनमा,
कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनमा।

कनमों के कान, साधो, मनमो के मनमा,
बचनों के वाक से, उ परनमों के परनमा।

अँखियो के आँख, भिन्न भिन्न रूप धारी,
ओकरे प्रतापे ओही में रहे सनचारी।

साधो, ओकरे दरस ओट टारी जीवन, मुकुती पवाइ एना॥

टिप्पणी—साधो! लोक से परे जो एक अनिर्वचनीय सत्ता वर्तमान है, उसका बार-बार गुणगान करो ताकि घूमफिर कर इस लोक मे न आना पड़े। अहा! कौन है वह, जो विषय-सभोग में मन को उत्प्रेरित करता है? कौन है यह, जो दम्पति युगल में गुणों का सचार करता है? किसके बल से कठ से बाली फूटा करती है? किसने हम सब को सुनने को कान और देखने को आँखें दी हैं? कौन वाणी की भी वाणी है? कौन प्राणों को भी धारण करनेवाला प्राणरूप है? कौन इन नयनों को ज्योति प्रदान करनेवाला नयनस्वरूप है? कौन इन भिन्न-भिन्न कोटिरूपों में दृश्यमान हो रहा है? किसका प्रताप इस सृष्टि के रूप में विकास पाकर फिर उसी म सिमट जा रहा है? साधो! वह एक ही है बस एक! उसीका ज्ञान चक्षुओं से दर्शन पाकर इस भौतिक जीवन से—आवागमन के बधन से—छुटकारा पाया जा सकता है?

[४३]

सन्दर्भ—विश्व प्रांगण में प्रेयसी जीवात्मा और प्रियतम ब्रह्म का सद्भाव

सतगुरु पियवा हो, हमर सुन्नर वर गंगा जमुनमा के धार हे।
अहे सुरत के डोरिया गगन बीचे लागल, लागल पिया से सनेह हे।
अहे मन मोर रसलन पिया रंगरसिया हे पूरुब जनमिया के नेह हे।
एक सखि पूछ हइ पिया के सनेहिया हे दोसर रे पूछई सतभाव हे।
कउन रंग हयुन तोहर पियवा हे सखिया सचेसच देहु न बताइ हे।
जे सखी रमलइ से ही बतलावे दोसर जानइ न भेद हे।
अनरूप हइ सखि हम पिया के मनरूप हइ पिया के रंग हे।
हम आउर पिया रहली लाली पलँगिया पुरुब जनम के नेह हे।
जब जब अहे सखी आलस आवइ तब पिया देथीन जगाइ हे।

टिप्पणी—सत्यरूप वह विश्वगुरु ही मेरा प्रियतम है। वह गंगा यमुना की धार की नाईं पावन एवं स्नेह-भरा है। उसके सौन्दर्य की किरणें रेशमी डोरों की नाईं आकाश की छाया में भूल रही हैं और मुझ (जीवात्मा) को उनके साथ एक बंधन में बाँधे हैं। वह मुझे बहुत मानता है। उससे मेरा जनम-जनम का नाता है। वह मुझे कभी नहीं भूलता। मेरे मान की सदा रक्षा करता है। मेरी सखियाँ (अन्य जीवात्माएँ) उसके बारे में जानना चाहती हैं। एक सखी पूछती है—आली! तुम्हारा प्रियतम तुमसे स्नेह करता है या नहीं! दूसरी सखी पूछती है—आली! वह कैसे विचार रखता है? कैसा है उसका रूप-रंग? देखो *सच-सच बताना।* पर मैं क्या बताऊँ? कैसे बताऊँ? अरे, उसके बारे में तो वही बता सकती है, जिसने उसके साथ खूब घुलमिलकर संयोग किया हो। भला, दूसरे को क्या पता! हे सखी! मेरे प्रियतम का स्वरूप अनिर्वचनीय है और उसका वर्ण! वह तो अपने मन में जैसा सोच लो फिर वैसा ही नजर आता है। मैं अपने प्रियतम के साथ लाल रंग के पलंग (अनुराग और मोहमयी सृष्टि पर कहा गया रूपक) पर रास करती रही। आखिर हमारा जनम जनम का नाता जो ठहरा। सखी जब-जब मैं अलसा जाती हूँ (माया के पाश में बँध जाती हूँ) तब-तब मेरा प्रियतम मुझे जगा दिया करता है (अन्तःकरण से प्रबोध करता है)।

७. विविध गीत

झूमर

(४४)

सन्दर्भ—विरहिणी की विषम वेदना

पीतर के कला पुरुनिया डोले, अब पिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥१॥

माँगो के टिकवा सेहु भला तेजम, पिया नहिं तेजम हे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥
पीपर के पतवा फुलुगिया डोले, अब जिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥२॥
नाको के नथिया सेहु भला तेजम, पिया नहिं तेजम रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥
पीपर के पतवा फुलुगिया डोले, अब जिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी के प्राण पीपल के पत्ते की नाईं काँप रहे हैं। भला प्रिय के सम्मुख तुच्छ आभूषणों का क्या मोल! वह मगटीका तज सकती है। नाक का आभूषण भी त्याग सकती है। पर प्रियतम को कैसे तजे! प्रिय के बिना तो अब विरहिणी के दिन भी नहीं कट रहे हैं।

झूमर पूर्वी

(५५)

सन्दर्भ—आभूषण खोने पर गोरी की आशंका

तिसिया के तेलवा में मथवा बथौली राम,
लटियाइए गेलइ ना।
हम्मर लाबी लाबी केसिया, लटियाइए गेलइ ना ॥१॥
माथा मैंजे गेलि रामा, बाबा के पोखरिया,
भुलाइए गेलइ ना।
हमरा नाक के बेसरिया, भुलाइए गेलइ ना ॥२॥
गोड़ लागी, पैंया पडूँ, भैया हो मलहवा,
से खोजिए देहु ना।
हमरा नाक के बेसरिया, से खोजिए देहु ना ॥३॥
हमरा खोजिये नाहिं लैबऽ मलहा,
से रिसियाइए जइहें ना।
हम्मर ननदो के भइया, रिसियाइए जइहें ना ॥४॥

टिप्पणी—नायिका अपने लम्बे-लटियाये केशो को धोने बाबा के पोखरे पर गई क्या कि सौभाग्य चिह्न नकबेसर ही खो बैठी। फिर प्रिय प्रेम के भरोसे दिन काटने वाली वह शंकाकुल क्यो न हो! पारिवारिक जीवन में सोना खोना—यों ही अशुभ है, उस पर भी नकबेसर का खोना—जो सौन्दर्य और सौभाग्य का प्रतीक है! वह सब सह सकती है, पर प्रिय की रीस नहीं। मामी नकबेसर खोज कर उसे आशंका-मुक्त कर दे, तो कितना उपकार हो!

झूमर

[४६]

सन्दर्भ—परदेश जाते पति द्वारा पत्नी का मनुहार

भोर भेलइ हे पिया भिनसरवा भेलइ हे,
उठु न पलगिया से कोइलिया बोलइ ना ॥१॥

कोइलिया बोलइ गे धनिया कोइलिया बोलइ ना,
देहि ना पगड़िया हम कलकतवा जैबइ ना ॥२॥

कलकतवा जैबऽ हो पिया, कलकतवा जैबऽ ना,
बाबा के बोला के हम नैहरवा जैबइ ना ॥३॥

नैहरवा जैबऽ हे धनिया नैहरवा जैबऽ ना,
हमरा लग्गल हइ रुपइया, चुका के जैहऽ ना ॥४॥

चुकाइ देबइ हो पिया, चुकाइये देबइ ना,
जैसन बाबा घर के हलिअइ ओयसन बनाइ देहु ना ॥५॥

बनाय देबउ गे धनिया बनाइए देबउ ना,
मोतीचुर के लड्डुआ खिलाइए देबउ ना ॥६॥

हम नहिए बनबइ हो पिया, हम नहिए बनबइ हो,
जैसन बाबा घर के हलिअइ, ओयसन नहिए बनबइ ना ॥७॥

टिप्पणी—भोर-भिनसार की मनोहर वेला! उस पर कोयल की मीठी सुरीली रागिनी! ऐसे मधुर काल में निष्ठुर प्रिय की विदेश-यात्रा प्रिया को रूष्ट कर दे, तो अचरज क्या! पति परदेश जायेगा, तो मानिनी नैहर जायेगी। रूठी पत्नी को चिढ़ाते हुए पति ने कहा—नैहर जानी हो सही, पर अपने पर खर्च किये हुए रुपये लौटाती जाना। मानिनी ने चुकता जवाब दिया—हाँ, हाँ चुका कर जाऊँगी, पर तुम्हें भी मेरा कौमार्य लौटा देना होगा। निरुत्तर पति ने मनुहार किया—हाँ, लौटा दूँगा और मोतीचूर के लड्डू खिला कर तुम्हें मना भी लूँगा। प्रिया ने कहा—यह सब ठीक है पर नैहर से जैसी आई थी, वैसी कभी न बना सकोगे, प्रिय!

झूमर

[४७]

सन्दर्भ—नन्दोसी की उपेक्षा पर भावज की आकुलता

सोने के झाड़ी, गंगा जल पानी, गेड़वा न धोवे ननदोइया,
चलनु अगनइया में सो रहल जी।
आवे लहर जमुना के चलनु अगनइया में सो रहल जी ॥१॥

सोने के थाली मे मेवा-मखाना, जेवना न जेमें ननदोइया,
बलमु अगनइया में सो रहल जी।
आवे लहर जमुना के बलमु अगनइया में सो रहल जी ॥२॥
लौंग इलायची के बिरवा लगाया, बिरवा न चाभे ननदोइया,
बलमु अगनइया मे सो रहल जी।
आवे लहर जमुना के बलमु अगनइया में सो रहल जी ॥३॥
फूल नेवार सुख सेज बनाया, सेजिया न सोवे ननदोइया,
बलमु अगनइया में सो रहल जी ॥४॥

टिप्पणी—चिन्ताकुल सरहज अपने पति की गहरी नींद से क्षुब्ध हो रही है। उसका नन्दोई बड़ा मानी है। उसने सोने की झारी में गंगा जल दिया, पर वह पैर नहीं धोता। *स्वर्ण थाल में मेवा मिष्ठान परोसा, पर खाता नहीं। लौंग इलायची का बीड़ा लगाया,* पर वह पान नहीं चबाता। इतना ही नहीं फूल नेवार की सुख सेज लगायी, पर वह सोता तक नहीं। उस पर उसका पति सुख नींद में पड़ा है।

झूमर

[५८]

सन्दर्भ—देवर-भाभी का हास-परिहास

रैलों में बामी भनवा बेनिया डोलाय लाल,
गुतलों में मुनहर[1] घरवा बेड़वा लगाय लाल ॥१॥
रैलों में पाकल पनमा, बिरवा लगाय लाल,
दाँत मोमे हीरा मोती देवरा लोभाय लाल ॥२॥
खिरकी के ओते[2] देओरा मारे निसान लाल,
बाबा कचहरिया हम तो देबो बधाय लाल ॥३॥
जब तोहि एहे भौजो देबऽ बधाय लाल,
गोमल[3] पैसवा हम देवो लुटाय लाल ॥४॥

टिप्पणी—भावज ने भोजन कर पान का बीड़ा मुँह में रखा। वह घर में सोने चली गई। पान की लाली में उसके सफेद दाँत हीरा मोती से चमक रहे थे। उसका देवर ललचायी नज़रों से उसकी शोभा निरखने लगा। भाभी ने कहा—ओ देवर! यों न देखो, बाबा की कचहरी में मुजरिम बना कर खड़ा कर दूँगी। शोख देवर ने कहा—तो मैं छिपा धन लुटा कर बच लूँगा। चिन्ता न करो मेरी सुन्दर भाभी!

१. बड़ा। २ ओट। ३ छिपा हुआ।

झूमर

[५६]

सन्दर्भ—वधू की लालसा

सइयाँ न भेजे तरकारी, हमार मन कटहर पर ॥टेक॥
कहते सुनते सइयाँ भेजे तरकारी, सासु न काटे तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ १ ॥
कहते सुनते सासु काटे तरकारी, गोतिनी न छौंक तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ २ ॥
कहते सुनते गोतिनी छौंके तरकारी, ननदी न पीसे मसाला,
हमार मन कटहर पर ॥ ३ ॥
कहते सुनते ननदी पीसे मसाला, गोतिनी जे जारे तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ ४ ॥
देबो गंगा मइया इयरी पियरिया, सासू के ले जा दहाइ,
हमार मन कटहर पर ॥ ५ ॥
देबो गंगा मइया ठेकुआ कसरवा, गोतिनी से कर दऽ जुदाती,
हमार मन कटहर पर ॥ ६ ॥
देबउ रे चोरवा दुनो कान सोनमा, ननदी के ले जो चोराई,
हमार मन कटहर पर ॥ ७ ॥

टिप्पणी—वधू ससुराल में अपनी लालसा कैसे व्यक्त करे। कब से उसका मन कटहल पर अँटका है, पर उसका स्वामी लाता नहीं। बहुत प्रार्थना करने पर वह लाया भी, तो सास काटती नहीं, गोतिनी छौंकती नहीं, ननद मसाला पीसती नहीं। प्रार्थना करने पर जब यह सब हुआ, तो गोतिनी तरकारी ही जला बैठी। अब तो उसका गंगा मैया से निवेदन है कि सास को अपनी गोद में समेट लें और गोतिनी से जुदाई करा दें। ननद को यदि चोर ले जाये, तो दहेज में वह सोना भी दे दे।

बिरहा

[६०]

सन्दर्भ—नववधू की अन्तर्व्यथा

पिया पिया रटि के पियर भेलइ देहिया,
लोगवा कहइ कि पांडु रोग।
गौंआ के लोगवा मरमियों न जानइ,
भेलइ न गवना मोर॥

टिप्पणी—हल्दिर की भाँति पीली रट कर नववधू पीली पड़ गई, तो लोग पांडु रोग कहते। क्यों नहीं वे उसकी मर्म व्यथा समझते कि वह प्रिय मिलन के लिए आतुर है।

बिरहा

[६१]

सन्दर्भ—नैसर्गिक प्रेम

नन्हँपन से भौजी लगलइ पिरितिया,
टूट के बोलल तो नहिं जाये।
हमरा तोहरा छुटतइ पिरितिया कब भौजी,
कि दुइ में एक तो मरि जाये॥

टिप्पणी—बालपन की प्रीत टूटे तो कैसे! मुख से कठोर वचन निकले तो किस प्रकार! इस नैसर्गिक प्रेम को तो केवल काल ही विच्छिन्न कर सकता है, जगत् नहीं!

बिरहा

[६२]

सन्दर्भ—परिवर्तन

आज पवनसुत अगना न बहारलन,
इन्दर जल न भरे जाये।
लछमी सरसती धान न कूटे,
रानी मदोदर रोये॥

टिप्पणी—आज रावण का प्रताप न रहा, तो रानी मदोदरी को कौन पूछे! अब न पवनसुत आँगन बहारते हैं, न इन्द्र पानी भरते हैं और न लक्ष्मी-सरस्वती धान कूटती हैं। इस दुर्दिन पर रानी मंदोदरी रो रही है।

बिरहा

[६३]

सन्दर्भ—प्रभात-पूजन

भोरवा पहर हइ धरम के बेलवा,
सखी सब करइ गंगा असनान।
मिसिया से जल महादे पर चढ़ौलन,
सखियन सब माँगे बरदान॥

टिप्पणी—प्रभात की मंगल बेला में सब सखियाँ गंगा स्नान कर धर्म कमा रही हैं। कल्याणमूर्ति शिव पर जल चढ़ा कर वे वरदान माँग रही हैं।

बिरहा

[६४]

सन्दर्भ—मांझी का दुर्भाग्य

उमड़ते आवे बूढ़ी तो गंगा मइया,
बढ़ते में आवइ कछार।
रोवते में आवइ मलहवा के छोकड़ा,
नैया डूबल बीचे धार॥

टिप्पणी—गंगा में बाढ़ क्या आई कि मांझी-पुत्र का भाग्य ही लुट गया। उसकी एकमात्र पूँजी नाव गंगा के गर्भ में समा गई। अपने दुर्भाग्य पर वह आँसू बरसा रहा है।

बिरहा

[६५]

सन्दर्भ—सत्य पालन का माहात्म्य

मिट्टी पुजला से भाई देवता न मिलिहैं,
पत्थल पुजला से न भगवान।
मक्का जाइ खोदा नहिं मिलिहैं,
पक्का रखाऽ ईमान॥

टिप्पणी—मिट्टी पूजने से देवता नहीं मिलते और न पत्थर पूजने से भगवान मिलते हैं। मक्का जाने से खुदा भी नहीं मिल सकते। ईमान पक्का रखने से सारी सिद्धियाँ मिलती हैं।

बिरहा

[६६]

सन्दर्भ—कार्य कारण के संबंध की अनिवार्यता

बिन बदरा के भाइ बरखा न बरसइ,
बिना सुरुज के न उगइ घाम।
बिन पुरुषा के लड़िका भेलइ,
देखेला मागइ तो भगवान॥

टिप्पणी—बिना बादल के वर्षा नहीं और बिना सूर्य के धूप नहीं। यदि बिना पुरुष के बालक उत्पन्न हो तो इसके सत्यासत्य का निर्णय तो भगवान ही कर सकते हैं।

बिरहा

[६७]

सन्दर्भ—वन्ध्या की सन्तान कामना

चिड़ियाँ बिआए चिरमुनियाँ,
गंगा मइया तो बिआये रेत।
उरहुर के फुलवा चढ़ैवइ देवी मइया
बाझि के अँचरवा देव॥

टिप्पणी—सृष्टि में प्रजनन की आकांक्षा स्वाभाविक है। चिड़िया बच्चे उत्पन्न करके चहकती है। गंगा रेत उत्पन्न करके हर्ष अनुभव करती है। फिर इस बन्ध्या को ही अभिशाप क्यों! यदि उसकी भी गोद भर जाये, तो वह उरहुर के फूल देवी मइया पर चढ़ा कर कृतज्ञता व्यक्त करेगी।

कजरी

[६८]

सन्दर्भ—प्रोषित पतिका को आश्वासन

हिंडोलवा लागल हइ कदमवाँ भौजी चलहु झूले ना।
पियवा सावन में बिदेसवा ननदो हिंडोलवा भावे ना॥१॥
आवइ पानी के छिटकवा, भौजी जियरा हुलसे ना।
मनमा कुहुके हे ननदिया, सैंया पतिया भेजे ना॥२॥
लागइ सावन के कुहरवा भौजी, पपीहा बोलइ ना।
बुंदवा लागइ मोरा तनमा, जिया मोरा झुलसइ ना॥३॥
अगहन के महिनमा भौजी मोर भइया अइहें ना।
फिरी फिरी बहऽ हइ रे पवनमा भौजी चलहु—झूले ना॥४॥

टिप्पणी—ननद हिंडोले पर झूल रही है और भावज चिन्ता के दोले पर! फिर फिर बहती हवा और सावन की सुखद फुहारें ननद के हृदय में उल्लास भर रही हैं और भावज के हृदय में सिहरन! विरहिणी भावज को ननद रह-रह कर आश्वासन दे रही है।

कजरी

[६९]

सन्दर्भ—विरहणी की मनोवेदना

रामा गरजइ कारा बदरवा, झर झर मेहा बरसइ ना।
रामा बन में बोलइ कोइलिया, मोरा मनवा तरसइ ना॥१॥

रामा पापी पपीहा बोलई, मोरा जियरा डोलइ ना।
रामा भींजइ मोर चुंदरिया, बदरा झमझम बरसइ ना ॥२॥
रामा चमचम चमकइ बिजुलिया, मेरा मनवा डरपइ ना।
रामा सनसन चलइ पवनमा, मोरा तनमा काँपइ ना ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी, काले बादलों का गरजना और मेहा की झम झम वर्षा से काँप काँप उठती है। कोयल अपने पंचम स्वर से उसके मन में कामना जगा रही है। पपीहा की 'पी—कहाँ' का रट उसके हृदय को विकल कर रही है। बिजली की चमक उसे डरपा रही है। सनसन बहता पवन उसके तन में सिरहन पैदा कर रहा है।

गोदना

[७०]

सन्दर्भ—सौभाग्यवती का शृंगार गोदना

पटना सहरिया से चललइ गोदहारिन,
कोइ सामर गोदना रे गोदाय ॥१॥
गलिये रे गलिये रेविया अलापै,
कौनि सावर गोदना रे गोदाय ॥२॥
अप्पन महलिया से निकलइ सुंदरिया,
हम सामर गोदना रे गोदाम ॥३॥
अपना महलिया से ऐलन तिरियवा,
विहँसि सासु बोले, पुतहु गोदना रे गोदाव ॥४॥
नहि हम सासु गोदना रे गोदाम,
छोटकी ननदिया ओलखन दीहें रे जान ॥५॥
नहिरा गोदैवइ सासु, बनवइ सोहागिन,
तोरे रे घरवा बालक खेलैवइ रे जान ॥६॥

टिप्पणी—पटने की प्रसिद्ध गोदने वाली गली-गली राग अलाप रही है। सास की आकांक्षा है कि वधू गोदना गोदा ले। पर वधू गोदाय त कैसे! छोटी ननद पीछे जो लगी है! अत वह मायके में गोदना गोदा कर सोहागिन बनेगी, क्योंकि वहाँ ननद के उलाहने का भय न होगा।

लहचारी[१]

[७१]

सन्दर्भ— भावज का देवर से अनुराग

छोटी-मोटी कुइयाँ, पताल बसे पनियाँ।
मोर देवरवा हो, जरी डोरिया टऽ बढ़ाय ॥१॥

---

१ नृत्यगीत।

पनियाँ के भरल हम गगरिया जे रखली।
मोर देवरवा हो, सिर पर गगरिया दऽ उठाय ॥२॥
सिरवा पर ले ली हम, पानी के गगरिया।
मोर देवरवा हो, हाथ मे डोरिया दऽ थमाय ॥३॥
हथवा मे ले ली हम उबहन डोलवा।
मोर देवरवा हो, गोग घरवा दऽ पहुँचाय ॥४॥
घरवा पर गेलन मोरा लहुरा देवरवा।
मोर देवरवा हो, तनि गगरिया दऽ उतार ॥५॥

टिप्पणी—अनुरक्त भाभी ने कहा—'प्रिय देवर पानी भरना है, रस्सी ता दो। अब घड़ा भर गया, जरा सिर पर उठा देना। फिर में राह मे अकेले कैसे जाऊँगी, घर पहुँचा दो।' प्यारा देवर घर पहुँचाने गया तो भाभी उससे घड़ा उतारने का आग्रह करती है। इस तरह वह देवर के प्रति अनुराग व्यजित कर रही है।

८. बालगीत

लोरी

[७२]

चान[१] मामू, चान मामू हँसुआ दऽ।
से हँसुआ काहे ला ? खरइ कटावे ला॥
से खरइ काहे ला ? बगना छवावे ला।
से बगना काहे ला ? गोरुआ दुरावे ला॥
से गोरुआ काहे ला ? चोतवा पुरावे ला।
से चोतवा काहे ला ? अगना निपावे ला॥
से अगना काहे ला ? गेहुमाँ सुखावे ला।
से गेहुमा काहे ला ? मैदा पिसावे ला॥
से मैदा काहे ला ? पुरिया पकावे ला।
से पुरिया काहे ला ? भउजी के खाये ला॥
से भउजी काहे ला ? बटवा बियाये ला।
से बेटवा काहे ला ? गुल्ली टार खेले ला॥
गुल्ली टार टूट गेल, बउआ रूस गेल॥

टिप्पणी—यह लोरी है। छेड़ियाये (रोते) बालक को सुलाने की चेष्टा के साथ माताएँ इस गीत को गाती हैं। शिशु को सुलाने के लिये उसे कधे पर लेकर माँ आँगन और दालान में घूमती जाती है और माथे तथा पीठ पर दुलार-भरी थपकियाँ देती जाती

---

१ चदा।

है। समस्त क्रिया के साथ माँ मधुर स्वर में गीत की पंक्तियाँ गाती जाती है। चंदा मामा से हँसुआ माँगने के बहाने बालक जीवन की अनेक वस्तुओं के नाम और उनके उपयोग सीख लेता है।

[७३]

बउरा रे तूँ कथी के? कँकरी के हुसा[1] के।
चोआ चनन के पुरिया के, मइया हउ लवंगिया[2] के,
बाबू जी जफरवा[3] के, फूआ हउ इलइचिया के,
आजी आजी अम्मर के, पितिया पितम्मर के,
पत पितिअइनिया तम्मा[4] के, हम खेलौनिया सोना के॥

टिप्पणी—शिशु की प्यारी परिचारिका इस प्यारे गीत से अपने नन्हे मुन्ने में अपने प्रति आस्था ही नहीं भर लेती, बल्कि उसे सुला भी देती है। उसकी मधुर थपकियाँ, कोमल कंठ और प्यारी गोद शिशु को आनन्द निमग्न कर देती है। क्रमशः बालक की पलकें झपने लगती हैं, और फिर वह पूर्णतया निद्रा देवी की गोद में चला जाता है।

[७४]

आरे आवऽ, बारे आवऽ, नदिया किछारे आवऽ।
सोना के कटोरी में, दुद्धा भत्ता ले ले आवऽ।
बउआ खाये दुध भतवा, चिड़इयाँ चाटे पतवा॥

टिप्पणी—यह बच्चों को खेलाने और सुलाने की प्यारी लोरी है।

[७५]

एक तरेगन, दू तरेगन, तरेगना मामू हो॥
अपने खैलऽभँगा मछरिया, हमरा देलऽकोर।
अब ना जैबो तोहरा दुहरिया, टप टप झरतो लोर।
एक तरेगन, दू तरेगन तरेगना मामू हो॥

टिप्पणी—चाँद-तारों से मामा का नाता जोड़ कर शिशु फूला नहीं समाता। माँ, शिशु के इस प्रेम भाव का उपयोग कर सदा उसे ठगती रही है। तरेगना मामू से मीठी कलह करते-करते वह सुखद स्वप्न-लोक में चला जाता है।

[७६]

आओ गे खुदबुदा चिरइयाँ, अड़ा पार-पार जो।
तोरे अड़े आग लगउ, बउआ सुतौलै जो॥
आधा रोटी रोज देबउ टिक्री महिन्ना॥
आओ गे खुदबुदी चिरइयाँ अड़ा पार-पार जो॥

टिप्पणी—शिशु प्रकृति के जीव जन्तुओं से प्रेम और सेवा लेना मानो अपना अधिकार ही समझता है। इसीसे खुदबुदी चिड़िया की प्यारी चाकरी उसे बड़ी मीठी नींद से भर देती है।

मनोरंजन गीत

[७७]

अटकन मटकन दही चटाकन
बड़ फूले बरैला फूले, सावन मास करैला फूले,
बाबा जी के बारी है, फूले के फुलवारी है,
हे बेटी तूँ गंगे जाव, गंगे से कसैली लाव,
पक्के पक्के हम खाऊँ, कच्चे कच्चे नेउर, †
नेउर गेल चोरी, बसुला कटोरी,
घर शान ममोरी।

टिप्पणी—इस गीत को बच्चे खेलते हुए गाते हैं। प्राय पाँच छ बच्चे वृत्ताकार बैठ जाते हैं और अपनी हथेलियाँ जमीन पर पट करके बिछाते हैं। उनमें से एक खिलाड़ी तर्जनी से अपनी हथेली का स्पर्श करते हुए इस गीत को प्रारंभ करता है और प्रत्येक शब्द के उच्चारण के साथ शेष खेलाड़ियों में से हरएक को हथेली छूता चला जाता है। जिस लड़के की हथेली पर गीत का अन्तिम शब्द समाप्त होता है, उसे खेल से पृथक कर दिया जाता है। खेल के अन्त में जो खेलाड़ी बच जाता है, वही विजेता होता है।

[७८]

तार काटे, तरकुन काटे, काटे रे, बरखाजा
हाथी पर के घुघरू चमक चले राजा॥
राजा के रजइया है, मइया के दोलइया,
हीँच मारो, पाँच मारो, मुसरि छपट्टा॥

टिप्पणी—बालक अपने एक खेल विशेष में इस गीत को गाते हैं। इस खेल मे पाँच,-छ बालक खुली जगह में बैठ जाते हैं। उनमें मोर (प्रधान) खिलाड़ी अपनी टाँग पसार कर अँगूठों को सीधा खड़ा करता है। इसके बाद अन्य बालक, उसके अँगूठे पर हाथ की मुट्ठियों को अँगूठा ऊँचा करके रखते जाते हैं। जब सब बालक इस प्रकार मुट्ठी रख लेते हैं, तब अन्त में मोर खिलाड़ी अपनी मुट्ठी बाँध कर सबसे ऊपर रखता है। फिर अपने दूसरे हाथ की हथेली को तलवार बनाता है। वह इस गीत की पंक्तियों को गाता जाता है और हथेली की तलवार की धार से सभी खेलाड़ियों की रखी हुई मुट्ठी पर एक के बाद एक मे मार कर काटता जाता है।

---

† कहीं-कहीं निम्नांकित पाठ भी मिलता है—
पक्के-पक्के हम खाऊँ, कच्चे कच्चे तूँ खा,
उठ बेटी कटोरिया।

[७६]

घुघुआ मनेरिया, अरवा चाउ के ढेरिया,
बउआ खाये दुध-भतवा, बिलइया चाटे पतवा,
पतवा उडियाल जाये, बिलइया रगेदले जाये,
नया भित्ति उठल जाये, पुरान भित्ति टहल जाये,
देख गे बुढ़िया माई, बरतन जल्दी से हटाओ।
तेल में गिरबऽ कि घीउ में?
फूल में गिरबऽ कि काँटा में?

टिप्पणी—बच्चों को मन बहलाने के लिये बड़े इस गीत को गाते हैं। पहले वे चित्त लेट जाते हैं। फिर अपने पैरों को वे चुक्के-मुक्के बैठने की दशा में मोड़ लेते हैं और अपने दोनों जुड़े पंजों पर बच्चे को बैठने का इशारा करते हैं। बच्चे के बैठने के साथ ही वे गीत शुरू करते हैं और गीत की प्रत्येक अर्धाली (जैसे 'घुघुआ मनेरिया') के साथ ही एक पेंग पूरा हो जाता है। गीत की अंतिम पंक्ति प्रश्नवाचक होती है। प्रश्न करने के पहले वह बालक को बता देता है कि इस ओर तेल है, उस ओर घी या इस ओर काँटा है, उस ओर फूल। बालक घी और फूल की दिशा में गिरने की इच्छा प्रकट कर अपनी विजय मानता है। और उस दिशा में गिरने पर खुशी से फूल उठता है।

पहाड़ा गीत

[८०]

गन फकीरा राम, तो रामजी के नाम।
गन फकीरा दू, तो दूजे के चाद।
,, ,, तीन, ,, तीनों तिरलोक।
,, ,, चार, ,, चारो पहर।
,, ,, पाँच, ,, पाँचो पाडव।
,, ,, छओ, ,, छओ के छट्ठी।
,, ,, सात, ,, सातो दीप।
,, ,, आठ, ,, आठो भुजा।
,, ,, नओ, ,, नवो नौरतन।
,, ,, दस, ,, दसो दिशा।
,, ,, इगारह, ,, इगारहो एकादसी।
,, ,, बारह, ,, बारहो बरगी।

टिप्पणी--गिनती प्रारंभ करने वाले बच्चों को सिखाने के लिये यह एक सुन्दर साधन है। एक ओर इसके माध्यम से बच्चे जहाँ गिनती सीखते है, वहीं राम, पाडव, त्रिलोक आदि शब्दों से भी परिचित होते जाते हैं। कहने की अपेक्षा नहीं कि ये शब्द बच्चों में सास्कृतिक सस्कार जगाने में पूरा योगदान करते है।

[८१]

आबिला आबिला, तबला बजाबिला।
तबला में पैसा, लाल बगइचा।
लाल बगइचा, लाल बगइचा ॥

टिप्पणी— कबड्डी के खेल में एक दल का खिलाड़ी हद्दे (Post line) को पार कर, विरोधी दल में इन पंक्तियों को बिना सास तोड़े ध्वनित करता हुआ घुस जाता है और उसके खेलाड़ियों को स्पर्श करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार यदि बिना पकड़ाये हुए वह अपने किले में लौट आता है, तो वह विजयी होता है। विरोधी दल में वह जिस-जिस का स्पर्श कर लेता है, वह स्पर्शगत खिलाड़ी मरा हुआ समझा जाता है। यदि यह खुद विरोधी दल में पकड़ा जाता है और उसकी साँस टूट जाती है, तो वह खुद ही मर जाता है।

चकचन्दा[१] के गीत

[८२]

सोने के कटोरी में लड्डू भरल भाई लड्डू भरल ॥
उठS गनेस जी भोजन करS
भोजन करके दीहS असीस,
'जियो रे चटिया लाख बरीस ॥' १ ॥

---

१ भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को 'गणेश-चतुर्थी' की सज्ञा दी जाती है, क्योंकि इसी दिन गणेशजी का जन्म हुआ था। गणेश जी देवताओं के नायक माने जाते है, इसलिए सभी मागलिक कार्यों के आरभ में गणेश-पूजा की जाती है। गणेश चतुर्थी के दिन अभी भी पाठशालाओं में धूमधाम से गणेशजी की पूजा होती है। पूर्वोत्तरान्त पाठशाला के छात्रगण विशिष्ट गान के साथ 'गुल्ली डंडा' का खेल खेलते हैं। ये खेलते हुए, गुरु जी के साथ प्रत्येक छात्र के घर जा जाकर गुरु-दक्षिणा में भिन्न भिन्न वस्तु उपलब्ध करते हैं। इस उत्सव को लोकभाषा में 'चकचन्दा' और उस अवसर पर गाये जाने वाले गीत को 'चकचन्दा के गीत' कहते हैं।

'गुल्ली डंडा' एक खेल भी होता है, पर यहाँ उससे तात्पर्य नहीं। इस उत्सव में वस्तुत दो छोटे एव रग-बिरगे डडे होते हैं, गुल्ली नहीं। गुरु के साथ चकचन्दा में निकले शिष्य अपने दोनों डडों को इस प्रकार टकराते चलते हैं कि समरसता के कारण एक मधुर सगीत की सृष्टि हो जाती है।

लाख लूप दू टाट मगौली,
दिल्ली से गजमोट मगौली,
तूँ रे दिलिया आली कोस
मार बहादुर पहेला चोट ॥ २ ॥
पहेला चोट के आदम साँ
आदम साँ चलावे तीर,
नौ सै डटा छौ सै तीर ॥३॥
एक तीर हम माँग ले ली
सिरी गनेस जी के नाम ले ली ॥४॥

टिप्पणी—चकचन्दा के नायक गणेशजी की प्रशस्ति से यह गीत आरम होता है। बालक इसी से इस दिन 'गुल्ली डण्' का खेल आरभ करते हैं।

[८३]

भादो चौठ गनेश जी आये, सब लइकन के डट पुजाये।
डटा है सिरमौना, माय बाप के औला।
माय बाप है दियो असीन, जियो रे चटिया लाख बरीस।
लाख लूप दू टाट मगौली, दिल्ली से गजमोट मगौली।[1]

टिप्पणी—यह गीत भी गणेश-प्रशस्ति से ही प्रारभ होता है।

[८४]

सिरी सरसत्ती[2] सिरी सरसत्ती,
माथे सोभे बेल के पत्ती॥
सुनऽ सुनऽ नउआ के माय,
तोर द्वार पर गुरु जी आये॥
सगे साथे चटियन[3] आये,
गुरु जी उनसे डट पुजाय॥
डटा है सिर मौला,
माय बाप के औला[4]॥

टिप्पणी—इस गीत में सरस्वती का भी स्मरण किया जाता है।

---

१ इस गीत का शेषांश गीत सख्या ८३, की पाँचवीं पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक चलने वाले गीतांश के समान हैं। २ सरस्वती। ३ शिष्य। ४ इस गीत का शेषांश गीत संख्या की दूसरी पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक चलने वाले गीतांश के समान है।

[८५]

खेलते खुलते लोहा पैली । से लोहा लोहार के देली ॥
लोहार बनैलन पाँच हँसुआ । मीर [1] लेलक मीर हँसुआ ।
इयार लेलक तीन हँसुआ । हम ले ली पसुल्यि [2] ॥१॥
चलऽ इयारो घास गढ़े । मीर गढ़लन मीर बोझा ।
यार गढ़लन तीन बोझा । हम गढ़ली अधबोझिये ॥२॥
चलऽ इयारो घास बेचे । मीर बेचलन मीर रुपैया ।
यार बेचलन तीन रुपैया । हम बेचली अठनिये ॥३॥
चलऽ इयारों घोड़ा खरीदे । मीर खरीदलन मीर घोड़ा ।
यार खरीदलन तीन घोड़ा । हम खरीदली बछड़िये ॥४॥
चलऽ इयारों घोड़ा दोड़ावे । मीर दौड़ैलन मीर कोस ।
यार दौड़ैलन तीन कोस । हम दौड़ैली अधकोसिये ॥५॥
चल यारो पानी पिलावे । मीर पिऔलन मीर घाट ।
यार पिऔलन तीन घाट । हम पिऔली अधघटिये ॥६॥
चलऽ इयारों खूँटा गाड़े । मीर गड़लन मीर खूँटा ।
इयार गड़लन तीन खूँटा । हम गाड़ली अधखुँटिये ॥७॥
चलऽ इयारों घोड़ा बाँधे । मीर बाँधलन मीर घोड़ा ।
इयार बाँधलन तीन घोड़ा । हम बाँधली बछड़िये ॥८॥
चल इयारों आम खाये । मीर खैलन मीर आम ।
इयार खैलन तीन आम । हम खैली गुठलिये ॥९॥
मीर के मारलन मीर लाठी । इयार के मारलन तीन लाठी।
हमरा मारलन छकुनिये । गिर पड़ली पेटकुनिये ।
भागली ठेहुनिये । लुक गेली चुल्हनिये ॥१०॥

टिप्पणी :—यह चकचन्दा के अत्यन्त लोक-प्रिय गीतों में एक है। भावों की तारतम्य हीनता चकचन्दा माँगने के लिये जुटे लड़कों के उल्लास को व्यंजित करती है। गीत के अन्दर आनेवाली तुकान्त योजना देखने लायक है।

[८६]

एक टका के गेहूँ मगौली, चुनये कि न गे ?
मोर गोदी में बालक रोवे, चुनलो न जाय रे।

---

१. प्रधान। २. छोटा हँसुआ, जिससे पासी ताड़ छेवते हैं।

चुन चान के आगू देली, धोवबे कि न गे?
मोर गोदी म बालक रोवे, धोवलो न जाय रे।
धो धाके आगू देली, सुखैबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे सुखबलो न जाय रे।
सुखा उसा के आगे देली, पिसबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे, पिसलो न जाय रे।
पीस पास के आगू देली, पकैबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे, पकवलो न जाय रे।
पका उका के आगू देली, खैबे कि न गे?
मोर गोदी म बालक रोवे, खैलो न जाय रे।
ऊपर से मारली पाँच सटकी, गुटुर-गुटुर खाय रे॥

टिप्पणी —चकचन्दा के अवसर पर यह गीत गाया जाता है, यद्यपि इस गीत में वर्णित भावों का इस अवसर से सम्बन्ध नहीं दीखता।

[८७]

खेलते खेलते कौड़ा पैली, से कौड़ा गंगा दहैली [1]।
गंगा मइया बालू देलन, से बालू कनुनिया देली।
कनुनिया बेचारी फुम्हा[2] देलक, से फुम्हा घसगढ़वा देली।
घसगढ़वा बेचारा घास देलक, से घास के गइया देली।
गइया बेचारा दूध देलक, से दूध के बिल्ली पीलक।
बिल्ली हमरा चूहा देलक, से चूहा के चील्ह लेलक।
चील्ह बेचारा पत्त देलक, से पत्त के राजा लेलक।
राजा हमरा घोड़ा देलक, से घोड़ा पर मियाँ दुलार।
मियाँ दुलार के लंबी छूरी, थर थर काँपे जमुना पुरी।

टिप्पणी —चकचन्दा के अवसर पर बड़े प्रेम से बालक इस गीत को गाते हैं।

[८८]

बउआ आँग मुनाना भाई। बिनु दस बीस खोलल न जाये।
बउआ दौंरर मैना लेबो। बरस बीस पर फिन न ऐबो।
गुरु जी न देहु जाड़ा भाती। गुरु जी के देहु लाख रुपैया।

---
[1] बहाया। [2] भूजा।

गुरु जी के देहु जोड़ा जता। गुरु जी के देहु जोड़ा कुरता।
एता कठोर काहे भेलही गे मइया, सब लइकन मिल दुसनउ मइया।
बऊआ रोवे मइया मइया। तोरा जिउ में आबउ न मया।
बउआ रोवे बाजी[1] बाजी। गली क फिटकी चुनैलहीं मइया।
सब लइकन मिलि दुसनउ मइया। सब लइकन मिलि हँसतउ मइया।

× × ×

बउआ चढे घोड़ा, रुपैया निकले जोड़ा।
बउआ चढे टमटम, रुपैया निकले ठनठन।
बउआ चढे हाथी, रुपैया निकले पचासी।
बउआ चढे ऊँट, रुपैया निकले फूट।

टिप्पणी—शिष्य विशेष के घर पर गाये जाने वाले गीतों मे यह अन्तिम गीत है। इस गीत को प्रारंभ करने के पहले एक दूसरा शिष्य शिष्य विशेष (जिसके घर पर चकचन्दा गीत गाया जा रहा है।) की आँखें अपनी हथेलियों से मूँद लेता है। और वह दान माँगने के लिये अँजुली बाँध लेता है। इसी रूप में उसे परिवार के प्रधान व्यक्तियों के सामने लाया जाता है और इसके साथ ही गीत भी चलता रहता है। गीत के प्रथम खंड में दान माँगने का उपक्रम किया गया है एवं दूसरे खंड में दान प्राप्ति के उपरान्त आशीर्वाद देने का।

लोककथा गीत

१. चौहट+

[८९]

सन्दर्भ—सामन्तशाही के प्रतीक राजा की लावण्य लिप्सा से सतीत्व रक्षा के लिए चंपिया का प्राणोत्सर्ग

मिलहु सखिया सलेहर हे चंपिया,
अहे मिली जुली सैरो[2] निहैबइ हे न।

---

१ बाबू जी। २ सरोवर।

+ भादो मास में, वर्षा को आमंत्रित करने के लिए महिलाएँ चौहट गाती हैं। इस गान को वे झूमर की पद्धति से झूम झूम कर गाती हैं। खुले मैदान में महिलाओं का दो दल परस्पर एक दूसरे के सामने खड़ा होता है। चौहट गाता हुआ दोनों दल मैदान के मध्य में आकर एक दूसरे से मिलता है और फिर बिना पीठ फेरे ही उलटे कदम से अपनी जगह पर लौट जाता है। यही क्रिया बार-बार दुहराई जाती है।

सब सखिया मिली घर चलि ऐलइ,

अरे असगर[1] चपिया झाड़इ लामी केसिया हे न।

झर रे झरोखा चढ़ि राजा निरेखई,

अरे केकर तिरियवा झारे लामी केसिया हे न।

तुहूँ न जानहूँ राजा नरायण सिंह,

अरे गंगाराम बहिनिया झारे लामी केसिया हे न।

केने गेले किया भेले गामा चौकिदरवा,

गंगाराम के पकडी ले आवऽ हे न।

केने गेले किया भेले गंगाराम,

अरे राजा घरवा पड़लो हँकरिया[2] हे न।

बरहाँ बरिस राजा नगरिया बसौलन,

से कबहूँ न पड़लइ हँकरिया हे न।

किय राजा बान्धत, किय राजा मारत,

किय राजा नगरा छोड़ैतन हे न।

नहीं मारत राजा, नहीं राजा बान्धत,

अरे नहीं राजा नगरा छोड़ैतन हे न।

हथवा में लेलऽ गंगाराम रेड़ के छकुनिया,

अरे कंधे पर रहलइ चदरिया हे न।

जिउआ गंगाराम सोचइत चललन,

अहे चलि भेलन राजा के नगरिया हे न।

एक डेउढ़ी गेलन गंगाराम, दुई डेओढ़ी गेलन,

अरे पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हे न।

पहुँची गंगाराम राजा के नगरिया,

अहे झुकी झुकी करऽइइ सलमिया हे न।

आहु गंगाराम बैठु सतरंजिया,

अहे चपिया बहिनिया हमरा देहू हे न।

लेहुक गंगाराम गामा से मुलुकिया,

अहे चपिया बहिनिया हमरा देहु हे न।

गाँमा से मुलुकिया राजा तोरे घर बढउ,

से मोरे बसे चपिया न भेलउ हे न।

---

१. अकेली। २. लम्बी। ३. पुकार, बुलाहट।

केने गेले रिय भेले गाँमा चौकिदरवा,
अरे गंगाराम के मुसुक्‍ चढ़ाहु[1] हे न।
झर रे झरोखा चढ़ी भउजी निरेखइ,
अरे चपिया करनमें पिया मोरे बान्धल हे न।
आगी लगउ चपिया तोरे लामी केसिया,
अहे बजडा पडउ तोरे सुरतिया हे न।
लेहुक भउजी हे गोदी के बलकवा,
से हम जइबइ भइया छोड़ावन हे न।
पेन्हियो मे लेलक चपिया लहरा पटोरवा,
अरे करियो मे लेलक सोरहो सिंगरवा हे न।
एक कोस गेलइ चपिया, दुइ कोस गेलइ,
अरे पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हे न।
केने गेले क्रिय भेले गामा चौकिदरवा,
अरे गंगाराम के खोलू न मुसुकवा हे न।
सोरहो सिंगरवा कैले अपने से चपिया,
अहे चलल आवइ मोरा नगरिया हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
अरे भइया जोगे पाँचो टुक जोड़वा[2] हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
हमरा जोगे पटुरा[3] बेसहिया[4] हे न।
हँसी हँसी राजा हे पटुरा बेसहलन,
अरे रोई रोई चपिया पटुरा पेहनइ हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरा जोगे बतीसो गहनवा हे न।
हँसी हँसी राजा हे गहना बेसहलन,
अरे रोई-रोई चपिया गहना पेन्हइ हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरे जागे पुरबी सेन्दुरा हे न।
हँसी हँसी राजा हे सेनुरा बेसहलन,
अरे रोई रोई चपिया सेन्दुरा पेहनइ हे न।
जब तोहीं राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरा जोगे डोलिया फनहिया[5] हे न।

---

१. बाध कर बदी बना लो। २ वस्त्र। ३ लहगादि वस्त्र। ४ खरीदना। ५. चढाना।

हँसी हँसी राजा हे डोलिया फनौलन,
अरे रोई रोई चपिया डोलिया चढ़इ हे न।

एक कोस गेलें चपिया दुई कोस गेले,
अरे लगी गेलऊ मधुरी पियसवा हे न।

गोड़ तोरा पड़ियो अगला कहरवा,
अरे बाबा के पोखरवा डोली बिलमइहऽ[1] हे न।

चलूँ चलूँ चपिया रानी हमरो महलिया,
अरे सोने के गेड़वा पनिया पिबऽ हे न।

साने के गेड़आ राजा जनमो सनेहिया,
अरे बाबा पोखरवा जुलुम[2] होतइ हे न।

एक चुलू पीलक चपिया दुइ चुलू पीलक,
अरे तिसरे मे खिललइ पतलिया हे न।

मर रे झरोखा चढ़ी भउजी निरेखइ,
अरे मोरो चपिया दुनों कुलवा रखलक हे न।

बाबा कुल रखले चपिया भइया कुल रखले,
अरे राखी ले ले सामी के पगड़िया हे न।

हम तो जनइतियो चपिया एता बुध[3] रखबे,
अरे पदुरा पेन्हाई जतिया[4] लेतिअउ हे न।

टिप्पणी —सुन्दरी चपिया (चपा या चपिया) राजा नारायण सिंह के गाँव के जेठ रैयत गंगाराम की बहिन थी। एक दिन झरोखे पर अकेली बैठी चपिया अपने लंबे बालों को सवार रही थी कि राजा की आँखें उस पर अटक गईं। चपिया के अनुपम लावण्य पर वह दौलत न्योछावर कर सकता था। उसने गंगाराम से साग्रह चपिया को माँगा। पर वह अपनी कुल की मर्यादा बहिन को अर्पित कैसे करता। गंगाराम बंदी बना लिया गया।

झरोखे से अपने बंदी पति को देखकर चपिया की भौजी ने उसे प्रताड़ित किया—तेरी सूरत में आग लग जाये। तेरे रूप ने ही मेरे स्वामी को बंदी बनवाया है। स्वाभिमानभरी चंपा ने अपना कर्तव्य मन में स्थिर कर लिया। सोलहो शृंगार करके वह अनुपम सुन्दरी राजा के पास पहुँची। उसने कहा—राजा, मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। मेरे भाई को ससम्मान विदा करो। गंगाराम मुक्त कर दिये गये।

राजा के उल्लास की सीमा न थी। उसने हँस हँस कर चंपा का शृंगार किया और रो रो कर चंपा ने उसे धारण किया। डोली में चढ़कर वह राजा के महल चली। पथ में उसके बाबा का पोखरा था। उसने अगले कहार से प्रार्थना की—मुझे बड़ी प्यास लगी है। क्षण भर के लिये डोली

[1] ठहराना। [2] दुर्लभ। [3] चतुराई। [4] नारोत्व।

बिलमाना। राजा ने कहा—चंपा रानी, महल चलो। वहाँ सोने के भरुए में पानी पीना। कातर चंपा ने कहा—वह तो जीवन में स्नेह बन कर सदा उपलब्ध होगा। पर बाबा का पोखरा दुर्लभ हो जायगा। चंपा पोखरा के तट पर थी। पर क्या उसे जल की प्यास थी? उसके बंदी प्राण मुक्ति पाने के लिए विकल थे। उसका नारीत्व पाशविकता से मुक्ति पाने को आतुर था। एक चुल्लू। दो चुल्लू। तीसरे चुल्लू में तो उसके प्राण उस लोक में जा पहुँचे जहाँ किसी लोलुप की दृष्टि नहीं पहुँचती।

सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणों का उत्सर्ग करनेवाली चंपिया भारतीय आदर्शों की पुजारिनों के लिये सदा वंदनीया रहेगी।

चौहट

[६०]

सन्दर्भ—पिता के अन्धविश्वास के आवर्त्त में पुत्री का अवसान

एक ही राजा हे पोखरा खनौलन[1] हो राम,
अहो रामा पोखरा ही मागे दउलत बेटी हो राम।
केने गेले किय भेले गामा चौकीदरवा हो राम
अहो रामा बरहमन घरवा देहुँ न हँकरिया हो राम।
केने गेलऽ किया मेलऽ बरहमन हो राम,
अहो रामा राजा घर पड़लो हँकरिया हो राम।
किय राजा मारत किय राजा बान्धत हो राम,
अहो रामा किय नगरा छोड़उतन हो राम।
हथवा में लेलऽ बरहमन रेड़ के छेकुनिया हो राम,
अहो रामा कखवा पर पटली चदरिया, काँखा पोथिया हो राम।
एक डेउढ़ी गेलऽ बरहमन, दुइ डेउढी गेलऽ हो राम,
अहो रामा पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हो राम।
राजा के डेवुढ़िया[2] बराहमन पहुँचिय गेलन हो राम,
झुकी झुकी कर हइ सलमिया हो राम।
आव हूँ बरहमन से बैठऽ तूँ सतरजिया हो राम,
अहो रामा पोखरा के करहू न विचरवा हो राम।
नया पोथी खोलइ बरहमन पुराना पोथी हो राम,
अहो रामा पोखरा ही मागे दउलत बेटी हो राम।

---

१ खनाया। २ द्वार।

वेने गेले किया भेले गामा चौकीदरवा हो राम,
अहो रामा दउलत घरवा देहूँ न हकरिया हो राम।

झर रे झरोखा चढ़ी दऊलत देखइ हो राम,
अहो जैसे लगइ बाबा हजमा आवइ हो राम।

आबहूँ का हजमा बैठहूँ सतरजिया हो राम,
अहो रामा कहूँ न नैहरवा के रे कुसलिया हो राम।

तोहरो नैहरवा दउलत वेस तरी[1] हो राम,
अहो रामा छोटका भइया केर गवनमा हो राम।

अबरी नेअरवा दउलत फेरी देहूँ हो राम,
अहो रामा बड़ी रे समलिय जिया तोहर जइतो हो राम।

सेजिया सुनले तोहूँ प्रभु जी हो राम,
अहो रामा छोटका जे भइया के रे गवनमा हो राम।

अबरी नेअरवा दउलत फेरी देहूँ हो राम,
अहो रामा बड़ी रे समलिय जिया तोहर जइतो हो राम।

सबके कहनमा दउलत छोड़ि देलन हो राम,
अहो रामा अपने से डोलिया चढ़ी भेलन हो राम।

झर रे झरोखा चढ़ी मइया निरेखइ हो राम,
अहो जैसे लगइ दउलत डोलिया चढ़ल आवइ हो राम।

हथवा में लेहुँ दउलत सेन्दुरा सिनोरवा हो राम,
अहो रामा पोखरा पूजीय घरवा आवहु हो राम।

भरी घुड़ी पनिया में दौलत हेलल[2] हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा दादा जी के हो राम।

हम का करियो दउलत पोती हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोहर अधमा चण्डलवा हो राम।

भर ठेहुन पनिया मे गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा चाचा जी के हो राम।

हम का करियो दौलत बेटी हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोरा अधमा चण्डलवा हो राम।

भर जाँघ पनिया में गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटऽहइ मोरा भइया जी के हो राम।

हम का करियो दउलत बहिनी हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोरा अधम चण्डलवा हो राम।

---

१. अच्छी तरह। २ पानी में तैरी।

भर कमर पनिया में गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटऽ हइ मोरा दादी के हो राम।

हम का करियो दउलत पोती हो राम,
बाप तोरा अधमा चडलवा हो राम।

भर गरदन पनिया मे गेलू हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा मइया के हो राम।

हम का करियो दउलत बेटी हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोहर अधम चडलवा हो राम।

भरमुख पनिया में गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा भउजी के हो राम।

लिलरा के टिकुली दहाइये गेलइ हो राम
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा फुआ जी के हो राम।

हम का करियो दउलत भतीजी हो राम,
अहो रामा बाप तोरा अधम चडलवा हो राम।

मगिया के सेन्दुरा धोआइ गेलइ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा बहिनी के हो राम।

हम का करियो दऊलत बहिनी हो राम,
अहो रामा बाप तोरा अधम चडलवा हो राम।

जे हम जनिति दउलत तोर बाप अधम चडलवा,
अहो रामा कहियो न करती विदागिया[1] हो राम।

टिप्पणी—एक राजा था। उसने पोखरा खनाया। पर उसमें जल न आया। पडितों ने पत्रा देख कर कहा—पोखरे को आपकी पुत्री दौलत के बलिदान की अपेक्षा है।

हजाम दौलत के ससुराल पहुँचा। उसने कहा—तुम्हारे भाई का विवाह है तुम्हें चलना होगा। भोली दौलत ने सास और पति से आग्रह नेहर जाने को अनुमति माँगी। सब ने मना किया पर वह न मानी। अपने से डोली पर चढकर नैहर पहुँची। द्वार पर माँ ने कहा—बेटी हाथ में सिन्दूर लो। पहले पोखरे की पूजा कर लो फिर घर में प्रवेश करो। पूजने के लिये वह पोखरा के बीच मे पहुँची। क्रमश जल भरन लगा। घुट्ठी, ठेहुना छाती और कंठ छूता हुआ पानी सिर तक पहुँच गया, पर डूबती दौलत को किसी ने नहीं निकाला। पिता के अन्ध विश्वास की शिकार दौलत डूब गई। रो कर दौलत के पति ने कहा—यदि मैं जानता कि तुम्हारा बाप अधम चाण्डाल है, तो कभी न विदा करता।

यह करुण बलिदान किसे करुणाप्लावित नहीं करेगा।

---

१ विदाई।

१०. जँतसार

[६१]

सन्दर्भ—सास की मान-रक्षा के लिये वधू का निष्ठुर अन्त

सासु जे गेलथिन नैहरवा, रे धरले गेलन,
जिरवा मुननिया[1] हो राम।

सासु के अयलइ भाई रे भतीजवा,
हे फोड़ने करनवे जिरवा खोललूँ हो राम।

बारहो बरिस पर सासु मोरा अइलन,
खोजे लगलन जिरवा रे मुननिया हो राम।

बाबा खउकी मइया खउकी पुतहु बहुरिया,
काहे करनवे जिरवा खोलले हो राम।

मती सासु बाबा खाहु, मती सासु भइया खाहु,
तोहरो भाई भतीजवा करनमें जिरवा खोललूँ हो राम।

एतना बचनिया सासु गोरा सुनलन हे न,
चढ़ि गेलन अपने धरहरा[2] हो राम।

हर जोती अइलन कुदारी फारी हे न,
खोजे लगलन अपना मइया जी के हो राम।

भनसा बैठल तुहूँ धानी[3] हे बड़ेतिन,
हमरो मइया कहाँ गेलन हो राम।

तोहरो रे मइया प्रभु सानी रे गुमानी,
लुतल होइहें अपनी धरहरा हो राम।

उठु मइया उठु करूँ दतमनिया,
दुख सुख कहूँ समुझाए हो राम।

नहीं बाबू दुख हइ, नहीं बाबू सुख हइ,
मैना के करेजवा पर हम नहैबइ हो राम।

भनसा[4] बैठल तोहीं धानी जी बड़ेतिन,
तोहरो भइया के बियहवा हो राम।

हमरो नैहरवा प्रभु भइहा के बिअहवा,
हजमा न्योतवा न देसली हो राम।

---

१. जीरादि फोड़न। २ कोठा, जहाँ कोप करके पड़ने गई। ३. पत्नी। ४. रसोई घर।

समना भदोइया के रे अयलइ बूढ़ी धधवा[1],
हजमा न्योतवा घुरि[2] गेलइ हो राम।

हँसी हँसी राजा पटुका बेसाहलन,
रोई-रोई मैना पटुका पेन्हलन हो राम।

हँसी हँसी राजा गहना बेसाहलन,
रोई रोई मैना गहना पेहेनलन हो राम।

हँसी हँसी राजा डोलिया बेसाहलन,
रोई रोई मैना डोलिया चढइ हो राम।

आगे आगे मैना के डोलिया हे न,
पाछे पाछे राजा घोड़ा दौड़ैलन हो राम।

एक कोस गेले मैना, दुइ कोस गेले,
अगला कहरवा डोली बिलमउलन हो राम।

एक हाथे राजा धोतिया सम्हारे,
दूसर हाथे मैना के करेजवा काढइ हो राम।

एक हाथ राजा काढलन करेजवा,
दुसर हाथे बउआ होरिलवा[3] हो राम।

काढ़िये करेजवा राजा बान्धलन मोटरिया,
कधा पर लेलन बउआ होरिलवा हो राम।

कने गेले त्रिय भेले मइया हतिआरिन,
मैना के करेजवा चढ़ी तू नहाईं हो राम।

जैसे जैसे बउआ होवइ हे सिअनवा,
तैसे तैसे मइया खोजवा करइ हो राम।

मचिया बैठल तुहूँ दादी हे बड़इतिन,
हमरो हे मइया कहाँ गेलन हो राम।

हम न जनियो बाबू, हम नहिं सुनियो,
से, पुंछ, लेहु अपना, बाबू जी, के, हो, राम।

सभवा बैठल तुहूँ बाबू जी बड़इता,
हमर मइया कहाँ गेलन हो राम।

तोहरो मइया बाबू मरि हरि गेलन,
कहवाँ से मइया तोर हम देबो हो राम।

---

१. याद। २ फिर गया। ३ बालक।

हमरो मइया बाबू मरि हरि गेलन,
मइया के चिररया[1] बतलाइ देहूँ हो राम ।

समना मदोइ केर अइलइ बूढ़ी धधिया,
तोहरो मइया के चिररिया दही गेलइ हो राम ।

टिप्पणी—सास नैहर थी। उसके पीछे में ही उसके भाई-भतीजे आये। बहू ने सास के रखे जीरे का फोड़न देकर भोजन बनाया और उनका आदर किया। सास लौटी तो उसने जीरा खोजा। पर विचारी वह देती कहाँ से। सास ने कोसा और फिर वह कोप भवन में समा गई।

मातृभक्त पुत्र ने खेत से लौट कर माँ को खोजा। उसने माँ का आदर किया और कोप भवन से बाहर निकलने का निवेदन किया। माँ ने कहा—मैं तुम्हारी बहू के कलेजे पर नहाऊँगी और तब कोप भवन से निकलूँगी। पति ने मैंना से कहा—तुम्हारे भाई का ब्याह है, चलो नैहर पहुँचा दूँ। मैंना संकेत समझ गई। पति ने हँस-हँस कर उसका शृंगार किया और रो-रो कर उसने सब कुछ धारण किया। डोली पर चढ़कर स्वामी के साथ वह मध्य जंगल में पहुँची। निर्मम पति ने उसे मार कर एक हाथ में उसका कलेजा सम्हाला और दूसरे में पुत्र। घर आकर उसने अपनी मानिनी मा को वह का कलेजा अर्पित किया, जिस पर नहाकर वह संतुष्ट हुई।

बड़े होकर बालक ने पूछा—बाबा, मेरी माँ कहाँ है? बाप ने कहा—मर गई। पुत्र ने कहा—तो चिता ही बतला दो। उसे देखकर सब्र करूँगा। बाप ने कहा—बाढ़ में चिता भी बह गई।

अनेक सास के अभिमान और प्रतिहिंसा की बलिवेदी पर न जाने कितनी फूल सी सुकुमार पुत्रबधुओं का बलिदान हुआ है। पता नहीं, कब इस निर्ममता का अन्त होगा।

लोकनाट्य गीत+

११. बगुली

प्रथम दृश्य

[६२]

पात्र—१ बगुली

२—दो अन्य महिलाएँ जो दो भिन्न दिशाओं में बैठती हैं और प्रश्नोत्तर करती हैं।

एक महिला— कहवाँ से रूसल कहाँ जाहऽ हे बगुलो ?
बगुली— ससुरा से रूसल नहिरा जाहि हे दीदिया । टेक[2]
दूसरी महिला—कौने कारनमें नहिरा जाहऽ हे बगुलो ।

---

१. चिता

+ वर्षा ऋतु के बाद शरद् के आगमन से ही पर्वों और उत्सवों का सुखदसमारंभ हो जाता है। जितिया, दशहरा, धनतेरस, दिवाली, भइयादूज, छठ, आदि पर्वों के उत्साह से सबका हृदय आनन्द-मग्न रहता है। इसी ऋतु में लोक-जीवन में अनेक नाटकों की भी योजना होती है। ये नाटक किसी विशिष्ट रंगमंच पर नहीं खेले जाते, बल्कि खुले मैदानों में, खलिहानों में, बाग बगीचों में, धर्मस्थानों में और पथों में खेले जाते हैं। पर्वों की खुशी में बहुत से स्वांग भी रचे जाते हैं। बगुली, जाट-जाटिन और सामा-चकवा का नाटक भी इसी अवसर पर खेला जाता है।

२. प्रत्येक कड़ी के प्रारंभ और अन्त में टेक की आवृत्ति होगी।

बगुली— चउरवा छटइते खुदिया खैलियो हे दीदिया ।
महिला— तुहूँ त हऽ बड़ छुछुंदर हे बगुलो ॥१॥
म०— कौने कारनमें नहिरा जा हऽ हे बगुलो ?
ब०— रोटिया बनौते लोइया खैलियो हे दीदिया ।
म०— तुहूँ तो हऽ बड़ लुलचाहिया हे बगुलो ॥२॥
म०— कौने कारनमें नहिरा जा हऽ हे बगुलो ?
ब०— भतवा बनौते मड़वा पिलियो हे दीदिया ।
म०— तुहूँ त हऽ बड़ जिभगरही[1] हे बगुलो ॥३॥
ब०— एहि करनमे नहिरा जाहि हे दीदिया ।
म०— बगुली के लोलवा तोरा गड़लो हे बगुलो ।
ब०— तुहूँ तो तु मपरी के बतिया बोलऽ हऽहे दीदिया ॥४॥

टिप्पणी—बगुली नाटक में एक स्त्री बगुली बनती है। वह लंबा घूँघट निकाल लेती है और घूँघट के भीतर हाथ डाल कर मुँह के पास से उसे चोंच की आकृति का बना लेती है। चोंच बराबर हिलता रहता है। दोनों तरफ औरतों का दल बैठा रहता है। बगुलो कभी कूद कर इस दिशा में जाती है और कभी उस दिशा में। जिस ओर मुड़ती है, उसी ओर उसका अन्य महिलाओं से प्रश्नोत्तर चलता है। प्रथम दृश्य में वह औरतों से ही वार्त्ता करती है। पुन उनसे रूठ कर एक ओर चली जाती है।

इस दृश्य में गार्हस्थ्य जीवन में बहू के आचरणों की आलोचना मिलती है।

द्वितीय दृश्य

पात्र—(१) मल्लाह

(२) बगुली

बगुली—हालि[2] आहु, हालि आहु मलहवा रे भइया।
जल्दी से पार उतारऽ हो मलहवा भइया ॥१॥ टेक
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी गल्ला के हँसुलिया।
जल्दी से पार उतरबउ गे बगुली ॥२॥
बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, गल्ला के हँसुलिया।
ओहु जे हउ ससुरा के देखल रे मलहवा भइया ॥३॥
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी हाथ के कंगनमा।
जल्दी से पार उतरबउ गे बगुली ॥४॥

---

१. चटोरी। २ जल्दी।

बगुली—मलन्ग जे माँगऽ हे हाथ के कगनमा।
　　ओहु जे हउ भैंसुरा के देउल रे मलहवा भइया ॥५॥
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी देह के गन्नभा।
　　जल्दी से नदिया पार उतरबउ गे बगुली ॥६॥
बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, देह के गहनमा।
　　ओउ गहनमा सामी क देउल हउ रे मलहा मइया ॥७॥
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी सचली जमनियाँ।
　　जल्दी से नदिया पार उतारब गे बगुली ॥८॥
बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, सचली जमनियाँ।
　　ओहु जे हउ मामी जी के देउल मलहवा भइया ॥९॥

टिप्पणी—इस दृश्य में बगुली नदी तट का संकेत देती है। वहीं वह मल्लाह का आह्वान करती है। दोनों दलों की महिलाएँ मल्लाह रूप में बगुली से भिन्न भिन्न चीजें माँगती हैं। इस प्रकार गीत के ही माध्यम से यहाँ भी प्रश्नोत्तर चलता है।

यहाँ नारी की मर्यादापूर्ण प्रकृति की अभिव्यक्ति मिलती है।

१२. जाट-जाटिन

[६२]

पात्र—(१) जाट
　　(२) जाटिन

जाट—लम के चलिहें गे जाटिन, लम के चलिह।
　　जैसे बँसवा के छिपवा लमऽहइ, आयसहीं लम के चलिहें ॥
जाटिन—नहि ए लमबउ रे जटवा, हम तो बाबा के दुलारी।
　　ऐंठ के चलबउ रे जटवा, हम तो मइया के दुलारी ॥१॥
जाट—लम के चलिहें ग जाटिन, लम के चलिह।
　　जैसे नदिया पुताड़िया लम र चलऽहइ, ओयसहीं लम के चलिहें।
जाटिन—न लमरउ रे जटवा, हम तो मामा के दुलारी।
　　ऐंठ के चलबउ रे जटवा हम तो भामी के दुलारी।
जाट—लम के चलिहें गे जाटिन, लम के चलिह।

जैसे समभा के बलबा लमऽइइ, ओयमहीं लम के चलिहें।
जैसे कौनिया के बलबा लमऽइइ, ओयमही लम के चलिहे ॥
जैसे मरुइ के बलबा लमऽइइ, ओयमहीं लम के चलिहे।
जैसे धनमा क बलबा लमऽइइ, ओयमहीं लम के चलिहे।
जैस गोहुमा[1] के बलबा लमऽइइ, ओयमही लम के चलिहे ॥

टिप्पणी—एक ओर, एक स्त्री जाट के वेश में अपने दल के साथ खड़ी होती है। दूसरी ओर जाटिन अपने दल के साथ खड़ी होती है। कहीं-कहीं जाट के दल में स्त्रियाँ पुरुषों के कपड़े भी पहन लेती हैं। दोनों दल झूम झूम कर हाथों से सकेत करते जाते हैं और साथ ही गीत गाते जाते हैं। जाटिन का दल ऐंठ कर चलता है और अभिमान की व्यजना करता है। जाट का दल विविध फलों एव अनाजों से लदे वृक्ष और पौधों की उपमा देकर नमने की मुद्रा बनाता है। इस प्रकार महिलाओं का दल पूरी गतिशीलता से गायन में सलग्न रहता है।

१३. सामा-चकबा[2]

[६३]

सामों खेले गेली, चकवा भइया अगना।
सरहो भौजी लेलन लुलुआय, ननद कहाँ आयल हे ॥१॥
का तुहुँ भौजो लेलऽ लुलुआय, सामो कहाँ आयल हे।
जब ले रहतइ माय बाप के राज, सामो खेले आयब हे ॥२॥
छुटि जैहे माय बाप के राज, तजब तोर अगना हे।
एतना बचनीया सुनलन चकवा भइया हे ॥३॥

---

१ सभी अनाजों से लदे पौधों एव फलों से लदे वृक्षों की उपमा दी जाती है। पूरे गीत मे कड़ी सख्या (१) की आवृत्ति होती है, केवल उपमान बदल दिये जाते हैं। यह सक्षेप के लिए कुछ उपमाओं को ही एकत्रित कर दिया गया है।

२ यह खेल भाई-बहन का है। इसमें नारी की सन्धि अवस्था की सूचना रहती है। विवाह हो चुका है पर नैहर में माँ बाप का आकर्षण अभी छूटा नहीं है। पतिगृह के जीवन को अभी वह पूर्णत अपना नहीं पायी है। सामा-चकवा का खेल कार्तिक में होता है। इसमें भाई बहन के प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

वस्तुत सामा चकवा का प्रेम सबध गीतों में ही वर्णित होता है। इसे नाट्य गीत मे इसलिये सकलित कर लिया गया है कि गीत में भावों का प्रकाशन दोनों दल नाटकीयता के साथ करते रहते हैं।

मारे लगलन बरछा घुमाय, बहिनियाँ कहाँ पायब।
" " तीर झमकाय, " " " हे ॥४॥

चकवा भइया के स्थान में, सभी भाइयों के नाम जोड़कर इस गीत को गाया जाता है।

सामा-चकवा

[६४]

चकवा भइया के घन फुलवरिया।
फूल लोढ़े चललन सामा बहिना हे ॥१॥
फुलवा लोढ़ैते बहिनिया मोरा घामल हे।
कि घामि गेलो सिर के सेनुरवा हे ॥२॥
छतवा लेले जाथिन चकवा भइया।
कि बैठु गे बहिनो कदम जुरि छहियाँ हे ॥३॥
पनिया ले ले दौड़ल जाथिन, कनिया भौजो हे।
कि करहुँ न हे नन्दो सीतल हिरदा हे ॥४॥

उपर्युक्त गीत की भाँति, इस गीत में भी भाइयों के नामों को जोड़ कर महिलाएँ गाती हैं।

टिप्पणी—सामा बहिन का नाम है और चकवा भाई का। दो खिलौने सामा-चकवा के बनाये जाते हैं। उन्हें बीच में रख कर औरतों का दो दल दोनों ओर से गाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन कुश एवं केले के थंभ का बेड़ा बनाया जाता है। उस पर दोनों मूर्तियाँ रख दी जाती हैं और साथ ही पाँच दीये रख दिये जाते हैं। इसके बाद इन्हें नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

लोकगाथा

१४. लोरकाइन

[६५]

बिहँसि के बोलिया बोलऽ हइ, खुलनी बुढ़िया हो राम[1]।
सुनहु न सुगऽ सामी कहनियाँ एक हमार हो राम।

[1] प्रत्येक पंक्ति के अन्त में 'हो राम' का व्यवहार 'लोरकाइन' के कुछ गायक करते हैं और कुछ नहीं भी करते हैं।

बबुआ जे भेजन लोरिक औ सामर जमान हो राम।
एतना जब सुनइ बोलिया बुढ कुब्जा सरदरवा हो राम।
सुनहिं न सुने तिरिया कहलिया एक हमार हो राम।
एकर जे खबरिया लिहें, गुरु मितराजल हो राम।
ओहि जे भेजतन, सादी के सगरो पैगममा हो राम।
लिखिए पतिया भेजौनन, बूढ कुब्जा सरदरवा हो राम।
लेइए जे लेलक चिठिया खैरना नउआ हो राम।
ओहु जे जूमल[1] गुरु मितराजल के मकनवा हो राम।
बिहँसि बिहँसि के चिठिया बाँचे, गुरु मितराजल हो राम।
चिठिया के पढ़िए-पढ़िए तिरिया के सुनावइ हो राम।
पतिया में लिखल हइ करऽ बउआ लोरिक के बिआह हो राम।
इ नहि बेटा हम्मर हइ लोरिक औ सामर हो राम।
इ दुन्हा बेटबा तोरे हवऽ गुरु मितराजल हो राम।
गाँवे गाँवे घूमइ हो मितवा अगुअवा बरतुइ[2] लेले हो रामा।
हमर घरवा टूटल देखिय कोई न आवइ हो राम।
एहि से गरनइया[3] लगऽ हइ कि किया करिअइ हो राम।
पतिया जे भेजइ खैरना से गुरु मितराजल हो राम।
जतिया के हिअउ हम, बूढ कुब्जा धोबिया हो राम।
देबा के जे पोसल हउ बेटा लोरिकवा मनियार[4] हो राम।
जैसन उनकर मइया हइ बुढिया खुलनी हाय हो राम।
ओयसने जे मइया हइ उनकर देबी मइया हो राम।
आहि देवी करतन भाइ जी. लोरिक के बिआह हो राम।

● ● ●

गामे गामे घूमइ अघोड़ी[5] के अगुअवा हो राम।
अच्छा अच्छा रस्ता अहीरा के, हलमा देमइ हो राम।
नइयाँ[6] जे सुनकइ हल कि गउरा[7] म हइ लोरिक हो राम।
ओहि जे लोरिक माजर के जोगे हइ हो राम।
आइ ए जे गेलन हे अघोड़ी से नउआ बरहामन[8] हो राम।

---

१ आ पहुँना। २ विवाह का छेंका। ३ ग्लानि। ४ बहादुर। ५ माजर (लोरिक की भावी पत्नी) का ग्राम जहाँ वह रहती थी। ६ नाम। ७ लोरिक का ग्राम, जहाँ वह रहता था। ८ ब्राह्मण।

देखे ला जे खोजऽ हइ चनुआ लोरिक के हो राम।
दौड़िये के गेलन हो कुब्जा अप्पन गइया बथान[1] हो राम।
सुनहिं न सुनें तिरिया[2] च.लिया एक हमार हो राम।
जल्दी घरवा चलहिं अयलइ नउआ आउ पडित हो राम।
हुनका बैठौली है घरे हलइ फटल चटइया हो राम।
जलदी खोजिय पच भइया कन से लावऽ सिंहासन हो राम।
गम के मारल गे खुलनी पड़ोसिन के गेलइ मकान हो राम।
हइ कोई सिंहासन तो देहु हमरा घरे ऐलन हैं मेहमान हो राम।
एतना सुनिय पड़ोसिन हरखिए[3] बोलइ हो राम।
लेहु हमरा कम्मल वहिन ले जा अप्पन मकान हो राम।
ईसवर से मनावऽ हो कि लोरिक के हो जाय बिअहवा हो राम।
लेइए कमलिया खुलनी ऐलइ अप्पन मकान हो राम।
मारिए निछावइ हो बूढ़ कुब्जा कबल आसन हो राम।
बैठहु न बैठहु बरहमा[4] जी गरीब के एहि हइ मकान हो राम।
कहाँ से हम पैयबइ राजा सहदेव ऐसन गढ़वा हो राम।
बाबा जी हमरा धनवा हइ बेटा लोरिक और सामर हो राम।
एतना सुनिय बरहामन कुब्जा के समझावइ हो राम।
जलदी देखावऽ अप्पन बेटा लोरिक और सामर हो राम।
चनुआ के बोलावे चलल जा हइ बूढ़ कुब्जा सरदार हो राम।
जुमियो में गेलन कुब्जा गुरु मितराजल के मकान हो राम।
सुनहु न सुनऽ हो मितवा खुमिया के हाथ रे बेयार हो राम।
अगुआ आयल हइ घरवा, अघोड़ी के ले ले पैगाम हो राम।
जलदी घरवा चलहु लोरिक के लेइए हाथ हो राम।
घुमी-घुमी अखड़वा में गुरु मितराजल बोलइ हो राम।
जलदी में लेहि रे बेटा मटिया देहिया के छोड़ाय हो राम।
तोहरे हम बनवा आ गुना पर करबइ अघोड़ी में बिआह हो राम।
बड़ा बड़ा सिवा बसउ अघोड़िया गाँव हो राम।
तोहरे के भिड़नमा गे मांजर के लैहे बिआह हो राम।
मटिया छोड़ाइए रे सिवा गुरु के करहु परनाम हो राम।

---

१ गोशाला। २ पत्नी। ३ हर्षित हो। ४ ब्राह्मण।

पेन्हिय पौसरवा बिरवा होइए गेलइ तैयार हो राम।
आगे आगे चलइ गुरु मितराजल धोबी हो राम।
पाछे पाछे दुनो भइया चलऽ हइ गुरु केरा साथ हो राम।
मारते गरजवा जुमलइ, गौरा-गुजरात हो राम।
ओहि घड़िया जुमिए मितराजल करे लगलन परनाम हो राम।
कहाँ तोहर घर हइ देवता, कँहवा कैलऽ पैगाम हो राम।
कौनि करनमा ऐलऽ हे गौरा गुजरात हो राम।
बिहँसि विहँसिए बोलऽ हइ पंडित सुनऽ सरदार हो राम।
हमरो जे घरवा हइ अघोडियापुर गाँव हो राम।
हमरो जजमान के बेटिया के नइयाँ हइ मांजर हो राम।
उनके हम खोजे ला ऐलिअइ वर आउ बरवा हो राम।
एतना जो सुनिए मितराजल साजलो[1] दे हइ जवाब हो राम।
हमनी तो हिअइ भाई जी गरीब ओ छोटा किसान हो राम।
खुसी जब मन से बोलइ पंडित मुसकाय हो राम।
घर न हम चाहि भाई जी बरवा मिलइ बलमान हो राम।
एतना सुनिय गुरु मितराजल लोरिक के देलन देखाय हो राम।
लोरिक के देखैते पंडित गेलन मुसकाय हो राम।
सुनहि न सुनें रे हजमा कहलिया एक हमार हो राम।
मजरि के जोगे हउ लड़िका लोरिक मनिआर हो राम।
दुनो जब आरवा से सदिया के बतवा होलइ ठीक हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा चौकवा अगनमा पड़ल हो राम।
ओहि बैठिय पंडे लगनइ चारू लोरिक के छेकवा बरतूल हो राम।
देइए छेंकवा हो पंडित गरजिए बोलइ बात हो राम।
माघ सिरी पचमी के लोरिक के मनउ बिआह हो राम।
नहि तोरा घरमा पर कैलियौ हम मंजरी के बात हो राम।
लोरिक के बिरतइया पर करऽहिऔ, मांजर के बिआह हो राम।
अनमा धनमा देइए कुब्जा पंडित के कैलन बिदाई हो राम।
लेइए बिदइया पंडित अघोडिया गेलन हो राम।

● ● ● ●

---

[1] सजा हुआ, तैयार।

जेहु हम्मर सामी मलसौधरा निपटे मउगा निपुसक हो राम।
का हमरे भाग हलइ देवी कि जोड़िया ऐसन देलऽमिलाय हो राम।
अब मोरा नहिं दिन कटतउ देवी मलसौधरा केर पास हो राम।
हमरो जे जोड़िया देवी मइया लोरिक से देहि मिलाय हो राम।
जहिना से देखली बिरवा के दिलवा लेलिअइ बैठाय हो राम।
अब कौनि उपयवा से बिरवा के घरवा लिअइ बोलाय हो राम।
बिरवा के सुरतिया गे देवी मइया दिलवा से न बिसरइ[1] हो राम।
सगवा तो चदवा के बैठल हइ चेरिआ लउड़ी[2] हो राम।
दववा इसरवा से चदवा के लौड़िया समुझावइ हो राम।
काहे एतना मनमा चदा मयाँ कयलऽ हाय रे उदास हो राम।
बाधहु धीरजवा चदा रानी लोरिकवा क लीह अपनाय हो राम।
नित नित लोरिकवा आवऽ हइ अप्पन गुरु के मकान हो राम।
एही तो रहिया हइ लोरिक के आव आउ जाय के हो राम।
नित नित बैठिहऽ झरोखवा से बिरवा के लीहऽ बोलाय हो राम।
तोहरो सुरतिया देखि के लोरिकवा जइतो लोभाय हो राम।
जतिया के बेटवा हउ लोरिकवा मनिआर हो राम।

● ● ●

दुनो जब भइवा अयलन गुरुवा के पास हो राम।
गुरु मितराजल हो देखिय के पिठिआ देलन ठोक हो राम।
जल्दी बाध रे बेगा लगोटवा आउ कसी ले हो राम।
दुनो जे अखरवा में कुदलइ हो भइया जोड़ी हो राम।
गुरु मितराजल हो बैठिय अखरवा बिहँसइ हो राम।
तोरा से बढ़के बेटा कोइ बिरवा न गउरा जलमल हो राम।

● ● ●

आइयो में गेलइ माघ सिरी पचमी लगन हो राम।
लोरिक के अब सदिया के बतवा होय लगलइ हो राम।
बुढ कुब्जा मितराजल से कहइ अब लोरिक के साजऽबरात हो राम।
माघ सिरी पचमी के दिनमा लोरिक के बनइ वियाह हो राम।
साज हइ बरतिया लोरिक क बुढकुब्जा हाय हो राम।

---

१ विस्मृत होता है। २ दासी।

नहिं कोई दउरा हइ संगवा न पालकी हइ हो राम।
लोरिक जब बांधिए लेलन केसरिया पगड़िया हो राम।
दस-बीस पंचवा के संगवा में ले ले चललन बारात हो राम।
बहुते गरीब हलइ लोरिक के बाबू मइया हो राम।
कुछो न बरतिया खातिर, बजवा ना पालकी हो राम।
रोइए रोइए गे खुलनी गुरु मितराजल से बोलइ हो राम।
कोइ से कपड़वा गुरु जी पैंचा[1] तुहूँ मागहूँ हो राम।
तुहूँ जवे हहु गुरु जी जतिया के धोबिश्रा हो राम।
कोई धोबी भइया से कपड़वा भाड़ा पर माँगऽ हो राम।
एतना जे सुनी मितराजल गुरु गोसवा भेलन हो राम।
बिरवा के धनमा बिरवा के रहिश्रा चलते मिलतइ हो राम।
श्रोहि घड़िया बेलवा गे खुलनी आरती ले हइ उतार हो राम।
दस-पाँच पचवा मिलिए बरतिया चलइ हो राम।

• • •

संगे बरतिया लेले मितराजल जुमी गेलइ धोबी केर मकान हो राम।
दुश्ररा पर खड़ा होके देखऽ हइ धोबिया कि पंच मितराजल हो राम।
झुकी-झुकी धोबिश्रा मितराजल के करइ परनाम हो राम।
तुहूँ हम्मर पंच हऽ भइया कौने श्रयलऽ हेत[2] हो राम।
गरजी के बोलिया हो बोलइ पंच मितराजल, हो राम।
हमहु चलली रे पंच धोबी भइया लोरिक के करे बिश्राह हो राम।
हमनी बरतिया के एको न हइ कपड़ा देहिया हो राम।
तुहूँ सब कपड़वा धोमऽ हऽ रजवा के हाथ हो राम।
इ कुल कपड़वा दे दे, पेन्हिये हम जइश्रइ हो राम।
लौटबउ बरतिया से कुल कपड़ा तोरा देबउ हो राम।
एतना सुनिये बोलिया मितराजल के धोबिश्रा समुझावइ हो राम।
सुनी जानी पइतन रजवा त जनमा हम्मर देतन मार हो राम।
एतना बोलिया सुनइ मितराजल गोस्सा भेलइ हो राम।
धोबी तोरा जानिए मोबी होके श्रइलिश्रउ तोहर दुश्रार हो राम।
श्रइसन बोलिया बोलल कि मन करे लुटिश्रइ घर-दुश्रार हो राम।

---

१. उधार। २. कारण।

डरवा के मारे हो थर थर काँपे लगलइ धोबिया हो राम।
कुल जे कपड़वा रजवा के धोबी घर से लेलन लूट हो राम।
लोरिक सग बरतिया कपड़ा सभे पेन्हि लेलन हो राम।
मारते गरजवा मितराजल अघोरी ले ले जाहे बारात हो राम।
बीचे जे जगलवा में मिललइ महुरिया सजले बारात हो राम।
सोना अउर चाँदी के तमदनवा पर बैठल हइ महुरिया के बेटा हो राम।
सदिआ जे करिके महुरिया लौटल आवऽ हलइ हो राम।
ओकरा जे सगवा में बहुत हलइ दउरा औ महर[1] हो राम।
लोरिकवा के हजमा बुधुवा मुसुकाइए बोलइ हो राम।
सुनहु न सुनऽ न गुरु मितराजल बनले हइ बात हो राम।
बनिया के पूत होके चलल आवइ एतना ले ले सामान हो राम।
बीचे जगलवा मे छेकिए माँगहु कि हमरा दे दे कुल समान हो राम।
तब गुरु मितराजल बोलइ सुन लोरिक हम्मर बात हो राम।
बुधुआ हजमवा के बैठा देही बीचे रहिया उ छेकिए[2] सूती जैतइ हो राम।
हमनी सब लुकिए जाहु जगलवा, हुँए से लूटी लेबइ बरात हो राम।
बीचे जे रहिया पर सूती गेलइ बुधुआ हजाम हो राम।
उधर से चलल आवऽ हइ महुरिया सजले बरात हो राम।
बीचे जे रहिया पर कउन तूँ सूतल हऽ हो राम।
छोड़ि देहि रहिया मोसाफिर हमर जाइत बरात हो राम।
बड़ा मुँहमा बिचकाइए रे बुधुआ हजमा बोलइ हो राम।
कहाँ के राजा हऽ कि रहिया से हमरा देवऽ हटाय हो राम।
बनिया रिसियाइए तमचवा तानलन मारे ला हो राम।
बुधुआ लोरिक के गोहारइ[3] दादा हम्मर जनमा गेल हो राम।
बीचे जे जगलवा से सेरवा[4] निकलइ मारते आवाज हो राम।
मारे डरवा के थर थर काँपइ बनिया देलक कुल सामान हो राम।
अब लोरिक बैठिए गेलइ हो चंदिआ लचका[5] हो राम।
गुरु मितराजल के बैठाइ लेलन पालकी हाथ हो राम।
अपने दुनों भइया बैठि गेलइ सोनमा चादी के लचका हो राम।

---

१ विवाह के समय वर की ओर से वधू को दी जाने वाली सपंति। २ रोक कर। ३ पुकारता है। ४ लोरिक। ५ डोली।

महुरिश्रा चे सब सामान ले के अघोरिया जा हइ बरात हो राम।
मारते गरजवा लोरिकवा मनियार जुमि गलइ[1] अघोरियापुर हो राम।
दुअरा पर होव लगलइ लोरिक के परिछनिया[2] हाय हो राम।
सोना के थाली में गइया के घीया के दिअरा से आरती उतारइ हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा परछौनी करके देलन मरवा बैठाय हो राम।
बीचे जे मड़वा में बैठलइ लोरिकवा मनियार हो राम।
उनके बगलवा में कन्यादान करिये मजरी के देलन बैठाय हो राम।
लोरिक के बिअहवा पंडित मजरी से करिये देलन हो राम।
ओहि घड़ी बेलवा बोलइ अघोरी के सभे जवान हो राम।
सुनऽ हलिअइ कि गउरा में बड़ा बड़ा वार हउ पहलवान हो राम।
एतना जे बोलिया सुनऽ हइ लोरिकवा मनियार हो राम।
मरवा में बैठले मारऽ हइ गरजवा लोरिक हो राम।
सुनऽ हिं न सुन अघोरिया के बड़ा बड़ा वीर जवान हो राम।
देखियौ कि केकर भुजवा में हउ ताकत हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ अघोरिया के चुनल जमान हो राम।
बीचे जे मड़वा में होवे लगलइ लोहवा के भिड़ान हो राम।
खुनमा के धरवा मड़वा से बहि गलइ हो राम।
देखी बिरतइया[3] लोरिक के मजरी गेलइ मुसकाय हो राम।
पिठिया पर लोरिक के मैया सामर हइ हो राम।
दुनु भइया मिलिये अघोरिया वीर से कइलन बीरान हो राम।

● ● ●

अब लोरिक माँगे हो लगलइ सासु से विदाइ हो राम।
मजरी के आगे हो चलइ लोरिकवा मनियार हो राम।
पाछे से जे डोलिया मजरी क चलल आवइ हो राम।
ओकरा पीछे चलल आवइ सामर भइया हो राम।
ओकरा पीछे बैठल आवइ हो मितराजल बूढ कुब्जा हो राम।
ओकरा पीछे चलल आवइ बुधुआ विहसते हो राम।
मजरी के खोइछा[4] धन हलइ कि जिन्दगी लेलन निबाह हो राम।

---

[1] पहुँच गया। [2] परिछन (स्वागत)। [3] वीरता। [4] अंचल की छोर को उलट कर व कमर के ऊपर सामने बंधी, तात्कालिक झोली।

अब तो लोरिकवा के फिरलइ मंजरी के दिनमा हो राम।
अब जूमि गेलइ रे बिरवा गउरवा नगरवा हो राम।
दुअरा पर बैठल हलइ खुलनीबूढी मइया हो राम।
सोने के थलियवा में आरती उतारइ हो राम।
दुअरा बाजे लगलइ बजवा घनघोर हो राम।
सउँसे गउरवा के नरनारी अयलइ लोरिक के मकान हो राम।

● ● ●

बजवा के आवाज सुनइ चंदवा हिरिदया सालइ हो राम।
सुनहिं न सुने चेरिया[१] कहाँ बाजइ अइसन बजवा अनमोल हो राम।
ओहि घडिया गे चेरिया सउँसे गउरा घूमइ हो राम।
दुअरा पर देखऽ हइ लोरिकवा के शादी करके लौटल हो राम।
सुनहु न मइयाँ चंदवा, लोरिक बिअहवा करि लौटलइ हो राम।
एतना बोलिया सुनते चंदवा मुरछा खा हइ हो राम।
चेरिया बोलइ बाँधू धीरजवा लोरिक होइ हे तोहार हो राम।
इ घड़ी जल्दी करलऽ सोरहो तूँ अपन सिंगार हो राम।
एहि घड़ि मौका हउ कि चंदवा लोरिक के जाहु मकान हो राम।
सबके बेटिआ आउ पुतोहिया लोरिक के चुमावइ हो राम।
एही जे बहाना करके मैंया से जाहु लोरिक के मकान हो राम।
एतना जे सुनते चंदवा गे होसवा करइ हो राम।
करिये सिंगरवा गे चंदवा देवि के धरइ धेयान हो राम।
एहि घरिया सुनहिं न देवी मइया हमरो एक जवाब हो राम।
आज घरवा जाहिअउ देवी लोरिकवा वीर के मकान हो राम।
बिरवा के पिरितिया गे देवी मइया हमरा से दीहऽ मिलवाय हो राम।
सात सेर पठियवा[२] गे देवि तोरा भोगवा देबउ लगाय हो राम।
मइया से चुपे गे चदवा लोरिक के जा हइ मकान हो राम।
गोदिया में लेलकइ गे चदवा अरवा चाउर हो राम।
अउरा रखी लेलकइ गे चंदवा हिरवा मोती गे लाल हो राम।
चंदवा जे हलइ राजा सहदेव के बेटिया हो राम।
ओहु चलल जा हइ लोरिक वीर के मकान हो राम।

---

१ दासी। २ बकरी का बच्चा।

जुमिए मकनिया लोरिक के अगनवा गेलइ हो राम।
सब कोई देखे लगलइ चंदवा के सुरतिया हो राम।
बड़ा भाग भेलइ खुलनी के घरवा हाय हो राम।
रजवा के बेटिया चंदवा चुमावेला लोरिक के अयलइ हो राम।
बीचे अगनमा में जे बैठल देखइ मंजरी औ लोरिक हो राम।
सब कोई लोरिक के चुमावऽ हइ, अब चदचो चुमावइ हो राम।
लोरिक से जादे चंदवा के बलवा-ताकत हनइ हो राम।
लोरिक के चुमावइ चंदवा पुटपुरिया औ क्लहवा देइ दबाय हो राम।
इतना जोर से दबयलकइ गे चंदवा लोरिकवा गेलइ घबड़ाय हो राम।
अइसन नहीं देखली कि इसवर हो तिरिया होवे बलवान हो राम।
केकर इ तो घरवा के बेटी हइ केकर घर के हइ पुतोह हो राम।
जइसन जे सुरतिया गे पैलकइ ओयसने पइलक बल हो राम।
एहु मनमा करइ लोरिक के कि चंदवा से करती बात हो राम।
अंखिया जे लाल करके लोरिक बोले लगलइ हो राम।
जइसे बोलिया बोलइ हो लोरिक चंदवा गेलइ मुसकाय हो राम।
एको ना उत्तरवा चंदवा देलकइ लोरिक के हाय हो राम।
लोरिक के निछावर में चंदवा दौलत अगनमा देलकइ लुटाय हो राम।
हँसते विहँसते गे चंदवा घरवा से गेलइ बहराय हो राम।

● ● ●

अब अप्पन घरवा चंदवा जे बैठलइ मन मार हो राम।
ओहि घड़िया बिहँसि के बोलऽहइ चेरिया हाय हो राम।
अब जुअवा जीत गेले चंदवा लोरिकवा पैबे हो राम।
जइसन तोर फिकिरिआ हलउ लोरिक से कि मिलिअइ हो राम।
ओइसने फिकिरिआ पड़तइ लोरिक के चंदवा से पूछिअइ बात हो राम।
तौने घड़ी बोलऽहइ लोरिक खुलनी बूढ़ी माय से बात हो राम।
सुनहिं न सुने गे मैया कहलिया एक हमार हो राम।
केकर घरवा के बेटी हलइ अगना अयलइ हमार हो राम।
बड़ा तो दौलतिया गे मैया अगनमा अप्पन देलकउ लुटाय हो राम।
खुलनी बोलइ बड़ भाग हउ बेटा लोरिक तोहर हो राम।
इ जे हलइ बेटा हो सहदेव राज के बेटी हो राम।

एकरे जे राज हउ रे बेटा सउँसे गउरा गुजरात हो राम।
चंदवे के रैयत हिअइ हम तूँ हाय हो राम।
इ सब बतिया के लोरिक हिरिदवा लेलन बैठाय हो राम।
अपन महलिया में लोरिक रतिया के करे लगलइ विसराम[1] हो राम।
लोरिक के तिरिया सती मजरी चरणिया दबावइ हो राम।
मंजरी के सगवा में बहिनी ओन्गर लुड़की हलइ हो राम।
अपने जे हथवा से लुड़की बेनया[2] डोलावइ हो राम।

● ● ●

भिहने होवइते बिरवा उठइ डिडियाय[3] देवि के करइ पुकार हो राम।
ओहि घड़िया खुलनी टेहरिया[4] भरी लथलन गे दूध हो राम।
इह दुधवा ले ले रे बेटा चल जा गुरु मितराजल के मकान हो राम।
दुनों भइयबा पहुँची मितराजल के मकान गुरु के करइ परनमा हो राम।
पिठिया ठोकिये गुरु देलन असीस,जुग जुग जीअ लोरिक मनियार हो राम।
घड़ी जब घटवा तक दुनु भइया मल्लवा अखरवा जुधवा दे हइ मचाय हो राम।
बिहँसि के बोलइ मितराजल अपन देहिया के मटिया लेहु छोड़ाय हो राम।
अखरवा से निकलि दुनों भइया झुकी झुकी करइ गुरु के परनाम हो राम।
एक-एक टेहरी दुधवा गुरु मितराजल दुनों के देलन पिलाय हो । राम।
गुरु के हुकुमवा से अब दुनों भइया चललन गउरवा गुजरात हो राम।

● ● ●

अब सामर भइया से लोरिक छलवा करइ हो राम।
तुहु घरे जाहु भैया सामर, हमहु पीछे से अयबउ हो राम।
मया से कहिहऽ कि लोरिक गेलउ हे गुरु के करे काम हो राम।
अब लोरिक चललइ चादवा के महलिया हो राम।
ऊँची जे महलिया से चादवा लोरिक के देखइ हो राम।
ओहि घड़िया-बेलवा लोरिकवा ऊमियो गेलइ हो राम।
खिड़की से बिहँसी के चांदवा बोलइ हो राम।
एने कहाँ अयलऽहो बिरवा गउरवा घुम्मे हो राम।
सुनहिं न सुनें चांदवा कहलिया एक हमार हो राम।
तोहरे कारनमा गे चांदवा गउरवा घूमिओ हो राम।

---

१ विश्राम। २. पंखा। ३. शीघ्रता से। ४ दूध रखने का बर्तन।

तुहूँ तो हऽ राजा के बेटी आ हम हिश्रौ गरीब किशान हो राम।
एही से हम डरिअउ कि चांदवा कैसे तोरा से करिअउ बात हो राम।
मारइ छलगवा हो बिरवा खिड़की लेहि हमरा बोलाय हो राम।
खिड़की के रहिश्रा से चांदवा लोरिक के लेलक बोलाय हो राम।
दुनो के पिरिनिया हे जुटलइ देवि के महिमा से हो राम।
बिहँसि बिहँसि के चांदवा जे लोरिक में गेलइ लपटाय हो राम।
सुनहि न सुने बीर लोरिक तोहरे से करबउ अपन बिआह हो राम।
एतना बोलिया सुनऽहइ लोरिक गोसवा भेलइ हो राम।
तोहर सादी भेलउ गे चाँदवा मलसौधर से हो राम।
अब कइसे दुसर गे सदिया करेला सोचले हो राम।
तिरिया के जतिया सचे लगइ नहिं करिअइ बिसवास हो राम।
तब बोले लगलइ चांदवा सुनहिं वीर बेयान हो राम।
सचे सदिया भेलउ हल हम्मर मलसौधर से हो राम।
अइसन गभरू मिललउ हमरा निपुसक हाय हो राम।
धोखवा से माइ बाबू करि देलन हमरा बिआह हो राम।
हम तो पहिले से सोचले हली कि तोहरा से करबइ बिआह हो राम।
आज हमरा देवि के किरिपा से जोड़िया मिलल हो राम।
दुनों के पिरितिया तो दिनों दिन बढ़ल जा हइ हो राम।

● ● ●

जुमियो गेलन हो लोरिक अपनो हइ रे मकान हो राम।
दुअरा बैठल पुछऽहइ लोरिक से खुलनी बूढ़ी माय हो राम।
कहाँ देरी कइले रे बेटा भैया छोड़ले सामर हो राम।
तब लोरिक बोलऽहइ सुन मइया हम्मर बात हो राम।
गुरु के तो सेवा में लगल हली, एही से देरी भेलइ हो राम।
अब टेहरी दुधवा गे खोलनी लोरिक के देलक पिलाय हो राम।
जब तक न आवऽहऽ बेटा अँखियो हमरा न नींद हो राम।
अब तुहूँ जाहु हो बेटा करहु बिसराम हो राम।
बिहँसि बिहँसि के गे खुलनी मंजरी के। समुझावइ हो राम।
सुनहु न सुनहु पुतहु मंजर बतिया हाय हो राम।
बबुआ लोरिक के गे मजरी खुसी खुसी रखिहऽ मिलाय हो राम।

बबुआ लोरिक के बलवा पर दुनियाँ जा हइ लोभाय हो राम।
चार घड़ी दिनमा हइ चार घड़ी रतिया बीतइ हो राम।
जाने कौन टोनमा लगाइये, लोरिक के दुसमन लेतइ लोभाय हो राम।
जौने रहिया चलइ हम्मर पिरवा सबहि देखइ हो राम।
हमरा घरवा हउ गे मंजरी लोरिक वे धन हो राम।
बड़ी हम गरीबनी, पोसली हे बबुआ लोरिक हो राम।
एतने हम धनमा मंजरी तोहरा देलिअउ हो राम।
इ तुहूँ धनमा गे मंजरी रखिहऽ बड़ी सजोग हो राम।
धनमा अउ सुरतिया के मंजरी चोरवा हइ अनेक हो राम।

● ● ●

खुलनी के बतिया सुनिये मंजरी होलइ होसियार हो राम।
जब जब घरवा आवइ लोरिक त मंजरी समुझावइ हो राम।
बड़ा देरी करऽ हऽ सामी जी, गुरुआ के मकान हो राम।
जब तक न घरवा आवऽ हऽ, अनमा खाही न जल हो राम।
तोहरा खिला के जुठवा तोहर पीछे हम खइअइ हो राम।
हमरा लेखे ह सामी जी तुँही ईसवर अउ भगमान हो राम।
एतना बोलिया सुनइ वीर लोरिक विहँसिए बोलइ हो राम।
तोहरा से बढ के तिरिया जगवा न होतइ हो राम।
तोहरा सुरतिया लगउ सती लछमी नियर हो राम।
किधरो हम जइअउ तिरिया त नइयाँ रखिअउ संम्हार हो राम।
तोहरे सुरतिया सती हम हिरिदवा रखऽगी बैठाय हो राम।
कोई के न जादू-टोना नजरी हमरा लगतइ हो राम।
अब नहिं देरी करम गुरुआ घर से सीधे अयबउ हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ मंजरी हरसिये विहँसइ हो राम।
फुलवा के सेजिया जे मंजरी महतिये देलन बिछाय हो राम।
फुलवा के सेजिए पर मंजरी सोनवा के लावइ थार हो राम।
अपने जे हथवा से लोरिक के छप्पन भोजन जेमावइ हो राम।
अप्पन जे बहिनी से मंजरी बेनिया देइ डोलवाय हो राम।
मंजरी के बहिनी के नइयाँ लुढकी हलइ हो राम।
लुढकी जे लोरिक के नइयाँ पर अप्पन सादी न कैलन हो राम।

दुनो जे बहिनियाँ तिरिया बनके लोरिक के सेवा करइ हो राम।

● ● ●

दुइ चार महिनमा लोरिक न गेलइ चंदवा के पास हो राम।
बड़ा घबड़ा हुइ गे चांदवा, रोवइ बेजार हो राम।
बड़ा धोखा देलक देवि मइया लोरिक जवान हो राम।
खाइए महुरवा[1] गे देवि गउरवे मरवइ हो राम।
काहे लगी रखवउ गे देवि एतना सूरत औ सिंगार हो राम।
इ तो सुरतिया सिंगार के जोगे हइ लोरिक के हो राम।
अब नहिं रखबउ गे देवि अप्पन जिउआ हाय रे प्राण हो राम।
एतना कहिए गे चंदवा तेगवा लेलन हाथ हो राम।
सुनहिं न सुने माता दुर्गा कहलिया एक हमार हो राम।
लें अप्पन हथवा से सिर काटी तोहरो दिअउ भोग हो राम।
ओहि घडिया सातो बहिनियाँ देवि होलन सहाय हो राम।
दसे पाँच दिनमा ला चंदवा धिरजवा बाँधS हो राम।
लोरिक के तो मंजरी अउ लहरी घरवे रखउ बिलमाय हो राम।
अब हम जाहि गे चांदवा लोरिकवा के मकान हो राम।

● ● ●

आधी रतिया मे देवि मइया गेलन लोरिक के पास हो राम।
सपना देखावे लगलन देविमइया लोरिक के हो राम।
वीर होके काहे वीर लोरिक घरवे में रहS हो राम।
तोहर गुरु सिवराजल घरवा जोहउ बाट हो राम।
तोहरो अखरवा रे बिरवा सुखिये गेलउ हो राम।
नित नित बढ़िया मिलावS हलS अखरवा गुरुमस्तान हो राम।
तिरिया के मोहया मे लोरिक घरवे में गेलS लोभाय हो राम।
सभे बिरतइया रे बेटा दुनियाँ से जयतउ मिट हो राम।
एही सब सपनमा हो देखS हइ लोरिकवा मनिआर हो राम।
होइते बिहनमा हो लोरिक उठलइ चकचेहाय[2] हो राम।
सुन हुन सुन तिरिया कहलिया एक हमार हो राम।
बड़ा अजगुत[3] के सपनमा देखलिअउ रात हो राम।

१. जहर। २. चौंक कर। ३. आश्चर्यजनक।

राते के सपनमा देविमइया सन्मुख देलन देखाय हो राम।
चारे जे महिनमा बितलइ अखरवा गेला हो राम।
आज हम जयबउ निरिया गुरुआ के हाथ रे मकान हो राम।
बिहँसी के बोलिआ बोलइ सती मजरी समुझाय हो राम।
कहियो न रोकली हम सामी के अखरवा न जाहु हो राम।
जाहु अखरवा देहिआ अप्पन लेहु बनाय हो राम।
दैल रहऽहइ तेगवा, जेकरा मे जगवा लगइ हो राम।
ओइसने जगवा लगइ देहिया में, बिरवा जब मटिया न लगावइ हो राम।
एतना जे सुनिये लोरिक सामर के करइ पुकार हो राम।
कहाँ गेलऽ चिय मेलऽ हम्मर मइया सामर सरदार हो राम।
अब नित नित जयबउ हो भइया गुरुवा के मकान हो राम।

० ० ०

ऊँचे जे महलिया से चंदवा बिरवा के देखइ हो राम।
लोरिक के नजरिया पड़ी गेलइ चंदवा पर हो राम।
बिहँसि बिहँसि चंदवा लोरिक के बोलाबइ हो राम।
कइसे हम अइअउ चंदवा सगवा भइया सामर हो राम।
गुरु घर से लौटबउ तब हम अयबउ हो राम।
दुनो जब भइया जुमि गेलन गुरु के मकान हो राम।
गुरु मितराजल के दुनो भइया मिलिए करइ परनाम हो राम।
बिहँसि के बोलिया बोलइ गुरु मितराजल सुन हो राम।
एतना जे दिन से बेटा काहे न अयलऽ घरवा हो राम।
तोरे तो बिना बेटा अखरवा हलइ सूना हो राम।
हम तो सोचऽ हली कि बिरवा अखरवा देतन छोड़ हो राम।
तब गरजे लगलइ बिरवा लोरिकवा मनिआर हो राम।
नहिं हम छोडबइ गुरु जी अखरवा के मिट्टी हो राम।
एहि जे अखरवा के मटिया से देहिया पोसल हो राम।
बाधिए लगोटवा रे बिरवा अखरवा कूदइ हो राम।
दुनों जब भइया में होवे लगलइ कुस्ती अउ बहिँया मिलाव हो राम।
दुनो जब लड़ऽहइ कि भीम लगइ अउ जरासध बलमान हो राम।
इ बोलिया बोलऽहइ गुरु मितराजल धोबी हो राम।

तोहूँ हऽ रे लोरिक जतिश्रा श्रहीर हो राम।
हम ताहर गुरुश्रा रे बेटा धोबिश्रा हियइ हो राम।
श्रइसने त गुरु हलइ भीम के धोबी[1] कृष्ण हो राम।
उनका जे कहऽहलइ दुनिया कि पतितपावन हो राम।
हमरा का तूँ समझऽऽऽ लोरिक कहऽ हाथ हो राम।
धरम के नाते वीर लोरिक बेटा तोरा लेली श्रनाथ हो राम।
जइसन पिता इसवर श्रोयसने पिता गुरु हम समझऽही हो राम।
श्रब गुरु मितराजल के घर से लोरिक जा हइ हो राम।
श्रब सामर भइया के लोरिक कहलन, श्रागे जा हो राम।
मइया जे पूछऽ कहिहऽ भैया गेलइ देवीथान हो राम।

● ● ●

खिड़की पर बैठिये गे चंदवा लोरिक के जोहइ बाट हो राम।
जौन घड़ी देखइ गे चंदवा लोरिक श्राते मनिश्रार हो राम।
श्रचरा पसारिये गे चंदवा भिखवा मागइ हो राम।
जाँ श्रा से देखली न बिरवा सुरतिया तोहार हो राम।
तहिया से न श्रन्न-जल हमरा मेलइ गरास हो राम।
बिहँसि बिहँसिए हो लोरिक चंदवा में गेलन लपटाय हो राम।
तोरे रे करनमा गे चंदवा भइया के छोड़ली हो राम।
श्रब हम जल्दी जइबउ चंदवा, मंजरी जोहइत होतइ बाट हो राम।
एतना बोलिया सुनइ गे चंदवा बिरवा के थामइ हाथ हो राम।
हमरा लेइए हो बिरवा निकलिये चलऽ हो राम।
तोरे खातिर छोड़बइ बिरवा गउरवा के राज हो राम।
एतना धनमा लेबइ कि जिनगी लेबऽ बिताय हो राम।
एतना बोलिया सुनिए लोरिक साजले[2] देहइ जबाब हो राम।
कहाँ चलबे गे चंदवा जल्दी कह गे बात हो राम।
श्राज के दिनमा हो लेके चलऽ हरदी बजार हो राम।
तब बोले लगलइ चंदवा से लोरिक मनियार हो राम।
कइसे हम छोड़बउ गे चंदवा मंजरी तिरिया हो राम।
कइसे हम छोड़बउ गे चंदवा लुदकी श्रउ मइया हो राम।

(पार धोने वाले)। २. उत्तर।

खुलनी जे मइया के दूध पीके हम भेली बलवान हो राम।
सेहु कइसे मइया के गे चंदवा छोड़ अब भागी हो राम।
हम नहि छोड़बउ गे चंदवा मइया तिरिया हो राम।
तब बोले लगलइ चंदवा रोइए रोइए हो राम।
दुइ चार महिनमा ला बिरवा गउरवा छोड़ हो राम।
फेर हम एके जगह रहबइ मंजरी अउ चंदवा हो राम।
जूठा छोड़तइ मंजरी तो ओही खाके दिनमा लेबइ काट हो राम।
अइसन माया रचलक चंदवा कि बिरवा लेलक लोभाय हो राम।
चंदवा अउ लोरिक के होइ गेलइ कौल करार हो राम।
आज सचे चलबउ गे चंदवा हरदिआ बजार हो राम।
दुनों के मिलनमा होतउ देवीथान हो राम।
अब लोरिक चली जे गेलन अप्पन मकान हो राम।

● ● ●

खुलनी जे मइया के भेदवा मालूम हलइ हो राम।
रोइए-रोइए गे खुलनी, मंजरी के देलक समुझाय हो राम।
जइसे घरवा ऐनन लोरिक बिहँसि के मंजरी लेलन बैठाय हो राम।
छप्पन परकार भोजनमा लोरिक के देलन खिलाय हो राम।
फुलवा के सेजिआ पर लोरिक के देलन सुताय हो राम।
अपने जे सुतलइ गे मंजरी लोरिक कोरवा हो राम।
लुढ़की सलिआ लोरिक के गोरथरिए सुतलन हो राम।
अपना अँचरवा से लोरिक के धोतिआ लेलन बाँध हो राम।
खुलनी जे मइया बीचे दुअरिया छेंकिए सुतलन हो राम।
आधी निसि रतिआ में चंदवा घरवा से बहराय हो राम।
सोनमा के पेटरिया चंदवा बगलवे में ले हइ दबाय हो राम।
देवि के मरफिआ[1] में चंदवा डेरवा देलन गिराय हो राम।
घड़ी जब घटवा लक चंदवा बिरवा के जोहइ बाट हो राम।
सुनहि न देवि मइया लोरिक धोखा देलन हो राम।
अब नहि रखबउ देवि मइया अपन परनमा हो राम।
तोरे जे मदिरवा में देवि अप्पन मुरिआ देबउ चढ़ाय हो राम।

---

१ स्थान।

एतना सुनिए देवि मइया सन्मुख होलन ठढ़ार हो राम।
बाँधहि धिरजवा गे चंदवा लोरिकवा मिलतउ हो राम।
बिरवा के निनिया परियो गेलइ हो निरमेस[२] हो राम।
ले हीं हम्मर भभुतिया चंदवा लोरिक के जा ही मचान हो राम।
लेइए असीसवा गे चंदवा लोरिक के जा हइ मचान हो राम।
देवि पेयनमा धरि घुसी गेलइ लोरिक के मननमा हो राम।
देवि के देवल अछनवा देलकइ छींटी हो राम।
मजरी अउ लुढ़की के नींद पड़ि गेलइ निरमेस हो राम।
अब ओहि घडि जगारइ गे चंदवा लोरिक मनिआर हो राम।
निंदिया टुटते, पलटि नजरिया देखइ तो चंदवा देखइ हो राम।
बड़ा दुलरारी गे चंदवा लोरिक के कहइ बात हो राम।
मरदा तू होइके हो लोरिक झूठ कैलऽ बात हो राम।
अपने जे सुतल हऽ बिरवा तिरिया ले ले साथ हो राम।
हम कौन कसुरवा कइली कि देवी मंदिर छोड़लऽ बिसार हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक चंदवा सुन बात हो राम।
देख हम बंधनमा में बांधल ही मंजरी के हो राम।
अप्पन अँचरवा के खुँटवा से हमरा बाधले हइ हो राम।
तब बोलइ चंदवा, खोल दे बधनमा बिरवा जल्दी चल हो राम।
तब लोड़िक मनियार साजले दे हइ जबाब हो राम।
छोड़लो सनेहिया गे चंदवा कइसे खोलियइ हो राम।
दस जब मइया पच के सौंपले हइ मंजरी तिरिया हो राम।
तब बोले लगलइ चंदवा बिरवा तू धोखेबाज हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक सुनहिं हम्मर जबाब हो राम।
हमहुँ अप्पन आधा धोती खँडवा से काटबइ हो राम।
बाधल हइ गेंठवा मंजरी सुतल हइ निरमेस हो राम।
लेइए लोरिक के चंदवा के हरदी अब जाहइ बजार हो राम।

● ● ●

चलते चलते चंदवा के होइए गेलइ बिहान हो राम।
एक नदिया पड़लइ त टुँए पर डेरवा देलन गिराय हो राम।

२. बेखबर।

खोजे जब लगलन कहाँ हइ मलहवा घटवार हो राम।
ओहु जे मलहवा हलइ बड़ा बिरवा बलवान हो राम।
जानिये गे बुझिए चंदवा ओहि घटिया गेलइ हो राम।
चंदवा के सुरतिया देखिए मलहवा गेलइ लोभाय हो राम।
लोरिक के बिरतइया देखे खातिर मलहवा के देलन चढ़ाय हो राम।
अँखिए-अँखिए से चंदवा मलहवा के लेलन फुसलाय हो राम।
इ खातिर-सोचे हरचन्दवा कि रहिया के कँटवा दीअइ निकाल हो राम।
गरजि के बोलिया बोलऽइइ मलहवा हाय हो राम।
न्हिय तोहर नइयाँ¹ इउ बटोहिया एतना मोरे ऐन्ऽ घाट हो राम।
केकर से बेटिया पुतोहिया लेके भागल जाय हो राम।
मारबउ हम खेंरवा से बटोहिया रे सिरवा लबउ उतार हो राम।
अप्पन इ औरतिया के हमरा देहि अपन जान बचाव हो राम।
गोसवा मारल रे लोरिक खँड़वा लेलन तान हो राम।
लोरिक मलहवा से नदिए पर होवे लागलइ जूझमार हो राम।
अपने जे बैठिए के चदवा इसरवा दे हइ हो राम।
मारलो गेलइ लोरिक के हाथ से घटिया के मलाह हो राम।
अब खुसी खुसी मनमा से दुनु नइया पर बैठलन हो राम।
नइया खेवइत लोरिक से चदवा बोलइ मुसकाय हो राम।
हम्मर तोहर जिनगी सामी नीके कटत हो राम।
नदिया के पार हो लोरिक होइए गेलन हो राम।

● ● ●

हाते भिनुसरवा गउरा मचलइ हाहाकार हो राम।
राजा सहदेव के बेटिया चदवा कहाँ भागलइ हो राम।
कुछ लोग कहऽहइ लोरिक लेइए गेलइ हो राम।
ओहि घड़िया सहदेव राजा नगरा ढोलवा देहइ बजवाय हो राम।
जल्दी में खोजिए लावऽ हमरो दुसमन हो राम।
चारो अबे ओरिया² सिपहिया खोजवा करइ हो राम।
कनहु न पावइ लोरिक आ चँदवा हाय हो राम।
खोजते-खोजते सिपाही लोग नदिया अयलइ हो राम।

---

१. नाम। २ ओर (दिशा)।

नदिया किनारे तो मरल देखइ घटवा के मलाह हो राम।
नइया न देलऽइइ अउ तेगवे के काटल मलहा के सिर हो राम।
ऐसन त रझवा बाँधऽ हलन लोरिकवा मनियार हो राम।
एहि राहे लोरिक श्राउ चंदवा भागल हरदी बजार हो राम।
जुमिए गउरवा सिपाही लोग रजवा के कहइ हो राम।
चूढ़ बुब्जा के बेटवा लोरिकवा चदवा के लेइ भागलइ हो राम।
सभे बेयनमा रजवा के सुनावऽ हइ पहरू सिपाही हो राम।
एतना जो सुनी राजा सहदेव गोसवा से गेलन भर हो राम।
कोई नहिं जाये पावे हो हरदिया द्वारे बजार हो राम।
अनमा अनमा खातिर मरी जइहें खुलनी लोरिक के परिवार हो राम।

● ● ●

डेगे-डेग चलइ गे चादवा, बिहँसते जा हइ हो राम।
बीचे जे जगलवा में चली जाहइ लोरिक अउ चदवा हो राम।
बीचे जे रहिया मे छेड़ऽ हइ लोरिक के कोलवा-भील हो राम।
चादवा के सुरतिया देखिथ मिलवा गेलइ लोभाय हो राम।
गरजि के बोलिया बोलऽ हइ जगलवा के भील हो राम।
तोरा सगे तिरिया हउ मुसाफिर, हमरा दे दे हो राम।
नहिं तो मरबउ हम तेगवा से तोर सिरलेबउ उतार हो राम।
तब गरजे लगलइ हो बिरवा लोरिक मनियार हो राम।
अइसन बोलिया बोलले से बोलले न तो सिरवा लेबउ उतार हो राम।
एतने मे होवे लगलइ मिलवा से लोरिक के जूझमार हो राम।
अँखिया इसरवा गे चांदवा मिलवा के दे हइ हो राम।
चदवा के मोहवा में आइ गेलइ भिलवा खूब लड़इ हो राम।
छन जब घड़िया में लोरिक भिलवा के कटलन सिर हो राम।
खुसी मनमा से जुमी गेलइ लोरिक अउ चंदवा हरदीबजार हो राम।
सउँसे हरदिया देखइ चंदवा अउ लोरिक के सूरत हो राम।
सभे कहइ नहीं देखली अइसन तिरिया अउ बलवान हो राम।

● ● ●

बीचे जे चौरहवा पर देखऽ हइ भिड़वा लगल अपार हो राम।
हरदी लोग सब पूछइ कि कहाँ हउ तोहर मकान हो राम।

ओहि घड़िया बोलऽ हइ लोरिक सुनहु हम्मर बात हो राम।
हमरो मरनिया हवऽ गउरा गुजरात जतिया अहिरवा हो राम।
हइ कोई नोकरिआ त हमरा देहु लगाय हो राम।
बीचे पे चौरहवा पर हलन छठू साव बनिया हो राम।
उनका न धरवा म हल कोइ बेटवा-बेटी हो राम।
विहँसि क बोलिया बोलइ बूढ़ा छठू साव हाय हो राम।
हमरा मरनियाँ पर ठहरऽ तूँ बेटा-पुतहू रखब बनाय हो राम।
एतना जब सुनऽ हइ चदवा विहँसिए बोलइ हो राम।
इनके मरनिया में सामीजी दिनमाँ लेहु काट हो राम।
रहे जब लगलन विरवा एही बनियाँ के रे मकान हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक सुनहु साव जी एक बात हो राम।
हरदी के रजवा कन हमरो नौकरिया देहु लगाय हो राम।
होयते बिहनमा गेलन बनिया राजा दुआर हो राम।
सुनहु न सुनऽ राजा कहलिया एक हमार हो राम।
धरम के बेटा पुतहु धरवा ऐलइ हम्मर दुआर हो राम।
रोटिया के खातिर नौकरिया खोजऽ हइ हाय हो राम।
उनकर नइयाँ हइ राजा लोरिकवा मनियार हो राम।
अइसन बलवान राजा हरदी में एको न हइ हो राम।
तब बोले लगलइ हरदी के रजवा समुझाय हो राम।
जल्दी में हाजिर कर बनिया विरवा हम्मर दरबार हो राम।
ओकरो नौकरिया देबै जमुनी घाट के तसीलदार हो राम।
खुसी खुसी मनमा से लोरिक जुमलइ राजा के दरबार हो राम।
झुकी झुकी करइ लोरिक रजवा के परनाम हो राम।
देखऽ हइ सुरतिया रजवा विरवा के हाय हो राम।
तोरा हम रखलीअउ रे विरवा नोकरिया देलिअउ हो राम।
तूँ जो तसील करी हऽ जाके जमुनी घटिया हो राम।
पाइए नोकरिया विरवा जमुनी जुमल घाट हो राम।
जमुनि घटवा पर विरवा करे लगलइ तसील हो राम।

● ● ●

बड़ा-बड़ा विरवा चलऽ हलइ जमुनी घटिया हो राम।
कहाँ से अयलऽ सिपहिया जमुनी घाट करे तसील हो राम।

कहियो न देलिअइ हम रजवा के इहाँ के तसील हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक गरजिए हाय हो राम।
सुनहिं न सुन सब जमुनी के लोगवा हम्मर बात हो राम।
हम तो जरूर करबउ जमुनी घटिया के तसील हो राम।
तब होवे लगलइ घटियो पर जुझवा मार हो राम।
लोथवा के ढेर लगी गेलइ नदिए किनार हाय हो राम।
सब मारल गेलन हो जमुनी घाट क बिरवा हाय हो राम।
इहे जब खबरिया मिललइ रजवा हरदी के हो राम।
बड़ा खुसी मन से लोरिक के पिठया बोलाइए ठोकलन हो राम।

० ० ०

अब हिआ से सुनावऽ हिअइ गउरा के बेयान हो राम।
सिंगा[1] लाव गइया लेके सामर चललन पाली चरान हो राम।
पाली औ पिपरी में बड़ा-बड़ा बिरवा रहऽहलइ हो राम।
पाली अउ पिपरी में रहऽहलइ कोल्हवा हाय हो राम।
ओही पाली पिपरी गइया लेले सामर जा हइ चरान हो राम।
डेगे-डेगे रोकइ सामर के बिरना बैला हो राम।
डेगे डेगे आउर रोकइ गइया के कागा बदरिल हो राम।
सुनहु न सुने सामर दादा कहलिया एक हमार हो राम।
मत तुहुँ जाहु सामर दादा पिपरी गैया चरान हो राम।
बड़ असगुन बीत हइ पलिया के आज चराइ हो राम।
आज हुआँ जइब त लोहया के होतो मिरान हो राम।
तूँ ही अकेले घरवा बचलऽ हे सामर भइया सरदार हो राम।
गैया तोहर चलिए गेलन हे हरदिआ बाजार हो राम।
गोबवा से सामर बैला आउ कागा के सतके बधन में बाधलन हो राम।
तब बोले लगलइ कागा बादरिल अउ निरना बैला हो राम।
कहीं मारले हो जइबऽ सामर त कौन हम्मर बधन खोलते हो राम।
हम मारल जैबउ रे बिरना त बधन खोलतउ माजर हो राम।
जौन घड़ी माजर नइया लेतउ, बँधन सत से खुलतउ हो राम।
कहीं हम पाली जीत अयबउ, लेइ चलबउ बधन खोलिए हो राम।

---

१ सिंगवाली।

कोई के बतिया न मानऽ हइ सामर हाय हो राम।
आज बड़ा असगुनमा सामर के बीते लगलइ हो राम।
डेगे डेगे चलऽ हइ सामर कगवा बोलइ हो राम।
अब जुमी गेलइ हो सामर पाली पिपरी करइ चरान हो राम।
पाली पिपरी के कोल्हवा गरजवा मारे लगलइ हो राम।
कौने ऐसन मुरुखा आयल हमरो चढ़िए गाँव हो राम।
सिंगा लाए गइया सामर के कोल्हवा सब घेरिए लेलन हो राम।
ओहि घड़िया होवे लगलइ, सामर से जूझमार हो राम।
घड़ी जब घटवा तक खूब लड़लइ सामर पिपरी हो राम।
मारलो ना गेलइ हो नारग जी सामर सरदार हो राम।
गिरते धरतिया सामर गइया के दे हइ दोहाइ हो राम।
तोरे जे करनमा गे गइया हतली[१] अपन परा हो राम।
का हम्मर नढ़ा[२] गइया का हम्मर लगहर[३]एक धार देहु दूध हो राम।
दुधवे के धरवा में हम्मर लसवा ले जा दहाय हो राम।
हमर लसवा लगा दीहऽ बोहवा केरे बथान हो राम।
ओही गे बथनियां में हमर तिरिया अयतन सती मनायन हो राम।
एक एक धरवा नढ़ा गइया अउ लगहर देलन गिराय हो राम।
दुधवा के नदिया उमड़ल पाली पिपरी हो राम।
ओही जवे धरवा म सामर के लसवा लेलन बहाय हो राम।
ओहु जे लसवा बहते बहते लगलइ बथान हो राम।
भोरवा होयते सती मनायन अब अयलन बथान हो राम।
अपने बथनीया में देखऽ हथन सामी के लाश हो राम।
रोइए रोइए सती मनायन गोदिए ललन उठाय हो राम।
सउँसे गउरवा में मची गेलइ सामर खातिर हाहाकार हो राम।
रोवते कनइते अयलन खुलनी बूढ़ी माय हो राम।
मारलो गेलइ मजरी मोर बबुआ सामर हो राम।
लोरिक जे रहतन त एकर बदलवा लेतन, हल चुकाय हो राम।
बड़ा दगा देले रे चदवा मोर बेटा के ल गेले भोराय[४] हो राम।
रोइए-रोइए खुलनी चेरवा[५] के लोटइ समान हो राम।

---

१ हत्या की। २ बिना बिआइ गाय। ३ दूधार गाय। ४ भुला कर। ५ चेरा।

ओहि घड़िया चितवा पर बैठिए गेलइ सती मनायन हो राम।
सामी के लसवा गोदिया में लेइए सतिया होइ गेलइ हो राम।

० ० ●

कोइ नहि जइह ऽ हो हरदी सामर के लेके मरेके वेयान हो राम।
कोइ गउरा लोगवा खबर लेके जयतइ सिरवा लेवइ उतार हो राम।
रजवा के हुकुमवा गउरा में सगरो देलन सुनाय हो राम।
अब रोइए-रोइए खुलनी मथवा धुनइ हो राम।
सुनहिं न सुनि गे मंजरी कहलिया एक हमार हो राम।
कैसे हमर लोरिक बेटा छुतके में रना होतन अन्न जग हो राम।
भइयवा के जोड़ी फूट मेलइ, खबरियो न पहुँचल हो राम।
राजा सहदेव हुकुमवा गउरा में देलन जनाय हो राम।
अब कौने उपयवा से पाती भेजिअइ हरदी बजार हो राम।
ओहि घड़िया, बेलवा मंजरी जरवा रोवइ बेजार हो राम।
सिंगा लाग गइया ये सासु जी कोल्हवा दुहि खाय हो राम।
बेटा कागबादरिल रहतन तो हरदी जयतन हल बजार हो राम।
बिरना बैलवा मोर रहतन तो सिंगा लाग गइया लेतन लौटाय हो राम।
सत के बचनमा में बादरिल अउ बिरना बाधल हलइ हो राम।
मजरी के नइयाँ लेते बचनमा टुटल हो राम।
दरखत[१] उड़ाइए के काग बादरिल उड़इ हाय हो राम।
दुअरे पर गिरलइ बदरिलवा कगवा हाय हो राम।
ओहि घड़िया दुअरा पर बिरना बजर[२] बे गिरइ हो राम।
सुनते अवजवा मजरी गेलइ घबड़ाय हो राम।
कउने असगुनमा टुटलइ सामी[३] बजरा[४] केमार[५] हो राम।
देखऽ हइ दुअरिया मजरी निमने देखइ केमार हो राम।
खोलइ केमरिया त देखइ कागा बादरिल अउ बिरना बैला हो राम।
बिरना अउ बदरिल दुअरिया बेहोस पड़ल हलइ हो राम।
भिंगले अँचरवा से मजरी दुना के मुँहमा पोछइ हो राम।
घड़ी जर घटवा में बादरिल अउ बिरना के होसवा मेलइ हो राम।
रोइए-रोइए दुनो सामर के कहइ रे बेयान हो राम।

१ वृक्ष। २. चोट खाकर। ३ स्वामी। ४ वज्र। ५ किवाड़ी।

अब रोइए-रोइए गे **मंजरी** **बादरिलवा** के समुझाय हो राम।
कौने खबरिया अब लेइए **हरदिया** जयतइ बजार हो राम।
कैसे मोरा सामी हो बादल छुतकचे रहइहें अब हो राम।
कागा **बदरिलवा** गरजइ, हम पनिया ले ले जैबइ **हरदी बजार** हो राम।
रोइए रोइए **मंजरी** समुझावइ, अब जल करके जाहु **हरदी बजार** हो राम।
कागा बोलइ कि जब तक **खबरिया** न लैबइ, अनमा न गरसबइ[1] हो राम।
रोइए रोइए गे **मंजरी** हियाँ के लिखइ दुख बेयान हो राम।
जहिया से गेलऽ सामी **हरदिया** हाय रे बजार हो राम।
बड़ा जे दुखड़वा करी-करी जिनगी हमहु बिताय हो राम।
तनिको दरदिआ न लगलौ **हरदिआ** तोरा बजार हो राम।
चंदवा के मोहवा मे सामी हमनी के देलऽ बिसार हो राम।
तोहर मारल गेलो सामी भइवा **सामर** सरदार हो राम।
आउरे तो मारल गेलइ हमर भइया **धुरा** **नन्दुआ** हो राम।
बड़ा हो बिपतिया पड़ल हइ **खुलनी** बूढ़ी माय हो राम।
अब केत्ता कहियइ सामी जी घरवा के अपन बेयान हो राम।
सती तो होइ गेलन सतिया हाय रे **सनायन** हो राम।
पतिआ पढ़इते सामी जल्दी आवऽ **गउरा** हो राम।
गउरा के **राजा** **सहदेव** बड़ा हमनी के जुलुम करइ हो राम।
चंदवा के बदला हमनी सब से करइ बसूल हो राम।
एको नाइ गइया भैंसिया घरवा हइ हमर दुआर हो राम।
बड़ा जे दुखड़वा करि-करि जिन्दगी दिअइ बिताय हो राम।
तनिको न तोरा लगऽ हवऽ गरनमा[2] हाय हो राम।
बहियाँ पकड़िए सामी बहिया देलऽ हो छोड़ हो राम।
हम नऽ जनलिअउ सिरवा कि होवऽ धोखेबाज हो राम।
खाइए महुरवा मर जइबो **गउरा** हाय रे गाँव हो राम।
एतना बेथनमा लिखिए **मजरी** पतिया **कागा** के देलन हो राम।
लेइए जे पानी **कागा** **बादरिल** अरसवा उड़िए गेलन हो राम।

✿ ✿ ✿

मात जब दिन रात चलते रहिया बीतल हो राम।
बिना अन जलवा के उड़ल जा हइ **कागा** **बादरिल** हो राम।

---

१ मास करूँगा। २ लाज।

अब जुमी हरदी बिरवा के सगरो खोजइ हो राम।
ऊँची जब दरखत चढ़िए कगावादिल देखइ हो राम।
देखऽ हइ कि छतवा पर चंदवा केसिया सुखावइ हो राम।
केसिया सुखावइ गे चंदवा अउ दरपन देखइ हो राम।
दरखत पर बैठिए कागवादिल चंदवा के गेलन पहिचान हो राम।
बड़ा सुखवा गे चंदवा, तूँ भोगऽहऽ लोरिक ले के जवान हो राम।
लोरिक के जे धरवा हइ तिरिया रोव ऽ हइ हाय हो राम।
एहि सब बतिया कागबादरिल मनमा सोचइ हो राम।
दरपन में कगवा के छाँही पहुँची गेलइ हो राम।
बड़ा जे चेहाइए[1] गे काग बादरिल के देखइ हो राम।
केने से आवऽ हइ बादरिल के सुरतिया मोर दरपन में हो राम।
लीमिया के दरखत बैठल हलइ कागबादरिल हो राम।
मीठे-माठे बोलिया से चंदवा कागवादरिल के बोलावइ हो राम।
सुनहि न सुनि बेटा कागबादरिल हमरो जवाब हो राम।
आवहि मोर गोदिया रे बादरिल गउरा के कह कुसलात हो राम।
चिठिया देख के चंदवा सोचइ बादरिल के लिअइ फुसलाय हो राम।
गोदी में अयतइ त मुरिया[2] हम देवइ मसोड़ हो राम।
न तो चिठिया सामी पढ़तन तो गउरा चली जइतन हो राम।
तब कागबादरिल पूछे लगलइ चंदवा से लोरिक के हाल हो राम।
कहाँ हमर हथुन गे चंदवा लोरिक दादा मनियार हो राम।
मरियो में गेलन कागबादरिल लोरिक सामी हमार हो राम।
लोरिक मरि गेलउ चदवा त केकरा पर तूँ करहऽ सिंगार हो राम।
बोले लगलइ चंदवा, दिनमा खेपे ला कइली दुसरा बिआह हो राम।
तोरा जोगे कहाँ गे हरदी में दिरया गबरू[3] हो राम।
बड़ा छल करि गे चंदवा लोरिक के लयले भगाय हो राम।
तब बोलइ चदवा आवऽ बेटा बादरिल गोदिया हमार हो राम।
तिरिया के जतिया चादवा हम ना करिअउ विसवास हो राम।
अब हम जाहिअउ चंदवा लौटिए गउरा हो राम।
जल्दी जल्दी चिठिया चंदवा लिखऽ हइ लोरिक के पास हो राम।

---

[1] चौक कर। [2] सिर। [3] धनि।

जल्दी से चल आवऽ मामी अपनो हाथ रे मकान हो राम।
बउआ चन्दराजीत आउ हमरा तबियत मेलइ खराब हो राम।
चिठिया देखइत लोरिक रजवा दरबार से चलइ हो राम।
बीचे चौरहवा छेंकि बैठल हइ कागवादरील हो राम।
परते नजरिआ लोरिक काग बादरिल के गोदिया लेलन हो राम।
कखनी तूँ अयले बेटा गउरवा से हरदी बजार हो राम।
कह हम्मर मइया खुलनी के हाल हो राम।
कइसन हइ मइया सामर अउ तिरिया मंजरी हो राम।
अब नहिं रहबउ रे बदिला हरदिआ बाजार हो राम।
तोहरा देखते बादिल कलेजवा फटे हमार हो राम।
एतना सुनइते कागवादरिल रोवइ जार बेजार हो राम।
लेहु चिठिया पढ़िए लोरिक मिलतो तोरा हाल हो राम।
चिठिया पढ़िए पढ़िए लोरिक रोवइ हो राम।
घरवा चलहु कागा चंदवा के कहियइ गउरा चल हो राम।
बदरिलवा बोलऽ हइ हम न जयबो चंदवा पास हो राम।
बड़ा बुद्धि रखबो रे चंदवा लोरिक सुन ऽ बेयान हो राम।
हमरा से छल करको कि लोरिक मरि गेलउ हो राम।
लोरिक गोस्सा होइए जुमि गेलइ अप्पन मकान हो राम।
अब हम छोड़ देलिअउ चंदवा रजवा के नोकरी हो राम।
अखनी चले परतउ गे चंदवा गउरा गुजरात हो राम।
हम्मर मइया मारल गेलइ सामर सरदार हो राम।
आउर तो मारल गेलइ घुरनंदुआ साला हमार हो राम।
सती मनायन गे चंदवा सतिया होइए गेल हो राम।
अब जल्दी चलहीं गे चंदवा गउरा गुजरात हो राम।
तब चंदवा बोलऽ हइ काहे ला जइबऽ गउरा हो राम।
नाहिं संगवा चलवे गे चंदवा तो अकेले हम जइबउ हो राम।
तब चंदवा घबड़ाइए लोरिक के संगवा भेलइ हो राम।
गड़िया छकरवा पर लादे लगलइ लोरिक समान हो राम।
बड़ा जो तैयरिए से चलऽ हइ गउरा गुजरात हो राम।
आगे आगे उड़ल जा हइ कागा बादरिल हो राम।

जौने रहिया चलऽ हइ लोरिक लगइ रजवा आवइ हो राम।
जुमियो में गेलन लोरिक गउरा गुजरात हो, राम।
गाँव के कुछ दूरे पर डेरवा देलन गिराय हो राम।
अब कुले हलिआ गउरा के लेवे लगलन हो राम।
बेटा काग वादरिल के लोरिक लुकाइए रखलन हो राम।
अपने जे हल्ला कैलन कि हम रजवा दूर देस के अइली हो राम।

लोरिक गउरा ढोलवा पिटवैलन हम जाही करे तीरथ हो राम।
सउँसे गउरा से दही-दूध बेचे आवऽ हो राम।
सबके बेटिया पुतोहिया दही-दूध बेचे आवइ हो राम।
सबमे दही-दूध के दमवा दुगुना दे हइ हो, राम।
एही खबरिया मंजरी आउ लुढ़की सुनइ हो राम।
खुलनी से हुकुम लेइ मंजरी जाइइ दही बेचे हो राम।
आज सती मंजरी जुमलइ दही बेचे ला हो राम।
लुकिए-छिपिए लोरिक मंजरी के देखइ हो राम।
फटले गुदरिया मंजरी पेन्हेले अयलइ हो राम।
देखिए मंजुरी के लोरिक गेलइ घबड़ाय हो राम।
सबके दुधवा के दमवा देइए देलन हो राम।
मंजरी के पूछऽ हइ चन्दरजीत केतना लेलइ दाम हो, राम।
तब बोले लगलइ मंजरी मुरिया गाड़िए हो राम।
जेतना तोरा इच्छा हउ रजवा ओतने देदऽ दाम हो राम।
हमनी गरीबनी के कहाँ तक पूछबऽ दही के दाम हो राम।
एतना जो बोलिया सुनइ भीतरे लोरिक मनियार हो राम।
बेटा चन्दरजीत के लोरिक लेलकइ बोलाय हो राम।
सुनहिं न मुनि बटा चन्दरजीत हमरो एक जबाब हो राम।
ओकरा दहिया के हम अपने दाम देवइ हो राम।
भितरे जे रख देलकइ गिनिया असरफी टेहरी[1] हो राम।
उपरे से झाँपी देलकइ धनमा आउ चाउर से हो राम।
ले जा गोआरिन कुँटी-छाँटी खइहऽ इ अनाज हो राम।

---

[1] दूध का बर्तन।

हथवा में देइ देलकइ मंजरी के दस बारह आना दाम हो राम।
अब लेइए टेहरिया गे मंजरी लौटिए गेलइ हो राम।
लऽ सासु जी रजवा दहिया के देलन हैं दाम हो राम।
अउरो जे देलन हैं खुद्दी चुन्नी धनवा टेहरी भर हो राम।
टेहरी उभलऽ हइ, निकलइ गिनियाँ असरफी हो राम।
देखते असर्फी खुलनी गेलइ घबड़ाय हो राम।
इ का कयलऽ जे मंजरी जतिया देलऽ लुटाय हो राम।
एतना सुनिए जे मंजरी रोवइ जार बेजार हो राम।
सच्चे हम कह ही सासु जी इसवर साखी हमार हो राम।
रजवा के परछइयो ये सासु जी न देखली हाय हो राम।
हमर जे गरीबी देख के रजवा देलकइ चुप्पे से धन हो राम।
हम न देखलिअइ हे सासु जी धनवा टेहरी भरल हो राम।
हम खाली देखली हल खुदी चुन्नी हइ धान हो राम।
हमरा मग छल करलइ रजवा तो का जानी हो राम।
खुलनी बोलऽ इइ कि तोरा फँसवे खातिर धन देलकउ हो राम।
अब मत तूँ जइह मंजरी दुधवा बेचे हो राम।
अबरी तूँ जइबऽ तो मंजरी रजवा लेतउ लोभाय हो राम।
बचतइ इजतिया* मंजरी तो धनमा इसवर देतन दुआर हो राम।
धनमा से बढ़के गे मंजरी जतिया हउ तोहार हो राम।
अब अप्पन डेरवा में बोलइ लोरिक मनिआर हो राम।
सब कोई दुधवा बेचे अयलइ बरह के दहियारिन न ऐलइ हो राम।
तब ओकरा में से बोलऽ हइ एक ग्वारिन सुनहु बात हो राम।
आज ओकर घरवा सासु मना करकइ बेचेला हो राम।
बचतइ इजतिया त धनमा लेतइ कमाय हो राम।
अब न उ ऐतउ रजवा बेचेला दही ओ दूध हो राम।
सोसे गाँव से तिरियवा बढ़के हइ सती मंजरी हो राम।
एतना बोलिया सुनिए लोरिक मनेमन बिहँसइ हो राम।
धन-धन हइ तिरिया हमर मंजरी सती हो राम।
ओहि घड़ी डेरवा लोरिक देलकइ हाय उठाय हो राम।

---

* सम्मान।

पहिले खबरिया लेके भेजऽ हइ कागवादिल के हो राम।
ज़ुमियो में गेलइ कागवादिल मंजरी के गोदी हो राम।
सुनहि न सुनें सती मंजरी लोरिक आवइ चंदवा के संग हो राम।
खुसीय खुमी मंजरी दिउआ के आरती बनावइ हो राम।
जौन घड़ी ज़ुमी गेलइ बिरवा लोरिक मनियार हो राम।
सगवा में ले ले हो हइ बेटा चन्दरजीत हो राम।
अउरो जे सगवा में हइ चंदवा राजा के बेटी हो राम।
मउसे गउरवा मे मालूम भेलइ कि चदवा अयलइ हो राम।
सहदेव रजवा के घरवा मे मचलइ हाहाकार हो राम।
वीर लोरिक के मइया दुअरिया हइ खाड़[1] हो राम।
दुनो जे नयनमा से भिर-भिर बहऽ हइ उनका लोर हो राम।
सासु के बगलवे में खड़ा हइ मंजरी सती हो राम।
उनको नयनमा से लोरवा गिरऽ हइ हाय हो राम।
बारऽ जे बरिसवा पर लौटलइ हे लोरिक मनियार हो राम।
पड़ते नजरिया मइया पर लोरिक दउड़इ हो राम।
दउड़िए दउड़िए बिरवा मइया में गेलइ लपटाय हो राम।
बड़ा हम नसुरवा कइली मइया पीके तोर दूध हो राम।
छुअऽ हइ चरणीया के लोरिक मनियार हो राम।
मइया में लपटल हइ बिरवा लोरिक मनिआर हो राम।
केतनो समुझावइ, लोरिक ना चुप होवइ हो राम।
चुप रहऽ, चुप रहऽ बेटा लोरिक मनिआर हो राम।
यहँवा से दिअउ तोहर भइया सामर सरदार हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ लोरिक मनियार हो राम।
अब हमर नसुरवा गे माता देहु दिल से बिसार हो राम।
जौन हम्मर भइया के मरलइ उनकर बदला लेबइ हो राम।
देखबइ कि कइसन वीर बसइ पाली गाँव हो राम।
चुनी चुनी पाली पिपरी के बिरवा के गिरवा लेबइ उतार हो राम।
पहिल लड़इया लड़बइ राजा सहदेव से हो राम।
तब राजा जनतउ कि हम्मर हइ लोरिक नगदे दमाद हो राम।

[1] खड़ी।

जौन दिन मइया मरल, चिठिया न भेजावे देलन हो राम।
सउँसे गउरा कहलन कि कोइ ना पतिया ले जा हरदी हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा मंजरी सामी के घरइ गे गोर हो राम।
बारह जे बरिसवा पर सामी जी चरनिया छूली तोहर हो राम।
कइसे तूँ तजलऽ हल मइया खुलनी बूढ़ी हो राम।
कइसे तजल गेलो हो सामी जी मंजरी तिरिया हो राम।
चंदवा बहिनियाँ के गलवा में मंजरी गेलइ लपटाय हो राम।
हम भाग जिनली गे चंदवा, गे सामी लैलऽ लौटाय हो राम।
अब दुनु लगऽ हिअइ कि अपन बहिनियाँ हो राम।
सरम के मारे गे चंदवा मुरिया[1] लेलन झुकाय हो राम।
बारह गे बरिसवा तक मंजरी दुखवा देली हो राम।
अपना हम खातिर गे मंजरी बिरवा के लेला अपनाय हो राम।
इम्मर तो खुसी भेलइ तोर घरवा दुःख पड़लउ अपार हो राम।
हमरो कसुरवा गे बहिन माजर दिहऽ बिसार हो राम।
लेहु बेटा चन्दराजित गोदिया अपनो लेहु खेलाय हो राम।
बिहँसि बिहँसि मंजरी चन्दराजित के गोदिया लेइ उठाय हो राम।
बड़ा खुसी मची गेलइ घरवा लोरिक के अपार हो राम।
अनमा अउ धनमा ढेरिया लगऽ हइ सगरो अपार हो राम।
ओहि घड़िया बोलऽ हइ लोरिक गरजिए हो राम।
अब हम जाही मइया खुलनी, रजवा सहदेव के मकान हो राम।
भाइ के बदला में खँरवा से खुनमा के धार देबइ बहाइ हो राम।
तब गरजि बोलऽ हइ मइया खुलनिया हाय हो राम।
जइसन बाबू तोर बिरवा हउ बूढ कुब्जा सरदार हो राम।
ओइसन अब ससुर समझ राजा सहदेव के हो राम।
जिनकर बेटिया छिनलऽ हे चंदवा हाय हो राम।
सेकरो कइसे मरबऽ हो बेटा खँरवा तिकाय[2] हो राम।
तोहरे जे नाता से बेटा हम समधी लेबइ बनाय हो राम।
उनके जे हथवा से चंदवा के कर लेहु बिआह हो राम।
खाली धमकी दीहऽ रे बेटा खँरवा से न मरीहऽ हो राम।

---

१ सिर। २ निशाना साध कर।

एतना समुझाइए देलन हे लोरिक के मइया हो राम।
तब बेटा लोरिक के गासवा मेलइ सान्त हो राम।

मनमा सोचइ लोरिक कि गुरु के जाइ दुआर हो राम।
पहिले गुरुआ क गोर लगबइ, तब करबइ लोहा-भिरान हो राम।
गुरुमितराजल के घरवा चलल जाइ लोरिक हो राम।
अहिया से भागल हलइ लोरिक हरदिया बजार हो राम।
ओही दिन से गुरुमितराजल घरवा रहइ मनझान[1] हो राम।
हमरा जे बसवा में एको न हइ बेटवा हाय हो राम।
दुनु जे परनिया लोरिक के समझनी हल बेटा हइ हमार हो राम।
सेहु बेटा लोरिक तजिए बुढारी में भागलन हो राम।
दुअरा पर बैठिए गुरुमितराजल रोते हलइ हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा जुमलइ लोरिकवा मनिआर हो राम।
जइसे छुअइ चरनियाँ लोरिक, गुरुआ बोलइ हो राम।
कौन घरवा अयल ऽ रे बबुआ गोरवा[2] धरल ऽ हमार हो राम।
अइसने जे गोरवा धरऽ हलइ बेटा हमर लोरिक हो राम।
हमहि जे अलियो गुरु, बेटा लोरिक तोहार हो राम।
नइयाँ सुनते गुरुआ लोरिक के गोदिया लेलन बैठाय हो राम।
बारह जे बरिसवा पर इसवर बेटवा हमर लौटल हो राम।
जुग जुग जिअ रे लोरिक, अमर होवौ सरीर हो राम।
बड़ा दगवा देइ के भागलऽ हल हरदी बजार हो राम।
कहऽ तूँ कुशलया बेटा, चंदवा कहाँ हइ तोहार हो राम।
बड़ा लेहाज करके बोलऽ हइ, लोरिक मनिआर हो राम।
सब कुसल हइ गुरु जी, चरनिया तोहर अकवाल हो राम।
देहु अब असीस गुरु जी, पाली-पीपरी करीअइ चढाइ हो राम।
पालिए में मारल गेलइ मोरा भइया सामर हो राम।
गुरुआ बोलइ कि पहिले गउरवा के पचवा लेहु अपनाय हो राम।
सउँसे गउरवा के अहीर हउ पँच भइया तोहार हो राम।
राजा सहदेव के बेटी के लेके गेलऽ हल हो राम।

---
1. उदास चित्त। 2. पैर।

ओकरो जे भतिया पंचवा के देहु खिलायहो राम।
लोहवा के जोर से सहदेव राजा के ससुर लेहु बनाय हो राम।
ठीके बतिया कहलऽ गुरु जी मनमा ले ली बैठाय हो राम।

⊛ ○ ⊛

होयते बिहनमा लोरिक रजवा सहदेव के जाइ मकान हो राम।
नइयों जे सुनइ सहदेव, डर से दुअरा देलन लगाय हो राम।
दस-पाँच बिरवा लेले लोरिक जुमलइ सहदेव के मकान हो राम।
दुअरा में लगल हो देखऽ हइ हाय रे बजरा केमाड हो राम।
रजवा के ड्योढ़ी पर बैठल हइ पुलिस, मुंशी, देवान हो राम।
सब जे कापे लगलइ लोरिक के देख के हो राम।
खँरवा जे खींचिए लोरिक बजरवा तोड़लन केवाड़ हो राम।
कहाँ हउ, कहाँ हउ राजा तोर सहदेव हो राम।
डरवा के मारे समे हथवा जोड़इ हो राम।
हमर कोइ कसुरवा न हउ बिरवा जनमा बकस हो राम।
तब गरजि बोलऽ हइ बिरवा लोरिक मनिआर हो राम।
कौन ओरिया हइ रजवा के फौजवा देहि बतलाय हो राम।
ओहि सब फौजिआ से पहिले करबइ हम लोहा के मिरान हो राम।
एतना खबरिया पहुँच गेलइ फौजिया में हो राम।
लोरिक के नइयाँ सुन के फौजिआ थर-थर काँपइ हो राम।
सुनऽ सुनऽ फौजी भइया अपन तेगवा देहु रख हो राम।
तेगवा बाँध के जयबऽ त बिरवा सिरवा ले तो उतार हो राम।
जब ओकरे डरवा से राजा भागल तब हमनी के का ठेकान हो राम।
राजा सहदेव भी अहीर हउ आ लोरिक भी अहीरे हो राम।
दुनु जब मिली जयतउ ससुर दमदवा बनतौ हो राम।
हमनी काहे मँगनी में जनमा देवइ हो राम।
गढ़वा के बारह सौ फौजिया खाली हाथ मथिया माँगइ हो राम।
सब वीर लोरिक गरदनवा मार हइ खँरवा ले हइ उठाय हो राम।
कहाँ गेलउ रे फौजिया राजा सहदेव दुअरे पर दमदा हिअइ हो राम।
डरवा से सहदेव तिरिया के महलिया में गेलन लुकाय[१] हो राम।

---

१. छिप।

एतना जे कहि के लोरिक चरनिया छुअइ हो राम।
तब राजा सहदेव गरजी गरजिए बोलइ हो राम।
अब हमरा घरवा रे बेटा मड़वा मडलइ हो राम।
सउँसे गउरवा के पच भइया के न्योतवा देवइ घुमाय हो राम।
जाहु अपन घरवा साजी के लाहु बरात हो राम।
अपने जे हाथ से बेटी चँदवा के करबइ दान हो राम।
तब सब कोई जनतइ कि रजवा के लोरिक हइ दमाद हो राम।
लोरिकवा बोलऽ हइ सब नतवा देवी मइया देलन मिलाय हो राम।
एतना कहिए लोरिक घरवा गेलन मइया के कहे समुझाय हो राम।
आउर समुझयलन घरवा तिरियवा माजर हो राम।
तब विहँसिए बोलइ मंजरी सामी तोर खुनीला हतवौ परान हो राम।
अइसन बचन बोलऽ हऽ मंजरी हिरदा हमर देलऽ जुड़ाय हो राम।
जे कुछ कसूर कइली अपना से छमा करऽ विचार हो राम।
अब जल्दी से साजऽ चदवा के घरवा मइया कन भेजऽ हो राम।
टुँओं से इनकर गौना करके लयबइ हाय रे बिदाइ हो राम।
डोलिया पर बैठाइए चन्दवा के मंजरी भेजिए दे हइ हो राम।
बेटा चन्दरजीत चन्दवा के गोदिए बइठइ हो राम।
डोलिया के आगे पीछे चेरिया लउड़ी हो राम।
डोलिया के आगे हो बाजे बजवा हो राम।
जुमियो में गेलन चंदवा अप्पन मइया बाबू के पास हो राम।
झुकिए झुकिए चंदवा मइया के करइ परनाम हो राम।
बाबू के चरनीया चदवा छुए लगलइ हो राम।
बेटा चन्दराजित के चदवा ननमा के गोदिया देलन हो राम।
जे कुछ कसुरवा कइली माइ-बाबू छमा करऽ हो राम।
पचवा के बेटा जानी पचया के बँहियाँ छूली हो राम।
हम तोहर बेटिया हियो बाबू जी, बिरवे से कइली बिआह हो राम।
एहि सोचिए कि बाबू के पगड़िया ऊँचा होलइ हो राम।
अब राजा सहदेव खुशी भेलन हो राम।
अब जे रनिया से कहलन कि मँड़वा गराबऽ हो राम।
मँड़वा के न्योतवा गउरा सउँसे देहु भेजाय हो राम।

दुअरा पर रजवा बजवा देलकइ बजवाय हो राम।

● ⊙ ●

दिनमा जे सदिश्रा के पड़लइ माघ सिरी पंचमी हो राम।
श्रोहि दिन लोरिक बरनिया साजी श्रावइ हो राम।
बरतिया के संगमा हइ गुरुमितराजल हो राम।
छउँसे गउरा के श्रहीरा बरतिया साजले श्रावइ हो राम।
वीर जे लोरिकवा सोनमा के पालकी पर बैठल हो राम।
हँथवा में सोमइ लोरिक के खँड़वा तरूवार, हो राम।
बजवा श्रनेक बजवे चलल श्रावइ हो राम।
दुश्ररा पर जुमिए गेलइ रे बरतिया हो राम।
समधी मिलावन करइ सहदेव श्राउ बूढ़ कुब्जा हो राम।
गुरु मितराजल दुनों के श्रसीसवा दे हइ हो राम।
जब मँड़वा में बइठलन वीर लोरिक हो राम।
दस पाँच बीस पंडितवा वेदवा बाँचइ हो राम।
श्रब होवे लगलइ लोरिक के चंदवा से बिश्राह हो राम।
श्रपने हाथ से सहदेव बेटी चंदवा के दान करइ हो राम।
लोरिक के सदिश्रा में दान कैलन गउरा गुजरात हो राम।
छप्पन परकार के भोजन सहदेव पचवा के जिमाने हो राम।
दस दिन बरतिया रोकी लेलन गउरवे हाय हो राम।
श्रब तो बराती विदा होवे लगलइ लोरिक के हो राम।
चंदवा के गोदिया में राजा देलन गउरा के कुले धन हो राम।
श्रपना जे गड़वा निरमी देलन नाती चन्द्राजित के हो राम।

● ● ●

लौटिए बरतिया लोरिक के अवलइ अपन भवन हो राम।
सुलनी श्रौ मंजरी चंदवा के परछे लगलइ हो राम।
बिहँसि के बोलिया बोलइ हइ सुलनी सासु हो राम।
तोहरा तो दान देलिश्रउ मंजरी श्रब चंदवा लोरिक हो राम।
श्रब दुइ चार दिनमा पर लोरिक मांगइ हइ गोहरान¹ हो राम।
बोलइ मितराजल से कुले कारज गुरुजी भेजइ हमार हो राम।

---

१. मैना।

अब मनमा करे कि कखनी हम जइअइ भाइ के बदला लेबे हो राम।
जल्दी दहु हुकुमवा गुरु जी हम साजिअइ गोहरनमा हो राम।
जाहु जाहु रे बेटा पाली पिपरी गोहरान लेके हो राम।
साजिए गोहरनमा लोरिक पाली पिपरी जा हइ हो राम।
हुँआ के लड़इया हइ बड़ा विकटवा हो राम।
डेगे-डेगे गुरुमितराजल लोरिक के समुझावइ हो राम।
पाली-पिपरी में हउ लड़े वाला कोल्हवा हो राम।
ओकर मइया के अगुरी में अमृत हइ हो राम।
पहिले जे जाइ के मरिहे कोल्हवा के मइया हो राम।
तब कोल्हवा के बलवा टुटिए जयतइ हो राम।
एही सब भेदवा लोरिक के गुरुआ देलन समझाय हो राम।
तब बीर लोरिक देवी मइया के घरइ धेयान हो राम।
तोरे अकबाल से देवी मइया हरदी जितली हल हो राम।
ओइसने जितइह ऽ देवी मइया पाली-पिपरी हो राम।
देवी सुमिरनमा करिए जुमिए गेलन पाली पिपरी हो राम।
ओहि घड़िया महलिया में चुपके जुमलइ हो राम।
सुतल हलइ कोल्हवा के मइया निरभेस हो राम।
ओहि घड़िया मारइ हो लोरिक खँड़वा तानी हो राम।
राम राम कहिके कोल्हवा के मइया के छुटल परान हो राम।
लोरिक बोलइ मइया के करनमा तिरीया पर हाथ छोड़ली हो राम।
अब होवे लगलइ लोरिक जुधवा खातिर तइयार हो राम।
होयते भिनसरवा लोरिक जुधवा देलन ठान हो राम।
कोल्हवा के घरवा के घेर लेलन ले ले गोहरान हो राम।
डकवा अउ बजवा के चोट सुनइ कोल्हवा बलवान हो राम।
कौन ऐसन सुरमा रे चढ़ी ऐलन पाली पिपरी हो राम।
गोसवा के मारे रे कोल्हवा खँरवा खूँटी से लेलन उतार हो राम।
मारिए गरजवा कोल्हवा घरवा से बहराय[१] हो राम।
सो गो जे भइया हलइ कोल्हवा घरवा अप्पन हो राम।
सब छूट करके खेले लगलइ खुनमा हाय हो राम।

---

१. बाहर निकला।

लोरिक आ कोल्हवा में होवे लगलइ खूब जूझमार हो राम।
खट खट तेगवा बोलइ अउ झट झट कटइ मुंड हो राम।
मुरिया अउ लोथवा के ढेरवा लगलइ हो राम।
खुनिया के धार बहे लगलइ पाली पीपरी हो राम।
घड़ी जब घटवा तक युद्ध भेलइ लोहवा के भिरान हो राम।
अब मारल गेलइ लोरिक के हाथ से कोल्हवा वीर हो राम।
अब कोल्हवा के मइयवा मइया मइया खोजइ हो राम।
मइया के मरल लसवा देखइ कोल्हवा के भाइ हो राम।
ओहु त टरवा न मारे लोरिक के छुअइ गोर हो राम।
अब हमर जान छोड़ द ऽ हम तोहर टहल[1] करवो हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक विरवा हाय हो राम।
हमर सिंगा लाख गइया रे गउरवा देहि पहुँचाय हो राम।
चल तूँ हम्मर धरवा गइया के रहिहे बथान हो राम।
गइया चरइहे अउ दुहुएँ दिनमा कटतउ हो राम।
पाली-पीपरी जितिए लोरिक रजवा दखल करइ हो राम।
अब खुसी मन से लौटी अयलन लोरिक अप्पन मकान हो राम।
खुसी खुसी रहे हो लगलन गउरा-गुजरात हो राम।
इ सब जीत भेलइ हे देवी मइया तोहरे हाथ हो राम।
गढ़वा में बाजे लगलइ खुसिया के बाजा हो राम।

टिप्पणी—लोरकाइन[2] का नायक है—वीर लोरिक। इसका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था से ही यह बलिष्ट था। अखाड़े में इसने अस्त्र-शस्त्र सचालन और मल्ल युद्ध की अच्छी शिक्षा पाई थी। फलत. इसमें अद्भुत शौर्य विकसित हुआ। अपने भाग्य के निर्माण में, दुष्टों के विनाश में और सत्य के रक्षण में इसने खूब शौर्य-प्रदर्शन किया। अन्त में अपने साहस और बुद्धि के सहारे वह राजा हो गया।

अहीर लोग लोरिक की इस गाथा को अपने सभी उत्सवों और शुभसंस्कारों के अवसर पर गाते हैं। 'लोरकाइन' उनका जातीय काव्य है। प्राय एक ही व्यक्ति लोरकाइन गाता है। इसके गायक कभी ढोलक का व्यवहार करते हैं, और कभी नहीं। वीरकथात्मक होने के कारण इस गाथा के साथ ढोल बजा देने पर वातावरण में ओजस्विता आ जाती है।

---

१ सेवा। २ 'लोरकाइन' की कथा का साराश देखिये—खण्ड १, साहित्यभाग में।

१५ गीत राजा गोपीचन्द[1]

[६६]

(१) पहिरी गुदरी राजा बन चले। माता गुदरी धरि ठाढ़। नव महिना बेटा उदर में पाललूँ। दसवाँ में लिऐल ऽ अवतार। जनमतें मरिजैत ऽ बेटा, करतूँ सतोस। एतना न ऽ बोल ऽ गोपीचन्द कि, जानू मैया, जन्म के हम बाँझ ही। जानू हमरा कोख में ढाक मदार जन्मल, एह से अप्पन पापी प्रान के समुझाऊ। एतना बोलल मैंना माता, बसल बसल नगरी कैलऽ उजाड़। तोंहि बिना मँडलिया सून गोपीचन्द। एतना न ऽ बोलऽ गोपीचन्द कहे माता मैना, दूध के दाम देइ लेहु, तब पाछे फकीर होइ जाहु। एतना सुने गोपीचन्द तब सूझे धरती ऊपर असमान। कउन ऐसन बेटा होअत जे स्वर्ग के तरग गिनन। कउन ऐसन बेटा होअत जे माता के दूध के दाम देत। जो मैंना माता गाइ के दूध चहितौ, हाट बजार से मँगाय देतूँ। तोहार दूध से आलाचार है। तोहार दूध के माइ सारा बदन पालल है, तोहार दूध अनमोल है। गाइ भैंस के दूध बेटा नहि पिलोली। पिलौली हम स्थन के दूध। दूध के इरावन डाले जोगी। बेटा फकीर नऽ हो। आफ पाल ऽ गाढ़ी दीन गाढ़ी रात। एक दीन बेटा बिपत में काम आवह। तूँ निकल के, बे, फकीर जोगी मत होअ, एतना नऽ बोलह गोपीचन्द॥

(२) आन दे मैना माता छूरी कटारी। काट के कलेजी रख देऊँ, तब जोगी फकीर होइ जाऊँ। मैना माता दूध बकसू धर्म के। निहोरे लागे परदेसी तोहार जोगी। जियत रहऽ बेटा, जोगी हो के आइ मिलह। करि तीरथ बरत होय मवाब। मुलाकात करि दूर गेल माता। एतना नऽ बोलू, मैना माता कि हमें बकस लूँ। बकसथुन परमेस्वर जे जन्म कर्म देलक॥

(३) हाथिन के छोड़े गोपीचन्द। ऊँटन के छोड़े ऊँटसार। घोड़न के छोड़े घोड़सार। नव सै छोड़े पैंठान। पाँच सै रोए

---

१ डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित और अनूदित 'गीत राजा गोपीचन्द' का मगही प्रति ...] 'जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, १८८५' से उद्धृत है। यहाँ केवल ...क्तियाँ ही दी गई हैं, अनुवाद नहीं।

कन्या कुमार। नव सै रोए बिदायी। मैना माता रोऐ पटकि सिंघासन। हन्सा चिरई रोए कोठा व अटारी। गाँव के रोए रैयत रिसान। बाट के रोए बटोही। कुआँ के रोए पनिहारिन। ऐसन ऐसन दुलरुआ निकल के भेलन जोगी॥

(४) एतना बोलल मैना माता, सुनऽ बेटा हम्मर बात। तान मुलुक भिक्षा माँगऽ बहिनी के देस मत जाहु। भला तो कैलू माइ, चेतैलू चेताइ। भूलल बहिनी देलू समुझाइ। रोअत बहिनी तोहार छव मास। तेह बहिनी के नैहर के आस॥

(५) पहिला मंजिल कैलन गोपीचन्द। केदली जगल में परि गेल। साँझ बन क रोए बनसपति माइ। जगल के रोए हरिन। हरिन के रोअले जगल के पात खहराय। सूरत सकल देखि के आधी रात पछली पहर खाल के बचावे बनसपति। बनसपति के दया लागि जाय। बडे बडे सेर बडे बडे सिंह मार के खाइ जै है। बहिनी से मुलाकात नहिं होय। गोपीचन्द बोलल, चाहे मरों, चाहे जीओं, जाएब बहिनी देस। बनसपति के दया लागल। गोपीचन्द के तोता बनौली, अपने हन्स चिरई बनि जाय। घड़ी पहर में गोपीचन्द बहिनी के देस में उतार देलन॥

(६) बहिनी के देस में गोपीचन्द पहुँचल। मुँह खाक से भभूत लगाइ गुदरी से देह छिपाइ गली गली फीरे गोपीचन्द। सब के दोआर चन्दन के पेड़, नऽ राजा के दोआर चौन्हल नऽ परजा के, सब के दरवाजा फरी लगौलक। नगरी के लोग कहलन, बाबा टारऽ। माइ खबर सब लेन लेन। गोपीचन्द बोलल कि हे गाँव के बहिनी माइ। राजा के दोआर हमरा बताइ देहु। राजा के दोआर टीकव। परजा के दोआर नहिं टीकव। नगर के माइ बाहनी बोलन, ऊँची अटारी नीची दुआर। सोना के चौकठ रूपे केवाड़। औरा भीरा दा हाथिन। बारह बरस के सुगल चन्दन॥

(७) गोपीचन्द चलि भल बहिनीक दुआर। सुगल चन्दन तर धूँई दल जमाइ। बारह बरिस के सुगल चन्दन मेल

प चनार । देखे नगर के राजा परजा लोग । जोगी ना है । केऊ है भगवान । सूखल चन्दन बारह बरस के मेल कचनार । मूँगा लौंड़ी बोलली । सूखल सूखल चन्दन खातिर बरहमन खिलाऊँ । सूखल चन्दन होए कचनार । जोगी एक अनूप आईल । चार सखि आगे चार पाछे बीच में बहिनो उन्ह के चललन । खिरकी पल्ला खोलि देलन । एक नजर जोगी के ऊपर एक नजर चन्दन के पेड़ तर । सूखल चन्दन रानी देखे कचनार, रानी गिरल मुरछाइ ॥

(८) का जोगी भोजन करिहS । का करिहS अहार । कि राजा रसोइया जेमावत । गोपीचन्द बोलल, नई बिपत नराइन देलन । धूँआँ देखि नैना से आँसू ढरे । आग देखि देहो मे फोला पड़ि जाय । कह देह राजन के बरहमन के हाथ जेवनार बनावS, तब तो खाएब ॥

(९) मूगा लौड़ी भूलि गेल अपना पत्नी में । रानी भूलि गेल पाट सिगार । बरु बरहमन भूलि गेल अपना भङ्ग में । आधी रात पहिले पहर बीत गेल । केऊ खाएब के खबर नही लेलन । एतना म गोपीचन्द मुरली बजाइ, हम्मर बहिनी खात पीत होअत, तो सत के सवाइ बढ़ि जाय । खाय बहिनी बिसरल होअत । जेतना भण्डार में रहे सभ जरि जाएत । नवटी पात पुरावS नS खाय नS हम्मर धरम जाएत । एतना में सुनली बहिनी मुरली के सबद ।

(१०) मूँगा लौंड़ी, सभ खाय हमार नगरी में । जोगी उपास पर । मूगा लौड़ी कहली, हम का जानी । बरूआ बरहमन के बोलाइ भेजल । बरुआ बरहमन के बोललन, कि जलदी रसोइ दे आवहू जोगी के । बरुआ बोलल कि एक जोगी के कौन बिसात है । छप्पन सौ कूँअर जेवा देऊँ ॥

(११) सोना क खड़ौआँ पर होए असवार । जाइ के खोले भण्डार । देखे तो छप्पन तौला[1] में आग लागल । छप्पन तौल । गरावS[2] ता मुठी भर करौनी[3] निकसल । बरुआ बरहमन बोलल कि मूगा लाड़ा जोगी के रसोइ दे आवS ॥

---

१ भोजन । २ खिखोरो । ३ जला भोजनांश ।

जात के जुटाही मूँगा, बात के होशियार। गरी, बदाम छोहाड़ा, मोनका, पाँच खिल्ली पान लगा देथ। सोना के थाल में मूँगा लौंड़ी धर लेल। दही करौनी कटोरा मे। ले गगा जल पानी मूँगा लौड़ी चललन। ले बाबा जोगी रसोइ। तोहरा करम में आग लागे। कोपकाप करि अधियारी। उठि गोपीचन्द अकुताइ। सोना के तुमड़ी ले पानी। सोना के कटोरा में ले रसोइ।

(१२) कोपकाप के अधिअरियाँ अपने रसोइ देखें के गोपीचन्द हँस देत। रात हलै, तऽ दीन हो गेलइ। चदरी खोलि गेठिया लेलक रसोइया जलल करौनी। गोपीचन्द धूनी काढ़ के राखि खानत होइ। पाँच पतरी पर रख देलक। पाँचो परकार बनि गेल॥

(१३) होत फजिर जाए पोखरा पर असनान करे। सभ देह गुदरा से छिपाय, श्रो मुँह खाक भभूती लगाय। हमरा बहिनी नऽ चीन्हे। जोगी फकीर होइ जाऊँ। का गोपीचन्दा दाँत के बतीसी चमके। का गोपीचन्दा रे छले। एक बरन के गोपीचन्दा हलै श्री आठ बरन सूरत बदे। होत फजिर जाए बहिनी के दुआर। भिच्छा माँगे। जीए बहिनी बचा मुरादाय तोहार॥

(१४) गुदड़ी बस्तर मूँगा लौंड़ी नेहार, देखी जोगी के सरल सूरत, गावत जाय रगमहलां म। मूगा लौंड़ी कहलन कि हे बहिनी जउन रग के गोपीचन्दा भाइ छोड़, तउन रग के जोगी चन्दा बाबा। मूँगा लौड़ी सार भाइ भतीजा खाऊँ। हम्मर भाइ गोपीचन्दा जे आवत हो उजरेपा बसे जाय।

सखि आगे चार पाछे, सोनन के थाल में भीख ले ले। ले, बाबा जोगी, छाड़ऽ दुआर ॥

(१५) ककड़ पथल छाड़लूँ माता के महल में। एह ककड़ पथल ले के हम का करब। बहिनी बोलली, सोना चाँदी भिच्छा देत हिअउ, ककड़ पथल बनाइ देल कै। जौं कउनो साल दो साला देतू तो गुदरिया बनाय देतूँ। जोगी बाबा लेने नहि, ऐसी माटी कसम खा जाय। जोगी बाबा हम्मर दुआर छोड़ देहू। तोहरा जोग कपड़ा नहि है ॥

(१६) सुनि एतना बोलल गोपीचन्द, पाप धन गैलू उधराय। नहिं चिन्हहू कोसिया के सङ्ग भाइ। एतना सुन गोपीचन्द बोलल, हम नैहर के नाते तोहर भाइ ॥

(१७) जब जानूँ के हम्मर भाइ हौ कि बिआह जे मिलल हमरा से दे तूँ बताइ। गोपीचन्द बोलल कि देखऽ बाबा के हाथ के अगूठी सोभे। माता के चिटसार, भौजी के हाथ के कंगन ॥

(१८) एतना सुनि बाहनी बिरना घर के गुदरी लागे रोवे। माय बिरोगिन[1], भाइ जोगिया आज। बैसऽ बैसऽ भैया पाट के सिंघासन। दुनियाँ दौलत देऊँ भगाय। तोहरा दरवाजा बहिनी का करूँ। दो चार पैसा होइत, चूरी पहिरे के देहत। एतना मे बोल साध ननन्द। रात मूँगा ने हाथ के रसोइ छूअल खैलऽ। एतनी बेर चीन्ह पहचान भेल, ठनगन करत है। एतना सुनि बहिनी बिरना, कउन कउन बीजन[2], कउन कउन परकार खाय। चदरी के खूँट में जलल करौनी बहिनी देखिस। हाय करि के बहिनी गेल मर।

(१६) मारों छुरी कटारी। भाइ बहिनी के जगह मर जाऊँ। आय करि के नरायन बरहमन के रूप धरि पकड़ लिहलन। अरे पापी, कनगुरिया में अमरित रख है। ओहि

(२०) बहिनी उठि बैठल। गली के गली रोए। चन्दन के पेड़ धरि रोए। चन्दन के पेड़ लबाव कैलक, तुम का रोऊ। तोहार भाइ जोगी होइ गेल। एतना में बहिनी हाय करे। फाटे धरती आय समाय। भाइ बहिनी क नाता दुन्नो जने के टूट गेल ॥

टिप्पणी—'गीत राजा गोपीचन्द' का नायक राजा गोपीचन्द है, जो नाथ सम्प्रदाय में बहुत आदृत है। इसका चरित्र उत्तर भारत की प्रायः सभी जनपदी बोलियों में व्याप्त है। बंगाल में गोपीचन्द की गाथा बहुत लोकप्रिय है। इसका कारण यह है कि गोपीचन्द का सम्बन्ध बंगाल के पालवंश से था। जोगिया ने गोपीचन्द की गाथा को मगही में भी अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया है। इस गाथा में करुण रस की प्रधानता है। गोपीचन्द राज्य और भोग विलास, सब कुछ छोड़ कर जोगी हो गये। इस प्रसंग में माता मैनावती तथा बहिन चम्पा की गोपीचन्द से वार्त्ता बहुत मर्मस्पर्शी है।

भरथरी और गोपीचन्द की लोकगाथा जोगी जाति के लोग गाया करते हैं। इनकी वेषभूषा विशिष्ट प्रकार की होती है। सर पर भगवे रंग की पगड़ी, शरीर पर एक ढीला कुरता, भगवे रंग की धोती, बाँह में लटकी एक बड़ी झोली और हाथ में एक सारंगी, इन्हें एक विशेष रूप प्रदान करती हैं। बड़े करुण स्वर में ये गायक योगात्मक लोकगाथा सारंगी पर गली गली गाते फिरते हैं। इनके गाने में स्वर और लय की प्रधानता रहती है।

---

१६. छतरी घुघुलिया

[६७]

मामसपुर में हथन राजा रंडपाल सिंह, हथिया बाँधे तो गजनार।
घोड़िया भी रखे गुरमा दरिअहिया, देहुली जंगल रखे सिकार।
बारह कोस पे हलइ देहुली जंगलवा, जेकरा न देलन हैं कटवाय।
जंगल काट के रिया गउआँ बसौलन हैं, बामन गली औ तिरसन बजार।
ओहि गाँव में कचहरी एक उठौलन हल, रख लेलन मुंसी देमान।
दिवैलो के बतवा दिएँ छोड़ देली, पाटमपुर पे मुनउवेवान।
पाटमपुर में हथन माता भइया परमा, गाव मे बैलवा लादे रोज।

सात सौ बैल के साढ़े तीन सौ बेपारी हइ, सगे एक सौदागर जाये।
हिअवाँ के बतिया हिएँ छोड़ देली, झाझमपुर के सुनऽबेयान।
बैलवा के आते देखइ राजा रंडपाल सिंह, करइ पेयादा के पुकार।
कौने ही सरवा के आवइ बैलवा, सब तगी ले तूँ धराय।
तगी धराते मार के बड़ी मार मरीहे, बैला दीहे जंगल में बेलाय[१]।
एतना बात तो सुने पेयादा, जा हइ बेपरिया के पास।
अब आगुए से छेंकइ पेयदवा, सुन बेपरिया एक बात।
राजा रंडपाल सिंह के पइली हुकुमिया, सब तगी देहि रे धराय।
हथवा जोड़ के बोलइ हुआँ बेपरिया, सुन पेयादा रे मोर बात।
नाहिएँ में एलकइ सेन खरिहनवा, सब के हइ गलवे म लगाम।
एतना बात जब सुनइ पेयदवा, सुन बेपारी रे मोर बात।
झाझमपुर के हइ राजा रंडपाल सिंह, हथिया त बाधे गजनार।
ओही राजा के पयली हुकुमवे मरवे, सब तगी देही न धराय।

● ● ●

घाटमेपुर में हइ सातो भाइ घटमा, हुएँ बेपरिया जुमी जाय।
हाथ जोड़ के बोलऽहइ बेपरिया, सुन राजा हमर एक बेयान।
झाझमपुर में हथन राजा रंडपाल पाल सिंह, तगी लेलन धराय।
एतना जे बतिया सुनइ बड़के घाटम, तड़वे के लहर चढ़इ कपार।
जल्दी ला दे जयपत कोरा कगजवा, आउ ला दे कलम दवात।
पगुआ के नेओता लिखिए घाटम, गागू हजमा से दे हइ भेजाय।
अपनी महलिया बैठल राजा रंडपाल सिंह हुँए हजमा जुमि जाय।
चिठिया लेके राजा रंडपाल सिंह, रंगमहल में चलि जाय।
न्योतवा के बतिया सुनलन रानी जसोदा, रोवे लगलन जार बेजार।
एहु न्योतवा सामी मार के रखऽ, बाँये दहिने बोले काग।
राजा बोलइ हम छत्तरी कहाइला, येहू ना न्योता पूरे जायम।
लोहा पोसाक पेन्हइ राजा रंडपाल सिंह, बान्ही लेलन छप्पन कटार।
हैकल घोड़िया लेके राजा रंडपाल सिंह, घाटमपुर चलि जाय।

● ● ●

घाटमपुर में सातो भइया घटमा, सातो त हइ अधम चंडाल।

---

१. भगा (देना)।

बचा सुन के गतिया बिनौलन, जोड़ा तरहरा[1] देलन खनाय ।
एक लोटा सरबत हलइ, दुइ लोटा जहर, तीनों रखल हलइ मिलाय ।
एतने में पहुँचऽ गइ राजा रंडपाल सिंह, सातों भइया कैलन सलाम ।
राजा के बैठते गतिया पक्का हो गेल, मानो भइया गेलन सरमाय ।
एक ठोप मरतन राना भुइयाँ गिरयलन, देखि भइया लेलन चाट ।
तब धोखा से दारू पिला के, घटमा ले लइ बहनोइया के परान ।
मरे के खबरवा[2] सुनलन रानी जसोदा, रोवे लगलन जार बेजार ।
मलवा के बदला भइया मलवा तू लेनऽ हल, मोरा काहे कैलऽ राँड़[3] ।
गागरा हाथ घाटम भेजइ डगरिन[4], रानी के पेट तूँ दे ही गिराय ।
डगरिन हँड़िया भर पान के पीर लेके, घाटम के ले हइ फुसलाय ।
परान बचावे ला भागइ रानी जसोदा, आ हइ राजा बृजभान के पास ।
रानी के सुरतिया देखि के राजा तब मनमा में करइ विचार ।
तोरा से रखबउ निग्रहवा रानी, तोरे ही रखबउ रानी बनाय ।
एतना जे बतिया सुनलन रानी जसोदा जी, सुन राजा एक बात ।
तोरा लगीला भगिन पुतोहिया, कहते सरम न आयल ।
गोस्सा के मारे राजा दे हइ हुकुमवा, रानी के फाँसी चढ़ाव ।
रानी के सुरतिया देखइ हेमद मोदिया, जी में दया उमड़ि जाय ।
चल गेलन राजा के पास हेमद मोदिया, झुक के करऽ हइ सलाम ।
ए ननदा भउजइया में भलइ झगड़वा, मोर बहिनी घर से बहराल[5] ।
रानी समुझा कैलक मार बहिनिया, काहे फाँसी देलऽ चढ़ाय ।
एतनी बात त सुने राजा बृजभान, सुन मोदी रे मोरी बात ।
जल्दी रानी जाहु बचे जगावा, बहिनी के लेहु न छोड़ाय ।
दौड़ि पहुँचल गेलन हेमद मोदिया, रानी के लेलन छोड़ाय ।
जसोदा जी हेमद मोदिया घर एला, लरिका दोहान बढ़ि जाय ।

ए मोरा से अलग रह डगरिन, देवी मइया कटिहें नार।
कासीपुर से *अयलइ बमना, पोथिया खोलि करइ बिचार।*
छतरी कुल के तोर भगना हउ मोदी, छतरी कुल मे करतउ नाम।
बाबन लाख रुपया **राजा बृजभान** से चुकैतउ, सूद में करतउ ओकर बेटी से बिआइ।
छत्री कुल के तोरो हउ भगिनमा **मोदी, छतरी घुघुलिया** धइली नाम।

✿ ✿ ✿

बारह बरस के भेलन **छतरी घुघुलिया**, सुरमा जा हइ गंगा नहाय।
ऊँचा अररिया[1] पर धोती रखलन, गंगा में गोता लेलन लगाय।
बुढिया के रूप कैले देवी मइया **सरधा**, धोती लेलन उठाय।
आगुए से छेंकइ छतरी घुघुलिया, सुन बुढिया गे मोरी बात।
एहि रहिया बुढिया तुहूँ जे अइले, मोरो धोती लेले चोराय।
देवी मइया बोलइ काहे तूँ बेटा, हमारा कयलऽ बदनाम।
जल्दी सनी रहिया छोड द बेटा, भुखवा से छूटे रे परान।
एतना जे बतिया सुनइ रे दुलरू, सुन बुढिया रे मोरी बात।
एक मुट्ठी अच्छत है देवी पूजन के, ओकरे भोजन तोरा खिलाम।
कैसे में खयबइ तोरा हाथ के भोजन, तोरा छुतका लगल होय।
कौने करनमा मैया लगल छुतकवा, साँचे हलवा देहु बताय।
तोहरो मामू घाटम बेटा, ओहु जे लेलकइ तोहरा बापके परान।
तोरा बाप के जान त मरलकउ, जेकरो न कयलकउ ह ऽ काम।
ओहि करनमा बेटा छुतका लगलउ, सच्चे हलवा देली बताय।
एतनो बतिया सुनइ **छतरी घुघुलिया**, तरवा के लहर चढइ कपार।
जल्दी सनी देहु न हुकुमिया देवी मैया, सातो के सिरवा लावी उतार।
एतनी जे बतिया सुनइ देवी मइया **सरधा,** *सुन बेटा कहल हमार।*
गेरु रंग कपडवा तुहूँ रगाले बेटा, योगी रूप लेहु ना बनाय।
घाटमपुर नगरिया मे धमकी देके, बाप के कमवा ले कराय।
हैकल घोडी त हउ तोरे बाप के, ओहु दान लीहऽ कराय।
लोहा पोसाक हउ तोरे बाप के बेटा, सेहु दान लीहऽ कराय।

✿ ✿ ✿

जोगी के रूपवा बना के दुलरू, **घाटमपुर** नगरिया चलि जाय।

---

1. अरार।

घाटमपुर में हइ चारा इनरवा, हुआँ दुलरू रे जुमि जाय।
चौरा इनरवा के पानी गमकलइ[1] लउरी[2] पूछइ सचा बात।
तोरो हीआँ राजा चढलवा, मरलउ बहनोइए के जान।
अपने बहनोइया के मरलइ है, जेकरो न कयलकइ है काम।
ओहि करनमा लौंगी न पनिया गमकलइ, मोरा केनना चढल अपराध।
दौड़ल गेलइ चेरिया घाटम के महलिया, कहइ सब बेयान।
लउरी के बतिया सुनके जयपत, चेवरा इनरवा न चलल आयल।
हथवा जोड़िला बरहमा, कहइतहिला कि मोरा घरवा भी जरा आवऽ।
एतनी जे बतिया सुन के छतरी घुघुलिया, सुन रे जयपत कहल हमार।
तोरे जे भयवा हउ अधम चढलवा, मरलकउ बहनोइए के जान।
हम तोरा घरवा पर जयबउ जयपत, मरवे हमरे रे तुहू जान।
कोई ज उपयरा बताय देहु बरहमा जी, कि दोख पपवा कटि जाय।
एतनी बात जे सुने छतरी घुघुलिया, चल गेलइ घाटम के पास।
तब बोलऽ हइ घाटम, बरहमा जी करहु उपयवा दोस-पाप कटि जाय।
तब बोली बोलऽ हइ छतरी घुघुलिया, सुन घाटम कहल हमार।
अस्सी गो बराहमन के तू भोजन करा दे, हैकल घोड़िया कर दे दान।
लोहा पोसाक हउ तोरे बहनोइया के, आहु दान दे तूँ कराय।
सब जब दनवा करावे राजा, दोस पाप कटि जाय।
अस्सी गो बराहमन भोजन जे करलन, कोई हैकल घोड़ि के न लेइ दान।
लोहा पोसाक लेलक छतरी घुघुलिया, हैकल घोड़ि के लेलक दान।
अब लोहा पोसाक पेन्हइ छतरी घुघुलिया, उतो बांधी लेलकइ छप्पन कटार।
हैकल घोड़िया पर सवार हाक, जल्दी तेगवा लेलकइ निकाल।
सुन मामू घटमा नाहि हम जोगिया, छतरी घुघुलिया भगिना तोर।
तेगवा से करीला सलाम मामू, माथा के सिरवा लेवउ उतार।
अब घोड़वा के मार ऽहइ एड़िया हुआँ, देवि के मजिल में चलिआयल।
जल्दी सनी देहु हुकुमा देवी मैया, माथा के सिरवा लाईं जे उतार।
गम्भुर दतुरिया होके बोलइ देवी मइया, सुन बेटा कहल हमार।
बावन लाख रुपैया चुकावऽ राजा वृजभान से, गढ़ में करऽ ओकर
बेटी से बियाह।

१ महँका। २ दासी।

एतनी जे बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, मामू से पुछइ करजा[1] के हाल।
हेमद मोदिया कहइ काँचे तोर उमरिया, कैसे दिअउ करजा बताय।
चलि गेलइ **मोदिया** राजा दरबरिया, कहइ राजा तु ँ द ऽ करजा चुकाय।
एतनी जे बतिया सुनइ **राजा बृजभान**, सुन **मोदिया** रे मोरी बात।
कुछ देबइ आसिन में, कुछ त कातिक में, पाइ-पाइ अगहन में चुकाय।
कहइ **छतरी घुघुलिया**, नहीं मानम मामू, हम पाइ पाइ अभी लेम चुकाय।
पहुँची गेलइ **छतरी घुघुलिया** राजा दरबरिया, सुन राजा मोरी बात।
बावन लाख रुपेया अबही चुका दे, दे सूद में कर अप्पन बेटी-से बिआह।
एतनी जे बतिया सुनइ **राजा बृजभान**, उनकर तरवा के लहर चढइ कपार।
सुन रे पेयादा अलउ एक फनगा[2], बोली से बोलऽ दउ कछु बोल।
मच्छरे नीयर सार के मार के तूँ छोड़, चटनी नीयर पीसी दे।
पेयदवा अलइ **छतरी घुघुलिया** के पास, **हैकल घोड़िया** दौड़इ करेला अहार।
हैकल घोड़िया के आगे देखइ पेयदवा, त भागऽ हइ जरवे बेजार।
जेकरे जे घोड़ी करइ मानुस के अहरवा, उनकर ताकत के केतना-ठेकान।
एतनी जे बतिया सुनलक **राजा बृजभान** गढ पर्वत पर डंका देइ बजवाय।
डंका के अवाज सुन के पलटन तब, गढ पर्वत पर जूमि जाय।
पलटन बीच में जब कूदे **हैकल घोड़िया** कि पलटन गेल घबड़ाय।
चारो तरफ नौकरी मारे **हैकल घोड़िया**, पलटन गेल पटियाय।
छन ही में जीत गेलइ लड़इया दुलरू, मार देलन चौदह हजार।
लोथवा के नीचू **पूरममल देवनमा**, उभी भागे जरवे बेजार।
जेकरे पीछू तो चलइ **छतरी घुघुलिया**, बैरन कचहरिया में चली जाय।
बावन लाख रुपेया राजा अबहु तो लेवउ, सूद में **सुखवन्तिया** के बोलाव।
चारो ही तेगवा के मड़वा बनैलन, ढाल के छवनी दे दलाय।
दुएँ पर रानी के बइठाय के दुलरू, माग में सेनुर दे हइ डाल।
लाली जब डोलिया सजा के दुलरू, ओमे रानी के देलन बैठाय।
बावन लाख रुपेया ले ले हेमद मोदिया, लाली डोली के चलइ साथ।

● ● ●

गुपुत चिठिया लिखि के **राजा बिरिजभान**, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दोस[3] पर पड़लइ बिपतिया, दोस दीहऽ गढ्वे में काम।

---

[1] कर्ज। २. कीड़ा। ३. मित्र।

बामन लाख रुपिया पलटन के लूटि खिलैहS, रानी के तुरकिन दीहS बनाय।
हैमद मोदिया क सिर उतारिहS, मान क बदला सब लीहS चुराय।
चिठिया पढ़इ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलनइ छेंक।
डोलिया से देलS हइ रानी मुसमन्तिया रोवे लगलइ जरवे बेजार।
अब नहि बचतइ परनमा देवी मइया गे, एभी जियल के धिककार।
ए सन्मुख हजुरिया बोलइ देवी मइया, तोर सिरवा के लानी ला जगाय।
ऊँचे पलंगिया सूतल छतरी घुघुलिया, हुएँ देवी मइया जुमि जाय।
गुपुत चिट्ठा लिखS हउ राजा विरिजभान, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दिल्ली सहर में हउ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलकउ छेंर।
बामन लाख रुपेया जब पलटन लूट लैतउ, रानी क तुरकिन देतउ बनाय।
एतनि जब बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, उनकर तरवा के लहर चढ़इ कपार।
अब लोहा पाखर पहनी छतरी घुघुलिया, चान्दी लेलन छपनो कटार।
हैकल घोड़ि पर चढ़ि पलटन बीच गलन, सुन रे पलटन मोरि बात।
कहाँ से चललइ बरतिया, कहवाँ के कैलS है मोकाम।
एहु बरतिया में हमहुँ जब चलबइ रि मैं भी चूरा-सु दिया साम।
डिलिया सहर स चललइ पलटनिया, लाली डोलिया कैली है मोकाम।
बामन लाख रुपया पलटन लूटि हम लैबइ, रानी के तुरकिन देबइ बनाय।
हैमद मोदिया क सिर उतरबइ, मान बदला लेबइ हम चुराय।
तरवा क लहर चढ़इ दुलरुआ क, अब सुन पलटन रे मोरी बात।
जेकर घर में हउ गौना के र तिरिया, उनके भाग से फुरि जा[1]।
जेकर घर में हउ बुढ़िया रे मइया रे, उनके भाग से घुरि जा[2]।
पलटन बीच घुसइ हैकल घोड़िया जैसे भेड़िया में घुसल हइ हुँडार।
चौदह हजार पलटन मारइ छतरी घुघुलिया, एको सिरवा न देलक घुराय[3]।
लोथवा क नीचे पड़ल पूरनमल देवनमा, ओभी भागे जरवे बेजार।
बैरन कचहरिया गलइ पूरनमल देवनमा, सुन राजा जी कहल हमार।
ओभी पलगा क पलगा न समझिहS आभा सिरवा लेलक ओतार।
पाने में चुनइ छतरी घुघुलिया, राजा विरिजभान क सिरवा लेइ उतार।

o ● ●

ने पलंगिया खाल छतरी घुघुलिया, चुरवे से पुरनमल नेगया चलाय।

चा। २. लौट जा। ३. लौटा कर।

सुतले में मरते देखलन **रानी सुखन्तिया**, रोवे लगलन जार बे जार।
अपने सती पर जब पति के उठैलन, सिहुली जगल में लेइ जाय।
रोइए रोइए लकडी चुनइ **रानी सुखन्तिया**, जगल मे चिता लेइ बनाय।
बुढिया रूप कैलन देवी मइया **सरधा**, सुन बेटी कहल गे हमार।
एकरा से आला दुलहा तोहरा हम खोजबउ, तोहुँ कर दूसर गे बिआह।
एतनी जब बात सुनइ **रानी सुखन्तिया**, सुन बुढिया गे मोरी बात।
बुढया बैसवा[1] मे लगलउ सौखवा, तूँही दूसर करे न बिआह।
हम अप्पन पति सग सती होइ जैबइ, तोरा काहे भरचा गे बुझाय।
एतना बतिया सुनइ देवी मइया, चल गेलइ **रानी जसोदा** क पास।
सिहुली जंगलवा तोहर बेटवा मारल गेलउ, तोहुँ लाव मदिल म उठाय।
रोइते जाइइ जब ए **रानी जसोदाजी**, सिहुली जगल म चलि जाय।
गोदी मे उठा के बेटा के जसोदा जी, मदिल म चलि जाय।
देवा देवी करि क पुकारलन जसोदा देइ, सुन गे देवी मोर बात।
पइयाँ पकड़ि देवी मिनता करी तोहर चउरवा, मोर बेटा के दऽ जिलाय।
अरबा लेबइ चउरा, चननमा के लकडी, तोहरे चउरवा पूजे आम।
काली जब पठिया[2] कुमारी देवी मइया तोरे, चौरा देबोअ चढाय।
फूल के चदरिया ओटैलन देवी मइया, अब सुरमा के देलन हे जगाय।
सुरमा जे उठऽ हइ देवी के मदिल में, सुन गे मैया मोरि बात।
अब जल्दी से हुकुमवा देहु देवी मइया, मामू के सिरवा लामी उतार।
अभी घरवा जाहु बेटा अभी घरवा रहु, अब कुछ दिनमा के बाद।

❀ ❀ ❀

कुछ दिन के बाद जब दिनमा बीति गेलइ, मामू कन से चिठिया आय।
अगल बगल लिखल हइ सलाम, बाकि बीचे में लिखल हइ तिलाऽ[3]।
घाटेमपुर मे हइला माता मइया घटमा, अटपे भगिनमा जोड़ीदार।
अब छठी के नउतवा भगिना दिला भेजाइ, एही नेउतवा पूरे आव।
गंगु हजमा से चिठया लेइ कुतरी घुघुलिया, रगमहल म चलि जाय।
मामू कन से नेओता एलइ मोरी मइया, नेयोता पूरे हम जाम।
इ नेयोता मति जाहू बेटा, मामू हउ अधमा चडाल।
फगुआ नेयोता देइ बाप के मरलकउ, छठिया नेयोता मरतउ तोर जान।

---

[1] अवस्था। [2] बकरी का बच्चा। [3] सौगन्ध।

बामन लाग रुपिया पलटन के लूटि लिहैहऽ, रानी के तुरकिन दीहऽ बनाय।
हैमद मोदिया के सिर उतारिहऽ, मान के बदला सब लीहऽ चुकाय।
चिठिया पढइ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलनइ छेंक।
डोलिया से देखऽ हइ रानी सुरमन्तिया रोवे लगलइ जरवे बेजार।
अब नहिं बचतइ परनमा देवी मइया गे, एभी जियल के धिककार।
ए सन्मुख हजुरिया बोलइ देवी मइया, तार बिरदा के लाजी ला जगाय।
ऊँचे पलगिया सूतल छतरी घुघुलिया, हुएँ देवी मइया चुमि जाय।
गुपुत चिठी लिखऽ हउ राजा बिरिजभान, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दिल्ली सहर में हउ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलकउ छेंक।
बामन लाग रुपेया जब पलटन लूटि लेतउ, रानी के तुरकिन देतउ बनाय।
एतनि जब बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, उनकर तरवा के लहर चढइ कपार।
अब लोहा पोसाक पहनी छतरी घुघुलिया, जाड़ी लेलन छपनो कटार।
हैकल घोड़ि पर चढ़ि पलटन बीच गेलन, सुन रे पलटन मोरि बात।
कहाँ से चललइ बरतिया, कहवाँ के कैलऽ है मोकाम।
एहु बरतिया में हमहुँ जब चलबइ कि म भी चूरा-खु दिया खाम।
डिलिया सहर से चललइ पलटनिया, लाली डोलिया कैली है मोकाम।
बामन लाग रुपेया पलटन लूटि हम लैबइ, रानी के तुरकिन देबइ बनाय।
हैमद मोदिया के सिर उतरबइ, मान बदला लेबइ हम चुकाय।
तरवा के लहर चढइ दुलरूआ के, अब सुन पलटन रे मोरी बात।
जेकरे घर में हउ गोना के रे तिरिया, उनके भाग से फुरि जा[१]।
जेकरे घर में हउ बुढिया के मइया रे, उनके भाग से घुरि जा[२]।
पलटन बीच घुसइ हैकल घोडिया जैसे भेड़िया में घुसल हइ हुँड़ार।
चौदह हजार पलटन मारइ छतरी घुघुलिया, एको सिरवा न देलक घुराय[३]।
लोथवा के नीचे पड़ल पूरनमल देवनमा, ओभी भागे जरवे बेजार।
बैरन कचहरिया गेलइ पूरनमल देवनमा, सुन राजा जी कहल हमार।
ओभी पनगा के पनगा न समाभहऽ ओभा बिरवा लेलक ओतार।
एतने में सुनइ छतरी घुघुलिया, राजा बिरिजभान के सिरवा लेइ उतार।

● ● ●

सोने पलगिया सूतल छतरी घुघुलिया, चुपके से पुरनमल तेगवा चलाय।

---

१ भाग जा। २. लौट जा। ३. लौटा कर।

सुतले में मरते देखलन रानी सुखन्तिया, रोवे लगलन जार बे जार।
अपने सती पर जब पति के उठैलन, सिंहुली जंगल में लेइ जाय।
रोइए रोइए लकड़ी चुनइ रानी सुखन्तिया, जंगल में चिता लेइ बनाय।
बुढ़िया रूप कैलन देवी मइया सरधा, सुन बेटी कहल गे हमार।
एकरा से आला दुलहा तोहरा हम खोजबउ, तोहुँ कर दूसर गे बिआह।
एतनी जब बात सुनइ रानी सुखन्तिया, सुन बुढ़िया गे मोरी बात।
बुढ़िया बैसवा[1] मे लगलउ सौखवा, तूँही दूसर करे न बिआह।
हम अपन पति संग सती होइ जैबइ, तोरा काहे भरवा गे बुझाय।
एतनी बतिया सुनइ देवी मइया, चल गेलइ रानी जसोदा क पास।
सिंहुली जंगलवा तोहर बेटवा मारल गेलउ, तोहुँ लाव मंदिल में उठाय।
रोइते जाइइ जब ए रानी जसोदाजी, सिंहुली जंगल में चलि जाय।
गोदी में उठा के बेटा के जसोदा जी, मंदिल म चलि जाय।
देवी देवी करि के पुकारलन जसोदा देइ, सुन गे देवी मोर बात।
पइयाँ पकड़ि देवी मिनती करी तोहर चउरवा, मोर बेटा के दऽ जिलाय।
अरबा लेबइ चउआ, चननमा के लकड़ी, तोहरे चउरवा पूजे आम।
काली जब पठिया[2] कुमारी देवी मइया तोरे, चौरा देबौअ चढ़ाय।
फूल के चदरिया ओढ़ैलन देवी मइया, अब सुरमा के देलन है जगाय।
सुरमा जे उठऽ हइ देवी के मंदिल मे, सुन गे मैया मोरि बात।
अब जल्दी से हुकुमवा देहु देवी मइया, मामू के सिरवा लामी उतार।
अभी घरवा जाहु बेटा अभी घरवा रहु, अब कुछ दिनमा के बाद।

❂ ❂ ❂

कुछ दिन के बाद जब दिनमा बीति गेलइ, मामू कन से चिठिया आय।
अगल बगल लिखल हइ सलाम, बाकि बीचे में लिखल हइ तिलाक[3]।
फाटेसपुर में रहता सातो भइया चरसा, अठवें भगिनमा कोड़ीदार।
अब छट्ठी के नउतवा भगिना दिला भेजाइ, एही नेउतवा पूरे आव।
गंगु हजमा से चिठिया लेइ छतरी घुघुलिया, रंगमहल में चलि जाय।
मामू कन से नेओता ऐलइ मोरी मइया, नेयोता पूरे हम जाम।
इ नेयोता मति जाहु बेटा, मामू हउ अधमा चंडाल।
फगुआ नेयोता देइ बाप के मरलकउ, छठिया नेयोता मरतउ तोर जान।

---

१. अवस्था। २ बकरी का बच्चा। ३ सौगन्ध।

हम छतरी कुल के हइला, छतरी घुघुलिया, एभी नेयोता पूरे जाम।
अब लोहा के पोसाक पेन्हि छतरी घुघुलिया, बाधि लेलक छपनो कटार।
हैकल घोडी चढ़ि घाटमपुर गेलन, विरवा करइ मामू के सलाम।
अब हाथ मूँह धोइ लेहु ओ मोरे भगिना, जेमेला रसोइया चल भात।
अभी नहा रसोइया जेमवइ मामू, हम खैबइ कुछ देर के बाद।
घाटम बोलल जैपल तूँ जेम[1] घड़ी सिरवा लाहे उतार।
एतनी जे बात सुने छोटकी ममानी, रोव लगलन जार बेजार।
हाथ क कगनमा म लिखि जब देलन, भगिना के कैलन पुकार।
एभी धरवा में तुहूँ होसियार रहिहऽ, तोहरो मरतउ जान।
जब ले नऽ देवऽ मामू बखसीस, तब ले भोजन नहीं खाम।
कुछ दे हइ सोना कुछ दे हइ चांदी, मोर भागना रसोइया जेम।
हैकल घोडीया चढ़ि छतरी घुघुलिया देवा के मदिलवा चलि जाय।
जल्दी सना देहु न हुकुमिया देवी मइया, सातो न स वा लामी उतार।
ए दिलवा में धिरजा धरहु बेटा, अभी कुछ दिनमा के बाद।

o o o

कुछ दिनमा जब बीत गेलइ, रानी सुरुन्तिया करइ विचार।
अब सैरा पोखरवा में लगलइ सिखोरवा, सैरा पोखरा नहाम।
सास बोलइ जेकर धरवा म सुनर इनरवा, से काहे सैरा नहाय।
एतनी बात जब सुनलक रानी सुरुन्तिया, सुनऽ माता मोरी बात।
अब पनिया न लगलइ पिअरवा मोरा, कुयवा कैसे करि हम अधार।
अब सेरा पोखरा न मइया सौगवा लगल है, तब कैसे चौरा निहाम।
हम नहि देबउ हुकुमवा बेटा गे, अपना पति से पूछि लऽ।
तब बाला बालऽ हयन रानी सुरुन्तिया, सुनऽस्वामी मोरी बात।
सैरा पोखरा क सौखवा लगल सामी जी, हम सेरा म नहाम।
एतनी ने बात सुनइ छतरी घुघुलिया चोटे[2] सहक देलन खिचवाय।
अब लाली जब डोलिया पर बैठि के रानी, सैरा पोखर में चलि जाय।
सैरा पोखरवा पर हइ साना भइया घाटम, सातो मछरिया मारे आयल।
रानी क सुरुतिया देखइ जब घाटम, सुन जयपत रे मोरी बात।
ककर घर क हइ ई सुनर तिरिया, एकर ले चल उठाय।

१ भोजन। २ तुरत।

एतने बात जब देखइ सुधु महरा, दौड़ल गेलइ लखिया दोकान।
सैरा पोखरवा पर रानी जब गेलन कि हुँए पर धाटम जूमि जाय।
अब नहिं बचतइ इजतिया रानी के, मोरे संग चलऽ साथ।
सैरा पोखरा पर जूमि गेलइ छतरी घुघुलिया, सातो गेल धबराय।
अब जल्दी सनी तेगवा खींच के दुलरु मामू पर देलन चलाय।
छओ मामू के मारि के बिरवा, सतवाँ पर दौड़इ खिसियाय।
तब छोटकी ममनिया कहइ भगिना सेनुरा के लाज बचाव।
छोटकी ममनिया के गुनमा सोचि मामू के नकवा काटि देलक छोड़।
बड़िय खुसी खुसी छतरी घुघुलिया लखिया दोकान लौटि जाय।
बड़िय सौग में हथन छतरी घुघुलिया, घर पर देखलन काम काज।
जब सब बतिया पूरा होलइ, रानी जसोदा मंदिल में चलि जाय।
अरवा लेलन चउरवा, चननमा के लकड़ी देवी के चउरवा पूजे जाय।
काली लेलन पठिया, कुआँरी देवी मइया, चौरा पर देलन चढ़ाय।
हथवा उठा के देवी मइया सरधा, दुलरु के देलन बरदान।

टिप्पणी—इस लोकगाथा का नायक 'छतरी घुघुलिया' वीरता का अवतार है। *इसमें क्षत्रियत्व का आदर्श रूप दिखाई पड़ता है। बाल्यावस्था से ही उसमें दैवी गुणों* का विकास होने लगता है। शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भाँति उसके रूप और गुण की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। अपनी अप्रतिम वीरता से वह दुर्जनों को दंडित करता है। उसके मामा सात भाई धाटम अनार्य प्रवृत्तियों से युक्त हैं, उनका नाश करके ही वह शान्ति पाता है। राजा बिरिजभान भी अपनी करनी का फल पाता है। छतरी घुघुलिया की इस अद्वितीय वीरता से उसकी माँ रानी जसोदा के अन्तिम दिन सुख शान्ति से कटते हैं।

इस लोकगाथा का सम्बन्ध मध्ययुगीन भारत से प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें उस युग की कई स्थितियों का संकेत मिलता है। यथा—राजा बिरिजभान द्वारा दिल्ली की सेना को लूटपाट के लिए निमंत्रण भेजना तथा रानी सुखमन्तिया को पकड़ कर 'तुरकिन' बनाने की प्रेरणा देना।

छत्री घुघुलिया की गाथा समाज के विविध स्तर के लोगों में प्रचलित है। इसे एक ही गायक गाता है। इसके लय में बिरहा गीत से सादृश्य है। इस वीरत्वात्मक लोकगाथा के साथ ढोल बजा देने पर वातावरण में ओजस्विता आ जाती है।

—-०—-

१७ रेसमा

[६८]

देवी सुमरनमा करे रेसमा, बैठि अपन महलिया में न गे।
अगे एतबड़[1] सुरतिया[2] ना देवी काहे ला, हमरा उरेहलऽ[3] हल गे।
अगे कनहूँ न मिलइ हमरा जोगे गभरुआ[4] न गे।
हमरा जोगे हइ गे देवो मइया वीरमल चूहरमल न गे।
अगे उनके से जोड़ली न, अपन हम पिरितिया न गे।
उनके ला करऽ हि देवी, तोहरे पुजनमा न गे।
अगे नित दिन सुनऽ हिअइ कि बिरवा हइ मोकामा टरिया न गे।
मोकाम टरिया मे आ देवी चाड़ाडीह हइ अखड़वा न गे।
ओहि अखड़वा मे देवी मइया हमर वीरमल चूहरमल न गे।
कौने बहनमा ले देवी हम जइअइ चड़ाडिह अखरवा न गे।
अगे आझु केर दिनमा गे देवी हम पनियाँ के करबइ बहनमा न गे।
अगे ओहि जबे रहिया में न, तुलसीरामहिं इनरवा हइ न गे।
अगे ओहि ठइयाँ[5] आवऽ हइ न हमर वीर चूहरमल न गे।
एतना मनमा सोचिय गे रेसमा, सोरहों करइ सिंगरवा न गे।
देखइ दरपनमा रेसमा, देखि देखि बिहँसइ न गे।
मइया बहनमा करे रेसमा, तुलसीराम जयबइ इनरवा न गे।
बिहँसि बिहँसि के रेसमा मइया में गेलइ लपटाइए न गे।
अगे मइया हम पनिया लैबइ अउ तोहरो चरनिया धोवइ न गे।
जल्दी देहि हुकुममा गे मइया तुलसी हम जइबइ इनरवा न गे।
एतना बोलिया सुनिये रेसमा के, मइया समुझावइ न गे।
अगे मनु तोंहि जाहि न बेटी, तुलसीराम इनरवा न गे।
तुलसीराम इनरवा आवइ गाँव के बाबू-भइया न गे।
अगे ओहि रहिया आवउ न बेटी मइया के गुरुभाइ न गे।
जिनकर नइयाँ हइ न बेटी वीरमल चूहरमल न गे।
अगे भगनी में जनमा बिरवा चूहरमल मरतउ न गे।
अगे जैसन तोहर मइया हउ न बाबू अजयीसिंह न गे।

इतना बड़ा। २ रूप। ३. रचा। ४. पति। ५ जगह।

ओयसने तू भइया समझ रेसमा चूहरमल के न गे।
जेकर घरवा में बसइ रेसमा चेरिया-लौंडिया न गे।
सेकर कइसे बेटिया न रेसमा पनिया लावे जैतइ न गे।

● ● ●

अगे सुनहि न सुने देवी मइया हम जाहिअउ तुलसी इनरवा न गे।
हमर मनकामना गे देवि, करिह तोहुँ पुरनमा न गे।
मानिय मनितवा रेसमा, सोनमा के ले हइ घैलिया[१] न गे।
गोदिया में आउरो लेलकइ रेसमा रेसम पाट डोरिया न गे।
खिड़की के रहिया से रेसमा घरवा से बहरैलइ[२] न गे।
जेठवा बैसखवा के हइ न रेसमा, तलफि बहइ भुमरिया[३] न गे।
जुमिय गेलइ गे रेसमा, तुलसीराम इनरवा न गे।
चारो भुअनमा गे रेसमा, नजरिया बरनावऽ[४] हइ न गे।
कि कनहु न देखियइ देवी मइया वीर चूहरमल न गे।
अगे ओहि घड़िया रेसमा से पूछे लगलइ पनभरनी न गे।
अगे केकरा करनमे मइयाँ कुइयाँ पर जोहऽ बटिया न गे।
अगे सुनहि न सुन पनिहारिन एगो बतिया न गे।
तिरिया के हलिया पनभरी, तिरिय जैनइ बुझिये न गे।
अगे बड़ा जे बिपतिया हमरा पर पनिभरिन बीतइ न गे।
अगे हम अप्पन बिरवा के मुरतिया देखे ऐली न गे।
उनकर जे नइयाँ हइ बाबू वीरमल चूहरमल न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा के पनभरिन समुझावइ न गे।
अगे वीरमल चूहरमल हउ रेसमा देवी के सेवकवा न गे।
पर के तिरिया के समझउ माता अपन बहिनिया न गे।
तोरो से आला हइ रेसमा बिरवा के सुन्नर तिरियवा न गे।
सेकरो न कहियो देखलन बिरवा परछहियाँ न गे।
सेहु कइसे बिरवा के रेसमा धरम से तूँ देबऽ गिराइए न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा, रोधना[५] लेलन पसारिय न गे।
रोइये-रोइये न पनभरिन हम, बिरवा के लेबइ मनाइय न गे।
चाँड़ाडिह अखरवा से बिरवा जा हइ अपन मकनिया न गे।।

१. छोटा घड़ा। २ बाहर निकली। ३ गर्म धूल। ४ घुमाती (है)। ५ रुद-

जेठवा बैसखवा के महिनमा बिरबा के लागी गेलइ पियसिया न गे।
तुलसी राम इनरवा पर देखऽ हइ रेसमा के सिंगरवा कैले न गे।
एक लोटा पनिया पनभरनी, हमरा देहि पियाइ न गे।
अगे पानी के पियासल पनभरनि सूखल जा हइ हमर कंठवा न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा मनें मन बिहँसइ न गे।
अगे तोरे अकबलवा से देवी, बिरवा कुइयाँ पर बोलइ न गे।
बिहँसि बिहँसि रेसमा चूहरमल से पूछे लगलइ न गे।
कहाँ तोहर घर हउ बटोहिया, नइयाँ कि हउ न हो।
अगे हमरो जे घरवा हइ न मोकामा केर नगरिया न गे।
हमरो नइयाँ हउ पनभरनि बाबू बीरमल चूहरमल न गे।
एतना बोलिया सुनिय गे रेसमा घुंघटा देलन हटाइए न गे।
अहो हमरा घरवा चलहि बटोहिया, पनिया तोरा पिलैबइ न हो।
अहो तोरे खातिर करली हम बिरवा सोरहों सिंगरवा न हो।
एतबड़ सुरतिया बिरवा तोहरे ला इसबर उरेहलन हैं न हो।
अहो अपना बचनिया से न बिरवा हिरदा लेहु मिलाइए न हो।
बारह बरिस से पनभरनि एहि रहिया से अइअइ जइअइ न गे।
कहियो न सुनलिअइ ऐसन दुलवा भरल बतिया न गे।
अप्पन तनी नइयाँ-गइयाँ बताइ देहि न गे।
अहो हमर घरवा हउ मोकामा केर नगरिया न हो।
सँसे नगरिया हउ हमरे जिमेदरिया न हो।
अहो हमर भइया के नइयाँ हउ बाबू अजबीसिंह न हो।
उनके हम बहिनियाँ हीं, नइयाँ हउ रेसमा न हो।
गोमना से काँपे लगलइ, सुन रेसमा हमर बतिया न गे।
हमर गुरु भइया हे बाबू अजबीसिंह न गे।
जैसन भइया हउ बाबू अजबी सिंह ओयसने भइया हम हियो गे।
ऊँच कुल के हहीं गे रेसमा, हम सेवक कुल के बलकवा न गे।
अगे जल्दी घरवा लौट जाहि न तो मुड़िया लेवी उतारिए न गे।
रोइए गेलइ रेसमा बिरवा न अपनैवे तो सिरवा उतरैवउ न हो।
जल्दी तू जाहीं रेसमा मोकमा नगरिया न गे।
एजि गोहरमना भइया अजबीसिंह के भेजहीं न गे।

१ इस्सा।

नोचिए देलकइ रेसमा अप्पन सोरहो सिंगरवा न हो।
धरिए बौरहिया[1] के रूप पहुँनलइ भइया के कचहरिया न हो।
आग लगउ भइया तोर जमेदरिया आउ कचहरिया में हो।
तोर बहिनी के लुटकउ बिरवा चूहरमल इजतिया न हो।
एहि मनमा करइ भइया कि महुरवा खाइ मरियइ न हो।
एतना सुनिये अजबीसिंह रेसमा से कहे लगलइ न गे।
हमर हउ गुरु भइयवा रेसमा बाबू चूहरमल न गे।
नहियो न देखलियइ रेसमा चूहरमल हइ धोखेबजवा न गे।
पर के तिरिया के बहिनिया कहइ सेहु कैसे इजतिया लुटकउ न गे।
एतना सुनिय रेसमा अजबीसिंह के ललकारइ न हो।
गैर के ओदर[2] क जलमल के पछ[3] लेके हमरा झूठी बनैले न हो।
एके ओदर क जलमल इइला भाइ बहिनी, करहु बिसवसिया न हो।
एतना सुनिय अजबीसिंह तानऽ हइ तरवरिया न हो।
आझु हम जैबइ रेसमा बिरवा चूहरमल के सिरवा काटि लैबु न गे।
मुड़िया नहि कटिह भइया, बाँधि छाधि बिरवा के लैहऽन हो।
अप्पन दुसमनमा से बदला हम अपने हाथे लेबइ न हो।
एतना सुनऽहइ अजबीसिंह मनमा में साचइ न हो।
तिरिया के जतिया न इसवर दैवो न जानऽहइ न हो।
रेसमा के रोधना देखि भइया के फिर मया घेरी लेलकइ न हो।
झूठे लुतरिया[4] पर अजबीसिंह साजऽहइ गोहरनमा न हो।

❂ ❂ ❂

सात सै गोहरनमा बाचे न हलइ बाधीराम बराहिलवा न हो।
सेहु बाधीराम हलइ बिरवा चूहरमल क अपन चचवा न हो।
ओकरे अजबी सिंह कहऽहइ तोर भतिजवा लेलकउ इजतिया न हो।
एतना सुनिय बाधीराम मुड़िया नीचे गाड़ लेलकइ न हो।
हम न जानलिअउ अजबीसिंह भतिजवा होइहे धोखेबजवा न हो।
धरम के नाते अजबीसिंह तोरे देबउ संग सथवा न हो।
आगे आगे बाधिराम चलऽहइ, ओकरे पीछे अजबीसिंह न हो।
ओकरे पीछे चलइ न इसवर सात सै गोहरनमा न हो।

---
1 पागल। 2 गर्भ। 3 पक्ष। 4 चुगली।

जुधवा के डकवा अजबीसिंह देलन बजबाइए न हो।
डेगे डेगे चलइ न अजबीसिंह फौजिया मारइ गरजवा न हो।
ऊँची महलिया चढ़ि रेसमा देखऽहइ देवी सुमरनमा करइ न गे।
अगे देवी चूहड़मल के खाली पकड़ि के मंगाइए दीहऽन गे।
घरवा ऐतन चूहड़मल तो उनका हम मनाइए लेबइ न गे।
जुमियो में गलइ फौजिया न मोकमा बीचे टॅरिया न हो।
अहो ओहि अखरवा में बीरमल करइ देवी सुमरनमा न हो।
ओहि घड़िया देवी बिरवा क सम्मुख भेलन सहइया न हो।
मत घबड़ा बेटा हमर देल तेगवासे लड़िहऽ न हो।
अहो ओही जब तेगवा लेके चूहड़मल देलन ललकारिए न हो।
मोकमा टॅरिया बीचे जुधवा मचल धमसनमा न हो।
सात से गोहरनमा के काटि देलन बिरवा चूहड़मल न हो।
डरवा क मारे अजबीसिंह भागि गेलइ कचहरिया न हो।
बिरवा चलि गेलइ अखरवा देवी सुमरनमा करइ न हो।
ओहि घड़िया जुमि गेलइ बाधीराम हम न करम नोकरिया न हो।
हमर भतिजवा अजबीसिंह हउ सच्चा देवी के सेवकवा न हो।
एही से जीत गेलन सात सौ गोहरनमा न हो।
ओहि घड़िया अजबीसिंह के रेसमा ललकारइ न हो।
हमर चुड़िया पेन्हि लऽ भइया, अप्पन पगड़िया हमरा दऽ हो।
अबरि[1] माऽहइ अजबीसिंह चौदह सौ गोहरनमा न हो।
ओहि मोकमा टॅरिया में जुधवा देलन मचाइए न हो।
अहो ओने जब चमकऽहइ चूहड़मल के दुधारी तरवरवा न हो।
मारल गेलइ अजबीसिंह के चौदह सौ गोहरनमा न हो।
आउरो अजबी सिंह के मुरिया चूहड़मल उतारिए लेलकइ न हो।
मिरवा उतारऽहइ चूहड़मल आउ कलेजवा में माटइ न हो।
अहो रेसमा रनमे गुरुभइयवा के सिर उतारलि न हो।
अपना हथवा से गुरुभइयवा के सिर गंगा में दहावइ[2] न हो।

● ● ●

मोकमा में जुद्धरमवा मचलइ मारल गेलइ बाबू अजबीसिंह न गे।

---

[1] इस बार। [2] बहाता है।

ओने मइया रोवइ रेसमा के मुड़िया नोचइ न गे।
अगे अपनो पिरिनिगा कारन मइया के जनमा मरबैले न गे।
खालि अब बचलि गहवे में मइया चेंग्या न गे।
रौंसे मोकमा में गे रेसमा घरे घरे निधवा बनैले न गे।
सचा हइ चूहड़मल उनका तूं समझहइ तिरिया बनैतन न गे।
अगे जल्दी डूब मरहीं न रेसमा काहे तूं मुँहमा देखावइह गे।
जैसे कोरिया सून भेल रेसमा बाबू अशर्वीसिंह ला ग।
अगे ओयमने तोरा लगी करबइ गोदिया सूना न ग।
एतना बोलते बोलते मइया के छुटलइ परनमा न गे।
तइयो न हटवा छोड़इइ रेसमा बिरवा के नइयाँ पुकारइ न गे।
अगे अब मने मने सोचइ रेसमा कौन करि उपहवा[1] न हो।
अगे दलजित राम गडेरिया के बराहिल बनैवइ न गे।
सात से हइ पठवा उनका सूबे बिहार मे न गे।
उनका बोलाइ जुधवा कराइ चूहड़मल के डराइ देबइ न गे।
एतना सोचिय न रेसमा पतिया लिखे लगलइ न गे।
पहले से सुरतिया रेसमा के दलजित राम जानऽ हलइ न गे।
कुछो कुछो मोहवा दलजित रेसमा पर रखऽ हलन न गे।
अहो रेसमा के चिठिया पढ़इ दलजित मने मने खुसी भेलइ हो।
सुनहिं न सुन बिरवा गान सौं हमर पठिया न हो।
अहो मोकमा से चिठिया हमरा भेजलइ है रेसमा हम्मर परेमी न हो।
करहु तैयरिया भाइ जी मोकमा चलब नगरिया न हो।
मारते गरजवा दलजित चल गेलइ मोकमा नगरिया न हो।
सगे हइ दलजित के सात सो पठवा न हो।
ऊँची जे महलिया देखइ ना रेसमा बैठल दुलरी न हो।
रेसमा के सुरतिया देखइ दलजित मनमें विहँसइ न हो।
विहँसि विहँसिए दलजित हेली गेलन[2] महलिया में न गे।
अब बोले लगलइ रेसमा सुनहि दलजित मोरा बतिया न हो।
चूहड़मल के मारहि दलजित पीछे करबउ तोरा से बतिया न हो।
एतना सुनिए दलजित अब चूहड़मल से छेड़खनिया खोजइ न हो।

---

१ उपाय। २. प्रविष्ट हुआ।

सब के ममेसी चरइ, दलजित सभे के छोड़ि दे हइ न हो।
चूहरमल के ममसिया दलजित बाधिय गोफमा ले ऐलन न हो।
चूहरमल के भगिनमा मामू से सबे हलवा कहइ न हो।
गारते गरजवा चूहरमल जूम गेलन दलजित के अगुआ न हो।
केकर दिमगवा पर दलजित रोकले हमर ममसिया न हो।
सात सो पट्ठा से हाँव लगलइ लोहा के भिरनमा न हो।
मारल गेलइ सात सौ पठवा आउ दलजितवा न हो।
काटिए सिरवा दलजित के रेसमा के बीग[1] देलन अगुआ न हो।
अपने जे चललइ चूहरमल गंगा करे असननिया न हो।
उनके पीछे ना लुक लुक[2] रेसमा चलल जा हइ न हो।
गंगा में हेलिये चूहरमल सूरज के धरइ धेयनमा न हो।
तोरे अनबलवा सुरुज हम जितली गात सैं गोहरनमा न हो।
आज मनमा करइ लियइ हम अप्पन ममधिया न हो।
एतने में रेसमा पहुँची चूहरमल के मनावइ न हो।
जैसन जलमले गे रेसमा कुलवा के देले डुबाइए न गे।
देलऽ मरवाइए गे रेसमा हम्मर गुरु भइवा न गे।
एतना बोलते बोलते चूहरमल चलि गेलन अप्पन असरवा न हो।
अब रेसमा घुमिये गेलइ गउँआ के जिरवा तमोलिन कने[3] न हो।
बिहँसि बिहँसि के रेसमा बोले लगलइ तमोलिन से न हो।
बड़ा भाग जितले तमोलिन तोरा घरे नित बैठऽ हउ चूहरमल न हो।
आगे उनका खातिर कैली बड़ी उपदवा बइयो मुँहमाँ से बोले न हो।
हम्मर दुलगा न गिरवा तोरे हाथ से मिलतइ न गे।
बीरमल चूहरमल से हम्मर जाड़िया मिलाइए देही न गे।
एतना सुन के जिरवा रेसमा के समुझावइ न गे।
जैसन तूँ भेले बौरहिया ओयमने गिरवा ला हमहुँ हली न गे।
नित नित पुकारऽ हलउ रेसमा चूहरमल हमरा बहिनिया न गे।
अब सब नाता तजिय न चूहरमल के भइगा बनैली न गे।
आगे नदिया से चूहरमल न छोड़लन हमर दुहरिया न गे।
एही नतवा खातीं चूहरमल न छोड़तउ दुआरिया न गे।

[1] फेंक। [2] छिप छिप। [3] के पास।

रोइए रोइए रेसमा अपन महलिया चलि ऐलइ न गे।
अब एही मनमा सोचइ रेसमा कि बनियइ जोगिनिया न गे।

o o o

होते भिनुसरवा[1] सुनइ रेसमा कि गाँव में ढोलवा बजइ न हो।
पीटी पीटी ढोलवा बोलइ चूहरमल लेलन आज समधिया न हो।
ठीक जब बारह पहरिया चूहरमल ले लेलन धरती में समधिया न हो।
एहि एतना सुन के रेसमा छोड देलन अपन महलिया न हो।
बैले जोगिनिया के भेसवा जूमि गेलन चूहरमल के समधिया न हो।
पटकि पटकि मुड़िया रेसमा चूहरमल के समधिया पर रोवइ न हो।
सच्चा परेमी होम इसवर तो हम्मर परान हिएँ छूटे न हो।
राम नाम, चूहरमल कहते कहते रेसमा के छूट गलइ परनमा न हो।
तब समधिया से अवाज निकलइ, हम्मर जब करबऽ पुजनमा न हो।
हम्मर पुजनमा से पहिले करिहऽ पूजा बहिनी रेसमा के न हो।
एतना बोलते चूहरमल के हो गेलइ अवजवा अन्तर्धनमा न हो।

टिप्पणी—'रेसमा' दुसाध जाति का प्रिय जातीय काव्य है। इस लोकगाथा का नायक दुसाध कुलोत्पन्न है, जो अपनी अद्वितीय वीरता और अद्भुत चरित्र बल से देवता हो जाता है। 'रेसमा' इस गाथा की नायिका है। यह उच्चवंश की कन्या है, पर वीरमल चूहरमल के रूप और शौर्य पर मुग्ध हो जाती है। उसके प्रेम को पाने के लिए अनेक प्रयत्न करती है। पर चूहरमल तो ऐसा आदर्श युवक है, जो अपनी पत्नी से भी अभी तक नहीं मिला, फिर किसी अन्य नारी की तो बात ही और है। अपने गुरुभाई की बहन को वह अन्त तक बहन मानता है। रेशमा के सारे प्रयत्न विफल जाते है। वह ऐसा अपूर्व वीर है कि हजारों की सेना में अकेले कूदकर लोथों के ढेर कर देता है। कठिन से कठिन परीक्षा देता है, पर सत्य से नहीं डिगता। उसके चरित्र से यही व्यंजित होता है कि बड़प्पन और चारित्रिक उदात्तता किसी जाति और वंश की विशेषता नहीं। ये गुण व्यक्तिगत होते हैं। चूहरमल का व्यक्तित्व इन्हीं गुणों से विभूषित होने के कारण बड़ा प्यारा हो गया है।

रेसमा की गाथा प्रायः एक ही गायक गाता है। ढोल पर इसे गाने से गंभीर वातावरण की सृष्टि हो जाती है। युद्ध के प्रसंग में, वीररस के कारण उत्साह आजाता है। इस गाथा का अन्त शान्त रस में होता है। मृत्यु के बाद दोनों पूजित होते हैं।

---

[1] भोर।

१८. कुँअरविजयी

[६६]

रमवा गरजि के बोलिया बोले, बबुआ कुँअरविजयी हो ना।
रमवा सुनहिं न सुन मौर्जा सोनमन्तिया हो ना।
रमवा हम खेले जैबइ गुल्ली डंटवा हो ना।
रमवा सोसे[1] जो सोरंगगढ के लड़कवा खेलइ हो ना।
रमवा विहँसि के हुकुमवा दे हइ मइया घेघामन्तिया हो ना।
रमवा विहँसि बोली बोले मौर्जी सोनमन्तिया हो ना।
रमवा बबुआ खेले जुमलन अलि के मैदनमा हो ना।
रमवा सबे जे लडिकवन खेले लगलन हो ना।
रमवा सबे लडिकवन के कुँवर कएलन परेननमा हो ना।
रमवा सबे लडिकन बोलऽ हइ तू जनमे के बदमसवा हो ना।
रमवा तारे जे बिअहवा में झगडा भेलउ हो ना।
बामनगढ में बामन लाख वरतिया भोगइ जेहलपनमा हो ना।
कुँअर ओहि में बाबू तोहर भइया हउ हो ना।
रमवा जेकरो जे बितलइ बारह रे बरिसवा हो ना।
रमवा एतना जो बोलिया सुने कुँअरविजयी हो ना।
रमवा रगे रगे खुनवा खौले लगलइ हो ना।
रमवा गासवा के मारे फेरइ गुलि डंटवा हो ना।
रमवा सेहु टटा गिरल बामनगढ बुरुजवा हो ना।
रमवा टूटि गेलइ बामनगढ के बामन बुरुजवा हो ना।
रमवा जुमि गेलइ कुँअरविजयी अप्पन गढ़वा हो ना।
रमवा दौड़य के मइया में लपटलइ हो ना।
मइया जल्दी से बता दे कहाँ हम्मर बाबू भइया हो ना।
रमवा रोवे लगलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमवा रोइये रोइये बोलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमवा बाबू मरि गेलथुन आउ भइया हो ना।
रमवा एतना जे बोलिया सुनइ कुँअरविजयी हो ना।

---

१. सम्पूर्ण।

मइया असल-असल भेदवा बता देही हो ना।
बबुआ तोरे जे भिारवा मेलउ बामन गढ़वा हो ना।
रममा ससुर मागउ बामन लाख बरतिया हो ना।
एको बरतिया कमलइ, देलन सबके जेहलखनमा हो ना।
रममा जिनको जे बीती गेलइ बारह बरिसवा हो ना।
रममा तोरे पर हम खेनऽ[1] ही रँड खेववा[2] हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुने कुँवर विजयी हो ना।
मइया जल्दी हमरा देही कोई तेगवा हो ना।
मइया रग-रग खौलइ खुनमा बदनमा हो ना।
रममा एतना जे बनिया सुनइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमसा बारह रे बरस क तोर उमरिया हो ना।
रममा कैसे लड़े जैबऽ बामन गढ़वा हो ना।
मइया मत समझ हमरा छोटा कुँअर विजयी हो ना।
मइया हम काल भैरो के हिअउ औतरवा[3] हो ना।
रममा विहँसी के बोले रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा बामन रे कोठरिया हउ तेगवा हो ना।
रममा जौन तोरा पडउ पसिनमा[4] हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुनइ कुँअर विजयी हो ना।
रममा दौड़ि के देखइ सब तेगवा हो ना।
रममा एको नहि तेगवा कुँअर के पसिनमा हो ना।
मइया कैसन हलइ बाबू छोटा मँझोला जमनमा हो ना।
मइया उनकर तेगवा हमरा लगइ झुकुआवन हो ना।
मइया अस्सी मन के खँडवा देहि बनाइए हो ना।
रममा एतना जो बोलिया सुने भौजी सोनमन्तिया हो ना।
बबुआ तोरे पर मोमे मगिया के सेनुरा हो ना।
रममा एतना जो सुने रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा दुनों जब सिनमा[6] से फेकइ दुध के भरना हो ना।

● ○ ○

रममा गाँव के पछिममा हइ लोहरा भइया हितवा हो ना।
रममा लोहरा के मकनमा गेलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।

---

१. बिताती (हूँ)। २. वैधव्य। ३ अवतार। ४. पसन्द। ५ 'छोटा। ६. छाती।

रममा कौने करनमा रानी के आयल हमरा घर चरनमा हो ना।
लोहरा बबुआ जइहैं बामन गढ लड़नमा हो ना।
रममा अस्गी मन के तेगवा कुँअरा लेतइ हो ना।
रममा बबुआ हवऽ बारह बरिस के हो ना।
रममा सेहू कइसे लड़तइ बामन गढ के लड़इया हो ना।
रानी अगनी[1] लोर जाहु अपन तूँ धरवा हो ना।
रममा एतना जे सुनइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा मममा मान[2] धरके लौट गेलइ हो ना।
रममा ऊँचे जे महलिया से देखइ कुँअरवा हो ना।
मइया कौने जे करनमा लौटले खालि हाथे हो ना।
बबुआ बाबू के हउ तोर मितवा लोहरवा हो ना।
बबुआ तोरा समझऽ हउ बारह बरिस के लड़िका हो ना।
बबुआ एहि से बनाव हइ न अस्सीमन क खँडवा हो ना।
मइया ऐसन मन करे सिरवा काटिअइ लोहरा के हो ना।
बबुआ जैसन तोहर बाबू राजा घोड़मल सिंह हो ना।
बबुआ ओयसने समझऽ धरम के पिता लोहरा के हो ना।
बबुआ अपने से माँगहु खँडवा लोहरवा से हो ना।
रममा कुँअरविजयी पहुँचलन लोहरा मकनिया हो ना।
रममा गरजि के लोहरा के पुकारऽ हइ हो ना।
रममा डरवा के मारे थर-थर काँपे लगलइ हो ना।
रममा आइ गेलइ लोहरा दुअरवे पर हो ना।
रममा हरवि हरवि लोहरा दे हइ असीमवा हो ना।
बबुआ गढवा में बचलऽ एके तूँ सिरवा हो ना।
बबुआ कैसे तूँ लड़बऽ बामन गढ के लड़इया हो ना।
लोहरा जल्दी से बनवा दे अस्सीमन के खड़वा हो ना।
लोहरा मन[3] जान हमरा बारह बरिस के बलकवा हो ना।
लोहरा समझ हमरा काल मैरो के औतरवा हो ना।
लोहरा बामे से दहिना हमरा सात सै जोगिनिया हो ना।
लोहरा देवी मइया देतन हमरा सतवा[4] हो ना।

१ अभी। २ उदास। ३ मत। ४ बल।

रममा बिहँसि के बोलि बोले लोहरा मितवा हो ना।
बउआ अस्सी मन के चट्टान पर पड़ल है लोहवा हो ना।
बबुआ ओहि लोहवा लाहु तूँ उठाइए हो ना।
कुँअरा बामे हाथे अस्सी मन के चटनमा लावइ हो ना।
रममा घड़ि घटा मे बनि गेलइ अस्सी मन के गडवा हो ना।
रममा सेहु खड़वा दे हइ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा झुकिझुकि कुँअरा करइ लोहरा के परनमियाँ[१] हो ना।
रममा लेइ खड़वा पहुँचलन देवी के मन्दिलवा हो ना।
रममा देवी के चरनिया रखलन अस्सी मन क खड़वा हो ना।
रममा सनमुख होलन देवी कुँअर के सहइया हो ना।
रममा कुँअर क बगलवे म मइया घेघावन्तिया हो ना।
रममा हथवा जोड़ि देवी के करइ गोहरनमा[२] हो ना।
देबी बउआ के रहिहऽ रन[३] में सहइया हो ना।
रममा लेइए असीसवा अपन गढ़वा में लौटलन हो ना।
रममा मइया साजे लगलइ नीर बनमा[४] हो ना।
रममा सिनमा पर बाँध हइ लोहा के कवचवा हो ना।
रममा पिठिया पर बाघइ गैंडा[५] के ढलवा हो ना।
रममा अगल बगल खोंसइ बिछुआ कटरवा हो ना।
रममा सिखा पर बाधइ केसर पगड़िया हो ना।
रममा हथवा मे मइया दे हइ अस्सी मन के कटरवा हो ना।
रममा झुकि झुकि कुँअर करइ माता और भौजी के सलमिया हो ना।
भौजी कुले हरवा[६] सजलऽ, अब घोड़वाऽ असवरिया हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुने रानि घेघामन्तिया हो ना।
बबुआ एको नहिं गढ़वा में हइ घोड़ा हथिया हो ना।
रानि के एतना कहते गिरइ अँखिया से झिर-झिर पनिया हो ना।
रममा गरजि क बोलिया बोलइ सोनमन्तिया हो ना।
रममा हिढ़खी पाड़िया हउ तरहरवा[७] हो ना।
रममा बारह बरिस से कोई न कैलक ओकर असवरिया हो ना।
मारिए गरजवा कुँअर जा हइ तरहरवा हो ना।

---

१ प्रणाम। २ पुकार। ३ युद्ध। ४ वेष। ५ एक जानवर। ६ हथियार। ७ तहखाना।

रममा बुदिए गेलइ कुँअरा घोड़िया के पीठिया हो ना।
रममा मइया अउ भौजी के असीसवा लेके चललन बामनगढ़ हो ना।

रममा जगलवा बीचे मिलइ गोरखनाथ के असथनवाँ हो ना।
रममा जूमि गेलन कुँअरा गोरखनाथ के अगुआ हो ना।
रममा जूता पेन्हले छू देलन गोरखनाथ के चरनिया हो ना।
गोरखनाथ बोललन जीत होतो तोरा कुँअर विजयी हो ना।
बेटवा गौने के दिन होतो तोरा मरनमा हो ना।
रममा एतना काहे देलऽ कठिन वरदनमा हो ना।
रममा तोर भउजइया सोनमन्तिया के अंगुरी में अमरितवा हो ना।
बउआ ओहि तोरा फिरू जिलैहे हो ना।
रममा करि परनमियाँ गेलन देवी मन्दिलवा हो ना।
रममा देवी मइया दे दइ असीसवा हो ना।
रममा सात से जोगिनियाँ होतो सहाइ हो ना।
रममा पहिल जो डेरा गिरा दिहऽ भैरो पोखरवा हो ना।
रममा करि परनमियाँ कुँअरा पहुँचइ बामन गढ हो ना।
रममा दिल्ली के बाध देलन असोगा[1] बिरिछा[2] हो ना।
रममा अपने जे बैठि गेलन बिरिछ के छहियाँ हो ना।
रममा कौने जे उपयवा से धुधवा मचाइ दियइ हो ना।
रममा ओहि घड़िया सम्मुख होलन देवी सहइया हो ना।
रममा बउआ भैरो पोखरवा के बगलवा में रानी[3]फुलवरिया हो ना।
रममा ओहि फुलवरिया के फुलवा सब तोड़ि लावऽ हो ना।
रममा ओहि फुलवरिया के फुलवा से रानी करइ पुजनमा हो ना।
रममा फुलवा जे लेवे ऐतउ चिलहकी नउनिया हो ना।
रममा ओकरे जे सगवा रहतउ सलकी मलिनियाँ हो ना।
रममा ओहि फुलवा ला ऐतो तोहर रानी तिलक देइ हो ना।
रममा बेटवा तिरिया से तूँ रहिहऽ होसियरवा हो ना।
रममा फुलवे के बहनमें चलतो धुधवा हो ना।
रममा एतना कहिए देवी होलन अन्तरधनमा हो ना।

१. असोक। २. वृक्ष। ३. मना।

रममा फुलवा फुलवरिया आज धुमि गेलन कुँअरा हो ना।
रममा एको नहीं फुलवा बचल घानि फुलवरिया हो ना।
रममा सबे जब फुलबा के लगौलन कुँअरा बिछौनमा हो ना।
रममा फुलवा लोढ़े अलइ चिल्हकी अउ सल्हकी हो ना।
रममा एको नहीं फुलवा नजर आवइ हो ना।
रममा कौन ऐसन दुसमनमा घुमि गेलइ फुलवरिया हो ना।
रममा दुसमन के खोजते दुनों पहुंची गेलइ सैरो पोखरा हो ना।
रममा देख हइ कुँअरा क सूतल फुलवा के बिछौनमा हो ना।
रममा सूरत देखिये दुनो के मुरुछा लगइ हो ना।
रममा ऐसने सुरतिया हलइ बबुआ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा राजा के भेदवा सबे मालूम होलइ हो ना।
रममा उनका नरवा के लहर कपरवा चढ़इ हो ना।

○ ○ ○

रममा कुअँरा पहुँची गेलइ तिरपन पट्टी बजरवा हो ना।
रममा तिरपन पट्टी बजरिया के बगल में लाल कचहरिया हो ना।
रममा ओकरे में बैठल देखइ राजा के बेटवा मानिकचन्दवा के हो ना।
रममा लूटी लेलकइ कुँअरा तिरपन पट्टी बजरिया हो ना।
रममा गरजि के ब लिया बोलइ रजवा के बेटा मनिकचंदवा हो ना।
रममा जल्दी मे तइयार करहु बावन लाख फौजिया हो ना।
रममा बावन लाख फौज हइ अकेले हइ कुँअर विजयी हो ना।
रममा खूब होवे लगलइ जुधवा घनघोरवा हो ना।
रममा बारह लाख फौजिया के काटि देलकइ सिरवा हो ना।
रममा अउरो जे मारल गेलइ रजवा के बेटा मनिकचंदवा हो ना।
रममा मानिकचंद के सिरवा बीगलन[1] कुँअरा बावनगढ़ हो ना।
रममा गढवा में मची गेलइ रोअन-पीटन हो ना।
रममा हिछली जे घोड़िया पर बैठल हलइ कुँअरा हो ना।
रममा हिछली तोरे अकबलवा से जितली लड़इया हो ना।
रममा बावन लाख बरतिया के बिदा करइ कुँअरा हो ना।
रममा बपवा अउ भइया के बिदा करके भेजइ सोरंगगढ़ हो ना।

---

१. फेंका।

रमम| अब अकेले बच गेलइ बामनगढ़ मे कुँअर विजयी हो ना।
रमम| अउरो जे बच गेलइ मइया नियर हिछ्ली चोड़िया हो ना।
रमम| हिछ्ली के पीठिया पर गुसिगेलन पहिल फटकवा पर हो ना।
रमम| मउसे जे गढ़वा के फौजिया में मच गेलइ हाहाकार हो ना।
रमम| फौजिया से खूब लड़इ बिरवा कुँअर विजयी हो ना।
रमम| मारते काटते जुमी गेलन सत ड्योढ़िया पर हो ना।
रमम| बामन लाख फौजिआ घेर लेलक कुँअर के हो ना।
रमम| दँतवा से खाचे लगलन घोड़िया के लगममा हो ना।
रमम| दुनु रे हाथ से काटे लगलन रुण्ड-मुण्ड भुअवा हो ना।
रमम| घड़ी आउ घटवा मे काटि देलन फौजिया के हो ना।
रमम| फौजिया में खोजऽ हइ बामनगढ के रजवा के हो ना।
रमम| ससुर दमाद मे होवे लगलइ लोहा के भिरनमा हो ना।
रमम| मारल गेलइ रजवा बामन गढ़ के हो ना।
रमम| सुनमान गढ़वा भेलइ बामन किलवा हो ना।
रमम| गढ़वा में बची गेलइ बामनगढ़ के रनिया हो ना।
रमम| अउरो जे बचि गेलइ मानिकचन्द के तिरियवा हो ना।
रमम| और बचलइ कुँअरा के तिरिया रानी तिलकदेइया हो ना।
रमम| अब तोड़े लगलन गढ़वा के बुरुजवा हो ना।
रमम| रनिया सब रोके लगलन कुँअरा के हो ना।
रमम| अब काहे ला तोड़चऽ बामनगढ़ के किलवा हो ना।
रमम| गढ़वे मे एके बचलऽ हमर तुहू बेटी-दमदा हो ना।
रमम| गढ़वा के सब राज-पाट सभालहु हो ना।
रमम| लागू जैसन मोर मइया हइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमम| आयमन भैया हमर बामन गढ़ किलवा मे हो ना।
रमम| जल्दी घर सिदइया घरऽ अपन बेटी रानीतिलकी के हो ना।
रमम| रानी तिलकदेइ गढ़वे में बरऽहइ धिंगरवा हो ना।
रमम| देवी तारे अस्थान से मोर गवना होवइ हो ना।
रमम| देवी अब तोहर पुजनवा देबइ छप्पन परकार से हो ना।
रमम| तोहर आँगनिया सानिर गात से देबइ पठियवा हो ना।

● ● ●

रममा अब होवे लगलइ रानी तिलकदेइ के रोसकदिया[1] हो ना।
रममा डोलिया पर बैठते बीते लगलइ असगुनमा हो ना।
रममा चौखट पार होते मर गेलन कुँअर विजयी हो ना।
रममा तिलकदेइ होइ गेलन बेहोसवा हो ना।
रममा बामनगढ के रजवा के पुतोहिया के हइ गरभ हो ना।
रममा ओही बदला लेवे लगलन कुँअर विजयी से हो ना।
रममा काटि कूटि के कुँअरा के कुइया में डाल देलन हो ना।
रममा हिछली घोडिया उड़ि गेलइ सारंगपुर हो ना।
रममा तिलकी चिठिया में सब लिखि बाधि देलकइ गलवा हो ना।
रममा पूछे लगलइ रजवा घोरमल सिंह हो ना।
रममा कहाँ छोड़ले कुँअर विजयी के हो ना।
रममा घोड़िया रोव लगलइ जरवा बेजरवे हो ना।
रममा चिठिया में लिखल हलइ कुँअरा के सब बेयनमा हो ना।
रममा सोरंगगढवा में मची गेलइ रोना पीटना हो ना।
रममा हिछली के टगवा पकड़ि सोनमन्तिया रोवे लगलइ हो ना।
रममा हिछली कहऽहइ बाबा गोरखनाथ के असीसवा हो ना।
रममा सोनमा जल्दी चल के कुँअरा के जिलाही हो ना।
रममा गेलइ सोनमा रनिया तिलकदेइ के आगे हो ना।
रममा रानी तिलक देइ पति के वियोग में हइ बेहोसवा हो ना।
रममा पनिया के छींटा देके होसवा में लावइ हो ना।
रममा सोनमा जे पूछइ बामनगढ के पुतोहिया से कुँअरा क लसवा हो ना।
रममा उ कहइ कि चन्दन के चितवा में सस्करवा करली हो ना।—
रममा लँड़वा से सोनमा रनियाँ के काटि देलगइ हो ना।
रममा कुइयाँ से निकलल कुँअर के टुकडे टुकडे लसवा हो ना।
रममा ओही घड़िया कानी अगुली वाछऽहइ भौजी सोनमा हो ना।
रममा अब छीटे लगलइ अमरित कुँअरा के लोथवा पर हो ना।
रममा अमरित पड़ते कुँअर विजयी हो गेलन जिंदा हो ना।
रममा कुँअर विजयी देवी क वरइ सुमिरनमा हो ना।
रममा रानी तिलक देइ सामी से गेलन लपटाइए हो ना।

---
[1] गौना।

रममा बड़ा भाग पयली कि मिलल गोतनी सोनमन्तिया हो ना।
रममा उनके अक्बलवा से बहुरल[१] हमर सेनुरा[२] हो ना।
रममा गढ़वा पर सोनमा ढोलवा देलइ बजवाइए हो ना।
रममा बामनगढ़ के सब राज हो गेलइ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा अब गौना कराके चलइ कुँअर विजयी हो ना।
रममा जुमियो में गेलइ अमन जब महलिया हो ना।
रममा घउँसे सोरंग गढ़ में जलइ घी के दीया हो ना।
रममा दुअरे पर बजे लगलइ बाजा—बधवा हो ना।
रममा सोरंग गढ़ क राजा के तिलक कुँअर क मिललइ हो ना।
रममा विहँसि—विहँसि मइया देइ असीसवा हो ना।
रममा बड़ा रे खुसी से कुँअर रहे लगलइ दुनो भइया हो ना।
रममा देवि सुमिरनमा से सब मेलइ हम्मर कुसलवा हो ना।
रममा जय-जय-जय –जय-जय देवि मइया, दुर्गा मइया हो ना।

टिप्पणी—मगही वीरकथात्मक लोकगाथाओं में 'कुँअरविजयी' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुँअर विजयी दैवी कृपायुक्त एक वीर पुरुष है। गुल्ली डंडा के खेल-खेल में ही वह बामन गढ़ के राजा और अपने श्वसुर के भयंकर अत्याचार की कहानी जान लेता है। फिर वह मूक कैसे रहता! बारह साल का वह किशोर, अस्सी मन के खँड़ से भयंकर युद्ध ठान देता है। बामनगढ़ का राज्य ध्वस्त हो जाता है। बामनगढ़ का राजा अपने पुत्र मानिकचन्द के साथ मारा जाता है। बामनगढ़ पर सोरंग गढ़ का झंडा फहरने लगता है। कुँअर विजयी के चार भाई और बामन लाख बराती बारह साल बाद कारा गृह से मुक्त होकर खुले आसमान के नीचे साँस लेते हैं। रानी तिलकदेइ ऐसे दैवी-शौर्य सम्पन्न पति को पाकर फूली नहीं समाती।

कुँअर विजयी का गोरखनाथ से मिलन होता है, जिससे प्रतीत होता है कि इस गाथा का सम्बन्ध नाथ सम्प्रदाय से है। देवी का प्रसाद तो उसे प्राप्त है ही। सात सौ जोगिनियाँ सदा रक्षक बनकर उसके बायें दायें घूमती हैं। इनके प्रताप से वह अकल्पित कृत्य करता है। जैसे—सहस्रों की फौज का अकेले काट डालता है, घोड़े पर उड़ जाता है। उसकी घोड़ी दिल्ली माँ भी है और पथ प्रदर्शक भी। उसके बताये पथ पर चल कर कुँअर विजयी सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

यह लोकगाथा बनिया जाति से सम्बद्ध मानी जाती है, यद्यपि अन्य जातियाँ भी इसे गाती हैं। कुँअर विजयी क्षत्रिय गुणों से युक्त है, प्रतीत होता है कि वह क्षत्रिय कुलोत्पन्न है। इस गाथा के गान में वर्णित भावों के अनुसार स्वरों का उतार चढ़ाव हुआ करता है। यह गाथा 'द्रुतगति लय' से गाई जाती है। लोकगाथा की प्रायः प्रत्येक पंक्ति में आरम्भ में रममा और अन्त में 'हो ना' का व्यवहार होता है। गायक द्रुतगति से इस गाथा की प्रत्येक पंक्ति गाता जाता है। इस गीत की पंक्ति-पंक्ति में उत्साह भरा है।

---

१. फिर लौटा २ सिंदुर, पति।

तृतीय अध्याय
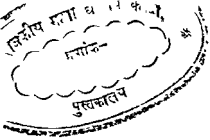
मगही का प्रकीर्ण साहित्य

तृतीय अध्याय

मगही का प्रकीर्ण साहित्य

१. कहावत

१. अंधरा आगे रोवे, अप्पन दीदा खोवे।
नासमझ के सामने अपना दुःख कहने से कोई लाभ नहीं है।

२. अंधड़ में बगुला के बाह।
भारी उत्पात में कमजोर का कुछ वश नहीं चलता।

३. अंधरा के आगे मूसल सकरकन्द।
नासमझ विवेकपूर्ण परख नहीं कर सकता।

४. अहार ला आदमी पहाड़ चढ़े है।
जीविका के लिये मनुष्य कठिनाई झेलता है।

५. अनकर भतार पर तीन टिकुली।
एगो कच्ची एगो पक्की एगो लाल बिंदुली।
अन्य की वस्तु पर इतराना व्यर्थ है।

६. अलकत खेती किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी।
लिबड़ी आँख पतुरिया नासे, मिरगी नासे पासी।
आलस्य से किसान, खाँसी से चोर, लिब-लिब आँखों से वेश्या और मिरगी[1] से पासी अपने कार्य में असफल होते हैं।

७. अनकर माल कमकौआ, छीन लेलक तो मुँह हो गेल कौआ।
अन्य की वस्तु धारण करने पर, पीछे पछताना होता है।

८. अबरा के माउग सब के भौजाई।
कमजोर की वस्तु पर सभी अधिकार जमाते हैं।

९. असल के बेटी, केवाल के खेती, कबहु न धोखा देती।
कुलीन कन्या तथा केवाल मिट्टी वाले खेत सर्वदा विश्वसनीय हैं।

१०. अलकवाहा गिरलन कुइयाँ में, कहलन हिएँ भल है।
आलसी व्यक्ति विपरीत परिस्थिति को सुधारने की चेष्टा भी नहीं करता है

---

१ मानसिक रोग, जिसमें आदमी अचानक बेसुध हो जाता है।

११. अगहन बरसे दोवर, पूस[1] बरखे ड्योढा।
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे घर से जाई।
विभिन्न महीनों में, वर्षा होने का, उपज पर विभिन्न प्रभाव पड़ता है।

१२. अदरा गेल, तीन गेलन सन, साठी, कपास।
आर्द्र नक्षत्र में वर्षा नहीं होने से, सन, साठीधान और कपास की खेती विनष्ट हो जाती है।

१३ अनकर चुक्का, अनकर घी, पाडे के बाप के लगल की ?
पराए धन के उपयोग में मोह नहीं होता है।

१४ अरवा चाउर फँकना की, बुढवा भतार के ठगना की ?
जवान औरत, वृद्ध पुरुष के शासन में नहीं रह सकती है।

१५ आँधर गुरू, बहिर चेला, माँगे हरे दे दे ढेला।
काय सम्पादन की असमर्थता, व्यवहार में गड़बड़ी पैदा करती है।

१६ आम के आम, आ गुठली के दाम।
असाधारण चीज के साथ साधारण चीज का मूल्य भी तर जाता है।

१७. आप रूप भोजन, पराये रूप सिंगार।
भोजन अपनी रुचि और शृंगार दूसरे की रुचि से होना चाहिए।

१८ आयल बहुरिया फुलल गाल, फिन बहुरिया ओही हाल।
नये में आदमी आडम्बर से रहता है, पर पुराना होने पर वह स्वाभाविक हो जाता है।

१९ आगे चलऽ, तो राह बतावऽ।
आगे चलने वाले से पथप्रदर्शन की आशा रहती है।

२०. आमे बनिया, फलहे सेठ।
बिना परिश्रम के सफलता पाने की इच्छा करना व्यर्थ है।

२१ उदन्त घोडी, दुदन्त गाय, माघे भैंस, गोसइयाँ खाय।
बिना दाँत की घोड़ा, दो दाँतों वाली गाय, माघ में बच्चा देने वाली भैंस अपने मालिक को बरबाद कर देती है।

२२ उलट बैना पुलट बैना बाँझ घर कैसन बैना।
सम्बन्ध-व्यवहार दोनों ओर से चलता है।

२३. उ घड़ा गरल गरई है।
वह छिपा धनी है।

२४ ऊँच बड़ेरी, खोखर बाँस।
आडम्बर के भीतर खोखलापन है।

---

१ पौष। २ भगवान्

२५. एक भर गाजी मियाँ, दु भर दफाली।
    एक, दूसरे से बढ़ कर है।

२६. एक बनिया से कहुँ बजार बसे हे।
    एक व्यक्ति से सामाजिक सगठन नहीं व्यक्त होता।

२७. एगो हर्रे समूचे गाँव खोंखी ।
    कष्ट अधिक और उपचार का उपादन कम।

२८. एगो जोरू के मरद लड़ुआ, दुगो जोरू के मरद भड़ुआ।
    एक पत्नी का पुरुष आदर पाता है, और दो पत्नी का पुरुष अनादर।

२९. ऐलो न गेलो, फलनमा के माउग कहैलो।
    बिना कुछ किये बदनाम होना।

३०. औरत के पेट कुम्हार के आवा हे,
    जेकरा से कभी गोर कभी करिया लड़का निकसे हे।
    जिस प्रकार एक ही आवा से कई रंग के बर्तन निकलते हैं, उसी प्रकार एक ही स्त्री के गर्भ से पैदा होने वाले बच्चों के विभिन्न रंग होते हैं।

३१. कदुआ पर सितुआ चोखा।
    अपने से दुर्बल पर सब रोब गाँठते हैं।

३२ कहाँ राजा भोज, कहाँ गाँगु तेली।
    बड़े की तुलना छोटे के साथ नहीं हो सकती।

३३. करिया ब्राह्मण, गोर चमार, इनका पर न करे इतबार।
    ब्राह्मण का काला होना और चमार का गोरा होना उनके वर्णसंकर होने का परिचायक है, अतएव वे अविश्वसनीय हैं।

३४. कर, केतारी, निबुआ, बिन चँपले नहिं रस दे।
    बिना दबाव डाले, न मालगुजारी वसूल हो सकती है, और न ऊख और नींबू से रस ही निकल सकता है।

३५. कमाय लंगोटी वाला, खाय टोपी वाला।
    परिश्रमी कमाता है, परन्तु चालाक व्यक्ति उपभोग करता है।

३६. कायथ के लावा, कोयरी खाये ?
    शारीरिक श्रम के सामने भी बुद्धि की हार नहीं होती।

३७. काना में कान में जाड़ा, हथिया में हाथ में जाड़ा,
    आउ चित्रा में चित्त में जाड़ा।
    उत्तरा नक्षत्र में कान में जाड़ा लगता है हस्त नक्षत्र में हाथ में और चित्रा नक्षत्र में सारे शरीर में जाड़ा लगता है। (वर्षा के अन्त में धीरे-धीरे सर्दी के बढ़ने का क्रम)

३८ कान आँख में काजर।
कुरूपता में शृंगार अशोभन होता है।

३९ केकर खेती, केकर गाय, कौन पापी हाँके जाये।
दो आदमी के झगड़े के बीच में पड़ना अच्छा नहीं है।

४० केतनो गोआर पिंगिल पढे, तो तीन बात से हीन।
उठना, बठना अउ बोलना, लेलन विधाता छीन।
ग्वाला जितना भी पढले, उठने, बैठने और बोलने का ढंग नहीं सीख सकता।

४१ केतनो गोवार पिंगल पढे, तो एक बात जंगल के कहे।
ग्वाले जितना भी पढ लें, मोटी बातें ही कह सकते हैं।

४२ केतनो बाभन सीधा, तो हँसुआ ऐसन टेढा।
सीधा से-सीधा बाभन भी स्वभाव से टेढा होता है।

४३ केतनो अहीर पढे पुरान, लोरिक छाड़ न गावे गान।
अहीर पढ-लिख कर भी मूर्ख ही रह जाता है।

४४ कैल के रुपैया गेल है, साँवर के रुपैया धैल है।
सफद पशु का रुपया डूब सकता है, परन्तु काले का नहीं।
(पशु का मूल्यांकन है।)

४५ कोढिया डेरावे थूक से।
असमर्थ निरर्थक घुड़कियों से राब जमाना चाहता है।

४६ कोयरी कुरमी जन का ? मरुआ मकई अन्न का ?
जातियों में कोयरी कुर्मी और अन्नों में मरुआ मकई-महत्त्वहीन हैं।

४७ कौडी-कौडी साव बटोरे, राम बटोरे कुप्पा।
बनिया पैसा पैसा संग्रह करता है, पर भाग्य से अकस्मात् ढेर संग्रह हो जाता है।

४८ खस्सी के जान जाये, खवइया के सवादे न।
दूसरे को कष्ट पहुँचा कर भी, असंतोषी संतुष्ट नहीं होते।

४९ खाये ला मुह न अउ नेहाय के तड़के।
अगले कदम का बिना ध्यान रक्खे, पिछला कदम उठाना।

५० खाये चना तो रहे बना।
चना से शारीरिक पुष्टता प्राप्त होती है।

५१ खाये गहूँ न तो रहे पहूँ।
वांछित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तु की प्राप्ति के प्रति उदासीनता अपेक्षित है।

५२. खा के पसरे श्रउ मार के सँसरे।
खाकर आराम करना चाहिए और मार कर भाग जाना चाहिए।

५३. खिचड़ी के चार इयार, घी, पापर, दही अचार।
घी, पापड़, दही और अचार के साथ खिचड़ी का स्वाद बढ़ जाता है।

५४. खेबा भी दऽ आ बहल भी जा।
मूल्य देकर भी वस्तु नहीं पाना, चिन्ताजनक है।

५५. खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा।
अपराध कोई करे, सजा कोई पावे।

५६. गाँव के बेटी बड़ ठगनी।
परिचित स्थान में व्यक्ति जानकारी के कारण बहुत चालाक होता है।

५७. गोदी में लइका, नगर में ढिंढोरा।
सामने की चीज पर नजर नहीं पड़ने के कारण हो-हल्ला करना।

५८. गोबार साठ बरिस में बालिग होवऽ हे।
ग्वाले में परिपक्वता बहुत विलम्ब से आती है।

५९. घर के मुरगी दाल बरोबर।
अपनी चीज का कोई मूल्य नहीं।

६०. घर घोड़ा न, खास मोल।
अकारण मोल-तोल करना।

६१. घर के योगी, जोग न, बाहर के जोगी सिद्ध।
व्यक्ति की पूछ घर में नहीं होती, बाहर होती है।

६२. चंदरमा पर धूरी फेंके से, धुमैला न होवे हे।
श्रेष्ठ को बदनाम करने की चेष्टा विफल होती है।

६३. चले न जाने, अँगनमें टेढ़।
अपनी गलती न समझ कर, दूसरों की गलती निकालना मूर्खता है।

६४. चट मरबा, पट बिआह।
किसी काम का चटपट हो जाना।

६५. चमइन के आगे कहूँ कोख छिपावल जाहे।
जानकार के आगे भेद छिपाना कठिन है।

६६. चाल चले सदा कि निबहे बाप-दादा।
सादगी का जीवन चिरस्थायी होता है।

६७ चाकरी चकरदम, कमर कसे हरदम।
न रहे के हम, न जाये के गम।
नौकरी म हमेशा सावधान रहना चाहिए। इनके रहने पर न खुश होना चाहिए और न जाने पर दुखित।

६८ चार गोडा बाधल जाये दु गोडा न।
जानवर का वश में करना सहज है, आदमी को नहीं।

६९ चिन्ता से चतुराइ घटे, दुख से घटे सरीर।
पाप से लछमी घटे, कि कहलन दास कबीर।
चिन्ता से चतुराई, दुख से शरीर और पाप से लक्ष्मी का ह्रास होता है।

७० चैत के बरसा आउ चमार के मट्ठा कोई न पूछे।
चैत की वर्षा और चमार के घर के मट्ठे की पूछ नहीं होती।

७१ चोरी आ ऊपर सीनाजोरी।
गलती करके रोब जमाना।

७२ छाजा, बाजा, केस, इ तीनों बंगाला देस।
बंगाल के छज्जा, बाजा और केश की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

७३ छुछुन्दर के सिर से चमेली के तेल।
कुपात्र के हाथ में अच्छी वस्तु अशोभन होती है।

७४ जनमते लइका, दुकते बहुरिया।
जे लत लगावे, से लगे।
आरंभ से पड़ी आदत स्थायी होती है।

७५ जतरा[1] पर भेटतो कान, बड भाग होयतो, तो बचतो परान
अपशकुन होने पर, दुर्घटना की पूरी सम्भावना रहती है।

७६ जादे नीचू मल्ले[2] से तीता हो जाहे।
सीमा का अतिक्रमण हानिकारक है।

७७ जाड़ा मे चाहे रुइए, चाहे दुइए।
रुई या शरीर का शरीर से स्पर्श ही जाड़ा को रोक सकता है।

७८ जे घर पड़े कर्कस नारी, ते घर सब धन जाये।
कर्कशा नारी के कारण घर बर्बाद हो जाता है।

७९ जे नगरी बइरी[3] बसे, से तेयाग[4] करि देहु।
बैरी से दूर रहना चाहिए।

८० जादे जोगी, मठ उजार।
आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों से काम बिगड़ता है।

---

१ यात्रा। २ मलना। ३ शत्रु। ४ त्याग।

८१. जेकर घर में मरदा ढेर, तेकर घर मे बरदा उपास।
जेकर घर में मेहरी ढेर, तेकर घर में मरदा उपास।
आवश्यकता से अधिक व्यक्ति रहने से कार्य में बाधा पहुँचती है।

८२. जे ला कैली तेलिया भतार, से बहलौनी लगले रहल।
भरसक कोशिश करने पर भी बचत नहीं हो सकी।

८३. जेने सुरुज उगे हे, तेन्हीं आदमी गोड़ लागे हे।
उदीयमान की ओर सब अपनी श्रद्धा दिखलाते हैं।

८४. जे न देखे बाघ, से देखे बिलाई।
जे न देखे ठग, से देखे कसाई।
जे न देखे लड़की, से देखे लड़की के भाई।
बिलाई से बाघ, कसाई से ठग और लड़की के भाई से लड़की का अंदाज किया जा सकता है।

८५. जेकर मन पाई, तेकर अंगना जाई।
मन देख कर ही दूसरे के यहाँ जाना चाहिए।

८६. जे करे बाभन के भल, से परे देवी के बल।
बाभन का भला करने वाला भी बरबाद होने से बच नहीं सकता।

८७. जे दिन भादो पछिया चले, ते दिन माघ पाला पड़े।
जितने दिन भादों में पछिया हवा चलती है, उतने दिन माघ में पाला पड़ता है।

८८. जेकर बाते के न ठेकान, ओकर बाप के कौन ठेकान।
बात के जो पक्के नहीं होते हैं, वे वास्तव में अकुलीन होते हैं।

८९. जैसन माय ओयसन धीआ, पोछपाछ नतिनियों के दिया।
गुण-वश परम्परा में चलता है।

९०. जैसन खाये अन्न, ओयसन हो जाये मन।
भोजन पर मन की दशा निर्भर करती है।

९१. जोड़े राइ रत्ती, तब होबे सम्पत्ति।
तिल-तिल कर सम्पत्ति जुटती है।

९२. जेऊ तरहत्थी में जनमें बार[1]
तइयो न करे, गोआर के एतबार।
तलहथी पर बाल का उगना सम्भव है, परन्तु ग्वाले का विश्वसनीय होना असम्भव है।

---

१. बाल

९३ जे पुरवा पुरवइया पावे, सुखल नदी में नाव दौडावे।
पुरवा नक्षत्र में पुरवइया हवा चलने से खूब वर्षा होती है।

९४. जोलहा जाने जौ काटे के हाल !
अनाड़ी किसी वस्तु के मर्म को क्या जानेगा।

९५. तातल खाये, भीतर घर सोवे,
तेकर रोग वने-वन भागे।
गर्म भोजन और घर के भीतर सोने से रोग की सभावना जाती रहती है।

९६ तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा।
मतभेद को पराकाष्ठा तक पहुँचाना।

९७. तीन कोस पर पानी बदले, सात कोस पर वानी।
पानी का गुण और बोली का रूप एक जगह से दूसरी जगह में बदलता जाता है।

९८ तुरुक, तेली, तार इ तीनों विहार।
बिहार में तुर्क, तेली और ताड़ के पेड़ों का बाहुल्य है।

९९ तेली के तेल जरे, मसलची के मन फटे।
जाये चीज किसी की, कष्ट हो किसी को।

१०० थकल पैराकू फेन चाहे है।
हारा थका व्यक्ति तुच्छ से तुच्छ वस्तु का सहारा लेता है।

१०१ दमडी के हाँडी जाहे, आ कुत्ता के जात पहचानल जाहे।
छोटा से छोटा बात में ही क्षुद्र आदमी के स्वभाव की परीक्षा हो जाती है।

१०२. दरवे में सरवे बसल।
धन से सब कुछ संभव है।

१०३ दादा कहे से बनिया गुड देहे ?
खुशामद से कहीं वस्तु प्राप्त होती है ?

१०४. दु पहार के डोली, राड के बोली,
चित्रा के घाम दैवो से न सहाय।
दो पहर की डोली, बदमाश की बोली, और चित्रा नक्षत्र की धूप असह्य होती है।

१०५ दुसमन दाता भल, दोस्त नादान न भल।
नासमझ दोस्त से समझदार दुश्मन अच्छा है।

[illegible] दुधारु गाय के दू लातो भल।
लाभप्रद व्यक्ति की चोट सही जा सकती है।

१०७ देव न पितर, पहले चमरे भीतर ?
स्वार्थी व्यक्ति दूसरे के अधिकार की अवहेलना करता है।

१०८. देहे-देहे नाता, अउ खेते-खेते पट्टा।
अपना अपना आकर्षण और अपनी अपनी विशेषताएँ!

१०९. देखे में साधु बाबा, खेलावे पाँचों पीर।
देखने में सीधा, किन्तु कर्म में पेचीला।

११०. धान दुद्धा, रब्बी बूड्ढा।
धान कुछ कच्चा ही काटना चाहिए और रब्बी पकने पर।

१११. धान पान नित असनान।
धान और पान, पानी में डूब कर ही ठीक रहते हैं।

११२. धान सुक्खे हे, कउआ टरटरा हे।
बकवास से कोई काम नहीं रुकता है।

११३. धुने-धाने तोड़े तान, ओकर रक्खे दुनियाँ मान।
बाह्य आडम्बर से दुनिया प्रभावित होती है।

११४. न राधे के नौ मन घीउ होयत, न राधे नचतन।
असभव इच्छा की पूर्ति कभी नहीं हो सकती।

११५. नहीरा जो बेटी, ससुरा जो जंगरा चलाव बेटी सगरो खो।
परिश्रम से ही जीविका उपलब्ध होती है।

११६ नाधा[1] तो आधा।
कार्यारंभ होने पर, उसे आधा समाप्त समझना चाहिए।

११७. निरिख[2] अउ मउअत के कौन ठेकान।
बाजार दर और मृत्यु दोनों अनिश्चित हैं।

११८. नौ के लकड़ी, नब्बे खरच।
महत्वहीन वस्तु पर अधिक खर्च करना।

११९. पहला पहर सब्भे जागे, दूसरा पहर भोगी,
तीसरा पहर चोर जागे, चउथा पहर जोगी।
पात्रानुकूल समय का भिन्न-भिन्न उपयोग होता है।

१२०. पढ़ऽपूत चण्डिका, जेमे चढ़ो हण्डिका।
ऐसी शिक्षा प्राप्त करो, जिससे जीविकोपार्जन हो सके।

१२१, पाँड़े के गाय न हल, वाय हल।
उपयोगी वस्तु झंझट का कारण हो जाती है।

---

१. आरभ किया। २ बाजार दर।

१२२ पाप के पचित धन।
धन से पाप ढँका जा सकता है।

१२३. पुरुष अउ पहार दूर से लउके है।
श्रेष्ठता का आभास दूर से ही मिलता है।

१२४ पूस के दिन फूस नियन,
माघ के दिन बाघ नियन।
पूस का दिन छोटा होने के कारण नहीं ठहरता है, और माघ का दिन ठढापन के कारण काटने दौड़ता है।

१२५. पूस पुनर्बस बूनऽ धान,
असलेसा मघा कादो सान।
पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान का बीज छींटना चाहिए, और अश्लेषा तथा मघा नक्षत्र में खेत को कदोआ करके धान का पौधा रोपना चाहिए।

१२६ पूरबा रोपे पूरा किसान, आधा खसरी आधा धान।
भरपूर होने के कारण लापरवाह किसान ही पुर्वानक्षत्र में धान रोपता है।

१२७ पेट करे कुहुर-कुहुर जूड़ा करे महमह।
भीतर का खोखलापन, बाहर का दिखावा।

१२८. पेट भेल भारी तो कौन करे बेगारी।
तृप्ति हो जाने पर परिश्रम से अरुचि हो जाती है।

१२९. बंस बढ़े हे तो रोग बढ़े हे।
अधिक व्यक्ति वाले परिवार में झंझट लगा ही रहता है।

१३० बनिया रीझे, तो हँस दे।
कंजूस बनिया खुश होने पर भी कुछ नहीं दे सकता, केवल हँस कर टाल देगा।

१३१ बरिया हारे तो हूरे, जीते तो थूरे।
बलवान आदमी हारने पर भी कष्ट देता है, जीतने पर तो देगा ही।

१३२. बनमा में बाघ छिपे हे।
जैसा व्यक्तित्व, वैसा आचरण।

१३३. बाँझ का जाने, परसौती के पीड़ा।
बिना अनुभव के कुछ समझना संभव नहीं है।

१३४. बापे पूत परापत घोड़ा, कुछ बस में थोड़ा थोड़ा।
परम्पराओं का प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ता है।

१३५. बाघ चीन्हे हे कहूँ बराहमन के लइका?
स्वार्थी व्यक्ति को औचित्य का ध्यान नहीं होता है।

१३६. बाभन, कुत्ता, हाथी, अपने जात के घाती।
बाभन, कुत्ता और हाथी को अपनी जाति के लोगों से बैर होता है।

१३७. बाला सड़े तो मोती झरे, रेहड़ा सड़े तो का न करे।
बालू सड़कर उपजाऊ होता है। रेह (खाद मिली मिट्टी) सड़ कर बहुत उपजाऊ होती है।

१३८. बाबा मरिहें, तो बैल बिकैंहें।
किसी बात को, दूसरी बात पर टालना।

१३९. बिन बोलाये मत जाहु भवानी।
न मिलतो तोरा पीढ़ा-पानी।
बिना बुलाये कहीं जाने से मनुष्य अनादृत होता है।

१४०. बिच्छा के मंत्रे न जाने आउ साँप के बियल में हाथ डाले।
समर्थ से बाहर का काम करना।

१४१. बिरले कान होयतन भलमानुस।
काने लोग स्वभावतः टेढ़े होते हैं।

१४२. बिन लस्सा के बझाऊँ, बिना पर के उड़ाऊँ,
तब बाभन कहलाऊँ।
बाभनों को टेढ़े और अनोखे कामों को करने का ढोंग होता है।

१४३. बिना रोले लड़को के न दूध मिले।
चुप रहने वाला व्यक्ति कुछ नहीं पाता है।

१४४. बिना न्योता बीज्जे।[1]
बिना निमंत्रण के किसी कार्य में भाग लेना।

१४५. बुरबक के चार लच्छन हे :—
घर घोड़ा पैदल चले, अप्पन माल अनका ही धरे।
अनकर लड़ाई अपने लड़े, अप्पन बात अनका से कहे।
मूर्ख के चार विशेष लक्षण हैं :—घर पर सवारी होने पर भी पैदल चले, अपनी सम्पत्ति पराये घर रखे, दूसरे की लड़ाई स्वयं लड़े और अपनी बात दूसरों से कहे।

१४६. बूढ़ सुग्गा कहूँ पोस माने हे?
प्रभाव डालने के लिए वस्तु या व्यक्ति का कच्चापन अपेक्षित है।

१४७. बेंग के सरदी न, आ बाभन के पंचैती न!
बेंग सरदी से और बाभन पंचैती से परे हैं।

---

१. ज्योंनार करने को बुलाहट।

१४८. बेच खइहऽमीरा[1], मगर मँगनी मत बटिहऽ।
मँगनी देने से वस्तु की दुर्गति होती है।

१४९. बेलदार के बेटी न नैहरे सुख, न ससुरे सुख।
गरीब को कहीं सुख नहीं है।

१५०. बेटा आ पसेरी घुमले मान पावे हे्।
चलन से ही वस्तु के गुण का मूल्यांकन होता है।

१५१. बेटी चमइन के नाम रजरनिया।
तुच्छता को ढँकने के लिये नाम का आडम्बर।

१५२ बैठल से बेगारी भल।
अकर्मण्यता से बिना पारिश्रमिक के कर्म करना अच्छा है।

१५३. बैठल बनिया का करे, इ कोठी के धान उ कोठी करे।
बेकार आदमी निरर्थक काम करता है।

१५४ भर घर देवर, भतार से ठट्ठा।
स्वाभाविक व्यवहार को छोड़ कर, अस्वाभाविक व्यवहार करना।

१५५ भइयन छओ भकार से सदा रहऽहोसियार।
भाई, भतीजा, भागीना, भाट, भँाड, भूमिहार।
'भ' से आरम्भ होने वाले, इन छः व्यक्तियों से होशियार रहना चाहिए। भाई, भतीजा और भाञा से हिस्सेदारी का भाट और भाँड़ से झूठी प्रशंसा पाकर मतिभ्रम का और भूमिहार से संघर्ष का डर होता है।

१५६. मंगले माड़ न, डँटले धीउ।
माँगने पर माड़ नहीं मिलता, पर डाँटने पर घी भी मिल जाता है।

१५७ मइया के जीउ गइया ऐसन, पूता के जीउ कसइया ऐसन।
माता प्रकृति से स्नेहमयी होती है, परन्तु पुत्र प्रकृति से कठोर।

१५८ मउगा मरदी फरनी जोय, ते घर खैरियत कभी न होय।
पौरुषहीन पुरुष और लालची स्त्री के रहने से घर की खैरियत नहीं होती है।

१५९. मलिक[1], माहुरी[2] अउर मल्लाह, इ तीनों से न करे सलाह[1]।
मलिक, माहुरी और मल्लाह से सलाह करना ठीक नहीं है।

१६०. मारल चोर, उपासल पहुना,
फिर न ऐहें, हम्मर अँगना।
लाछित व्यक्ति के लौटने की सम्भावना नहीं रहती।

---

१. मालिक।

१ गवैया। २ जाति विशेष, जिसका प्रधान पेशा व्यापार है।

१६१. माघ के बरसा, भाई के हिस्सा अजर है।
माघ की वर्षा और भाई का हिस्सा निश्चित है।

१६२. माय बेटी गितहारिन आ बाप बेटा बराती।
अपने ही दायरे में सीमित रहना।

१६३. माल महराज के मिर्जा खेले होली।
दूसरे के ऐश्वर्य पर फुटानी करना।

१६४. माघ के उक्खम, जेठ के जाड़ा, पहले भर गेल नदी नाला।
सावन कुँआ धोवे धोबी, कहे व्यास हम होयब जोगी।
माघ में गर्मी, जेठ में जाड़ा, वर्षा ऋतु के आरम्भ में अधिक वर्षा और सावन में पानी की कमी के कारण धोबी का कुँआ के पानी से कपड़ा धोना ऐसी भयकर स्थिति का परिचायक है कि निराश होकर ससारी को जोगी बन जाना चाहिए।

१६५. मुरगी मिलान कहुँ कायथ पहलवान।
मुर्गियों में मिल्लत और कायस्थ म पहलवानी दुर्लभ है।

१६६. मुसहर भगत न, राजपूत के धनुही।
टूटे तो टूटे, नेवे न कबही।
राजपूत का धनुष टूट सकता है, लेकिन झुक नहीं सकता है, और मुसहर किसी भी परिस्थिति में मासाहार नहीं छोड़ सकता है।

१६७. मूर लौटे बनिया नाचे।
मूलधन पाकर बनिया खुश होता है।

१६८. मोरवा चारों तरफ से नाच आवे हे,
अप्पन गोड़वा देख के मुरझा जाहे।
व्यक्तिगत हीनता की अनुभूति प्रफुल्लता नष्ट करती है।

१६९. रटन्त विद्या अउ लपटन्त जोर।
विद्या रटने से और ताकत कुश्ती लड़ने से आती है।

१७०. रहे बाँस न बाजे बँसुरी।
झंझट के मूल की समाप्ति से चिंता से मुक्ति हो जाती है।

१७१. रट[१] के खाये बैलवा, बैठ के खाय तुरंगवा।
सीधा व्यक्ति (बैल) परिश्रम की कमाई खाता है, परन्तु चालाक व्यक्ति (घोड़ा) बैठ कर खाता है।

१७२. राँड़ के बेटा साँढ़ ऐसन।
विधवा स्त्री का लड़का प्यार से बहक जाता है।

---

१. परिश्रम करके।

१७३. राजा के एक बेटा, आउ परजा के द्
प्रजा की भलाई राजा की भलाई की अपेक्षा अधिक गौरव है।

१७४. राड़ आदमी लतिऐले भल।
बुरा व्यक्ति कठोर व्यवहार से नियन्त्रित होता है।

१७५. लड़िका मालिक बूढ़ देवान, ममला होय साँझ विहान।
किसी पद पर अनधिकारी व्यक्ति के होने से काम बिगड़ता है।

१७६. लेम सेकर देम नहीं, देम सेकर मोछे के ताव से लेम।
दूसरे के ऋण तो चुकाना नहीं और अपना जबर्दस्ती वसूल करना।

१७७. सदा देवाली सन्त घर, जो गुर गेहुम होय।
समृद्धि रहने पर हमेशा उत्सव मनाया जा सकता है।

१७८ सहर सिखावे, कोतवाली।
मनुष्य अनुभवसे सीखता है।

१७९ सड़लो तेली, तो फाड़ा में अधेली।
गरीब से गरीब तेली के पास कुछ न कुछ धन अवश्य होता है।

१८०. सब जात भगवान के, तीन जात बेपीर।
दाव पड़े चूके नहीं, बाभन, बनिया अहीर।
ऐसे तो सभी जाति भगवान के हैं, पर तीन जातियाँ बेदर्द होती हैं, जो मौके पर छोड़ने वाली नहीं। ये हैं—बाभन, बनिया और अहीर।

१८१. साँझ के बादल आउ पहुना बिना बरसले न जाहे।
शाम की आई बदली और शाम का आया मेहमान टलने को नहीं।

१८२. सात हाथ हाँथी से डरे, चौदह हाथ मतवाला।
अनगिनती हाथ तेकरा से डरे, जेकर जात फेंटवाला।
मतवाला व्यक्ति हाथी से भी खतरनाक है, और उससे भी खतरनाक है, वर्णसंकर।

१८३. साधु अउ नदी के चाल जानल बड़ मोसकिल है।
साधु और नदी की गति समझना कठिन है।

१८४. साठा तब पाठा।
पुरुष साठ वर्ष में पुष्ट होता है।

सावन मास बहे पुरवइया, बेचऽ बरदा कीनऽ गइया।
सावन मे पुरवइया हवा बहने से फसल खराब हो जाती है।

सिंह गमन, सुपुरुष वचन, केदली फले एक बार।
[illegible] तेल, हमीर हठ, चढ़ेऽ न दूजो बार।
सिंह की चाल, सुपुरुष की बात नहीं बदलती। केला एक ही बार फलता

है। स्त्री का हठ, तेल का चढ़ना (शादी और हमीर का हठ अटल रहता है।

१८७ सुआ न सुतारी, ठेगा के व्यापारी।
बिना माल के व्यापार का ढोंग।

१८८ सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के।
सौ बात का एक मुँहतोड़ जबाब देना।

१८६ सौ बरस खडल सौ बरस खडल
सौ बरस पडल, तो जौ भर सडल।
सखुआ लकड़ी की विशेषता।

१६० हरियर खेती, गब्भिन गाय।
जे न देखे, तेकर जाय।
अपनी मूल्यवान वस्तु की रक्षा न करने से, उससे हाथ धोना पड़ता है।

१६१ हथिया बरसे, चित मँडराय, घर बैठल किसान डडियाय।
हस्ति नक्षत्र की वर्षा और चित्रा नक्षत्र की धूपछाँही उपज के लिये लाभदायक है।

१६२ हड़बड़ी के बिआह, कनपट्टी में सेंनुर।
जल्दी का काम बुरा होता है।

१६३ हाथ सुक्खल, बरहमन भुक्खल।
पूरा खाकर भी तृप्त न होना।

१६४ हाथ अछत मोछ टेढ।
अकर्मण्यता के कारण काम को बिगड़ने देना।

१६५ हिसके हिसके गोइयाँ बियाये, गोइयाँ के बचवा मरल जाये।
दूसरे की नकल करने वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता है।

१६६ हिल्ले रोजी बहाने मौअत।
किसी के निमित्त से नौकरी मिलती है, और मौत किसी भी बहाने आ सकती है।

१६७ हे घरनी, घर सोभे है।
न घरनी घर रोवे है।
स्त्री से ही घर की शोभा होती है। उसके बिना घर सूना लगता है।

१६८ होती के धोती, न तो फेंटा मे लंगोटी।
समृद्धि में ठाठ बाट, नहीं तो गरीबी में गुजारा।

———

२. मुहावरे†

१. अगरासन काढ़ना।
२. अतहतह करना।
३ अरदसिया लगाना।
४ अरमेरा करना।
५. उकसी बिरखी होना।
६ उतान होके चलना।
७ उलट के धारा बाँधना।
८. उसकुन काढ़ना।
९. एक से दू करना।
१०. ओरहन देना।
११. औरी-धौरी करना।
१२. कट्टीस करना।
१३. कठ दलेली करना।
१४. करहा धुराना।
१५. करेजा खिखोरना।
१६. करेजा पर कोदो दरना।
१७. करेजा पर दाल दरना।
१८. करेजा फक-फक करना।
१९. करेजा मसकना।
२०. करेजा हकर-हकर करना।
२१. कान न देना।
२२ कुत्ता काटना।
२३. कोठी में मूड़ी छिपाना।
२४. कौआ कोंठी करना।
२५. खटवास पटवास लेना।
२६. खिसा फरना।
२७ खोपसन देना।
२८. गंगन होना।
२९. गंजोटा होना।
३०. गाल से देवाल जीतना।
३१. गाहे बिगावे आना।
३२. गीत उठाना।
३३. गोड़ धो के पीना।
३४. घमलौर लगाना।
३५. घोघना फुलना।
३६. चन्दर लगना।
३७. चौका चनन करना।
३८. चौका-पुरना।

---

† मुहावरों के क्रमिक अर्थ निम्नांकित हैं :—

१. पर्व त्योहार में देवतांश निकालना। २. श्रति करना। ३. प्रार्थना करना। ४. अवकाश में किसी काम में लग कर मन लगाना। ५. व्याकुल होना। ६. घमंड से चलना। ७. बात फेरना। ८. छेड़ना। ९. दाल दरना। १०. उलाहना देना। ११. कार्य बिगाड़ देना। १२. मित्रता तोड़ लेना। १३. हठ से बहस करना। १४. करहा में पानी चलाना। १५. हृदय कचोटना। १६–१७. हृदय व्यथित करना। १८–२०. कमजोरी अनुभव करना। १९. दु:ख होना। २१. ध्यान न देना। २२. खतरा या मूर्खता के काम में पड़ना। २३. मुँह-चोर होना। २४. तंग करना। २५. क्रोध से निष्क्रिय होकर बैठ जाना। २६. समाप्त होना। २७. उलाहना देना। २८. दुर्लभ होना। २९. जमकना। ३०. बात बना कर सफलता चाहना। ३१. कभी-कभी आना। ३२. गीत आरंभ करना। ३३. बहुत आदर करना। ३४. भीड़-धक्का लगाना। ३५. रूठना। ३६. मांई आना। ३७. लीप-पोत के साफ करना। ३८. बच्चों का पाखाना करना (व्यंग्य में कथित)।

३६ चौरहा देना ।
४० छ पाँच में पडना ।
४१ छान पगहा तोडाना ।
४२ जमात के फरामात होना ।
४३ जट्टा काढना ।
४४ झपसी लगाना ।
४५ झिक्का तोरी करना ।
४६ झोंका देना ।
४७ टर्रा होना ।
४८ टाट बैठाना ।
४६ डाटी लगाना ।
५० टुकुर टुकुर देखना ।
५१ टुपुर टुपुर बोलना ।
५२ ठनगन करना ।
५३ ठौर लगना ।
५४ ढीढा फूलना ।
५५ तरिक्कार करना ।
५६ तिक्खिड बिक्खिड होना ।
५७ थेथर दलेली करना ।
५८ दाँत निपोरना ।
५६ दीदा काढना ।
६० दीदा का पानी ढरकना ।
६१ नजर तुलाना ।
६२ न्योती चरना ।
६३ निमक के सरियत रखना ।
६४ नुखुस निकालना ।
६५ नून तेल लगाना ।
६६ नाडी छोड़ना ।
६७ नानी मरना ।
६८ पढार करना ।
६६ पेट डेगाना ।
७० फटफुट होना ।
७१ फीफीहा होगा ।
७२ फूल झरना ।
७३ फूल के बारा होना ।
७४ बस म लेढा लगाना ।
७५ बनर घुडकी दिखाना ।
७६ बह भर देना ।
७७ बार टेढा न होना ।
७८ बाले वाल उठा लेना ।
७६ बाह न होना ।
८० बिक्ख होना ।

३६ खेत को अनाज पर लगाना । ४० दुविधा में पड़ना । ४१ बचन तोड़ाना । ४२ संगठन में शक्ति होना । ४३ वश में करना । ४४ निरन्तर वर्षा होना । ४५ हाथा पाई करना । ४६ चक्की में पिसने के लिये अनाज देना । ४७ बात मथना, जिद करना । ४८ बिरादरी में पंचायत बैठाना । ४६ रोकना । ५० एकटक देखना । ५१ जल्दी जल्दी बोलना । ५२ काम न करने की प्रवृत्ति दिखाना । ५३ चौका लगाना । ५४ गर्भ रहना । ५५ पूर्ण समाप्त करना । ५६ तीन तेरह होना । ५७ हठ से बहस करना । ५८ असमर्थता दिखाना खुशामद करना । ५६ आँख काढ लेना । ६० शील खोना । ६१ नजर टिकाना । ६२ प्रथम बार उपभोग करना, वर्षा पड़ने पर जो प्रथम घास उगती है, उसे चरना । ६३ कृतज्ञ होना । ६४ ऐब निकालना । ६५ बढा चढा कर कहना । ६६, मृत्यु होना । ६७ काम से भागना । ६८ अर्घ्य चढाना । ६६ भूख लगना । ७० बटवारा होना । ७१ परेशान होना, छटपटाना । ७२ अधिक प्रसन्न होना । ७३ रुचिकर बात करना । ७४ वश को बदनाम करना । ७५ डराना । ७६ तृप्त कर देना । ७७ कुछ न बिगड़ना । ७८. जरा जरा करके उठा लेना । ७६ वश न चलना । ८० अच्छी चीज का हानिकारक होना ।

८१. बिहल होना।
८२. बुत्ता देना।
८३. बोकनारी के काम करना।
८४. बोहनी बट्टा होना।
८५. भाग्य घरचराना।
८६. मटकी मारना।
८७. मध करना।
८८. माथा पर पगडी बांधना।
८९. मिट्ठा माहुर होना।
९० मुँह ताकना।
९१. मुँह में लेबा लगाना।
९२. मोती करना।
९३. रँड़धौंच करना।
९४. रट के सट जाना।
९५. रस्सी छूना।
९६. राड़ी बेटवारी करना।
९७. रूसल-फोहागल होना।
९८. रेका-वोकी करना।
९९. लंगट छाव लाना।
१००. लंगट-बौकारी करना।
१०१. लहालोट होना।
१०२. लाग-फाँस होना।
१०३. लार-पोश्चार होना।
१०४. लाल बनल रहना।
१०५. लावा-फरही होना।
१०६. लावा-धका न रखना।
१०७. लास-फूस न रखना।
१०८. लुस फुसायल चलना।
१०९. लू-लू, छू-छू होना।
११० लोट-पोट देना।
१११. संझौती दिखाना।
११२. संस-बरक्कत न मिलना।
११३. सखरी करना।
११४. समांग में घुन लगना।
११५. साँझ बिहान करना।
११६. सिहरी फटना।
११७. सिहो-सिहो करना।
११८ हहास करना।
११९. हॉफे-फाँफे आना।
१२०. हाड़ में हलदी लगना।
१२१. हाथ-सकड़ियाना।
१२२. हियाव होना।
१२३. हीक भरना।
१२४. हुक्का पानी बन्द करना।
१२५. हेठार में पड़ना।

○

---

८१. अपमान होना। ८२. ठगना, धोखा करना। ८३. नीच कर्म करना। ८४. बिक्री या श्रीगणेश होना। ८५. अकस्मात् सौभाग्य प्राप्त होना। ८६. आँखों से संकेत करना। ८७ ९२. रुचिकर बातें करना। ८८. मालिक होना। ८९. छद्मवेशी बनना। ९०. परमुखापेक्षी होना। ९१. भूखे रहना, चुप रहना। ९३. नीचता करना। ९४. अत्यधिक प्रार्थना करना। ९५. साँप काटना। ९६. पति-पुत्र को लगा कर शाप देना। ९७. क्षुब्ध होना। ९८. रे-तू करना। ९९. नीचता दिखाना। १००. नीचता करना। १०१. मुग्ध होना। १०२. असामाजिक प्रेम होना। १०३. अशक्त होना। १०४. श्रेष्ठ बने रहना। १०५. परेशान होना, छटपटाना। १०६–१०७. सम्बन्ध न रखना। १०८. ललचाया हुआ रहना। १०९. अतृप्त रहना। ११०. फुसलाना। १११. घर में साध्यदीप दिखाना। ११२. तरक्की न होना। ११३. कच्ची रसोई से छुलाना। ११४. निकम्मा होना। ११५. वायदा टालना। ११६. हिचक मिट जाना। ११७. हिचकना या डरना। ११८. दूसरे की उन्नति पर जलन प्रगट करना। ११९. हड़बड़ाया हुआ आना। १२०. सगाई होना। १२१. रुपये पैसे की तंगी होना। १२२. हिम्मत होना। १२३. जी भरना। १२४. अजात करना। १२५. निर्जन स्थान में पड़ना।

३. बुझौवल

१. अँउठा[1] नियर पेड़ हे, दउरा नियर पत्ता।
एके एक फरे हे, घउद[2] लग के पके हे।—कुम्हार का चाक।

२. "अँतड़ी पर पतड़ी, पाँच गो मजुर।
घुर जो मजूर, हम जाहिअउ दूर।"—कौर।

३. अवघट[3] घाट घड़ा न डूबइ, हाथी खड़े निहाय।
आग लगई इ घाट में, कि चिड़ई पियासल जाये।—ओस।

४. आधा धुप्पा, आधा छइयाँ,
बतवे जे होवे बलबइया।—खटिया।

५. इक मदिल में दू दरवाजा।—नाक।

६. उठे त झनझन बज्जे, बैठे त फहराय।
दिन भर लाखों जिउ मारे, अपने कुछ न खाय।—जाल।

७. उमत के फूल, कोई चूमऽ न हइ।
झरझर गिरइ, कोई चूनऽ न हइ।—वर्षा की बूँद।

८ एक घड़ा में दूरग पानी।—अंडा।

९. एन्ने गेली, ओन्ने गेली, गेली कुलकत्तवा।
बत्तीस गो पेड़ देखली, एके गो पत्तवा।—जीभ।

१०. एक चिरैयाँ रखनी,[4] खूँटा पर बसनी।
तब चलइ रग-ढग, तब कमर कसनी।—तलवार।

११ एन्ने नद्दी, ओन्ने नद्दी, बीच में ककैया[5]।
फरे के लदबुद, मुँह के मिठैया।—सिंघारा।

१२. एन्ने नद्दी ओन्ने नद्दी, बीच में हवेली।
करे लगल डगमग, धर दे अधेली।—नाव।

१३. एक गाँव में ऐसन देखली, बानर दूहे गाय।
छाली काट के बीग दे, दही लेलक लटकाय।—ताड़ी।

१४. एगोफूल छिहत्तर भतिया, जे न बूझे मूरख के नतिया।—केला।

---

१. अँगूठा। २. गुच्छा। ३ कठिन। ४. मजेदार। ५. काँटा।

१५. एक छौंरा के नकिए टेढ,
एक छौंरा के पेटवे कटल ।—सुद, गेहूँ ।

१६. करिया कुत्ता बन में सुत्ता,
मारइ लात, चेहा के उठा ।—करिग[1] ।

१७. "कबूतर के अगारी ही, चोंच न समझिहऽ ।
बकरी के बीच ही, पेट न समझिहऽ ।
बूझ न पइहऽ, त मुँह न समझिहऽ ।—क ।

१८. करिया बिलाई के हरियर पुच्छ ।—ताड़ ।

१९. करिया ही हम करिया ही,
करिया वन में रहऽ ही,
ललका पनिया पीअऽ ही ।—जूँ ।

२०. कारी गइया, आरी घैले जाये,
बापे करिया एको घान न खाय ।—रेलगाड़ी ।

२१. काठ के मैया, मट्टी के बौआ ।
खड़े खड़े, दूध पीए जे बौआ ।—लबनी ।

२२. "गछिया पर रहिला, बकि चिरई न ही,
पानी से भरलःहि, बकि बदरी न ही,
दू ठो आँख हे, पर मनुष न ही ।"—नारियल ।

२३. गोरा बेटा करिया बाप, भीतर पानी ऊपर आग ।—नारियल, चिलम ।

२४. चरटंगपुछे एकटग से, दुटग कहाँ गेल ।
अठटग जनावर मार के, आग लावे गेल ।—बाघ, कुदाल, आदमी, केकड़ा ।

२५. चाँदिलपुर में चोरी होल, चुटकी से पकरायल ।
तरहत्थी पर हाजिर होल, नोह पर पिटायल ।—जूँ ।

२६. चार लरम चार गरम, चार भराभर ।
एक हरिन के बारह टगड़ी, अलगे अलगे चर ।—महीना, ऋतु, साल ।

२७. छोटे गो दुइयाँ परक देली सुइयाँ ।
फूटे के न फाटे के, वाहरे ! दुइयाँ ।—केराव ।

२८. जब मारइ तो जी उठइ, बिन मरले मर जाये ।—ढोलक ।

२९. जल काँपइ, जलथैया काँपइ,
पानी में कटोरा काँपइ,
चोर न धरे चोराइ ।—चन्द्रमा ।

---

1. पानी पटाने का एक यंत्र ।

३०. झाँझर कुइयाँ अजब फुलवारी,
न बुझबऽ तो परतो गारी।—चलनी।

३१. तनी गो डिबिया में लाल-लाल-बिटिया।मसूर।

३२. तनिगों कीया[1], पेटारी भर जाये रे।
लाख गो दाम मिले, तइयो न बिकाय रे।—आँख।

३३. घर गेल मुरगी चलते दूरी,
लावइ चाकू काटइ मूरी।—कठपेंसिल।

३४. दू खड़ा एक पट, ओकर सवा हाथ के कट,
मारे फटाफट, बुझऽ तऽका ही!—ढेंकी।

३५. धरती से साम सुन्नर, बादर में लेखा,
हाय रे परान तोरा, कहियो न देखा।—गूलर के फूल।

३६. नौ से बड़ही, नौ सौ लोहार,
तइयो न कटे, झुनझुनमा पहार।—ओस।

३७. पहिले ढेरी जमे देलक पीछे दुहलक गाय,
बचल रहल, गेल पेट में, मक्खन हाट बिकाय।—पोस्ता, अफीम।

३८. फरइ न फूलई, सूप भर झरइ।—महुरना।

३९. बिन हाथ, बिन पैर, पहाड़ चढल जा हे,
बूझऽ जी लोगन, जनावर के जा हे?—धुँआ।

४०. भगवान बबा के अनगिनित गाय,
रात बिआये, दिन कहाँ जाये?—तारे।

४१. मटर गोलगोल, मटर काला,
मटर सिबसिब।—गोलमिर्च।

४२. मट्टी के घोड़ा, मट्टी के लगाम,
ओकरा पर चढे, खदबदिया जवान।—भात।

४३. राजा के बेटी, करिया चोटी,
रात बधावे, भोर खुलावे।—अंधकार।

४४. लरबर के डाल देलीं, कड़ा करके निकाल लेलीं।—रोटी।

४५. लागा कहई तो ना लगई, बम्भाकहई लग जाये।—ओठ।

४६. लाल ढकना, खरताल ढकना,
खोल खिड़की, पहुँचाओ पटना।—रेलगाड़ी।

४७. लाल गइया खर खाये,
पानी पिये मर जाये।—आग।

---

1. डिबिया।

४८ लाल घोड़ा, करिया जीन,
गोर सिपाही, उतरे चढ़डे ।—रोटी ।

४६ लाठी पर कोठी, कोठी पर ढबढब,
ढबढब पर गुजगुज, श्रोपर करिया पहार ।—आदमी ।

५० लाल छड़ी, मैदान गड़ी ।—शकरकंद ।

५१ लाल मौर हे, बकि मुरगा न ही,
चार टाँग हे, बकि घोड़ा न ही,
लम्बा पूँछ हे, बकि हनुमान न ही ।—गिरगिट ।

५२ सब कोई नल गेल, मकोला दाई घर में ।—चूल्हा ।

५३ सब कोई नल गेल, बुढ़वा रह गेल लटकल ।—ताला ।

५४ हरदी के गाद गूद, पीतल के लोटा,
जे न बूझे से, बानर के बेटा ।—बेल ।

परिशिष्ट

मगही लोक-साहित्य का संग्रह-विवरण

(क) मगही लोककथाओं का संग्रह-विवरण
(ख) ,, लोकगीतों ,, ,, ,,
(ग) ,, लोक कथा गीतों का ,, ,,
(घ) ,, लोकनाट्य गीतों ,, ,, ,,
(ङ) ,, लोकगाथाओं ,, ,, ,,
(च) ,, के प्रकीर्ण साहित्य का संग्रह-विवरण

———

मगही लोक साहित्य का संग्रह-विवरण

मगही लोक साहित्य के विषय मे अधिकाधिक श्रवण मनन एव सकलन की अभिरुचि तो इन पंक्तियों की लेखिका में प्रारभ से ही रही है पर व्यवस्थित ढग से उसके सकलन का कार्य सन् १९५७ ई० से प्रारभ हुआ। यह सन् १९६० ई० तक अबाध रूप से चलता रहा। इस बीच सम्पूर्ण मगह क्षेत्र का भ्रमण किया गया और अधिक से अधिक महानुभावों एव देवियों का सान्निध्य प्राप्त किया गया।

लोक साहित्य सग्रह का यह कार्य जितना ही कष्ट साध्य था उतना ही मनोरजक भी था। कष्ट साध्य इस अर्थ म कि विभिन्न लोकगीतो लोककथाओं लोकनाटकगीतों आदि के सकलन के लिए उपयुक्त एव विश्वसनीय कथावाचक का अन्वेषण बडा दुष्कर होता। फिर उनको बठा कर उनके मुख से फूटते लोकगीतो आदि को सचष्ट भाव मे लिपिबद्ध करने का कार्य तो और कठिन होता। वे प्रवाह के साथ गाते चलते जब कि उतनी ही क्षिप्रता के साथ लेखन सभव नहीं हो पाता। क्रम सगति के लिए यदि उन्ह पीछे ले जाया जाता तो प्रवाह खण्डित हो जाता। और फिर प्रगति मे बाधा पड जाती।

पर यह कार्य अत्यन्त मनोरजक भी था। इसी के फलस्वरूप मगह जीवन के वास्तविक स्वरूप से निकट सम्पर्क स्थापित करने का सौभाग्य मिला। इससे जहा मगह क्षेत्र की सास्कृतिक गरिमा एव एकता की झाँकी मिली वहा मगही लोकसाहित्य को प्रकाश मे लाने के लिए अथक श्रम की प्रेरणा भी मिलती रही। जहा मगध क्षेत्र की विभिन्न स्थानीय विशेषताओं के फलस्वरूप से परिचित होने का अवसर मिला वहा विभिन्न रीति रिवाजो म समानताओं एव भिन्नताओं का भी बोध हुआ।

इस क्रम में अनेक जातियो क सम्पर्क मे आने का भी अवसर मिला। एक ही ग्राम म अनेक जातिया रहती मिला—यथा—ब्राह्मण क्षत्रिय भूमिहार कायस्थ यादव, तेली सूरी धानुक कोयरी, तमोली मल्लाह, लोहार आदि। फिर किसी ग्राम मे किसी जाति की प्रधानता है, किसी म किसी अन्य की। सवत्र एक बात दर्शनीय है—वह है—इनका परस्पर साहाय्य भाव। इन विविध जातियों में अनेक रीति रिवाज समान हैं और अनेक विभिन्न हैं पर इनसे इनके सामाजिक सगठन म कोइ अन्तर नहीं आता। इन विभिन्न जातियों का अलग साहित्य भी उपलब्ध होता है, जिसमें उनके स्वभाव, सस्कार विचार आदर्श आदि के अध्ययन में अति सुविधा हो सकती है।

कथावाचक और गायक के रूप में पुरुष और नारी दोनो के दर्शन हुए। कुछ लोकसाहित्य तो सभी वर्ग के बीच विशेष प्रचलित हैं और कुछ पुरुष वर्ग के बीच और कुछ सामान्य रूप से दोनों के बीच। फिर इन कथा वाचकों एव गायकों की अवस्था दस साल से लेकर साठ साल तक की है। बालगीत, चकचन्दा गीत आदि के गायक प्राय बालक हैं। गाथा गीतों के गायक प्राय

प्रौढ़ पुरुष हैं। होली, चैती, कजरी आदि उल्लास के गीत युवक वर्ग के बीच अधिक लोकप्रिय हैं। महिलाओं में अवस्था के नियन्त्रण पर किसी का ध्यान नहीं है। सभी अवस्था की महिलाएँ सोल्लास लोकगीत गातीं, कथा कहतीं और सुनती हैं। हाँ, सामयिक लोकगीतों में विशेषत नयी उम्र की महिलाओं की अधिक दिलचस्पी है।

गीत गाने वाली महिलाएँ भी दो प्रकार की मिलीं—(१) समूह के साथ स्वर मिला कर गा लेती हैं और (२) स्वतन्त्र रूप से गाती हैं। स्वतन्त्र रूप से गानेवाली महिलाओं को अपने जेवार में पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त है। कुछ व्यवसायी गायिकाएँ भी होती हैं, जो विविध मांगलिक अवसरों पर गीत गा कर पारिश्रमिक लेती हैं। इनमें 'पेंवनी' जाति की महिलाएँ भी हैं, जो बड़े मधुर कंठ से गीत गातीं और शुभ अवसरों पर आमन्त्रित होकर पारिश्रमिक पाती हैं। बक्सो-बक्साइन, नट नटी, पँवरिया आदि इसी वर्ग में हैं।

इन ग्रामीण नर नारियों म अनेक के पास अपार साहित्य-वैभव है, पर ये निरक्षर हैं। श्रुति-परम्परा से ही इन्होंने सारे साहित्य को कण्ठाग्र किया है। अपने साहित्य-कोश को समृद्ध करने के लिए ये अपने कार्य व्यापार को छोड़ते नहीं—कोई कृषि विशेषज्ञ हैं, कोई छान छौनी के कारीगर हैं कोई बैल लादते हैं, कोई बोझा ढोते हैं, कोई पूजा पाठ में संलग्न हैं, कोई घर के अन्य कार्यों में। पर इन्हीं कार्य-क्रमों के बीच वे कब कुछ सीख लेते हैं, जान लेते हैं, कहा नहीं जा सकता। अपने कार्यों के ही बीच क्रमशः ये साहित्य-भण्डारी भी बन जाते हैं। ग्राम में उनका सम्मान बढ़ जाता है। लोग उन्हें 'गुनी' (गुणी) की संज्ञा देते हैं।

कुछ इन्हीं अनुभवों की थाती के साथ मगही लोक-साहित्य का अत्यन्त संक्षिप्त संग्रह-विवरण प्रस्तुत किया जाता है—

(क) मगही लोक कथाओं का संग्रह विवरण[1]

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	कथावाचक	विशेष
१	१—२	अम्मला	नालदा	बरती	×
२	२—४	राजा के बेटी कुम्हार घर	राजगृह	फुलेसरी	×
३	५—६	धरम के जय	बेगमपुर (पटना)	बुलवन्ती	×

१. प्रस्तुत संग्रह की मगही लोककथाओं म अधिकांश को लिपिबद्ध इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं किया था। इस क्रम में जिन ग्रामों एवं कथावाचकों का सम्पर्क प्राप्त हुआ, उनका नामोल्लेख भर उपर्युक्त विवरण म किया जा रहा है। जिन क्षेत्रों का भ्रमण कई कारणों से सम्भव न हो सका, वहा के नमूने डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं। इनसे सबद्ध विवरण कथा विशेष के साथ उपन्यस्त हैं। कथाओं के संग्रह में जिन सज्जनों से विशेष सहायता मिली है, उनके नाम सादर उल्लिखित किये जा रहे हैं —

१. स्वर्गीय ब्रह्मदेव नारायण—एडवोकेट हाईकोर्ट, पटना।
२. श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिन्हा—राजगीर, पटना।
३. प्रो० रामेश्वर मिश्र—पालि विभाग, नालदा कालेज, बिहार, पटना।

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान	कथावाचक	विशेष
४	६—७	बिसवास के महिमा	दानापुर	गनेस	×
५	७—८	लड़ाकिन मेहरारू बस में	मनेर	लखमी	×
६.	८—९	जितिया के महातम	गुमगपुर (नवादा)	तिलेसरी	आश्विन में जितिया व्रतके अवसर पर कथित।
७	९—१०	डरपोक बनिया	सेवदह	बुरस्न	×
८.	१०—११	गोधन के महातम	नेहुसा	पारबती	कार्त्तिक में गोधन या भाई दूज के अवसर पर कथित।
९	११—१२	मरनी के फल	दौलतपुर	बालासाव	×
१०.	१२	सेठ आउ कुजड़ा	गया	मगरु कुजड़ा	×
११	१२—१३	लाला जी के कुरता	जहानाबाद	सोदागर साव	×
१२.	१३.	बाघ के मउअत	कउआकोल	ठाकुरी साव	×
१३.	१४	धोखा के फल	मिसिर बिगहा	बोधी महतो	×
१४.	१५	डपोर सख	बड़हिया	नन्हकू	×
१५	१५—१७	हुनर टापर	जमुई	(श्री रामेश्वर मिश्र के सौजन्य से प्राप्त)	
१६.	१७	बेरी से धोखा	दक्षिण मुंगेर और बाढ़ १	×	×
१७	१७—१८	सीख	दक्षिण मुंगेर और बाढ़ २	×	×
१८.	१८—१९	मुद्रा डर	पलामू	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)	
१९.	१९	धोखा के बदला	लतेहार	बालचन्द	×
२०.	१९—२१	राजा भोलन	लतेहार	हँसाइ	×
२१.	२१—२२	मेल के महिमा	धनबाद	किसुन	×
२२.	२२—२३	चोरवा के खिस्सा	हजारीबाग कुमार टोली	बदरी	×

४. श्री हरिदास ज्वाल —प्रधानाध्यापक, गौतम बुद्ध उच्च विद्यालय, जहानाबाद, गया।

५. श्री भुवनेश्वर प्रसाद—कोर्ट कम्पाउन्ड, राँची।

६. श्री छुनरु साह—अध्यापक, कोर्ट कम्पाउन्ड, राँची।

१ और २ — ये "मैथली मिश्रित मगही" के नमूने हैं। दोनों कथाएँ डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत हैं। इन दो कथाओं के बाद पुनः "आदर्श मगही" क्षेत्र से प्राप्त कथाएँ दी गई हैं। देखिए—पृ० १८ से २५ तक।

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
२३	२३—२४	सतनारायन भगवान के पूजा	हजारीबाग, राजा डेरा	रोहन दरबान		×
२४.	२४—२५	एक मुख्य सिपाही केर कहनी	राँची	चितावन		×
२५.	२५	अकारज काम	सिंहभूम	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)		
२६	२६.	फौजदारी कचहरी में अपराधी का बयान	मानभूम	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)		
२७.	२६—२७	लालच के फल	बामरा			
२८.	२७—२८	बाप के ममता	हजारीबाग जिला			
२९.	२९—३०	बाप के ममता	राँची जिला			
३०.	३०—३१	अपराधी के बयान	मयूरभंज स्टेट			
३१.	३२.	धरम संकट	मालदा जिला के पश्चिम			

(ख) मगही लोकगीतों का संग्रह-विवरण[1]

(१) सोहर

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
१.	३३.	सोहर	जहानाबाद (गया)	सुन्दरी	पुत्र-जन्म	×
२.	३३—३४	सोहर	मुसल्लहपुर (पटना)	पुनपुन धोबी	पुत्र-जन्म	यह नृत्यगीत है।

(२) जनेऊ

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
(३)	३४	जनेऊ	मखदुमपुर (गया)	सिवरती ,,	जनेऊ संस्कार	×
४.	३५.	जनेऊ				

---

१. प्रस्तुत संग्रह के मगही लोकगीतों को इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं लिपिबद्ध किया था। इस क्रम में गया और पटना जिले के गायक और गायिकाओं से ही संबंध स्थापन संभव हो सका, अतः इन्हीं दो क्षेत्रों के लोकगीतों के कुछ चुने नमूने यहाँ दिए गये हैं। प्रस्तुत विवरण में उनके स्थान और नाम का उल्लेख मात्र किया गया है। गीतों के संग्रह में जिन देवियों से मुझे बहुत अधिक सहायता मिली है, उनके नाम सादर उल्लिखित हैं :—

१. श्रीमती शान्ति देवी—मन्दरहट्टा, पटना सिटी।
२. श्रीमती पुष्पा अर्यांणी—राजेन्द्र नगर, पटना।
३. श्रीमती धनमन्तिया—उमरी बाजार, गया।
३. श्रीमती धान कुमारी—मुसल्लहपुर, पटना।

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान	गायक	अवसर	विशेष०
(३) विवाह गीत						
५.	३५.	विवाह गीत	टेंहटा (गया)	भागमन्ती	विवाह संस्कार	×
६.	३६.	,, ,,	उसरी बाजार(गया)	धनमन्तिया	,,	×
७.	३७.	,, ,,	,,	,,	,,	×
८.	३७.	,, ,,	टाली (गया)	सोहागो	,,	×
९.	३७—३८	,, ,,	,, ,,	,,	,,	×
१०.	३८	,, ,,	चाकन्द (गया)	धानमती	,,	×
११.	३८—३६	,, ,,	रजौली (गया)	पतिया	,,	खेलडनी जाति की स्त्री से प्राप्त।
(४) जँतसार						
१२	३६	जँतसार	जामुक (गया)	जानकी	जाँता चलाते समय गाया जाता है।	×
१३	४०	,,	नासरीगंज (पटना)	सोनमा	,,	×
१४.	४०	,,	कनसारी (पटना)	बिसेसिया	,,	×
१५.	४१	,,	उसरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	,,	×
१६.	४१	,,	,, ,,	,,	,,	×
१७.	४१-४२	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
१८.	४२-४३	,,	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	×
१६	४३	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
२०.	४३-४४	,,	,, ,,	,,	,,	×
(५) ऋतुगीत						
२१.	४४-४५	होली	पटना सिटी	रामचन्दर साहु	फागुन मे गाया जाता है।	होली गीत प्रायः पुरुष गाते हैं।
२२.	४५	,,	,,	,,	,,	,,
२३.	४५-४६	,,	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	,,
२४	४६	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	,,
२५.	४६	चैती	मल्ला (पटना)	गोबरधन	चतमास मे ये गीत गाये जाते हैं।	गायक प्रधानतः पुरुष होते हैं।
२६.	४७		गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	,,

५. श्रीमती लाल मुनि—गोलघर, पटना।

६. श्रीमती प्रतिभा अर्याणी—जहानाबाद, गया।

७. श्रीमती माछो देवी—महाराजगंज, पटना।

क्र. सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष०
२७	४७-४८	बरसाती	उमरी बाज़ार (गया	धनमन्तिया	बरसात में गाये जाते हैं।	नायिका प्रधानत स्त्रियाँ होती हैं।
२८	४८-४९	चौमासा	,,	,,	,,	,,
२९	५०-५१	बारहमासा	गोलघर (पटना)	लालमुनि	,,	,,
(६)देव गीत						
३०	५१-५२	शिव पार्वती गीत	मन्छरहट्टा (पटना)	शान्तिदेवी	मंगलिक दृष्टि से सभी शुभ अवसरों पर गेय।	ये सभी पौराणिक देवी-देवता हैं। इनसे सम्बद्ध गीत पौराणिक देव-गीत की श्रेणी में आते हैं।
३१	५२-५३	,, ,,	,,	,,	,,	,,
३२	५३-५४	,, ,,	उमरी बाज़ार (गया)	धनमन्तिया	,,	,,
३३	५४-५५	,, ,,	मुबारकपुर (गया)	पारवती	,,	,,
३४.	५५-५७	राम-सीता का गीत	बिगुल (मुंगेर)	रामकुंअर	,,	,,
३५	५७-५८	,, ,,	उमरी बाज़ार (गया)	धनमन्तिया	,,	,,
३६	५८	,, ,,	,,	,,	,,	,,
३७	५९	कृष्ण का गीत	,,	,,	,,	,,
३८.	६०	शीतलादेवी का गीत	गोलघर (पटना)	लालमुनि	चेचक निकलने पर या शीतलादेवी की पूजा में गेय।	ये ग्राम देवी हैं।
३९	६०-६१	,, ,,	,,	,,	,,	,,
४०.	६१-६२	,, ,,	,,	,,	,,	,,
४१.	६२	गंगा जी का गीत	मन्छरहट्टा (पटना)	पारवती	गंगा-पूजन में गेय।	ये पौराणिक देवी हैं।
४२	६३	,, ,,	,, ,,	मुरती	,,	,,
४३.	६३-६४	,, ,,	,, ,,	,,	,,	,,
४४	६४	परमेसरी देव का गीत	नोआमा (गया)	मुन्निया	मांगलिक दृष्टि से गेय।	ये ग्राम देवता हैं।
४५	६५	पंच देवों का गीत	,, ,,	,,	,,	,,
४६	६५-६६	,, ,,	धानाटिहरी (गया)	सहोदरी	,,	,,
४७	६६	चंमा माई का गीत	मखदमा (गया)	दुलमनियाँ	,,	,,
४८.	६६ ६७	कर्मा धर्मा का गीत	राजगीर (पटना)	मिथिया	कर्मा व्रत के अवसर पर गेय।	यह भाई के लिए किया गया व्रत है।
४९.	६७ ६८	जिन्तिया का गीत	,, ,,	,	जितिया के अवसर पर गेय।	पुत्र के लिए किया गया व्रत है।

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५०.	६८	छठ का गीत	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	छठ के अवसर पर गेय।	छठ सूर्य का व्रत है।
५१.	६८-६६	,,	,,	,,	×	×
५२.	६६	निर्गुण गीत	पटना	निरगुनिया साधु	×	×
५३.	७०	,,	,,	,,	×	×
(७) विविधगीत						
५४.	७०-७१	झूमर	गोअलबीघा (गया)	जगिया	प्राय विवाह के अवसर पर गेय।	× ×
५५.	७१	,,	,,	,,	,,	×
५६	७२	,,	मदासी (गया)	सुन्दरी	,,	×
५७	७२-७३	,,	,	,,	,,	×
५८.	७३	,,	,,	,	,,	×
५६.	७४	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
६०.	७४	बिरहा	कउआखोह (पटना)	कलूठ धोबी	,,	पुरुषों के गीत हैं।
६१.	७५	,,	भिला	,,	,,	,,
६२.	७५	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	फुन फुन धोबी	,,	,,
६३.	७५	,,	,,	,	,,	,,
६४.	७६	,,	,,	,,	,,	,,
६५.	७६.	बिरहा	करन बरनी (पटना)	बोंगू धोबी	×	पुरुषों के गीत हैं
६६.	७६	,,	,,	,	×	×
६७.	७७	,,	,,	,	×	×
६८.	७७.	कजरी	जहानाबाद (गया)	प्रतिमा	वर्षाऋतु में गेय	×
६६.	७७-७८	,,	,,	,	,,	×
७०.	७८	गोदना	सदीसोपुर (पटना)	मुसिया गोदहारिन	गोदना गोदते समय गेय।	×
७१.	७८-७६	लहचारी	मुसल्लहपुर (पटना)	फुनफुन धोबी	×	×
(८) बालगीत						
७२.	७६-८०	लोरी	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्ति देवी	×	×

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५०,	६८	छठ का गीत	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	छठ के अवसर पर गेय।	छठ सूर्य का व्रत है।
५१.	६८-६९	,,	,,	,,	×	×
५२.	६९	निर्गुण गीत	पटना	निरगुनिया साधु	×	×
५३.	७०	,,	,,	,,	×	×

(७) विविधगीत

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५४.	७०-७१	झूमर	गोअलबीघा (गया)	जगिया	प्राय विवाह के अवसर पर गेय।	×
५५.	७१	,,	,,	,,	,,	×
५६.	७२	,,	भदासी (गया)	सुन्दरी	,,	×
५७	७२-७३	,,	,,	,,	,,	×
५८.	७३	,,	,,	,,	,,	×
५९.	७४	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
६०.	७४	बिरहा	कउआखोह (पटना)	कलूठ धोबी	,,	पुरुषों के गीत हैं।
६१.	७५	,,	निला	,,	,,	,,
६२.	७५	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	फुन फुन धोबी	,,	,,
६३.	७५	,,	,,	,,	,,	,,
६४.	७६	,,	,,	,,	,,	,,
६५.	७६.	बिरहा	कच्ची बस्ती (पटना)	बोढ़ू धोबी	×	पुरुषों के गीत हैं
६६.	७६	,,	,,	,,	×	×
६७.	७७	,,	,,	,,	×	×
६८.	७७.	कजरी	जहानाबाद (गया)	प्रतिभा	वर्षाऋतु में गेय	×
६९.	७७-७८	,,	,,	,,	,,	×
७०.	७८	गोदना	सदीसोपुर (पटना)	मुसिया गोदहारिन	गोदना गोदते समय गेय।	×
७१.	७८-७९	लहचारी	मुसल्लहपुर (पटना)	फुमफुन धोबी	×	×

(८) बालगीत

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
७२.	७९-८०	लोरी	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्ति देवी	×	×

क्र०सं०	पृ०	वस्तु	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष०
७३	८०	,,	,,	,,	×	×
७४	८०	,,	धनगाँवा (गया)	मुनिया	×	×
७५.	८०	,,	(जहानाबाद) गया गौरदनी	मुनमा	×	×
७६.	८०	,,	,,	,,	×	×
७७.	८१	मनोरंजन गीत	जहानाबाद (गया)	विजय कुमार	×	×
७८.	८१	,,	,,	,,	×	×
७९.	८२	,,	,,	,,	×	×
८०.	८२–८३	पहाड़ा गीत	भेलावर (गया)	बदरी साव	×	×
८१.	८३	,,	,,	,,	×	×
८२.	८३–८४	चकचन्दा के गीत	जहानाबाद (गया)	विजय कुमार	गणेश चौथको बालक समूह में गाते हैं।	×
८३	८४	,,				
८४.	८४	,,				
८५.	८५	,,				
८५.	८५	चकचन्दा के गीत	आलमगंज (पटना)	ओम् प्रकाश	,,	×
८६.	८५–८६	,,				
८७.	८६	,,				
८८.	८६–८७	,,				

(ग) लोककथा गीतों का संग्रह विवरण

(९) चौहट

८९.	८७–९१	चपिया का उत्सर्ग	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्ति देवी	×	×
९०.	९१–९३	दोलन का करुण अन्त	जहानाबाद (गया)	भगमनिया	×	×

(१०) जतसार

९१.	९४–९६	मैना का निष्ठुर अन्त	गोलघर (पटना)	लालमुनि	×	×

(घ) लोकनाट्य गीतों का संग्रह-विवरण

(११) बगुली

९२.	९६–९८	बगुली (नाट्य)	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	×	×

(१२) जाट-जाटिन

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
१२.	६८–६६	जाट-जाटिन (नाट्य)	महाराजगंज	माधो देवी	×	×

(१३) सामा-चकवा

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
१३.	६६–१००	सामा-चकवा (नाट्य)	करौता (गया)	जिरवा	×	×

(ङ) लोकगाथाओं का संग्रह-विवरण[1]

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
१४.	१००–१३८	लोरकाइन	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	×	गाथागीतों के गायक पुरुष होते हैं।
१५.	१३६–१४४	गीत राजा गोपीचन्द	×	×		डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत।
१६.	१४४–१५३	छतरी घुघुलिया	मुसल्लहपुर (पटना)	पुनपुन धोबी	×	×
१७.	१५४–१६१	रेसमा	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	×	×
१८.	१६२–१७०	कुँअर विजयी	,,	,,	×	×

(च) मगही के प्रकीर्ण-साहित्य का संग्रह-विवरण[2]

		कुल सं०	वस्तु	स्थान
१.	१७१–१८५	१–१६८	कहावत	पटना एवं गया जिले के विविध ग्राम
२.	१८६–१८८	१–१२५	मुहावरे	,,
३.	१८६–१६२	१–५४	बुझौवल (पहेली)	,,

---

१. प्रस्तुत संग्रह की चार गाथाओं को इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं लिपिबद्ध किया था। ये चारों गाथाएँ पटना जिले के गायकों से ही ली गई थी। इन गाथाओं के अन्य प्रतिरूप भी विभिन्न मगही क्षेत्रों में उपलब्ध होते हैं। प्रस्तुत संग्रह में इन गाथाओं का अत्यन्त संक्षिप्त रूप ही प्रस्तुत किया गया है। मूल गाथाएँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। चेष्टा यही रही है कि मूल घटनाओं, स्थानों एवं पात्रों से सम्बद्ध अंश तारतम्य-समन्वित रूप में अवश्य सामने चला आये। मूल गाथाएँ इन पंक्तियों की लेखिका के पास ही सुरक्षित हैं।

२. मगह-क्षेत्र में प्रचलित कहावतों, मुहावरों एवं बुझौवलों का संग्रह केवल उपर्युक्त दो जिलों से ही संभव हो सका। इनके संग्रह में जिन व्यक्तियों से सराहनीय सहायता मिली है उनके नाम सादर उल्लिखित किये जाते हैं :—

१. पंडित कमलापति शास्त्री, मुबारकपुर (बेलागंज) गया।

२. श्री हरिदास ज्वाल, जहानाबाद, गया।

३. श्री कृष्णकान्त प्रसाद, टाली, गया।

४. श्री बदरी साहु, मख्दुमचक, जहानाबाद, गया।

५. श्री दुःख हरण गिरि, ग्रा० मई, पो० पिंजोरा, गया।
६. श्री रामप्यारे साह, करोता, सकूराबाद, गया।
७. श्री शिवनाथ प्रसाद, आलमगंज, पटना।
८. श्री विश्वनाथ प्रसाद, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
९. श्री यमुना प्रसाद, (आचार्य), महाराजगंज, पटना।
१०. डॉ० जयनारायण प्रसाद, बिहार शरीफ, पटना।
११. श्री रामदास धोबी, खजांची रोड, पटना।
१२. श्री कल्लू पहलवान, जहानाबाद, गया।
१३. पं० रामनारायण शास्त्री, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
१४. श्री नन्द किशोर मास्टर, रेडियम रोड, राँची।
१५. श्रीमती कौशिल्या अर्याणी, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
१६. श्रीमती कृष्णा अर्याणी, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
१७. श्री देवेन्द्र कुमार, महाराज घाट, पटना सिटी।